भूगोलसार

(नाना भाषाओं के भूगोल पुस्तकों से)

पण्डित हृषीकेश शास्त्री के द्वारा

संगृहीत

श्रीमान पञ्चनद महाविद्यालय के अध्यक्ष

बहादुर की अनुमति के अनुसार

प्रकाशित

Bhugol Sár

or

Outlines of Modern Geography

by

Pandit Rishi Kesh Shástri

Sanscrit teacher Oriental College

Published

under the auspices of the

Punjab University

Lahore

1883

Anjuman-i-Punjab Press.

بھوگول سار

मूल्य

1st Edition

300 Copies

6391.

Acc No 6391.

915.4
P 92 B

MANDIR LIBRARY
No.
JAMMOO

Gl. N.
3116
3214

उत्सर्गपत्र।

माननीय श्रीयुक्त बाबु नवीन चन्द्रराय
महाशय महोदय
करकमलयुगलेषु

बाबुजी !

मैं जिस दिन लाहोर में आया। उसी दिन से ही आप मुझ पर कृपा दृष्टि वर्षण करते रहे। मैंने जो कुछ ज्ञानादि का लाभ किया केवल आपके आश्रय से जानियेगा। अधिक लिखना व्यर्थ है क्योंकि जितना लिखूंगा आपके किए हुए उपकार का शतांश भी उससे प्रकट नहीं होगा। इसलिये उसके वर्णनसे निवृत्त होकर इस पुस्तक को आपके करकमलों में उपहार देता हूं, क्योंकि यह पुस्तक आपके आश्रय से लब्ध हुए ज्ञानों का एक फल स्वरूप है। आगे आप प्रमाण हैं। इति

विनयावनत
हृषीकेशशर्म्मा

विज्ञापन।

आजतक हिन्दी में जितने भूगोल विषयक पुस्तक दीख पड़ते हैं ये सब असम्पूर्ण हैं। कई एक तो इस कारण से असम्पूर्ण हैं कि उन्में सारे महादेशों का वर्णन नहीं और कई एक ऐसे छोटे हैं कि उनसे भूगोल का विस्तरित ज्ञान नहीं होता। इस अभाव को हटाने के लिये पञ्जाब महाविद्यालय के अध्यक्ष डाक्टर श्रीयुत लाइट्नर साहिब बहादुर एम.ए. इत्यादि, इत्यादि, महाशय की अनुमति लेकर मैं ने बहुत परिश्रम से नानाप्रकार के भूगोल पुस्तकों से सार ले २ कर इस पुस्तक को बनाया। मैं जानता नहीं कि यह कैसा बना है। इसलिये इसे पाठिकों के साम्हने रखता हूं। क्योंकि "हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपि वा"।

अन्त में यह भी कहना उचित है कि मेरे प्रिय छात्र पण्डित अनन्तराम शास्त्री ने इस्के संशोधन में बड़ा परिश्रम उठाया। और इस्के बनाने के समय हमारे छात्र पण्डित हरमुकुन्द शास्त्री ने भी बड़ी सहायता की ईश्वर इन दोनों को सदा हि सुख देवें। इति

ओरिएण्टल कालेज
लाहोर

हृषीकेशशर्म्मा

भूगोलसार

प्रथम अध्याय

गोलत्व निरूपण ॥

१ पृथिवी के आकार और परिमाण के विषय में।

भूगोलशास्त्र उसे कहते हैं कि जिसमें पृथिवी के स्वरूपका वर्णन किया जाता है।

पहिले पहिल लोग समझते थे कि पृथ्वी चपटी और बहुत विस्तृत है, परन्तु अब पण्डितों ने निश्चय कर दिया है कि पृथ्वी नारंगी के तुल्य गोल है (अर्थात् सम्पूर्ण गोलाकार नहीं है, दक्षिण और उत्तर की ओर कुछ चपटी सी है)।

पृथिवी की गोलाई में कई एक प्रमाण हैं १म-जब एक बड़ा जहाज़ समुद्रतीर से खुलता है तब उसका निचलाभाग पहिलेअदृश्य होता है पीछे से मस्तूल अदृश्य होता है: ऐसे ही जब कोई जहाज़ तीर पर आता है तो पहले उस के मस्तूल की चोटी दिखाई देती है फिर ज्यों२ जहाज़ समीप आता जाता है त्यों२ उस का नीचे का भाग क्रमशः दिखाई देताहै। औरजब मैदान में खड़े होकर चारों ओर देखते हैं तो प्रथम दूरस्थित वृक्षों के अग्रभाग देखने में आते हैं और जैसे२ उनके समीप जाते हैं तैसे ही उनके निचले भाग मूलतक देखेजातेहैंइसी तरह जब कोई बड़े पर्वतों की ओर च-

लता है तब उसको पहिले उन पर्वतों के शिखर दिखाई देते हैं फिर उनके अधोभाग दिखाई देते हैं। इन प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि पृथिवी कछुए की पीठ की नाईं मध्योन्नत है अर्थात् देखनेवाले और दूरस्थित दृश्य पदार्थों के बीच उन्नत भूपृष्ठ रहने से दृष्टि रुक जाती है। जब सर्वत्र ऐसे ही प्रमाण मिलते हैं तो यह निश्चय होता है कि पृथिवी गोल ही है चपटी नहीं, २य- यदि कोई मनुष्य सीधा पूर्व से पश्चिम को वा पश्चिम से सीधा पूर्व को चले तो चलता २ उसी स्थानमें आपहुंचेगा कि जहां से प्रथम चला था सन् १५१९ और १५२१ ई॰ के बीच मिलन नामक नाविक पृथिवी के गिर्द इसी तरह घूमा था और उस के पीछे ड्रेक, एनसन और कुक प्रभृति नाविक लोग भी पृथिवी के गिर्द घूम आये थे ३य- सूर्य्य के किरण एक ही बार सारे भूतल पर नहीं फैलते किन्तु उस के एक अंशमें पड़ते हैं; और सूरज पूरब के देशों में पच्छिम के देशों से पहले उदय होता है, इस से यह जाना जाता है कि भूतल पूरब और पच्छिम की ओर चपटा नहीं किन्तु गोल है। इसी तरह हम लोग जितना २ उत्तर की ओर चलते जाते हैं ध्रुव नक्षत्र उतना ही ऊंचा दिखाई देता है और जितना ही दक्षिण को आते हैं उतना ही वह नीचा दिखाई देता है, तो इससे सिद्ध हुआ कि उत्तरदक्षिणमें भी पृथ्वी गोल है, क्योंकि यदि पृथिवी उत्तर और दक्षिण की ओर गोल न होती तो ध्रुव तारा ऐसा नहीं दिखाई देता ४र्थ- पण्डितों ने निश्चय किया है कि पूर्णिमा के दिन पृथ्वी, सूर्य्य और चंद्रमा के बीच जब आती है तो उसकी

छाया चंद्रमा के ऊपर गिरती है जिसे छायापात वा चन्द्र ग्रहण कहते हैं (यह कुछ नियम नहीं कि इस के एक पार्श्व की छाया ही सर्वदा उस पर गिरे) परन्तु वह छाया सर्वदा ही गोल देख पड़ती है तो पृथ्वी की गोलाई सिद्ध हुई, क्योंकि गोल वस्तु से भिन्न और किसी वस्तु की छाया सदा गोल नहीं होती है ॥

हमारे पुराणों में पृथिवी को समतल और चपटी कहते हैं, परन्तु लल्ल प्रभृति ज्योतिर्वेत्ता पण्डितों ने पुराण मत को इस युक्ति से खण्डन किया है कि यदि पृथिवी समतल हो तो दूरस्थित वृक्षादि क्यों नहि देख पड़ते ?। भास्कराचार्य्य ने भी कहा है कि पृथिवी यदि शीशे की तरह समतल होती तो इस के ऊपर घूमने वाला सूर्य्य क्यों नहीं सर्वदा देखने में आता । हिन्दू ज्योतिषियों के मत में भी यही निश्चय हुआ है कि पृथिवी कदम्ब के फल की नाईं गोलाकार है । हमारे नेत्र जितनी दूर तक फैलते हैं उतना स्थान समतल होने से सारी पृथ्वी को समतल ही लोग समझते हैं ।

पृथ्वी की गोलता में बहुतेरे और भी प्रमाण हैं जैसाकि निम्नलिखित प्रमाण से सिद्ध होता है कि पृथ्वी प्राय: सर्वथा गोल है केवल गोल वस्तु ही इस तरह से वृत्ताकार रेखाओं से घिरे हुए दीखते हैं अब वह रेखा जो कि पृथ्वी को घेरे हुए है सदा गोल ही देख पड़ती है, किसी समुद्रस्थित किसी जहाज के बीच में से देखने से पृथ्वी

और आकाश को मिलानेवाली रेखा[१] सदा गोल ही प्रतीत होती है; यदि हम व्योमयान यन्त्र में चढ़ कर बहुत ऊंचा उठें, तथापि वह, पृथिवी और आकाश को मिलानेवाली रेखा गोल ही दीख पड़े गी ।

पृथ्वी वृत्ताभास[२] है और उस का व्यासार्द्ध ४००० मील के लगभग है। यद्यपि पृथ्वी सम्पूर्ण गोल नहीं, तथापि यह ऐसी वृत्ताकार है कि हम इस को साधारण भूगोल विद्या के समुदाय प्रयोजनों में वृत्त करके समझ सकते हैं ।

द्वितीय अध्याय

वृत्त के गुणादि वर्णन में

यदि हम किसी गोलक को दो भागों में विभक्त करें तो उस का एक २ भाग चाहे समान हो वा न हो, परन्तु उसकी सीमास्थित रेखा वृत्त होगी । यदि किसी गोल को केन्द्र से विभक्त किया जाय तो सीमा वृत्त बहुत बड़ा होगा और अन्य वृत्त उस से छोटे होंगे, ।

किसी वृत्त के दो भाग करके उस में से एक २ का चपटा पार्श्व किसी मेज़ पर रक्खा जावे तो उसकी गोलाई के सब से ऊंचे विन्दु को उस गोलको घेरने वाले बड़े वृत्त का ध्रुव कहा जाता है, अतएव जो बड़ा वृत्त किसी गोल को घेरता है उस के दो ध्रुव होते हैं, और दूसरा बड़ा वृत्त जो उस ध्रुवों में से होकर उस गोल को घेरता है उस से पहिला बड़ा वृत्त समकोण में काटा जाता है और प्रथम बड़ा वृत्त और उस के ध्रुवों के वीच में से जाने वाले वृत्तों से जो चाप देते व बनेंगे, वह एक एक ९० अंश का होता है, समुदाय

(१) अर्थात् जहां पृथ्वी आकाश से मिली हुई प्रतीत होती है वह रेखा चारों ओर गोल दृष्ट होती है

(२) जो सम्पूर्ण वृत्त न हो परन्तु वृत्त के प्रायः समान उसे वृत्ताभास कहते हैं

बड़ा वृत्त समान आकार का होता है, इस से यह सिद्ध हो-
ता है कि यदि एक २ वृत्त को ९० अंशों में विभक्त किया
जाय तो एक अंश के इंच्च, दूसरे अंश के इंचों के बरा-
बर होगा ।

ऊपर कही हुई बातों से सिद्ध हुआ कि पृथ्वी के दो ध्रुव हैं
उनमें से उत्तर में रहने वाले को सुमेरु वा उत्तरध्रुव कहते
हैं और दक्षिणस्थित को कुमेरु वा दक्षिणध्रुव बोलते हैं,
इस सुमेरु को फारसी में "कुतब समालि" और कुमेरु को
"कुतब जनूबी" कहते हैं ।

पृथिवी के दोनों ध्रुवों से समानान्तर पर एक बड़ा
वृत्त है जो, भूगोल के तुल्य दो भाग करता है, इस रेखा
को निरक्ष रेखा कहते हैं । फारसी में इसको "खत इस्तवा-
ह" कहते हैं। इस रेखा से भूगोल उत्तर और दक्षिण में समान विभ-
क्त हुआ उत्तरार्द्ध को उत्तरगोल और दक्षिणार्द्ध को दक्षिणगोल क-
हते हैं, इस रेखा से प्रत्येक देश वा स्थान की चौड़ाई वा अक्षां-
श गिने जाते हैं और उस का नियम यह है कि—

प्रत्येक वृत्त के ३६० समान भाग किये जाते हैं और उन
को अंश कहते हैं, इसलिये अर्द्धवृत्त में १८० अंश और वृ-
त्त के चतुर्थांश में ९० अंश होते हैं। दोनों ध्रुव परस्प-
र १८० अंश दूर हैं और निरक्ष देश से प्रत्येक ध्रुव ९० अं-
श पर है, निरक्षदेश से किसी स्थान के अंशात्मक अन्तर
को अक्षांश कहते हैं, वह जगह निरक्ष देश के उत्तर में
हो तो उत्तर अक्षांश और दक्षिण में हो तो दक्षिण अक्षांश
कहते हैं, पश्चात् संसार में जिस स्थान की जिस देश में

निरक्षदेश से उस दिशा को अक्षांश कहते हैं अर्थात् निरक्ष की उत्तर दिशा में स्थान हो तो उसे दक्षिण अक्षांश और निरक्ष की दक्षिण दिशा में हो तो उसे उत्तर अक्षांश बोलते हैं। निरक्षदेश से जो २ स्थान अधिक दूर रहते हैं वहां अक्षांश अधिक होता है। निरक्षरेखा से देशों की अक्षांशगणना करने के लिये भूपृष्ठ पर उस रेखा से समानान्तर वृत्त खेंचे जाते हैं, कृत्रिम भूगोलों में सब समानान्तर वृत्त प्रायः एक दूसरे से १० अंशापर पर खेंचा जाता है, परन्तु इसके बीच में जो स्थान रहते हैं वे भी समानान्तर वृत्तों से बने हैं, कोई स्थान ९० अक्षांश से अधिक दूर पर नहीं रहता है। निरक्षरेखास्थित प्रदेशों में दिन और रात तुल्य होते हैं इस से जितने अक्षांश की संख्या बढ़तीजाती है उतना ही दिन और रात में अन्तर पड़ता है। यहां तक कि ध्रुवों में ६, ६ महीने दिन और ६, ६ महीने रात होती है, अक्षांशरेखाओं में एक २ अंश ६९½ मील पर होता है और उन में निरक्षरेखा से एक ध्रुव तक ९० अंश होते हैं।

जो वृत्त दोनों ध्रुवों में होकर जाते हैं उनको याम्योत्तर वृत्त अथवा मध्याह्न वृत्त कहते हैं, भूगोल के पूर्व की ओर से पश्चिम की ओर घूमने से पृथिवी का केन्द्र और सूर्य इनके ठीक बीच में जब कोई मध्याह्न वृत्त आता है तब उस मध्याह्नवृत्त पर सूर्य के सन्मुख जितने देश रहते हैं उनमें मध्याह्न होता है, प्रत्येक मध्याह्न वृत्त रेखा निरक्ष और अक्षांशरेखाओं को समकोन पर काटती है और

पृथिवी को समान दो भागों में विभक्त करती है। उनमें से एक को पूर्व गोलार्द्ध और दूसरे को पश्चिम गोलार्द्ध कहते हैं। इस मध्याह्नवृत्त रेखा को उर्दू में "निस्फुन्निहार" कहते हैं।

जो स्थान आपसमें एक दूसरे के सीधे उत्तर वा दक्षिण में होते हैं वे एक मध्याह्न रेखा पर रहते हैं, अर्थात् इन स्थानों में एक ही क्षण में मध्याह्न काल होता है। जैसा लंडन और टिंबकटू एक मध्याह्न रेखा पर हैं, इसलिये जब लंडन में १२ बजते हैं, तब टिंबकटू में भी ठीक १२ बजते हैं।

ये मध्याह्न रेखा तो बहुत हैं। परन्तु भूगोलविद्याके जानने हारे पण्डित अपने २ देशकी राजधानी वा मुख्यस्थान की मध्याह्न रेखा को प्रथममध्याह्न रेखा कहते हैं; जैसा अंग्रेजलोग (ग्रीनविच) नामक नगर से गई हुई मध्याह्नरेखा को मुख्य मानते हैं और फ्रान्सीसलोग पेरिस नगर से गई हुई रेखा को मुख्य कहते हैं।

स्थान की लंबाई वा देशान्तर रेखा मानी हुई मुख्य मध्याह्नरेखा से गिनी जाती है, अर्थात् अंगीकृत मुख्यमध्याह्न रेखा से पूर्व अथवा पश्चिम अन्तरों को देशान्तर कहते हैं। इन देशान्तर रेखाओं को अंशवा अणु इत्यादि से मापते हैं। प्रत्येक देश के मनुष्य अपनी २ स्वीकृत मध्याह्न रेखा से देशान्तरेरेखाओं को गिनते हैं। जैसा फ्रान्सीस लोग पेरिस नगरस्थित मध्यरेखा से देशान्तर रेखाओं की गणना करते हैं और अंग्रेजलोग ग्रीनविच नगर से गई हुई मध्याह्न रेखासे देशान्तर रेखा गिनते हैं।

अब अंग्रेजी भूगोलों में देखा जाता है कि यह स्थान

१९ अंश पूर्व में है तो इस से जाना जाता है कि ग्रीनविच में से गई हुई मध्याह्नरेखा से वह स्थान १९ अंश पूर्व में है। जैसा छतरी की तीलि मध्य में समीप वर्ती और विस्तृतभाग में दूरवर्ती रहती है वैसे ही ध्रुवों से निरक्षरेखातक देशान्तररेखा खेंची जाती हैं, निरक्षरेखा में देशान्तररेखा का एक अंश ६९ ½ मील होता है और लंडन में उस का एक अंश ४३ मील का होता है ।

सम्पूर्ण भूगोल की देशान्तर रेखा ३६० अंशों में विभक्त हुई हैं ।

सारी देशान्तररेखाओं को एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक खेंचते हैं । ये ध्रुवों के निकट थोड़ी २ दूरी पर और निरक्ष रेखा के निकट अधिक २ दूरवर्ती होती हैं, देशान्तर रेखाओं की स्थिति एक खुली हुई छतरी से भली भांति अनुमित की जायगी; छतरी का विस्तृत भाग पृथिवी का कण्ठ अर्थात् निरक्ष रेखा की स्थिति के स्थान की नाईं है ।

जहां आकाश और पृथिवी मिले हुए प्रतीत होते हैं, उस वृत्त को क्षितिज बोलते हैं और हमारी दृष्टि उस वृत्त से आगे नहीं जाती। मनुष्य के ठीक सिर के ऊपर जो आकाशभाग होता है उसे खमध्य कहते हैं और फारसी में इस का नाम "समत अलरास" है, जब किसी स्थान की खमध्यरेखा पर सूर्य आता है तो वह उस स्थान के लंब पर होता है । सूर्य जब किसी स्थान की खमध्यरेखा के ऊपर होता है तब उस की किरण केवल उस स्थान के चारों ओर ९० अंशतक फैलती है उस से उपरान्त अंशों में अ-

न्धकार रहता है। जो रेखा आलोक और अन्धकार के बीच होती है वह एक बड़ा वृत्त है और उसे लोका लोक बोलते हैं। क्रान्तिमण्डल एक बड़ा वृत्त है जिस से सूर्य की कल्पित वार्षिक गति (अर्थात जिस स्थान पर क्रमसे सूर्य एक वर्ष में फिरता हुआ विदित होता है,) प्रकाशित होती है, यह स्थान निरक्षरेखा को दो बेर २३ ½ अंश के कोन पर काटती है। मार्च की २० बीस तारीख में, और सितम्बर की २३ तेईस तारीख में सूर्य्य निरक्षरेखा में लंब होता है। इसी समय सारी भूमि में दिन रात तुल्य होते हैं। इस वृत्त को अंग्रेज़ी में इक्लिप्टिक कहते हैं, क्योंकि जब चन्द्रमा इस पर वा इस के समीप आता है तो अवश्य ही ग्रहण होता है। निरक्षरेखा के दोनों ओर, और क्रान्तिमण्डल के स्पर्श करने वाले दो समानान्तर वृत्त हैं, इन को अयनान्तवृत्त वा क्रान्तिसीमावृत्त कहते हैं, क्योंकि जब सूर्य्य अपनी कल्पित गति से इनों में एक के ऊपर आता हुआ जानाजाता है तब उस की वह कल्पित गति फिर आती है अर्थात् आगे नहीं बढ़ती है किन्तु पीछे हट आती है। इनों से उत्तरस्थित को कर्क और दक्षिणस्थित को मकररेखा बोलते हैं। फारसी में क्रमसे इन्को खति सर्त्तान" और "खति जद्दी" बोलते हैं। ये क्रान्तिमण्डल को स्पर्श करती हैं और इनों से एक २ निरक्षरेखा से २३ ½ अंश के अन्तर पर रहती हैं और इन्के बीच जो देश हैं वे बहुत गर्म होते हैं उन्हें उष्णकटिबन्ध कहते हैं।

यह पहले कह चुके हैं कि पृथ्वी के अक्ष की दोनों सीमाओं को ध्रुव कहते हैं और उनों से उत्तरीय को उत्तरध्रु-

व और दक्षिणीय को दक्षिणध्रुव बोलते हैं। उत्तरध्रुवसे २३½ अंश तक और मध्यरेखा से ६६½ अंशकी दूरीपर उत्तरध्रुव मण्डल नामक एक वृत्त है। इसी तरह मध्यरेखा से ६६½ अंश कीदूरीपर और दक्षिण ध्रुव से २३½ अंशतक दक्षिणध्रुवमण्डल नामक एक वृत्त है और इन्को फारसी में "कुव्वतबी" बोलते हैं। जब सूर्य्य कर्करेखास्थितदेशके ठीक ऊपर आता है तब उसकी किरण उत्तरध्रुव को लंघ कर २३½ अंश आगे बढ़ती हैं और तब दक्षिणध्रुव मण्डल स्थित सब स्थान अन्धकारमय होते हैं इसी कारण ध्रुवों मे ६ महीने दिन और ६ महीने रात होती है।

तृतीय अध्याय

कटिबन्धों का वर्णन

अब पृथिवी के कटिबंधों का, जिन्को फारसी में अकलीं कहते हैं, वर्णन किया जाता है। पृथिवी तल ५ कटिबन्धों में विभक्त है, एक उष्ण कटिबन्ध, दो समकटि बन्ध और दो शीतकटिबन्ध।

पृथिवी के मध्यभाग को, जो, कर्क और मकर रेखाओं के बीच विस्तृत है, उसे उष्णकटिबन्ध कहते हैं। यह स्थान निरक्षरेखा के उत्तर और दक्षिण इन दोनों पार्श्वमें १६०० मील मात्र है। बरस के किसी अंश में जब सूर्य्य इस कटिबन्ध के अन्तर्गत देशोंमें रहने हारे मनुष्यों के ठीक सिर पर आता है, तब यहां बड़ी गर्मी होती है। सम्पूर्ण बरस भर ही वहां दिन और रात समान होते हैं— अर्थात् प्रत्येक दिन सूर्य्य प्रातःकाल ६ बजे उदय

होता है और सन्ध्या को ९ बजे अस्त होजाता है, आफ्रिका और दक्षिण अमेरिका बहुधा उष्णकटिबंध के अंतर्गत हैं। उत्तर समकटिबन्ध उष्णकटिबंधकी उत्तरसीमासे ३००० मील तक उत्तर में विस्तृत है। यह स्थान कर्करेखा से उत्तरध्रुवमण्डल तक विस्तृत है, इसके अन्तर्गत प्रदेशों में सूर्य्य कभी ठीक सिर पर नहीं आता है इसलिये उष्णकटिबन्ध की नाईं यहां बहुत गर्मी नहीं होती, प्रायः सम्पूर्ण यूरोप और एशिया के ४/५ अंश और उत्तर अमेरिका के भी ४/५ अंश इस कटिबन्ध के अन्तर्गत हैं ॥

उत्तरशीतकटिबन्ध उत्तरगोल का अन्तिमभाग है, और उत्तरध्रुव से १६०० मील के बीच जितने स्थान हैं सब इस के अन्तर्गत हैं। इस कटिबन्ध के बीच बरस के किसी ऋतु में सूर्य्य एक बार ही अदृश्य होता है यहां का जलपवन बहुत ठंढा है, प्रायः सारे बरस में यहां का समुद्र और भूमि बर्फ और हिमबिंदुओं से ढंपी रहती है। एशिया के और अमेरिका के सम्पूर्ण उत्तरभाग उत्तरशीत कटिबंध में आगए हैं ।

दक्षिण समकटिबंध उष्णकटिबंध की दक्षिणसीमासे तीन हज़ार (३०००) मील विस्तृत है, अर्थात् यह मकरेखा से दक्षिणध्रुव मण्डल तक विस्तृत है। इस की प्रकृति प्रायः उत्तरसमकटिबंध की नाईं है। आफ्रिका का १/३ अंश, दक्षिण अमेरिका का १/२ अंश और आष्ट्रेलिया का ३/५ अंश इसके अन्तर्गत है, दोनों समकटिबन्धों में सारी पृथ्वी के आधे से भी अधिक अंश आगया है ।

दक्षिणशीतकटिबंध दक्षिण गोल की शेषसीमापर है। इस की प्रकृति उत्तर शीतकटिबन्ध की नांई है, और यह भी उस के तुल्य १६०० मील विस्तृत है और यहां भी वरस के किसी समयमें सूर्य एकवारही अदृश्य होताहै ।

चतुर्थ अध्याय

अब कृत्रिमभूगोल बनाने की रीति और उस पर जो स्थान हैं उन्के अक्षांश और देशान्तर के चिह्न करने की रीति इत्यादि आवश्यक विषय लिखे जाते हैं। कृत्रिम गोल किसी धातु कीतार के आधारमें रहता है। यह तार उसगोलके बीच में से केन्द्र होकर जाती है। और इस के दोनों छोर एक पीतल के चलवृत्त में जो दो छेदसे हैं, उस मे लगे रहते हैं। इस पीतल के चलवृत्त को आधारवृत्त कहते हैं और उस तार को अक्षकहतेहैं ऐसा एक गोल बनाकर उस पर किसी एक ठौर से उत्तरध्रुवका एक चिह्न करके उसकी विपरीतसीमामें गोल पर दूसरा एक दक्षिण ध्रुव का चिन्ह करना। फिर उन दोनों ध्रुवों से समानान्तर पर एक निरक्षरेखा अंकित करके सोलह समानान्तरवृत्त एक दूसरे से १० अंश के अन्तर पर खींचना, और १२ मध्याह्नरेखा एक दूसरी से १५ अंश दूरी पर खींचना, और मध्याह्नरेखा ओं मे से किसी एक को मुख्य रेखा अर्थात् लंडन की मध्यरेखा ठहराना। फिर कृत्रिम गोल पर इस मुख्यरेखा के किस बिन्दुपर लंडन का चिन्ह किया जावे इसका विचार करना चाहिये यदि पृथ्वी की के पृष्ठ पर लंडन से उत्तरध्रुवके अन्तर मापाजावे

अतिसुगमता से इस रेखा पर लंडन का चिह्न कियाजाता, परन्तु आजतक कोई मनुष्य उत्तर ध्रुव नहीं जासका, अतएव उस विन्दु को ठहराने के लिये जो आकाश से सम्बन्ध रक्खे ऐसे किसी दूसरे प्रकारको यहां अवश्य विचारना चाहिये । यह बात कह चुके हैं, कि पृथिवी की गति निश्चय है, और यह पृथिवी अपने अक्ष पर प्रतिदिन एक बार घूमती है; तब पृथिवी के केन्द्र से ध्रुवस्थान में हो कर जाने वाली रेखा के सामने जो कोई नक्षत्र होता, और सब घूमते हुए नक्षत्र मेंसेंवही एकस्थिर देख पड़ता है, उसनक्षत्रको ध्रुव नक्षत्र कहते हैं । पृथिवी के निरक्षदेश और ध्रुवों के बीच में जो देश ध्रुव के बहुत पास होगा वहां ध्रुव तारा अधिक ऊंचा देख पड़ेगा। अब ध्रुवताराकी ऊंचाई, एक वृत्त में, प्रत्येक देशनक्षत्र माप सक्ता है और इस ऊंचाई में जितने अंश होते हैं वे ही निरक्षसे भूमि पर अक्षांश हैं । इसी प्रकार से अथवा इसके सजातीय और किसी प्रकार से स्थान के अक्षांश ज्ञात होते हैं । परन्तु केवल अक्षांशों से प्रत्येकस्थान का निश्चय नहीं होता, । इसलिये पृथिवी के पृष्ठ पर जो स्थान हैं उनके देशान्तरजानने की रीति का अवश्य विचार करना चाहिये ।

सब वृत्तों की परिधि ३६० अंश में विभक्त होती है, इसलिये पृथिवी की परिधि भी ३६० अंशों में विभक्त है । यह पहले कह चुके हैं कि पृथिवी अपने अक्ष पर २४ घंटों में एक बेर घूम जाती है, इस्से यह जाना जाता है कि एक घंटे में इस्के १५ अंश घूमते हैं । और ६० मिनट का

एक घंटा होता है अतएव ४ मिनट में इसका एक अंश घूमता है । अब यह निश्चय हुआ कि जो स्थान मुख्य रेखा से पूर्व मे १५ अंश पर हैं ये सब मुख्य रेखा से एक घंटा पहले सूर्य के नीचे आते हैं अर्थात् वहां तब मध्याह्न होता है और जो स्थान मुख्यरेखा से पूर्वमें एक अंश पर हैं, वहां ४ मिनट पहिले मध्याह्न होता है; इसी तरह जो स्थान मध्यरेखा से पश्चिम में १५ अंशपर हैं वहां मुख्यरेखास्थितस्थानों से एक घंटा पीछे मध्याह्न होता है इत्यादि

अब जिस स्थान का देशान्तर ठहराना है, उसका मध्याह्नकाल वेध से निश्चय कर और उसी क्षण मे मुख्यरेखास्थितदेशों का भी काल जान कर सुलभगणित से इष्ट स्थान का देशान्तर जान लेना ।

इस में इतना ही करना चाहिये कि इष्ट स्थान का मध्याह्न काल और लंडन का मध्याह्नकाल इन दोनों का अंतर जान कर उस के चार २ मिनट में एक २ अंश गिनना और वे पूर्व वा पश्चिम में जैसे होंगे वैसा देशान्तर कहना, जैसा यदि निर्दिष्ट नगर के मध्याह्न काल में लंडन में ११ बजे हैं तो निर्दिष्ट नगर में १५ अंश पूर्व देशान्तर जानना और जो लंडन में एक बजा हो तो निर्दिष्ट नगर में १५ अंश पश्चिम देशान्तर होगा ॥

मानचित्रबनानेकीरीति

कृत्रिम भूगोल में पृथिवीस्थितदेशोंका सम्पूर्ण चित्र नीचे लिखे हुए उपायोंसे बन सके हैं ।

कृत्रिम भूगोलपर पहले अक्षांश और देशान्तर रेखा खिंचीजाती हैं । उसके पीछे कलकत्ता, कुमारी वा कन्या अन्तरीप और ऐसे और २ स्थान, जिनके देशान्तर और अक्षांश विदित हुए हैं, उस कृत्रिमभूगोलपर यथा स्थानमें चित्रितकिएजाते हैं । जिनस्थानों का अक्षांश ठीक ठीक विदितनहीं उनकीस्थिति स्थान केवल अन्दाजेसे चित्रितकरना होता । जिनदेशों के पर्वत और प्रधान नगरों के अक्षांश और देशान्तर भली भांति विदित हुएहैं उनदेशोंके औरऔरस्थानोंकीस्थिति जञ्जीर वा कोणमापक यन्त्रके द्वारा नापनेसे जानीजातीहै । स्कूलोंमें जोकृत्रिम भूगोलोंकाव्यवहारहोताहै वे सब इसीरीतिसे बनतेहैं । अंग्रेजी जहाजी लोगोंने प्रायः समुदय देश और द्वीपोंके कनारे के अक्षांश और देशान्तर विदितकिये हैं, भूगोलशास्त्रजानने वाले साधारणतः उन्हीके अनुसार उन कनारेओंकीस्थिति चित्रितकरतेहैं । एशिया, आफरिका और अष्ट्रेलियाआ महाद्वीपोंके अन्तर्गत स्थानों की स्थिति सम्पूर्ण स्पष्टरूपसे चित्रित नहीं होतीहै ।

ऊपर यह सिद्ध कियागया कि कृत्रिम भूगोल परकिसी देश का नक्शा सम्पूर्णरूप बना जासक्ता है । परन्तु उन कृत्रिम भूगोलोंको एकस्थानसे दूसरे स्थानमें लेजानेमें बड़ापरिश्रम होताहै इसलिये कृत्रिमभूगोलोंकोबहुत बड़ा नहीं कियाजाता है और उसके स्थानपर हम बड़े २ मानचित्रवानकशेओंका व्यवहार करतेहैं, जिनमें पृथिवी के समुदय वा एक २ अंश विस्तृत रूपसे चित्र होते हैं ।

मानचित्रमें पृथिवीके किसी छोटे अंशको, जैसाकि किसी गांवको, चित्रितकरनेमें पृथिवीकी गोलाई पर कुछ ध्यान नहीं दिया जाताहै, अथवा यदि कृत्रिम भूगोलसे इङ्गलण्ड वा और किसी छोटे देशका नकसा उखाड़ लिया जावे तो भी उसनकसेको बहुत सुगमतासे सीधा औरचपटा कर सके हैं। परन्तु कृत्रिम भूगोल से यदि आधी पृथिवीका नकसा उखाड़ लियाजावे तो उसको सीधा वा चपटा करनेमें वह अवश्य ही फटजायेगा।

वस्तुतः पृथिवीका कोई अंश समग्रंशरूप चपटा नहीं इसलिये हमारे मान चित्र समुदय समग्रंश ठीक नहीं, कृत्रिम भूगोल ही पृथ्वीकी ठीकठीक प्रतिमाहै।

एक स्थानका समय जान कर दूसरे स्थान के समय जानने की रीति॥

जब किसी नगर में दो वा चार घंटे बजे हों तो उससे जोनगर पूर्व वा पश्चिम होतो वहां क्या बजा होगा, इस के जानने की रीति पहले ही एक प्रकार कही गई; क्यों कि पूर्वोक्त वर्णन से सबको यह ज्ञान हुआ कि पृथिवी एक घंटे में १५ अंश और चार मिनट में एक अंश अपनी परिधि का घूमती है।इस कारण जो देश पूर्व में १५ अंश होगा वहां एक घंटा पहिले सूर्योदय होगा इत्यादि,

अब इतना ही कहना चाहिये, कि पूर्व के नगर में जितने घंटे बने हों वहां से पश्चिम का नगर जितने अंशों पर हो उस अंतर के अंशों को घंटा वा मिनट बना कर पूर्वोक्त घंटों में से घटाने से पश्चिम के नगर का उसी समय के घंटों

का प्रमाण निकल आवेगा, और पूर्व के नगर में उतने घंटे बढाने से स्थिर होगा क्योंकि वहां सूर्य्य पहले उदय होचुका है जैसे लंडन में जब १२ बजे होंगे उसी समय कलकत्ते में १२ के ऊपर ५ घंटे और ५२ मिनट बजे होंगे। कलकत्ते और लंडन दोनों नगरों में ८८ देशान्तरांश का अन्तर है।

पंचम अध्याय

पृथिवी की प्रकृति का वर्णन।

पृथिवी की प्रकृति निरक्षरेखा के समीप बड़ुत गर्म और उससे ध्रुवों की ओर क्रम २ से शीतल है। पृथिवी की प्रकृति केवल निरक्षरेखा की दूरी पर नियत नहीं किन्तु समुद्रतल से स्थानों की ऊंचाई पर भी नियत है।

उष्णकटिबन्ध के उच्च देशों में भी जलपवन बड़ुत मनोरञ्जक है; यहां तक कि निरक्षरेखा में यदि हम लोग समुद्रतल से ३ मील ऊंचे जावें तो सर्वदा विराजमान हिमराशि देखी जाती है, निरक्षरेखा के उत्तर वा दक्षिण के ओर हम लोग जितने ध्रुवों के समीप पड़ुंचते हैं उतने ही हिमराशि की स्थिति नीचे आती है और अन्त में समुद्र से मिलित ड़ुई है॥

लंडन नगर स्थित अक्षांश में हिमराशि की स्थिति समुद्रतलसे १⅔ मील की ऊंचाई पर है। अतएव यदि लंडन के समीप १⅔ मील ऊंचा कोई पर्वत होता तो उस का शिखर सर्वदा ही हिमसे शोभित होता।

किसी देश की प्रकृति समुद्र और वायुवेग के अधीन भी होती है, इसकारण जो जल उष्णकटिबंध में सूर्य्य से

तपते हैं ये यूरोप के पश्चिम समुद्र में समुद्र की ओर बहते हैं और उन्के ऊपर जो गर्मवायु चलती है वह ब्रिटिश द्वीप और फ्रान्स के पश्चिम तीर प्रभृति स्थान को उस अक्षांश स्थित और स्थानों से गर्म रखती है, ।

उष्णकटिबन्ध में पूर्वी वा वाणिज्यवायु (ट्रेडविंड) सम्पूर्ण बरस में चलती रहती है, इसलिये इसके अन्तर्गत महाद्वीप के पूर्व की ओर पश्चिम से अधिक वर्षा होती है। उत्तर सम कटिबंध में एक दक्षिण पश्चिमी वायु सर्वदा बहती है और दक्षिण सम कटिबन्ध में उत्तर पश्चिमी वायु नियत बहती है इसलिये इन दोनों कटिबंधो के बीच महाद्वीपों के पश्चिमी भागों में जलवायु शीतल और आर्द्र होता है । किसी देश के जिस अंश में सर्वदा मेंह होता है उस के समीपस्थ पर्वत भूमि को स्वभावसे ही कुछ तर ही रखते हैं

यह साधारण नियम है कि द्वीपसमूह महाद्वीपस्थित प्रदेशों के साथ एक रूप सामुद्रिक पवन के अधीन होकर भी उन्के समान उष्ण वा शीतल नहीं होते ॥

ऋतुओं का वर्णन

पृथिवी का उत्तर ध्रुव आकाश के उत्तर ध्रुव के सन्मुख रहता है और पृथ्वीका अक्ष इस की कक्षा पर ऐसो एक विशेष प्रकार से रहता है कि जिस से ऋतुओं का परिवर्त्तन होता है । यह अक्ष ठीक कक्षा पर तीन तरह से रह सकता है प्रथम तो कक्षा में समान्तराल रूप से दूसरे उसपरलंब, और तीसरे तिरछा,

यदि कक्षा में पृथिवी का अक्ष समानान्तर होता तो गर्मी की ऋतु में, भूगोलार्द्ध पर कई सप्ताह तक रात न हुआ क र्‌ती और शीतकाल में कई सप्ताह दिन नहोता, दूसरे पक्ष में ऋतुओं का परिवर्त्तन और दिन रात की न्यूनाधिकता न हुआ करती, ये दोनों पक्ष अच्छे नहीं हैं तो ज्ञात हुआ कि पृथिवी का अक्ष उस के कक्ष पर तिरछा है, इसलिये आधा बरस अर्थात् ६ महीने तक उत्तर भूगोलार्द्ध में दक्षिण भू गोलार्द्ध से अधिक गर्मी रहती है, अवशिष्ट ६ महीने दक्षि ण भूगोलार्द्ध में गर्मी होती है और दिन भी ६ महीने तक बढ़ता है और ६ महीने घटता है जिन दिनों में उत्तरध्रुव जो हमारे समीप है सूर्य्य के सन्मुख नहीं रहता उन दिनों में दोपहर के समय भी सूर्य्य आकाश के मध्य से नीचे आ न पड़ताहैऔर उसकी किरण सम्पूर्णदिन उत्तर भूगोलार्द्ध पर तिरछी पड़ती है, इस कारण से उत्तर भूगोलार्द्ध में उन दिनों सर्दी होतीहैऔर रातें बड़ी होती हैं और दिन छोटा होता है, इसी तरह जब उत्तर ध्रुव सूर्य्य के साम्हने होता है तो उन दिनों में उस की किरण हम पर लंब अर्थात् सीधी होके गिरती हैं इसलिये उस समय में गर्मी होती है, इस से ज्ञात हुआ कि जितना सूर्य्य हमारे अतिशय दूर औ र सिर पर लंब रूप से दीख पड़ता है उतनी उसकी कि रनें हम पर सीधी पड़ती हैं —

षष्ट अध्याय ॥

पर्वत और उच्च समतल क्षेत्रों के स्वरूप प्रदर्शनमें पृथ्वी के विस्तृत अंशों के मानचित्र (प्रोजेकशन)

अर्थात् परिलेख की सहायता से बहुत ही ठीक बनते हैं जिन के द्वारा हमको देश और समुद्रों के अवस्थान प्रायःविदित होजाते हैं । और छोटे अंशों के मानचित्र सम्पूर्ण ठीक होते हैं । परिलेख के आश्रय से भ्रम बहुत थोडा ही होता है । इस के विना जो मानचित्र खेंचा जाता है वह ठीक नहीं बनता उस से सर्वदा बहुत भ्रम उत्पन्न होता है । क्योंकि मानचित्र का यह कार्य्य है कि देशों की ठीक २ अवस्थिति दिखलावे, परन्तु समुद्र से जमीन की किसी प्रकार से उच्चता न दिखलाने से ऐसा नहीं होसक्ता । किसी देश की समुद्र से उच्चता के किसीप्रकारके ज्ञान से और उस के पर्वतों की संस्थिति के बोध से हम को उस देश के जलवायु और उर्वरतादि के विषय में भली भांति ज्ञान होता है । साधारण मानचित्रों में निदर्शित काली रेखाओं से सदा केवल पर्वतों का स्वरूप प्रदर्शन किया जाता है, पर्वतश्रेणी की स्थिति के अनुसार खेंची जाती है । जैसा भारतवर्ष के साधारण मानचित्र में हम देखते हैं कि;उस के पश्चिम कूलके समीप एक लंबी काली रेखा से पश्चिम घाट पर्वतश्रेणी दिखलाई गई है और पूर्वकूल में उस से थोडी काली रेखा से पूर्वीघाट पर्वत श्रेणी दिखलाई गई है । इस से पश्चिम से पूर्व तक अर्थात् भारत महा सागर से बंगाले की खाड़ी तक भारतवर्ष की ऊंचाई का ज्ञान निम्नलिखितरूप होता है —

परन्तु विचार करके देखने से यहां पर्वतश्रेणी का जैसा आकार प्रदर्शित हुआ वास्तव से ऐसा नहीं होता साधारणतः पर्वतों की श्रेणी एक पार्श्वमें ऊंची होती है और एक पार्श्व में क्रमशः प्रवण होती है, तो अब भारतवर्ष के उस प्रायद्वीप, का स्वरूप नीचे लिखे रूप चित्र के समान समझाजाता है

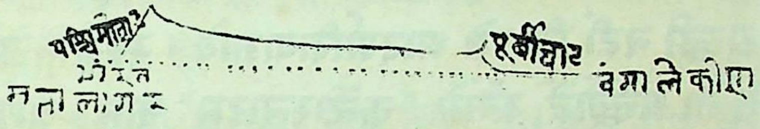

"इस देश का आकार ठीक इस प्रकारका है" यह हम इस हेतु से भी अनुमान कर सकते हैं कि नदियें पश्चिमघाट पर्वत से निकल कर बंगाले की खाड़ी में गिरती हैं। पूर्वीघाट एक ऊंचा पहाड़ है, जिस पर हम इस के पूर्व दिशा में स्थित समतल क्षेत्रों से चढ़ते हैं; परन्तु जब हम इस के शिखर पर आते हैं तब यह विदित होता है कि हम एक उच्च समतल क्षेत्र पर चढ़े हैं जो पश्चिम की ओर क्रमशः ऊंचा है,

ऐसा ही यदि हम कलकत्ते से उत्तर महासागर तक विस्तृत भूभाग का स्वरूप दिखलाएं तो नीचे लिखे रूप चित्रके समान होगा

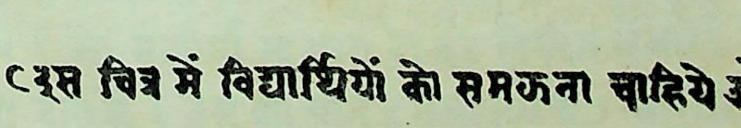

८इस चित्र में विद्यार्थियों को समझना चाहिये ऊंचाई

की माप यहां कुछ अतिरिक्त कीगई है, धरातल में जब एक इंच मे ५०० मील समझा जाता तब इसकी ऊंचाई में एक इंच में पांच मील समझा जायगा)

आजकल किसीविपटा मानचित्रसे जितना होसके समुद्रतलसे पृथ्वीके हर प्रदेशकी ऊंचाई देखतेही ठीकठीक अनुमान करनेके लिये निदर्शित मानचित्र बनाने की नाना —रीतियां आविष्कृतहुई हैं । परन्तुउनमेंसे कोई ऐसी अच्छी नहीं कि उसे आदर्शकियाजावे । उनरीतियोंके बीच जो अच्छीहैं, उनमेंसे "कन्टोरलाइन्स" नाम । अर्थात्(सीमारेखासंश्लिष्ट) रीति अधिक व्यवहृतहोतीहै । इसरीतिमें समुदय मानचित्र पर ऐसी एकरेखा खेंची जातीहै जो समुद्रतलसे ५०० फुट ऊंचे स्थानोंमेसे जाती है, दूसरी रेखा ऐसी खेंची जातीहै जो १००० फुट ऊंचे स्थानोंमेंसे होकर जातीहै, औरतीसरीरेखा १५०० फुट ऊंचे स्थानोंमेंसे होकर जाती है । इनमानचित्रोंमें हम देखतेही जोस्थान समुद्रतलसे ५०० फुटकी अपेक्षा नीचा वा ऊंचाहै यह जान सकेहैं, । और अभ्यास के बलसेउसस्थानका प्राकृतिक स्वरूपभी जानसकेहैं ।

साधारणमानचित्रोंमे ऐसानहीं होताहै । उनमें केवल पर्व्वतोंको निदर्शनकियाजाताहै जैसाकि तिब्बतमें हजारोंफुट निम्नअलताई पर्व्वतको रेखासे निदर्शितकरते हैं और तिब्बतको नहीं ।

6391.

द्वितीय भाग
जल और स्थल के वर्णन मे
परिभाषा

अब हम पृथ्वी के प्राकृतविभागों का वर्णन करना चाहते हैं, परन्तु उन के पहिले कितनी एक परिभाषाओं का ज्ञान बहुत ही आवश्यक है, इसलिये पहिले उन परिभाषाओं का वर्णन करते हैं।

१। पृथिवी के ऊपर कुछ स्थल और कुछ जल अर्थात् तीन भाग जल और एक भाग स्थल है। आकार की भिन्नता के हेतु उन भागों का नाम भी भिन्न है. जैसा कि नीचे लिखे जाते हैं जो पृथिवी के खण्ड चारों ओर जल से घिरे हैं उन को द्वीप वा टापू कहते है, (फारसी में जज़ीरा कहते हैं,) यदि वह द्वीप बहुत बड़ा हो तो उसे महाद्वीप बोलते हैं॥

२। बहुत बड़े भूमिखण्ड जिस में अनेक राज्य होते हैं और नाना प्रकार की जाति के लोग रहते हैं उसे महाद्वीप वा महादेशबोलते हैं और इसे उर्दू में बर्रे आज़म बोलते हैं।

३। जिस भूखण्ड के तीन ओर जल है उसे प्रायद्वीप बोलते हैं. और फारसी में जज़ीरा नमाह्।

४। जो भूखण्ड क्रमशः सूक्ष्म होकर समुद्र में दूर तक चला जाता है उसे अन्तरीप कहते हैं। फारसी में रास।

५। जो संकीर्ण भू भाग दो बड़े विस्तृत भूभागों को मिला देता है। उस का नाम डमरूमध्य है। फारसी में खा-

कनाय बोलते हैं ॥

६। समुद्रके तीरवर्त्ती स्थान को उपकूल बोलते हैं, और फारसी में साहिल,

७। जो ऊंचे और पत्थरीले भूभाग सर्व्वदा किमसे ऊंचे रहते हैं उन्को हिन्दी में पर्वत, और फारसी में कोहकहते हैं।

८। बड़ पर्वतों को पहाड़ी बोलते हैं; जिन पर्वतों में समय २ धूम, अग्निशिखा और धातु निकलते हैं, उसे ज्वालामुखी पर्वत बोलते हैं; और फारसी मे कोह आतशखिजर,

९। जो पर्वतसमूह एक दूसरे से संयुक्त होकर दूर तक चले जाते हैं, उन्हें पर्व्वतश्रेणी बोलते हैं; और फारसी में सिलसिलय-पहाड़।

१०। पर्वतों के नीचे की भूमि कोउपत्यका वा तराई कहते हैं।

११। जो भूमि विस्तृत और समतल होती है, उसे समतलक्षेत्र बोलते हैं; फारसी में "मैदान" बोलते हैं। वैसी भूमि यदि आसपास की अन्यभूमि ओं से ऊंची हो तो उसे उच्चसमतलक्षेत्र बोलते हैं; और फारसी में सतामर्तफा कहते हैं। (१)

१२। पर्वतों के बीच में से जो संकीर्ण मार्ग निकलता है उसे घाटी बोलते हैं।

१३। जिस भूखण्ड में केवल रेत ही होती है और वृक्षादि उत्पन्न नहीं होते उसे मरुभूमि वा ऊषरक्षेत्र कहते हैं; और फारसी में उस का नाम वीया बान है।

(१) उच्चसमतलक्षेत्रों को संस्कृत में मालक्षेत्र कहते हैं।

१४। बड़े से बड़े जल के भाग को महासागर कहते हैं; और फारसी मे उस का नाम बहर है।

१५। जो जलभाग महासागर से छोटा होता है और प्रायः तीन ओरस्थल से घिरा होता है उसे समुद्र वा सागर बोलते हैं। जो समुद्र किसी एक दिशामें स्थल पर बहता हुआ चला जाता है, उसे खाड़ी कहते हैं, जिस खाड़ी का मुंह चौड़ाहोताहै उसे खलीज बोलते हैं।

१६। जो संकीर्ण जल भाग दो बड़े जल भागों को मिला देताहै उसे प्रणाली वा मुहाना कहते हैं।

१७। जलभाग चारों ओर स्थल से घिरा हो उसे झील कहते हैं।

१८। जो जल किसी पर्वत वा पहाड़ी वा झील में से निकल कर समुद्र में प्रविष्ट होता है उसे नदी कहते हैं; और फारसी में दर्या।

१९। जो नदी किसी नदी में से निकल कर उसे किसी भिन्न दिशा में बहतीहुई समुद्र में जा गिरती है उसे शाखा नदी कहते हैं।

२०। और जिस नदीका पानी और किसी बड़ी नदी में गिरता है, उसे तो यदा वा सहायक नदी कहते हैं।

जब नदी की शाखें इस प्रकार से निकलती हैं, कि उन से एक एक त्रिकोना क्षेत्र बनता है, तो उस क्षेत्र को डेल्टा कहते हैं। इस नाम का कारण यह है कि, यूनानी में त्रिभुज कीनाई एक अक्षर है उस का नाम डेल्टाहै

महाद्वीप और महासागर

समस्त भूमण्डल दो बड़े महाद्वीपों में विभक्त है। एक पूर्व महाद्वीप और दूसरा पश्चिम महाद्वीप इन दोनों को क्रमशः प्राचीन और नवीन महाद्वीप भी कहते हैं,

जिस महाद्वीप में ऐशिया यूरोप और आफ्रिका ये तीन महादेश हैं उसे प्राचीन वा पूर्व महाद्वीप बोलते हैं और जिस में उत्तर और दक्षिण आमेरिका ये दो महादेश हैं उसका नाम पश्चिम वा नवीन महाद्वीप है। किसी २ भूगोलवेत्ता ने आष्ट्रेलिया, पालिनिशिया, प्रभृति द्वीपसमूहों को ओसनिया वा सामुद्रिक देश नाम रख के एक स्वतन्त्र महाद्वीपभी कहा है। पूर्व महाद्वीप बहुत बड़ा है इस का क्षेत्रफल ८०००००० असीलाख वर्गकोस है और इस की मनुष्यसंख्या ७७८००००८० है ॥

पश्चिम महाद्वीप का क्षेत्रफल चालीस लाख वर्गकोस है और इस की मनुष्यसंख्या ५८०००००० है, ।

इसे इसलिये, नवीन महाद्वीप कहते हैं कि थोड़े दिन हुए, इस को कलम्बस नामक नाविक ने प्रकट किया है (।)

पृथिवी में महासागर एक ही है परन्तु स्थानकी विभिन्नता से यह पांच पृथक् २ नामों से प्रसिद्ध हैं ।

१ यथा आटलाण्टिक महासागर
२ स्थिर महासागर
३ भारत महा सागर
४ उत्तर हिम महा सागर
५ दक्षिण हिम महा सागर

१ अट्लान्टिक महासागर,

यह महासागर उत्तरहिममहासागर से लेकर दक्षिण हिम महासागर तक लंबा और इस की लंबाई ४५०० कोस है। इस की चौड़ाई सब स्थानों में समान नहीं है। मोरको उपकूल से फलारिडा प्रायद्वीप तक इस की चौड़ाई २०५० कोस, ब्रेजिल और सिएलिपोन के बीच ८५० कोस है, और ग्रीन लेण्ड और नार्वे के बीच ४५० कोस है।

इस का क्षेत्रफल ६५०००० वर्ग कोस है।

स्थिर महासागर —

प्रसिद्ध नाविक मगीलन साहिब पृथिवी भ्रमण के समय जब इस में पहुंचे तो शान्तस्वभाव देखकर इस का नाम स्थिरमहासागर रक्खा।

यह महासागर, अन्य महा सागरों से बड़ा है, यह एशिया के पूर्व से आमेरिका पर्य्यन्त विस्तृत है, इस का क्षेत्रफल १२०००००० वर्गकोस है।

भारत महा सागर

यह एशिया के दक्षिण में कर्कट वृत्त से दक्षिणध्रुव मण्डल तक विस्तृत है। और इस का क्षेत्रफल३२५०००० वर्गकोस है।

उत्तर हिममहा सागर

इस का आकार गोल है। यह उत्तर ध्रुव मण्डल में है इसका जल बहुत गम्भीर नहीं है। नार्वे और आइसलेण्डद्वीप के मध्य से यहां जहाज का प्रवेश होता है अन्यमार्ग से यहां जहाज प्रवेश नहीं कर सक्ता क्योंकि व-

ह सागर बरफ से ढंपा रहता है ।

दक्षिण महासागर

इस को प्रायः सब लोग नहीं जानते; इस का जल अतिशीतल है; इस के मध्यस्थित द्वीप समूह और इस के उपकूल में बहुत आग्नेय वा ज्वालामुखी पर्वत हैं। उत्तर और दक्षिण महासागरों का परिमाण आजतक विशेष करके परिज्ञात नहीं हुआ है ॥

एशिया

यह महादेश और २ महादेशों से बड़ा है, इस में सब से अधिक मनुष्य वास करते हैं। यह यूरोप से पांच गुणा बड़ा है और प्राचीन महाद्वीप की पूर्व दिशा में अवस्थित है।

इस के उत्तर में उत्तर महासागर, पूर्व में स्थिर महासागर, दक्षिण में भारत महासागर, पश्चिम में लालसमुद्र, स्वेज़ का मुहाना, भूमध्य सागर, कालासागर काकाशस, पर्वतश्रेणी, कास्पियन सागर, यूराल नद पर्वत और यूराल नदी है; इन में से स्वेज़ पहले डमरूमध्य था और एशिया को आफ्रिका से मिलाता था, परन्तु थोड़े दिन हुए कि यह मुहाना बनायागया और भूमध्यसागर को लाल सागर से मिलाता है। एशियाकी पश्चिम सीमापर हमें यह लक्षित होताहै कि —

१। स्वेज़ के मुहानाको सीमाविभाजकबनाकर हमने आफ्रिका को अब एक सम्पूर्ण पृथक् द्वीप बनाया। परन्तु स्वेज़ का मुहाना मिसर राज्य की ठीक सीमा नहीं है।

२। काकाशस को सीमा विभाजक रूप से निर्देश कर हम एक भौगलिक सीमा का निर्देश करते हैं। परन्तु अब रूसलोगों ने आर्मेनिया के आधे से ऊपर अपने राज्यके अन्तर्गत कियाहै। अतएव यदि किसी तरह काकाशस एशिया और यूरोप देश की सीमा होवे किन्तु निश्चय है कि वह रूस —राज्य और पारसराज्य की विभाजक सीमा नहीं है।

३) कास्पियन सागर से यूराल पर्वत तक जो सीमा निर्दिष्ट हुई वह एक प्रकार गतानुगतिक* है यथार्थ सीमा नहीं, क्योंकि यूराल पर्वत बहुत छोटा है, और उसके दोनों ओर हि एक राजा का राज्य है और देश और मनुष्यों की प्रकृति एक ही प्रकार की है।

एशिया। उत्तर अक्षांशों में १ एक अंश और २० अंश से ७८ अंश तक और पूर्व देशान्तर रेखाओं में २६ अंश से १९० अंश तक ४२५०००० वर्गकोस है। लम्बाई बेरिंग मुहाना से बाबलमण्डप मुहाना तक ३३५० कोस और चौड़ाई सिवेरो अन्तरीप से रोमानिया अन्तरीय तक २७०० कोस है और मनुष्य संख्या प्रायः ७००००००० के लगभग है। पहिले एशिया में ही मनुष्य जाति का वासस्थान था और यहां ही पहले बड़े २ साम्राज्य स्थापित हुए और बाईबल में जितनी विचित्र घटना लिखी हुई हैं ये सब यहां ही हुई। यह सम्पूर्ण पृथ्वी की १ तिहाई है।

जब हम एशिया के अभ्यन्तर को अच्छी तरह से देखते हैं तो हम को पहिले यह दीख पड़ता है कि एशिया के प्रधान वाटरशेड वा अपवाहिका काकाशस वा एशिया माइनरस्थित पर्वतों से निकलकर पारसिया के उत्तर होकर काश्मीर पर्यंत विस्तृत है; और वहां एक चौड़ा उन्नत क्षेत्र विस्तृत है। मानचित्रों में तिब्बत और चीनी तातार इसके अंतर्गत लिखे जाते हैं। और हिमालय उसके दक्षिण दीवार के तथा आल्टाई पर्वत उस की उत्तर दीवार के बराबर हैं। प्रकृति ने एशिया को तीन प्रकार के

*गतानुगतिक उसे कहते हैं कि जो प्राचीन काल से चला आता है कानून से ठीक नहीं

देशों में विभक्त किया । यथा

(१) मोङ्गोलियन उच्चसमतलक्षेत्र जो मध्य मे हैं और इ-के पार्श्वस्थित उच्चदेश । इस देश का अधिक अंश समुद्र तलसे १०००० फुट उंचा है । इसकी ऐसीउच्चताके कारण यहां दृष्टि बहुत कम होती है । शीत औरवायुवेग बहुत है । इस में वृक्षादि से घास बहुत होता है ।

(२) उत्तर स्थित साईबिरिया वा एशियिक रूसिया का विस्तृत समतल क्षेत्र । इस में शीतका अधिक प्रादुर्भाव है, । मनुष्यसंख्या थोडी है और अच्छीतरह शस्य पैदा नहीं होता, ।

(३) वे देश, जो उस विस्तृत वाटरशेड वा अपवाहिका के दक्षिण में हैं । वे देश समकोटिबन्ध के सब से उ-ष्णभाग में हैं । इनमें से पूर्वदिशास्थितदेशों में जलवा-यु का स्वभाव बहुत आई है और वे पृथिवीके और सब देशों से उर्वर हैं, तथा उनके निवासियों की संख्या भी पृथिवी के अपरदेशों से अधिक है ।

एशिया के दक्षिण पश्चिम अंश मरुमय हैं, यह मरु-स्थल लालसमुद्र से प्रारम्भ होकर अरब तर्किस्तान का दक्षिण, फारस, अफगानिस्तान, बलोचिस्तान, औ-र तरक के दक्षिण तक आसहे । और यहमरुस्थल अ-पनी दक्षिणगति से भारत वर्ष में विस्तृतहुआ, जिसकार-ण सिन्धुदेश, पञ्जाब के दक्षिण और राजपूताना के पश्चिम सेसबदेश मरु मय हैं । पूर्वोक्त मरु की उत्तर शाखा मों गोलियनतक विस्तृत है जहां बडी २ उच्च

मरु भूमि दीख पड़ती हैं । पूर्वोक्त वाक्य से यह समझना नहीं चाहिये कि पूर्वोक्त मरुस्थल समुदय स्थानोंमें एकही प्रकृति के हैं । किन्तु उनसब मरु भूमि यों की साधारण प्रकृति यह है कि ये सब शुष्क वृक्षशून्य होती हैं । और बरस के अधिक समय इस में घास नहीं होती है । इन मरुस्थलों में से जोस्थान समुद्र तल से १००० फुटके नीचे हैं उनमें ग्रीष्मकाल में अतिशय गर्मी होती है । इस मरु भूमि के अधिक स्थल प्रस्तर मय वा रेतमय ऊसर भूमि हैं । इन में कोई सोता वा नदी नहीं । और जलके समीपी नगर वा ग्राम होते हैं इसलिये यहां वस्ती भी बहुत थोड़ी होती है । अरब और फारस में इसमरुस्थलका जो विस्तृत अंश है वह मालक्षेत्र अर्थात उच्च समतल भूमि है और उन की उच्चता समुद्रतल से १००० से ४००० फुट तक है । इन मेंरेत कम है और पत्थर बहुत है, और इन के बहुत स्थानों में नदियें बहती हैं, और भूमि उर्वरा है । मंगोलिया में जो मरु भूमि है उन में कुछ घास आदि नहीं होता है । उन को, शुष्क मालक्षेत्र कहना उचित है ।

एशिया के दक्षिण पूर्व भाग जिसमें चीनका दक्षिणभाग, प्रायद्वीप सारे भारतवर्ष और आर्किपिलेगो द्वीप समूह हैं उसकी प्रकृति दक्षिण पश्चिमस्थित मरु भूमि की प्रकृति से सम्पूर्ण विपरीत है अर्थात् यह बहुत आर्द्र है । इस में वृक्ष बहुत होते हैं, भूमि उर्वर है, और वस्ती भी बहुत घनी है ।

एशिया के बहुत अंश समुद्र तल के भी नीचे हैं जैसा कि मुर्दा झील वा डेडसी, जो एशिया के तर्किस्तान में है, समुद्रतल से १३०० फ़ुट नीचे है। और इस कारण जईनदी जो इस में गिरती है उसके तीरस्थ देश भी समुद्र से नीचे हैं। कास्पियनसागर समुद्रतलसे १०० फ़ुट नीचे है और यह भी प्रसिद्ध है, कि कास्पियन समुद्र के चारों ओर जो देश हैं वे थोड़े दिन हुए समुद्र से निकले हैं।

आरलसमुद्र समुद्रतलसे ऊंचा नहीं। इस का पानी भी कास्पियन और मुर्दा झील की नाईं लवनमय है। कास्पियन और आरल समुद्र अब क्रमशः शुष्क होते जाते हैं।

एशिया में बहुत समुद्र, खाड़ियें और खलीज़ हैं जैसाकि, पश्चिम में काला मारमोरा इज़ियन और लीवान्तसागर, नैर्ऋतकोन में एडियन की खाड़ी दक्षिण में अरब वा फ़ारस का समुद्र, मार्टाबान की खाड़ी; कच्छ और काम्बे की खाड़ी और मनार की खाड़ी। पूर्व में चीन सागर, पीला समुद्र, जापान का समुद्र तातारका खलीज, ओखटस्के समुद्र, अनादिर की खाड़ी और उत्तर में ओबे की खाड़ी और काला सागर,

एशिया में निम्नलिखित मुहाने हैं बाबुलमण्डप- लालसागर के प्रवेश का मार्ग है।

आर्मस— फ़ारस की खाड़ी के प्रवेश का मार्ग है।

मनार वा पाक्स— लंका और हिन्दुस्तान के मध्य में है।

मलाया का मुहाना — सुमात्रा और मलाया के बीच है।

फारमोसा — चीन और फारमोसा के बीच है।

कोरिया — पीले और जापान समुद्रों के बीच है।

तातार का मुहाना — चीनी तातार और सिंघालीन के बीच में है।

बेरिंग — एशिया और अमेरिका के बीच में है, यह १८ कोस चौड़ा है।

बेगाज़ — नोवाज़े म्ला और साईबीरिया के बीच में है।

मकासर — बोर्नियो और सिलेबीज़ टापुओं के बीच में है।

संडा — सुमात्रा और जावा के मध्य में है।

पर्वत

एशिया में,

हिमालय — भारतवर्ष के उत्तर, यह पर्वत पृथ्वी के सब पर्वतों से ऊंचा है इसकी सब से ऊंची चोटी गौरीशंकर जिसे अंग्रेजी में एवरेस्ट कहते हैं, समुद्रतल से — १९३२३ हाथ ऊंची है। हिमालय के और दो शृंग हैं। (१) कांचन जंघा जो समुद्रतल से ९७९६ हाथ ऊंचा है। (२) देवजंघा काकाशस पर्वत — कास्पियन — और काला सागर के बीच में है। इस की ऊंचाई ३०८२ हाथ है। अरारट — आर्मीनिया में, ऊंचाई २८९८ हाथ है

टारस पर्वत — फारस और मारमोरा के बीच में हैं। इस की बड़ी चोटी आर्गीस २९९६ हाथ ऊंची है।

मध्यस्थित पर्वत

धवलागिरि ९९२० हाथ ऊंचा। हिन्दुकुश — तातार और अफगानिस्तान के बीच में ३३२३ हाथ ऊंचा,

(१) अलबुर्ज —
(२) बलूरदाग —
(३) आलटीन —
(४) पूर्वीघाट,
(५) पश्चिमीघाट और (६) नीलगिरि येसब प्रसिद्ध पर्वत हैं ।

एशिया महाद्वीपमें आग्नेयपर्वत बहुत कम हैं परन्तु इसके समीपवर्त्ती द्वीपों में बहुत हैं । एक लंबी ज्वालामुखी पर्वत श्रेणी सुमात्रा और जावा में से होकर पूर्वस्थ द्वीपों तक विस्तृत है । थोड़े दिन हुए कि इन्में में से अग्नि निकली थी जिसने बहुत गांवोंका नाश कर दिया । दूसरी ज्वालामुखीपर्वत श्रेणी जापानद्वीपों में विस्तृत है । जिन्कीशाखा कमस्कटका प्रायद्वीप और एलूशियन द्वीपों में चली गई है ।

नदियां ॥

फ़रात — आर्मीनिया पर्वत से निकल कर रूम और फारस के बीचमें होकर फारसकी खाड़ी में गिरतीहै । इसपर बाबेलोन के खण्ड, अलेपो, बसोरा येप्रसिद्ध नगर हैं दिजला — तारस पर्वत से निकल ईराकअरब अर्थात मेसोपोटामिया मे होकर बसोरा नगर के उत्तर फ़रात नदीसे मिलजाती है इसपर मोसल बग़दाद ये दो बड़े नगर हैं । ओरेण्टस — लबानन के पर्वत से निकल कर सिरिया होके भूमध्यस्थसागर में गिरती है । इसपर आंटियक और हमा

स ये दो प्रधान नगर हैं ।

आमू वा जेहून — इसको पहले आक्सस बोलते थे । यह तातार में होकर आराल की झील में गिरती है इसपर खीवा नगर है । सेहून — इसे पहले जाकजाटिस पुकारते थे । तातार और चीनी तातार के मध्य से निकल कर यूराल सागर में गिरती है । इस पर अद्‌ना नगर है ।

हेलमंड — अफगानिस्तान से होकर यूराल झील में गिरती है । इसपर कन्धार नगर है । ये सब नदियां प्रसिद्ध हैं । और भी छोटी २ नदियां हैं ।

भारतवर्ष की नदियों का वर्णन भारत वर्ष के वर्णन में किया जावेगा ।

एशिया महा देश निम्न लिखित देशों में विभक्त हुआ है ।

संख्या	नाम	द्वीपसहित	वर्गक्षेत्र	मनुष्यसंख्या
१	भारतवर्ष	लंका	१६००,०००	२३८,०००,०००
२	गंगा के पूर्व का प्रायद्वीप	ऐंडेमन वा कालापानी	६५० ००	३०,०००,०००
३	आर्किपिलेगो वा द्वीपसमूह	फिलिपाईन	१०००,०००	२५,००००००
४	चीन	फारमोसा और हेनान	१६००,०००	४२५,०००,०००
५	जापान	——	१५०,०००	३,३,०००,०००
६	मंगोलिया	— — — —	२,३००,०००	२०,०००, ०००
७	अफगानिस्तान बलोचिस्तानसहित		४००,०००	६,०००, ०००
८	फारस	——	६५०,०००	४,५००, ०००
९	अरब		१,२००,०५०	८,०००,०००
१०	तुर्किस्तान	सैप्रस	६६०,०००	१६,०००,०००
११	तातार		७००,०००	२,०००,०००
१२	साईबीरिया और मार रूसिया	सिंघालीन	६,१००,०००	११,०००,०००

एशिया में प्रधानतः दो प्रकारकी मनुष्य जाति दीख पड़ती हैं। १ प्रथममोंगोलियन, दूसरी ककेशियन। चीन, पूर्व्वी प्रायद्वीप, मोंगोलिया सार्इबिरिया और तर्कीस्तान इनकेनिवासीलोग मोंगोलियन जातीयहैं। भारतवर्ष, अफगानिस्तान, फारस, अरब और आर्मेनियाके निवासीलोग ककेशियनजातीयहैं।

मोंगोलियन औरसिंहलद्वीपके निवासी लोग बौद्ध धर्म्मावलम्बीहैं। भारतवर्षके निवासी लोगोंमेंसे हिन्दु-धर्म्मावलम्बीबहुतहैं और बाकी समुदय मुसलमान हैं।

भारतवर्ष

एशिया के दक्षिण में तीन प्रायद्वीप लक्षित होते हैं; (१म०) अरबका प्रायद्वीप, (२य) भारतवर्ष, (३य) पूर्व्वीप्रायद्वीप। भारतवर्ष इनके मध्यमें है। भारतवर्ष की लंबाई कुमारीअन्तरीय से हिमालयतक २,००० मील के लग भग है और चौड़ाई उसकी १,५०० मीलके बराबर है।

भारतवर्ष के उत्तरमें— हिमालय पर्व्वत है, जो तिब्बत से इसको पृथक् करताहै, इसका प्रधान वाटरशेड वा अपवाहिका सारे उत्तर भारतवर्षको व्यापरहाहै और उसकी ऊंचाई समुद्रतलसे १९,००० फुटके बीचमें है। भारतवर्ष के उत्तर पूर्व्वमें ब्रह्मदेशहै। भारतवर्षसे ब्रह्मदेशतक एक जंगलमय पर्व्वत विस्तृतहै, जिसमें मनुष्योंकी बस्ती बहुत थोड़ी है।

इसके— पूर्वमें बंगालेका सागर, दक्षिणमें भारतसमुद्र और लंकाद्वीप जो पाकके मुहानेके द्वारा भारतवर्षसे पृथक हुआ है, पश्चिममें अरब सागर, बलोचिस्तान, और अफगानिस्तान है।

भारतवर्षको साधारण भाषामें हिन्दुस्तान कहते हैं। इसनामका कारण आजकलके पण्डित लोग नाना प्रकारसे निर्देश करतेहैं। कोईकहते हैं कि फारसीमें हिन्दु शब्दका अर्थ काला है। जब मुसलमानलोग इसदेशकोजीतने केलिये आए उन्होंने इसके रहनेवालेंको काला देखकर इसकानामही हिन्दुस्तान अर्थात् "काले मनुष्योंकादेश" रक्खाहै। कोई कोई कहतेहैं कि, सिन्धुशब्द से हिन्दु बनाहै, और "हिन्दुस्तान" का यथार्थ अर्थ सिन्धुनदीके तीरवर्त्तीदेश। परन्तु भारतवर्षके निवासियोंमें इसकाउत्तरपश्चिम प्रदेश हिन्दुस्ताननामसे प्रसिद्ध है, और "हिन्दुस्तानी" इसनामसे उसी प्रदेशके रहनेवाले कोही जाना जाताहै, बंगाला, पञ्जाब वा अपर किसी प्रदेशके रहने वाले को नहीं।

भारतवर्ष का दक्षिण भाग, जो जिह्वाकीनाईं क्रमसे सूक्ष्म और लंबाहुआहै, एकमात्र तेत्र वा उच्च समतल क्षेत्र रूप है, । और पूर्व तथा उत्तर पूर्वदिशाके ओर क्रमसे प्रवण है, इस लिये इसका सबसे ऊंचा अंश पश्चिम भाग ही है, जहां पश्चिमघाट पर्वतश्रेणी समुद्रकूलके साथ समानान्तरालरूपसे एक सीधीरेखामें विस्तृत हुई है, और उससे ५० मीलकीदूरीपरहै। उसपर्वतश्रेणीकेद्वारा कुमारी

अन्तरीपसे तापीनदीतक उस प्रायद्वीपका वाटरशेड वा अप वाहिका बना हुआ है। यह पश्चिमघाट पर्वतश्रेणी समुद्र-तलसे ४००० से ६,००० फ़ुट तक ऊंची है । इसका प्रधान निम्नभाग कैम्बाटुरकी घाटीपर है, जहां वह वाटरशेड भी समुद्रतलसे २,००० फ़ुट ऊंचे किसी नतमध्य भूभागमें मग्न हुआ है । यह स्थान सैनिकसञ्चारके लिये बड़ा उप-योगी है, क्योंकि इस्के द्वारा लोग शीघ्रही पूर्वसे पश्चिममें जासक्ते हैं । अब मदरासमे बेपुर और कालीकटमें जो रेल गई है वह इसी घाटीके बीचसे होकर गई है । इस-स्थानके अव्यवहित उत्तरमें नीलगिरिके पर्वत हैं । ये पर्वत पश्चिमघाट पर्वतके पाद अर्थात् प्रत्यन्त पर्वत हैं, और समुद्रतलसे ८६०० फ़ुट ऊंचे हैं । दक्षिणमें ये सबसे ऊंचे पर्वत हैं । प्रायः इसके समान ऊंचा और एक पर्वत त्रिवांकुरमें दीख पड़ता है ।

दक्षिणका मालक्षेत्र पूर्वीघाट पर्वतोंके ओर क्रमसे झुका हुआ है, और कारोमण्डल उपकूलके समतल क्षेत्रमें एकवेरही बहुत नीचा होगया है । इस मालक्षेत्रके कारो-मण्डल उपकूलमें ऐसा नीचा होनेसे पूर्वीघाटपर्वत भी समुद्रकूलके साथ थोड़ा बहुत समान्तराल हुआ है । परन्तु मालबार कूलसे पश्चिमघाट पर्वत जितना दूर है, पूर्वीघाट पर्वत कारोमण्डलसे उससे भी अधिक दूरवर्त्ती है । पूर्वीघाट और कारोमण्डलके बीच जो स्थान है उसे करनाटक कहते हैं । इस स्थानमें चावल अधिक उत्पन्न होते हैं । संस्कृतमें पश्चिम घाटको सह्य और पूर्वीघाटको

महेन्द्रपर्वत कहते हैं ।

यदि विचार पूर्वक देखा जावे तो दक्षिण मालदेश मध्यदेश (सेंट्रल इण्डिया) और छोटानागपुर होके राजमहलतक (जोकलकत्तासे २०० मील उत्तरमें गंगाजीके कनारेपर है) विस्तृत हुआहै । इसस्थानकी ऊंचाई साधारणतः समुद्रतलसे १५०० फ़ुट है, और उसके पास जो जो देश आए उनके सामने कीभूमि एक २ ऊंचे हला-दिशून्य पहाड़की भांतिदीखपड़तीहै । बंगाले में ऐसे जितने पहाड़ हैं, उनमेंसे छोटानागपुरस्थित पारसनाथ का पहाड़ सबसे ऊंचाहै । इसकी ऊंचाई समुद्रतलसे ४,००० फ़ुट है । इसप्रदेशमें पूर्वोक्त प्रकारके पहाड़ असंख्य दीखपड़तेहैं परन्तु पारस नाथ पहाड़के समान ऊंचा औरकोई नहीं । वहांसे कैम्बाटुरतक रास्तेमें वैसे पर्वत बहुत दीख पड़तेहैं । भारतवर्षकादक्षिणभाग यद्यपि बहुत विस्तृतहै, तथापिउसे एकही देश कहना उचितहै क्योंकि उसकी प्रकृति सबस्थानोंमें एकही प्रकारकीहै और समुदयस्थानोंमें एकही जातिके उद्भिद औरजीवदेखने में आतेहैं ।

बहुत लोग समझतेहैं कि, दक्षिणमाल क्षेत्र उत्तरमें तापी और नर्मदाके पुलिन वर्ती देशोंमें ही विश्रान्त हुआहै परन्तु वास्तवसे पूर्वोक्त पुलिनदेश उसमालदेशका, किसी कारण से उत्पन्न, एक विच्छिन्नभागमात्रहै क्योंकि वही मालदेश नर्मदाके थोड़ेउत्तर में फिर अपनीसम्पूर्णप्रकृति के साथ मालवाके मालदेश नामसे दीखताहै

उसदेशकादक्षिणभागविन्ध्याचलनामसे प्रसिद्ध है । भारतीय प्रधान मालदेशके पश्चिम में जैसा प्राचीरकीनाईं उच्चअंशहै, उत्तरमेंऐसानहीहै । यह देश उत्तर पूर्वमें गंगाजीके ओर क्रमसे ढलता हुआहै, और इसमें जोपर्वतहैं वेभी अपनी २ उपत्यकाके साथ उसीदिशामें विस्तृत हैं । औरगंगाजीके तटकोसमकोणमें काटते हैं ।

भारतवर्षकी अवशिष्टअंश जिसे भारतवासी हिन्दुलोग हिन्दुस्तानकहतेहैं, वह एकसमतलदेशहै औरदक्षिणात्यमालदेश औरभारतवर्षकी उत्तरसीमाकेबीचमें विस्तृतहै। यहदेश कलकत्तासे दीलीतक थोड़ा २ करकेऊंचा हुआहै इसलिये दीलीसे लाहोरजानेकी रस्तेमें गंगा और सिन्धुनदीके बेसिन अर्थात स्रोतोंकेबीच जोवाटरसेड (अपृथक्तिका) है, वहअच्छीतरहलक्षित नहीं होताहै । यह देश बालवसे समुद्रतलकी अपेक्षा प्रायः १,००० फुट ऊंचा परन्तु इसके उभय पार्श्व ऐसे ढालुहैं कि, यदि कोईमनुष्य इसके एकपार्श्वसे चढ़कर दूसरे पासमे उत्तर जावे तो उसकी दृष्टिमें इसकी ऊंचाइति कुछभीनहीं लक्षित होगी ।

यह हम पहिले कहचुकेहैं किपश्चिम एशियाकामरुस्थल भारतवर्षतक विस्तृत है और उसके अन्तर्गत सिन्धुदेश और पञ्जाब के दक्षिण और पश्चिम प्रदेशहैं । उसमरुस्थलके जो अंश सिन्धु तथा अपर नदीयोंके कनारे परहैं वे बहुत उर्व्वरहैं और उनमें चावल बहुत उत्पन्न होतेहैं, परन्तु एकनदीकेकनारेसे दूसरी नदीके कनारे तक जोस्थान हैं वेहलस्थूल, शुष्क, उष्ण औरबालुकामयताम्रवर्णमयहैं ।

भारतवर्षकी भूमिसंश्लिष्टसीमा प्रकृतिसे ही निर्दिष्ट हुईहै । उत्तरपर पर्वतश्रेणी ऐसी परस्पर मिलित होकरचलीगई हैं कि, उनके भीतरसे सैनिक सञ्चारकेलिये कोई अच्छा पथ नहीं दीखपड़ता । समुदय हिमालय पर्वत श्रेणीकेबीच कोई ऐसा पथनहीं जिसके द्वारा आजकालके सैनिकदलतोपखानासाथलेके जासके । उत्तरपश्चिमके प्रान्तमें केवल दो संकीर्ण पथदीखपडतेहैं । एक खाईबरकीघाटी, जिसकेबीचसे लोग पिशावरसे जलालाबाद जातेहैं; दूसरी बोलनकी घाटी, जिसकेबीचसे लोग क्वेटा होकर कन्दाहारमें जातेहैं । उत्तरपूर्वके प्रान्तमें एक पथहै, जो आसामकी पूर्वसीमासे ब्रह्म देशके उत्तरमें जाताहै और इसीरास्तेसे पहिले ब्रह्मदेशीय लोग आसाममें सैन्यभेजतेथे । इसके थोड़े ही दक्षिणमें बड़े २ पर्वतदीखपड़तेहैं जिनकी ऊंचाई कमसे कम २०,००० फुटहै । उसस्थानसे थोडेहटके पीछे चिटागांव वा चट्टग्रामके दक्षिण में भारतीय प्रान्त अनेक ऊंचे २ पर्वतोंसे घेराहै जो उत्तर दक्षिणमें लम्बे हैं । इन पर्वतों के कारण उसरस्तेसे कोई शत्रु भारतभूमि पर नहीं चढ़ाई करसक्ताहै ।

भारतवर्षका समुद्रकूल लम्बाहोके चलाहै । उसमें ऐसे बडेबन्दर बहुतथोड़ेहैं, जहां एककालमें बहुतजहाज रहसके । पूर्वमें चिटागांववाचट्टग्रामकाबन्दरहै, जिसमें बहुतहीथोडे जहाज़ आसक्तेहैं; कलकत्ता जोसमुद्रकूलसे८० मील उत्तरमें है, इसमें जहाज़ लेजाने में बडाश्रम और व्यय होताहै । कारोमण्डल उपकूल में जितने बन्दरहैं उनमें सम-

पश्चवायुके द्वारा बहुतजहाज़ नष्टहोते हैं। लङ्काद्वीपमें ट्रि कोमालीकाबन्दर सबसे अच्छाहै, इसमें मानोयारी जहाज़ निरापद्में रहतेहैं परन्तु उससे भारतवर्षको कुछ उपकार नहीं पंहुचताहै। मालाबरके उपकूलमें कचिन, कालीकट और मेंगलोर येतीन प्रसिद्धबन्दरहैं परन्तु उनसे वाणिज्य की कुछ उन्नतिनहीं होतीहै। बुंबई सूरत और भरोच ये भी बहुत अच्छेबंदर हैं। बुंबई यहशब्द "बुयन" और बहिया" इनदो पर्त्तुगिजशब्दोंसे बनाहै। पर्त्तुगिजोंनेही यहां पहिले बन्दर स्थापितकियाथा। वाणिज्यकेलिये कलकत्ता और बुंबई, ये दो मुख्य बन्दरहैं, उनकेनीचे कराची भी आजकाल प्रबल हुआहै।

इस देशका नाम भारतवर्ष इसलिये हुआ कि, ऋषभदेवका ज्येष्ठ पुत्र भरत राजाने यहां प्रथमराज्य किया।

पर्वत

भारत वर्षमें ये पर्वत प्रसिद्ध हैं —

(१) हिमालय पर्वत — यहपर्वतभारत वर्षके उत्तरमें पूर्वसीमासे पश्चिमसीमातकविस्तृतहै। यह पर्वत औरपर्वतोंसे ऊंचाहै इसलिये इसे पर्वत राजकहतेहैं। इसकी लंबाई ७५०कोसहै औरचौड़ाई७५कोससे १२५ कोसतक है। हिमालयका प्रधानशृंग पवरेष्ट वागौरीशंकर जिसे देवढुंगाभी कहतेहैं २९००२ फुट ऊंचाहै। यहशृंग नेपालके राज्यमें है, समुदय पृथिवीमें इसकेसमान ऊंचा औरकोई पर्वत शृंग नहींहै*।

* अनुमान होताहै कि पूर्वकालमें इसका नाम गौरी शिखरथा।

क्किममें काञ्चनजंघानाम और एकशृंग है जिसकीऊंचाई समुद्रतलसे २८१५६ फ़ुट है। नेपालस्थितधवलगिरि और भोटाम स्थित मनुकारी प्रभृति हिमालयके औरभी अनेक ऊंचे २ शृंगहैं।

भारतवर्षकीओर हिमालयके पाद अर्थात् प्रत्यन्त पर्वत अनेक दृष्ट होते हैं। जो मुख्य हिमालय श्रेणीसे प्रायः सर्वत्रही ४० मीलसे कम दूरीपर नहीं रहते हैं। मुख्यहिमालय और उसके पाद पर्वतोंके मध्यमें जोस्थान है उसमें बहुत स्वाधीन राज्यहैं, जैसाकि काश्मीर, नैपाल और भुटान इत्यादि। हिन्दुस्तानके उत्तरमें हिमालय के पादपर्वत जिससमतल क्षेत्रसे ऊठेहैं, उसे तराई कहतेहैं। यह स्थान बहुत आर्द्र और जंगलमय है।

सुलेमान— भारत वर्ष की पश्चिम सीमामें है। यह उत्तर दक्षिणमें १७४ कोस विस्तृत है। इसका प्रधान शृंग तान्कीसुलेमानहै। विन्ध्याचल— यहपर्वतभारतवर्षकेमध्यमें हिमालयकीनाई पूर्वसे पश्चिमतकविस्तृतहोकर भारत वर्षको— दोखण्ड करताहै। विन्ध्य और हिमालय के बीचमें जोस्थानहै उसेआर्य्यावर्त्तकहते हैं। विन्ध्यकाभी चित्रकूट, किस्किन्धा आदि ऊंचे शृंगहैं। इन पर्वतों के सिवाय भारतवर्षमें कितनी एक छोटी पहाडियांभीहैं। उनमे से नैपाल, राजमहल, त्रिपुरा खसिया रामगढ़की पहाड़ियां प्रधान हैं।

नदी

भारत वर्ष की प्रधान नदियें सिन्धु, गंगा, यमुना, ब्रह्म

त्र, नर्मदा कृष्णा, कावेरी, माही, पीनार, तापती, महानदी, गोदावरी, सुवर्णरेखा ब्राह्मणी प्रभृति हैं ।

सिन्धु— तिब्बतकी सायक और सिंघवा त नामदो छोटी नदियों के मिलने से उत्पन्न होकर अरबसागर में गिरती है । इस कीसहायक नदियें काबुल, कुनार, सतलज ब्यास रावि चेनाव और झेलम येहैं । सतलुज, ब्यास, रावि, चेनाव औरझेलमयेपंचपञ्जाबकीप्रधाननदीयांहैं संस्कृतमें इनको क्रमसे शतद्रु, विपाशा, ऐरावतीचंद्रभागाऔरवितस्ताकहतेहैं । येसमभी हिमालय से निकलतीं हैं । पञ्जाबकीराजधानीलाहोर राविकेतटपरहै । इसपर करांची बंदर, हैदराबाद खीरपुर शिकारपुर, डेरहगाजीखां, डेरहइस्माईलखां, कालाट, और अटक ये नगर हैं ।

नर्मदा— गंडवाना प्रदेश में उत्पन्न होकर मालवा और राजस्थानके बीच से पश्चिमकी ओर ३७५ कोस जाकर काम्बे की खाडी में गिरती है । इस पर भडोच होशंगाबाद जबलपुर और मराडुला ये नगर हैं ॥

तापीवा तापती— सतपुडी पर्वतसे निकल कर काम्बे की खाडी में गिरतीहै । इसपर सूरत बुरहानपुर और नसीराबाद ये नगरहैं । कावेरी— पश्चिम घाट से निकल कर मैसूर और कर्नाटक प्रदेशों से बहकर बंगाले की खाडी में गिरतीहै इस पर श्रीरंगपट्टन तंजोर त्रिणापट्टन, कारिकल, त्रिचनापल्ली और मैसूर ये नगरहैं ।

कृष्णा = पश्चिमी घाट से निकल कर ३५० कोस घूमकर मछलीपट्टन के पास बंगाले के सागर में मिलतीहै ।

इसपर कोलापुर, सितारा, मछलीपट्टन और गंतूर येनगरहैं। गोदावरीयहनदी उसीपर्वतसे निकलकर प्रायः हिन्दुस्तान के दाक्षिणात्य प्रायद्वीप की सम्पूर्ण चौडाई में विस्तृत होकर बंगाले की खाडीमें गिरतीहै । इसपर राजमहेन्द्री और करिंगा येदोनगरहैं महानदी—नागपुर के पर्वतोंसे निकलकर कटक के समीप बंगाले के सागर में गिरती है । लंबाई इसकी २२५ कोसहै । इसपर कटक और बालेश्वर नगर हैं।

जमुना—एक सहायक नदी हिमालय से निकल कर दिल्ली और आगरे में होकर इलाहाबाद के नीचे गंगासे मिलतीहै । जहां गंगा औरयमुनाकामिलापहै वहांका नाम प्रयाग तीर्थ हैं । इसकीलंबाई २०० कोसहै । इसपर दिल्ली, आगरा, मथुरा, और इलाहाबाद येनगर हैं । जमुना औरगंगाके मध्यमें जोस्थानहै उसेदोआब कहते हैं । गंगा—हिमालयसे निकलकर ७०० कोस बहकर बंगाले के सागर में गिरती है हरिद्वार फर्रुखाबाद, कानपुर, इलाहाबाद बनारस राजमहल औरकलकत्ताआदिनगरइसकेतटमेंहैं।इसकी सहायक नदियें येहैं गोमती सरयू, घाघरा, सोन और काली; गंगाकी शाखा नदियें येहैं। भागीरथी जिलंगी और हुगली । गंगा का मूल स्रोत जो छापखाटीके मुहानेसेसमुद्रप्रभृति के नीचे होकर बहतीहै उसे पद्मानदी कहते हैं । फिर यह ब्रह्मपुत्र के साथमिल कर जब आगे बहतीहै तब इसे मेघनाकहते हैं । ब्रह्मपुत्र = तिब्बतके पर्वतोंमें से निकलकर आसाम और बंगाले में होताहुआ बंगाले के सागरमें गिरताहै । लंबाई इसकी ७७५ कोस इसपर लासा छोहाटी सिलमारी येनगर

रहें । ईरावती— तिब्बतके पर्बतसे निकल कर ब्रह्मदेश में होकर बंगालेके सागरमें गिरतीहै । इसकी लंबाई ६०० कोसहै ।

रेलवे

नदी की नाईं रेल से भी वाणिज्यद्रव्य एकदेशसे दूसरे देश में जाता है । इस लिये नदियों के पीछे उन्कावर्णन किया जाता है ।

भारतवर्ष में इतनियांरेलाबनीहै

(१) कलकत्ते से दिल्लीतक (दी ईस्ट इण्डियन)

(२) दील्ली से लाहौरतक । वहांसे मुलतानहोकर कराचीतक।

(३) देहलीसे अजमेर होकर बुंबइतक

(४) इलाहाबादसे, जब्बलपुर से होकर बुंबईतक

(५) कलकते से गूलण्डातक (पद्मापर)

(६) बंबई से मध्य हिन्दुस्तानतक

(७) बुंबई से, पूना होकर, मदरासतक

(८) मदरासमे (काइम्बाटूरहोकर) कलीकटतक

(९) कोलम्बू से कागडीतक (लंकामें) ॥

झील

भारत वर्षमें छोटी २ झीलें तो बहुत हैं परन्तु उन्में से नीचे लिखी हुई बहुत प्रसिद्ध हैं ।

चिलका झील वा चिलका ह्रद— उडीसाके ईसानकोण में समुद्रके समीपस्थित है ॥

पलिकाट— मंदराज के उत्तरमें है । रन कच्छप्रदेश में है । इसका परिमाण १६९७ वर्गकोस है । इसकाजल

लवणमय और थोड़ा है । इसके चारो ओर कोई हरियाली न देखने से भय लगता है ।

राजपूताना में सेनार, देवट, पुस्कर, और सीरपे झीलें हैं। झावर — उत्तर सर्कारमें है । मान सरोवर हिमालय के ऊपर है । कास्मीरमें बहुत झीले हैं, उन मेंसे वुलेरसबसेप्रसिद्ध है । आसामकेपूर्वमें ब्रह्मकुण्डनामझीलहै, जहांसे ब्रह्मपुत्रनिकलताहै ।

समुद्रोंके वर्णन में

१ बंगाले का सागर — जो हिन्दुस्तान और पूर्वी आद्यद्वीप के मध्यमे हैं

२ अरब सागर — भारत वर्ष के पश्चिममें है ।

खाड़ियां

१ कच्छ की खाडी जो गुजरातके वायुकोनमें है ।

२ काम्बे की खाडी — गुजरातके ईसान कोनमें है

३ मनार — भारतवर्ष के दक्षिणमें

४ पालस — उड़ीसा के पूर्व में ।

उपकूल और उनके नगर

१ पूर्वी और पश्चिमी उपकूल; पहले का नाम कारोमण्डल है, जो कृष्णा नदी के मुखसे कुमारी अन्तरीपतक मिलता है । दूसरे का नाम मालबार जो मुंबई से कुमारीतक है । पहले में गंजाम विजगापट्टन, मछलीबंदर, मंदराज, पांडुचेरी पोर्टनमो इंकीबार और कारिकाल ये नगर हैं । पश्चिमी उपकूलमें करांचीबंदर कलिकाट, माही, टेलीचरी, कनानोर मंगलोर गोआ बंबई और सूरत प्रसिद्धनगर हैं ।

मुहाना

पाक — भारतवर्ष और लंका केबीच है ।

पंबिन — वहां हीहै ।

प्रायद्वीप

दक्षिणहिन्दुस्तानका प्रायद्वीप अर्थात् भारतवर्ष का दक्षिणभाग, कारिमाट, कांबे और कच्छके बीचहै । कच्छ सिन्धु का दक्षिणभाग और गुजरात का दक्षिण भाग येसब प्राय द्वीप हैं ।

द्वीप

बूट द्वीप — गुजरातके वायुकोनमें ।

डयू — गुजरातके दक्षिण में ।

पारिम — नर्मदाके संगमके सन्मुखमेंहै ।

बंबई सालसिट अलफिटा और करिंगा — पश्चिम उपकूल के साम्हने है ।

सो मरत, इंगेस त्रि, दुर्ग — गोआके उत्तर दक्षिण ओर है ।

लंका — भारतवर्ष के दक्षिणमें है ।

लाक्षिप्रभृति कईएक छोटे२ द्वीप मालवाके सन्मुखहैं ।

वाईजन — विजगापट्टनके समीपहै ॥

सागर द्वीप — हुगलीनदी के संगम पर है ।

सवजपुर, हतिया मानकूर येद्वीप मे घना नदीके संगमपर ।

मास्कल कुतवदी, रेडक्राव — चट्टग्राम के समीपहै ।

आयस्टर — (शुक्तिद्वीप) और बलंबा द्वीप — अराकान नदीके संगम परहै ।

रामरी, चेडू — अराकान उपकूल पर है ।

मालद्वीप — कुमारी अन्तरीपके पश्चिममें है ।
लाक्काद्वीप — मालाबार के पश्चिममें, नीकोबर श्रोर इंडेमन सामके पश्चिममें हैं ।
सिंगापुर— मलाया के दक्षिणमें है ।
कुलपीनांग— मलायाके पश्चिम ।

मालवदेश श्रोर मरुभूमि.

भारतवर्ष के मालवदेश देखने में बहुत सुंदर हैं । दक्षिणात्य देश के बहुत स्थानों श्रोर छोटा नागपुर प्रभृति प्रदेशों में ऐसी भूमि बहुत है । विन्ध्याचलपर्वतके समीप अमरकंटक श्रोर मालवदेशहैं । इनमें से किसी २ की ऊंचाई २५०० फ़ुट से— अधिकहे

भारत वर्ष में सिन्धुप्रदेश श्रोर राजपूताना की मरुभूमि ऐसीहीविस्तृतहै।

अन्तरीप

कांउप— सिन्धप्रदेशमें है ।
अमत, पथरकू श्रोर डू — गुजरातमें है ।
मारमगाम — गोआकेपास ।
रामास— गोआके दक्षिण ।
मेडाडिली— कनाडाके नैर्ऋतकोनमें ।
कुमारी — भारत वर्षके दक्षिण ।
कालिमिपर — कावेरी नदीके संगमपर ।
डुलफिन — विजिगापट्टन में ।
फाल्स पथर — महा नदीकेसंगम के निकट ।
पालमीरा — ब्रह्मभद्र नदीके संगमपर ।

ने ग्रीस— पेरू के दक्षिण ।

। भारतवर्ष के स्वाभाविक आकार, दृश्य और शोभा का वर्णन ।

भारत वर्ष बड़ा विलक्षण देश है । इसका स्वाभाविक आकार दृश्य और शोभा बड़ी आश्चर्य है ।

उत्तरभागमे— पूर्वसीमा से पश्चिम तक लम्बायमान हिमालय पर्वत धनुष की नांई भारतवर्ष को तिब्बत और अफगानिस्तान से पृथक करता है, दक्षिणमे— सरितपति ज्या की नांई शोभायमान है । मध्यमे — विन्ध्याचल, इमिर्द्ध प्राचीर की नांई खड़ाहोकर इस देशको दो भागों में बांटता है। दक्षिण में समुद्र के तीरपर दो घाट पर्वत दो मत्त हाथी की तरह देदीप्यमान है । पश्चिम में मुलतानसे लतार तक और सतलजसे कच्छ तक दो पर्वत श्रेणी प्रवाह स्थित हैं । दिल्लीके समीप रुद्रपुर और अलमोरा के बीच एक १० कोश विस्तृत मरु भूमि देखनेमें आती है । सिन्धुप्रदेशमें केवल रेतसे भरा हुआ मरुदेश जिससे समय २ उत्तम दक्षिण वायुके द्वारा रेतराशि उड़कर समीपस्थित गढ़ और देशादि को आच्छन्न करती है । नदियों के संगम और तट के निकट स्थितभूमि प्रायः हल दल और खेतीके लिये बहुत उपयोगी होती है । भारतवर्ष में घूमने से कहीं २ हिमगौरपर्वतश्रेणी कहीं तरंगित शैलश्रेणी. कहीं आकाश भेदकारी तुषाराछन्न आसन्न शिखर समूह. कहीं समतल क्षेत्र. कहीं निम्नतल भूमि, कहीं वेगवती नदी और कहीं छोटी २ नदी इत्यादि नाना प्रकार दृश्य नयनगोचर होते हैं । सिवाय इ-

स्के यहां प्रायः सर्वत्र ही फलभरावनत, पल्लवपुष्पों से सुशोभित नाना वृक्षलतादि और हरितवर्ण घासों से परिपूर्ण देश सकल देखे जाते हैं अधिक क्याकहें मानो विधाता ने भारतवर्ष को समुदय पृथ्वी का एक प्रतिकृतिस्वरूपबनायाहै ।

भूमिका वर्णन

भारत वर्ष की भूमि सब जगह एकसी नहीं है । नदियों की तटस्थ भूमि प्रायः उर्वरा होती है, और स्थानों की भूमियद्यपि कठिन और कर्दम मय है परन्तु एक बार वर्षा होने से बहुधा उर्वरा होजाती है । गंगा नदीके तीरस्थित और संगमकी भूमि बहुत उर्वरा है । पंजाब की भूमि बंग देश की तरह सुंदर खेती करने के लिये बहुत उपयोगी है । सिंधु और गुजरात की भूमि रेतली है इसलिये उर्वरा नहीं । मालवे की भूमि उजाड़ है औरकाली है । उड़ीसा और गोंडवानाकी भूमि उर्वरा नहीं है । मालबार और कारो मांगडलकी भूमि रेतली है यहां अच्छी तरह खेती नहीं उपजती ।

जलपवन

भारतवर्ष बहुत बड़ा देश हैं । इसी कारण यहां की जलपवन सब स्थानोंमें एक सी नहीं है । हिमालयसे दक्षिण बंगाले तक जलपवन की बहुत विभिन्नता देख पड़ती है । यूरोपकी अपेक्षा भारतवर्ष उष्ण है । यहां किसी २ स्थान में तीन महीने निरन्तर धूप का ऐसा आधिक्य होता है कि मिट्टी निरस और सूख जाती है और खड़, स्रोते (अर्थात् छोटी २ नदियां) आदि सूख जाती हैं कभी २ बड़ी २

नदियां सोतों की तरह होजाती हैं। हिमालय पर्वत के समीप जो प्रदेश है वहां शीतकाल में ऐसी बर्फ पड़ती है कि सूर्य्योदयके दो तीन घंटे पीछे सूर्य्य दीख पड़ताहै। इन सब स्थानों में वायु की उष्णताप्रधानता विशेष रूपसे अनुभूत होतीहै। भारतवर्ष के बीच जो भूमि समुद्रसे अति प्राय निम्न तलहै। वहां की वायु सर्वदा उष्णाई होतीहै परन्तु करनाट की निम्न तल भूमि की ओर उत्तरसर्कार- की वायु अत्यन्त उष्ण है। इन दोनों प्रदेशों में जैसा ग्री- ष्मऋतु का अनुभव होता है भारतवर्षमें ओर कहीं ऐसा नहीं होता,। मालवे की वायु बहुत शीतोष्ण नहीं हैं,।

दिल्ली प्रदेश में ग्रीष्म के समय जैसा गर्मी का आधि- क्य होताहै शीत काल में शीत का भी ऐसा ही आधिक्य होता है ग्रीष्म वर्षा ओर शीत ये तीन ऋतु ही भारतवर्ष में अधिक अनुभूत होती हैं। ऋतुभेदके साथ इसदेश में वायुकीनानाविध गति अनुभूत होतीहै। इसदेश के बीच मैन्सूननामक एक आश्चर्य्य रूप वायु बहती है। यह वायु दक्षिण पश्चिम ओर उत्तर पूर्वसे बहती है मल- बार उपकूलमें दक्षिण पश्चिम मॉन्सून चैत महीनेके अन्त से लेकर आश्विन तक बहती है। ओर कार्त्तिक के प्रारम्भ से उत्तर पूर्व मान्सून बहने लगती है। इसी समय से लेकर अग्रहायण मासतक जहाज के जाने आने में बड़ी कठिन- ता होतीहै प्रायः सारे पश्चिम उपकूल में ओर सिंधुनदी के संगम पर मान्सून वायु बहतीहै पूर्व ओर पश्चिम उपकूल में जब मान्सून चलने लगती है तब एक प्रकार की वर्षा

वायु बहने लगती है ॥

खेतियों का वर्णन

भारत वर्ष में नानाविध धान्य उत्पन्न होते हैं उनमें से चावल, जौ और गेहूं भारतवासियोंका प्रधान अन्न है। ये सब अन्न इतने होते हैं कि अन्यदेशों में ले जाने परभी यहां बहुत दुःख नहीं होता। इनके सिवाय मक्की, चना, मोठ, मूंगी इरहर इत्यादि उत्पन्नहोते हैं। बंगाले में बहुतसा नील उत्पन्न होता है। मालवा बिहार और बनारस में अफीम बहुत होतीहै अवध और गंगाके समीपस्थ देशोंमें रुई बहुत उत्पन्न होती है परन्तु सूरत, और नाग पुर देश की रुई बहुत उत्तम है। आजकल हिमालय के आसपासमें भी रुई बहुत होती है। भारतवर्ष के अनेक स्थानों में सन पाट बहुत ही उत्पन्न होती हैं। यहां सन और तमाकू विशेषकरके उत्पन्न होते हैं। आलू, सकरकंद, औरकालीमिर्च, लालमिर्च, हलदी, दारचीनी, इलायची, प्रभृति बहुत प्रकारके मसाले कईएक और नानाप्रकारकी बूटियां यहां बहुत परिमाण से उत्पन्न होती हैं। इनके सिवाय आम, कटहर, जामन, अनार, अंगूर, अमरूत, केला, बड़हल, अमली, खजूर, नारियल, निम्बू सन्तरे इत्यादि नाना स्वादु फल उत्पन्न होते हैं।

असाम कछहड़ और उसके आसपास और २ प्रदेशों में चाह की खेती होती है मलबार औरत्रिचनापल्ली की काफी(कहवा) [illegible] गाजीपुरका गुलाब का अर्क और अतर बहुत प्रसिद्ध है। भारतवर्ष के जंगली पेड़ों में से साल

शिसम आबनूस और देवदारु इत्यादि वृक्ष बड़े २ और लाभ
कारी होतेहैं नर्मदा नदी के समीपस्थित किसी द्वीप में एक
प्रकार का पिप्पलकावृक्षहोताहै जिसकी १००० के तुल्य शा-
खा होतीहैं और इसके नीचे प्राय: ७००० मनुष्य बैठ सक्ते-
हैं भारतवर्ष में चन्दन काष्ट बहुत होताहै

खानी द्रव्य

भारतवर्षकी खानों में नानाप्रकार बहुमूल्य धातु
उत्पन्न होतेहैं बुंदेलखंड और गोलकुंडा में हीरों की
खानें है सम्भलपुर से ४ कोस पूर्व हीराखंड नामकस्था
न में बहुत हीरे मिलते हैं कुमायुं और मैसोर में सोना
पायाजाताहै मालबार में किसी २ नदीके जलमें कीचड़के
साथ बड़े छोटे २ सोने के अंश देखेजाते हैं आसाम में सि-
संग काकुई सोनदरी भैरवी और जाज इत्यादि नदियों में
शुद्ध सोनाबहुतायतसे मिलता है बिहार की सोन और
बरारकी महानदी और अयोध्याकी गोमती इत्यादि नदि
यों से बहुतथोड़ा सोना मिलता है करनाटक कमायुंप-
हाड़ बहु-तामें सोना बहुत मिलताहै इनके सिवाय ब-
हुत स्थानों में टीन तांबा शीशे का खाने हैं चनार के स-
मीप नाना प्रकार मार्बिल पत्थर मिलते हैं भारतवर्षके
बहुतस्थानोंमें सूर्यकान्त चन्द्रकान्त अयस्कान्त और-
पद्मराग इत्यादि मणियां और आभरनधातु पाई जातीहै।
बर्दवान के पश्चिम रानीगंज नामकस्थान में पत्थरी
कोयले की खान है राजमहल पैलामौ रामगढ़ कटक
सिलीहट के अन्तर्गत चिरापूंजीनाम स्थान में तथा आसा-

म अटक हरिद्वार और कच्छके किसी २ भाग में पत्थरी कोयले मिलतेहैं पंजाब में सैन्धव नमक और सम्भरह्रद में बहुत नमक मिलताहै राजपूताना और हनरवन में भी नमक उत्पन्न होताहै उत्तर पश्चिम प्रदेश और बिहार में शोरा बहुत उत्पन्न होता है लंका में समुद्र से बड़े २ मोती मूंगा निकलते हैं

जंगलीजीव

राजपूताना और गुजरात में सिंह देखाजाता है सुन्दरवन में बहुत बाघ होते हैं राजमहल के समीपस्थ जंगल में भी बहुतबाघहोतेहैं भारतवर्षके पूर्व और दक्षिणदिशा के मध्य में बहुत हाथी देखे जाते हैं बंगाले के जंगलों में गैंडा देखा जाता है उत्तर पश्चिम प्रदेश के बालुकास्थलोंमें बहुत ऊंटहैं इसके सिवाय भारतवर्ष में चीता रीछ बनगधे बन्यसूर नानाविध हरिन चमरी गाय गीदड़ लोमड़ी खरगोश श्वादीसमूह और वानर बहुतहैं । गाय भैंस भेड़ा बकरी सूअर कुत्ता बिल्ली इत्यादि बहुत ग्राम्य जीव गिने जाते हैं भारतवर्ष में नाना प्रकार के पखेरू और जहरी सांप डडू और कीड़े मकोड़े हैं ॥

शिल्पविद्या

हिन्दू लोग शिल्प विद्या में बहुत चतुर हैं उनका बनाया काशमीरी शाल और ढाकाकी मलमल बहुत सुंदर और अमूल्यहै हाथीदांत और सोना चांदी इत्यादि धातुओं के कामों में हिंदू और फारसियों के समान और कोई

नहीं है भारतवर्षमें रेशमी और पशमी कपड़ों के ऊपर ऐसाविचित्र सोने और चांदी का काम होता है कि देखने सेही चित्त मुग्ध होजाताहै कुमाऊं और दूसरे स्थानों में लोहेके उत्तम २ द्रव्य बनते हैं उनके सिवाय भारतवर्षके स्थान २ में छुरी कांची बंदूक चाकू तलवार नानाप्रकार लकड़ी काटनेका द्रव्य रसीलकड़ी द्रव्यकोविस रेशम गलीचे दरी चर्मकेद्रव्य पीतल कांसी के बर्तन नानाविध तेल उत्पन्न होताहै । गृहादि निर्माण विषय में भी भारतवर्षीय लोग चतुर हैं यद्यपि भारतवर्ष में बहुत अच्छे २ घर नहीं देख पड़ते तोभी जोकुछ है उसीसे उनकी बुद्धिमता जानी जाती है राजपूताना स्थित सुन्दर मन्दिर कोदेख के ज्ञान पड़ता है कि हिन्दूगण मिसर और यूनानियों से शिल्पविद्या में किसीतरह न्यून नहीं या फिर मुसलमानों के समय में भारतवर्ष में अनेक सुन्दर मसजिद तथा राजभवन और समाधिमंदिर बनेथे उनमें से शाहजहांबादशाहका बनाया ताजमहल सबसे प्रधानहै ताजमहलके समान गृह पृथवी में नहीं देख पड़ते यह ताजमहल अबतक आगरे में है अंगरेजों ने भी अब बहुत गृहादिबनाकर भारतवर्ष को सुशोभितकिया उनमें से जमालपुरकीटनल(सुरंग) ज नाव सतलज सोन जमुना और हुगली का पुल और कलकत्ता का किला सब से विख्यात है ॥

वाणिज्यद्रव्य ॥

भारतवर्ष से तम्बाकू चीनी पाट रुई लाख चावल गेहूं मक्की काफी शोरा पशम हाथीदांत औषधि दारचीनी

मिरच इत्यादिमसाले अतर इत्यादि सुगन्धित द्रव्य ढाके कीमलमल हीरा आदि बहुमूल्य पत्थर एरण्डकातेल कौड़ियां औरमोती ये सबद्रव्य फ्रांस ब्रटिन और यूरोप के अन्यान्यस्थानों में जाते हैं अमेरिका में टाट थैले लाख तीसी कौड़ी औरनील यहां सेजाता है और अफीम यहां से चीन और सिंगापुर कोजाताहै ब्रटिनद्वीपसेमदिरा चीनीवर्तन काचवर्त्तन अच्छे २ परिच्छद छुरी काचू कैंची आल्पीन प्रभृति लोहेकेद्रव्य नानाविध पुस्तक औडीकालन पामेटमप्रभृति सुगन्धार्क कागज कलम पेन्सल इत्यादि लिखने पढ़ने की सामग्री नानाप्रकारयंत्र नानाप्रकार रत्नालंकार और नानाविध वस्त्र भारतवर्ष में आताहै अमेरिकासे रूई थान कपड़ा चीनसेचाह आतीहै इंगलैंड एवं अमेरिका आष्ट्रेलिया और उत्तमाशा अंतरीप से घोड़े आते हैं ॥

रेल

अब रेल कीराह बननेसे भारतवर्ष में वाणिज्य को बहुत सुगमता हुई है प्राय भारतवर्ष के सबस्थानों में रेल बनीहै परंतु यह समुदय रेल एक मनुष्य वाएक कम्पनीके अधीन नहीं इनमें से कुछ तोमुख्य सर्कारके अधीनहै औरकुछ भिन्न २कम्पनी के अधीन है समुदय भारतवर्ष में १० रेलवे कम्पनी हैं उनमें से इष्टइण्डिया रेलवे इष्टरनबंगाल रेलवे सिंधपंजाबदिल्ली रेलवे अवध और रुहेल खण्ड रेलवे बंबई रेलवे मदरास रेलवे ये सब प्रधानहै जोरेल मुख्य सर्कारके अधीनहैं उसको स्टेट रेलवे

बोलते हैं जैसा नार्थर्न रेलवे राजपूताना ष्टेट रेलवे इत्यादि ।

अधिवासि

भारतवर्ष में नेनाजाति के लोग रहते हैं जिनकी रीति नीति आकृति प्रकृति भाषा और धर्म्म नाना प्रकार हैं उन मे से हिन्दू और मुसलमान अधिक हैं हिन्दूलोग चार वरणों में विभक्त हैं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र उन में से ब्राह्मण लोग प्रधान हैं और उन्हीं ने जो नियम किये हैं उनके अनुसार प्रायः वेचारों वरण चलते हैं एकमात्र ईश्वर की उपासना यद्यपि हिन्दू धर्म्म का सार है तथापि ये लोग ईश्वरके अंश जान कर शिव दुर्गा प्रभृति बहुविध साकार देवताओं की मूर्त्ति बनाकर पूजन करते हैं और इसीकारण सेशैव वैष्णव गाणपत्य और शाक्त प्रभृति बहुविध सम्प्रदाय में येलोग विभक्त हैं इनके सिवाय हिन्दूलोग रामकृष्ण प्रभृति अवतार चंद्र सूर्य्य प्रभृति ग्रह पिप्पल वट इत्यादि वृक्ष गंगा यमुना इत्यादि नदियों की पूजा करते हैं गाय प्रभृतिजंतुभी हिन्दू लोगों के पूज्य हैं । मुसलमान लोग भी सीआ सुन्नी प्रभृति जाति में वटे हुए हैं परन्तु हिन्दू लोगोंके बीच जैसे परस्पर विवाहादि नहीं होता मुसलमानों के ऐसा नहीं हिन्दू मुसलमानों के सिवाय बौद्ध जैन्य कृष्टानादि भी भारतवर्ष में वास करते हैं परंतु उनकी संख्या बहुत न्यून है भारतवर्ष में मनुष्यसंख्या १९०००००० है ॥

भाषा

यहां की भाषा एकही नहीं संस्कृत बंगाली हिन्दी इ-

त्यादि भाषा प्रचलित हैं इनमें से संस्कृत बहुत प्राचीन और सब देशोंकी भाषाओं का मूल है अब यद्यपि बोलने में नहीं आती तथापि इस भाषा में लिखित पुस्तक प्रायः भारतवर्ष के सब प्रदेशों में पढ़े और पढ़ाये जाते हैं अब भारतवर्ष में ये भाषा बोली जाती हैं हिन्दी उर्दू बंगाली पंजाबी गुजराती कर्नाटकी मर्हटी तैलंगी आसामी उड़िया और काश्मीरी इत्यादि ॥

बंगाला प्रेसीडेन्सी वा
बंगाल अहाता ॥

पहले हम कह चुके हैं कि भारतवर्ष में अंग्रेजों का अधिकार ३ तीन प्रेसीडेन्सीवा अहातों में विभक्त है जैसा बंगाल अहाता बंबई और मंदराज अहाता । अब क्रमशः वर्णन कियाजाता है ॥

बंगाल अहाता और दो अहातों से बड़ा है इसका क्षेत्रफल २५८००० वर्गमील है और यह ग्रेटब्रिटेन से तीन गुणा अधिक है इसके बसने हारों की संख्या ४०००००० है इस हाते में तीन सर्कार हैं बंगाल सर्कार, उत्तर पश्चिम प्रदेशीय सर्कार और पंजाब सर्कार । इन तीनों सर्कारों में तीन शासन कर्त्ता हैं जिन्हें लफ्टनराटगवर्नर बोलते हैं। बंगाल सर्कारके अधीनस्थ प्रदेश — बंगाल बिहार छोटा नागपुर और उड़ीसा ये चार प्रदेश बंगाल सर्कार के अधीन हैं । इनचारोंमें से बंगाल सब से बड़ा है और उड़ीसा सब से छोटा है बंगाल सर्कार की उत्तर सीमा नेपाल, सिक्कम, भोटान, पूर्व सीमा आसाम, मनीपुर और

ब्रह्मा दक्षिण सीमा बंगलेकासागर और मंदराज अहाता और पश्चिम सीमा उत्तर पश्चिम प्रदेशीय सर्कार और रेवा इसकापरिमाणफल ९११९० वर्गकोसहै और मनुष्य गणना ६६०००००

पहले कह चुकेहैं कि बंगालसर्कार के अधीन चार प्रदेश है उनमें से बंगाल विहार और उड़ेसा ये तीन बंदोबस्ती प्रदेशहै और छोटा नागपुर बेबंदोबस्ती प्रदेशहै बंदोबस्ती तीनप्रदेश आठ भाग सूबों में विभक्त है जैसा बंगाल में बरद्वान प्रेसीडेन्सी राजशाही कोचविहार ढाका चट ग्राम ये ५ पांच विहार में पटना और भागलपुर उड़ीसा में उड़ीसा छोटानागपुर में छोटानागपुरही है इन नौविभागों में ४८ जिले और ८९ महकमाहै दोबस्तीतीनविभाग में ८ कमिश्नर वाप्रधान शासन कर्त्ताहैं हवड़ा को छोड़कर प्रत्येक जिला एक २ मजिष्ट्रेट और कलेक्टर के अधीनहै ॥

जिस नगर में उन मजिष्ट्रेट और कलेक्टरों का विचारालय है उसे स्टेशनबोलते हैं वे बंदोबस्ती प्रदेश में केवल एक कमिश्नर और उसके प्रत्येक जिला में एक २ डिप्टीकमिश्नर शासन कर्त्ता है ॥

बंगाला देश

बंगाले के उत्तर सिकम और भूटान है पूर्व में आसाम मनीपुर और ब्रह्मा दक्षिण में गंगासागर और उड़ीसा पश्चिम में छोटानागपुर और विहार के अंतर्गत समनल पर्गना और जिला पूर्निया इसका परिमाणफल २२३००

वर्गक्रोश और मनुष्य ३६७००००० से अधिक हैं परंतु इनमें हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमान अधिक हैं ॥

बंगाल की भूमि

बंगाले में गंगातटस्था भूमि प्रायः उर्वरा है और बंगाले के दखिन की भूमि जंगली और प्रान्तर है और दखिन और पश्चिम के मध्य की भूमि पत्थरेली है बंगाले के मध्य की भूमि समतल है ॥

जल पवन

बंगाला प्रदेश समुद्र के समीपवर्ती है इसलिये सजल है यहां वर्षा बहुत होती है मार्गशिर पौष और माघ महीने जाड़ा पड़ता है चैत्र वैशाख जेठ में गर्मी पड़ती है ॥

खेती का वर्णन

बंगाले के सम्पूर्ण जिलों में चावल उत्पन्न होता है बकरगंज त्रिपुरा ढाका राजशाही दीनाजपुर बगुड़ा मैमनसिंह बर्दवान जसोहर और २४ पर्गना इन जिलों में विशेषकरके चावल उत्पन्न होता है और यहां से अन्यान्य देशों में जाता है हुगली नदिया जसोहर मुर्शिदाबाद रामपुर बगुड़ा ढाका फरीदपुर मैमनसिंह इन जिलों में नील बहुत उत्पन्न होता है ॥

बगुड़ा रंगपुर ढाका त्रिपुरा मैमनसिंह नदिया हुगली हवड़ा और २४ पर्गना इन जिलों में पाट बहुत होता है हुगली मुर्शिदाबाद बांकुड़ा बीरभूमि मालदा बगुड़ा रंगपुर और जसोहर इन जिलों में रेशम बहुत होता है बर्दवान सुंदर वन दीनाजपुर ढाका फरीदपुर और बकरगंज इन में

रुई बहुत होतीहै चाटग्राम मे मनसिंह रंगपुर नदिया बर्द्दवान — हुगली और २४ पर्गनोंमें तम्बाकू बहुतहोताहै ।

२४ पर्गना और मेदनीपुर इनमेंलवणहोताहै श्रीहट्टमें एक प्रकार का बहुत अच्छासंतरा हैं जिसेबंगाली में कमलानिम्बू बोलते हैं इनके सिवाय बंगाले में प्राय सब स्थानों में नानाविध दाल और सरसों तिल और लालमिर्च इत्यादि नानाविध मसाले और नाना फल उत्पन्न होते हैं ॥

राज्यविभाग

विन्ध्याचल भारतवर्ष के मध्य में खड़ा होकर इसे दो भागें में विभक्तकरता है उत्तर भाग का नाम आर्य्यावर्त्त और दक्षिण भाग का नाम दाक्षिणात्य आर्य्यावर्त्त चार भागें में विभक्त हुआहै एकहिमालय प्रदेश दूसरा मध्य देश तीसरा प्राच्यदेश और चौथा उदीच्य देश ।

हिमालय प्रदेशमें

राज्य	राजधानी
१ भूटानवा भोटराज्य	तासीसुदन
२ शिकम — — — — — —	शिकम
३ नैपाल — — — —	काठमाण्डुवा काष्टमण्डप
४ कुमाऊं — — — —	अलमोरा और केदारनाथ
५ गडवाल — — — —	शिमला
६ सिरमोर — — — —	सिरमोर
७ काश्मीर — — — — —	श्रीनगर

मध्यम देशमें

राज्य — — — — — राजधानी

१ दुआब ------- दिल्ली, मेरठ आगरा इलाहाबाद
२ अयोध्या ------ लखनौ
३ राजपूताना ------ जयपुर, जोधपुर उदयपुर ४६
४ मालवा ------- उज्जैन, इंदौर
५ अजमेर ------- अजमेर
६ बुंदेलखंड ------- बांदा, कालिंजर, झांसी
७ रेवा ---------- रेवा

मध्यप्रदेश = यह हिमालय और विन्ध्याचल के मध्यवर्ती है प्राचीनलोगों ने इसे आर्य्यावर्त्त कहा है.

प्राच्यदेश

राज्य ---------- राजस्थान

बिहार --------- बिहार, गया और पटना

बंगाला --------- कलकत्ता, ढाका और मुर्शिदाबाद

आसाम --------- सलेंग, ग्वालपाड़ा

उदीच्यप्रदेश

राज्य --------- राजधानी

पंजाब --------- लाहौर, अमृतसर और मुलतान

सिन्ध --------- हैदराबाद, ठाठा, कराची

कच्छ ---------- भुज

गुजरात -------- बरोदा सूरत द्वारका

दाक्षिणात्य

यह प्रदेश भी चार भागों में विभक्त है पहले नर्मदा प्रदेश २ य गोदावरी, ३ य कृष्णाप्रदेश ४ र्थ कावेरी प्रदेश

नर्मदाप्रदेश

राज्य	राजधानी
खानदेश	बुरहानपुर, धूलिया
गंडवाना	सम्बलपुर, देवगढ़
उडीसा	कटक, पुरी, बालेसर
बरार	नागपुर, एलचपुर

ये सब प्रदेश नर्मदा नदी के समीपवर्त्ती हैं

गोदावरी

औरंगाबाद	औरंगाबाद, अहमदनगर, नासीक
कोकन वा कंकण	बंबई, रत्नगिरि
बिदर	बिदर, दौलताबाद
हैदराबाद	हैदराबाद
उत्तरसर्कार	विजिगापट्टन, मुसलीपट्टन, वंटूर

ये सब प्रदेश गोदावरी नदी के समीपवर्त्ती हैं

कृष्णाप्रदेश

बीजापुर	बीजापुर, पूना, सितारा
बालघर	बलारी, कुड़प
उत्तर करनाटक	मंदराज, अराकाट पंडुचरी, विलोर, नेलरू और चिंगलपट

ये सब प्रदेश कृष्णा नदी के समीपवर्त्ती हैं ।

कावेरी प्रदेश

राज्य	राजधानी
मैसूर	श्रीरंगपट्टन, बंगलोर

कनाड़ा ———————— बंगलोर, बलोनोर
कुरग ———————— मरकरी
मलबार ———————— कालीकट, माही, टेलूचरी
द्रविड़ ———————— ननेज़ोर, देवीपट्टन
कोचीन ———————— कोची
त्रिवांकुर ———————— त्रिं विंद्रुम
दक्षिण ———————— मदुरा टंकीवार
कर्नाटक ———————— त्रिचुनापल्ली

मुगलसम्राटों के राज में भी भारतवर्ष नानाप्रदेशों में विभक्त हुआ था १५८२ ई॰ में अकबर ने अपने साम्राज्य को १९ सूबों में विभक्त किया था जैसाकि, लाहोर मुलतान् अजमेर, दिल्ली, आगरा, इलाहाबाद वा प्रयाग, अवध, बिहार, बंगाला, मालवा, और गुजरात। कुछदिन के पीछे उन्होंने सिन्धुनदी के पश्चिम तटस्थ कई एक स्थान और काबुल तथा बरार खानदेश अहमदनगर ये सब अपने राजमें मिलालिये अब प्राय: सारा भारतवर्ष अंग्रेज़ों के अधिकार में है— १६ ५५ ई॰ मे ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने वाणिज्यके लिये भारतवर्ष में प्रथम कलकत्ता बम्बई इत्यादि नगरों में कोठियां स्थापन कीं। १६ ३९ ई॰ में मदरास के बीच थोड़ीसी भूमि प्रथम उन्के अधिकार में आई इस दिनसे इन्हों ने अपना बल और कौशल विस्तार करके प्राय: समुदय देश को अपने अधिकारमेंलाये अंग्रेज़ों का अधिकार तीनभागों में विभक्त है प्रथम बंगाला प्रेसीडंसी २ य मदरास प्रेसीडंसी ३ य बंबई प्रेसीडंसी। सारा ह-

टि । यराज्य एक प्रधान शासन कर्त्ता के अधीन है उस का नाम गवर्नरजेनरल है । बंगाला प्रेसिडंसी में बंगाला गवर्न्मेएट पश्चिमोत्तरीय गवर्न्मेएट और पंजाब गवर्न्मेएट ये तीनहैं अर्थात् इनतीनों स्थानों में एक २ लफटनेएटगवर्नर रहता है परन्तु मंदराज और बंबई प्रेसीडेंसी में केवल एक २ गवर्नर है ।

(८) प्रदेश विभाग

पहले कहा गया कि बंगाला प्रदेश पांच कमिश्नरीमें विभक्त है । जैसा वर्द्दवान, प्रेसीडेन्सी राजशाही, कोचविहार,ढाका, और चटग्राम इन विभागोंमें २७ जिले और इनजिलों में कितनेक पर्गने और ५४ महकमेहैं ॥

बंगालेके प्रसिद्ध नगर

कलकत्ता—— यह इंगरेजों की राजधानी है औरगवर्नर जेनरल यहांही रहतेहैं यह समुद्रसे ५० कोसके लगभग दूरहै औरहुगलीनदीपर बड़ी सुंदरताईसे बसाहै । इस कीमनुष्यसंख्या ५००००० है उनमें से ८००० यूरोपियन है यह दो भागों में विभक्त है प० भागमें देशीलोगरहतेहैं उसे अंगरेजी में नेटिव क्वार्टर बोलते है, यह उत्तरकी ओर है इस में बहुत रस्ते तंग और अपरिस्कारहैं और दक्षिनभाग में यूरोपीय लोगबसते हैं इसके रस्ते बहुत खुले और साफ हैं इसभागमें फोर्टविलियमनामक एकअंगरेजोंका बनायाकिलाबहुत सुंदर और दृढ़ है और इसमें लार्डसाहिबकीकोठी इत्यादि बहुत अच्छी हैं कलकत्ताकावाणिज्यबहुत दूरतकविस्तृतहै अशियाकेबीच ऐसा अच्छा नगर और कहीं नहीं और

यहां प्रेसीडेन्सी संस्कृत मेडिकल कालेज इत्यादि गवर्नमेन्ट विद्यालय और जेनरल असेम्बलीज इत्यादि मिशनरीयोंके भीवहुतविद्यालय हैं १६९० ई॰ में अंगरेजलोग कलकते में प्रथम ही आये और १७५६ ई॰ में इनकीवनाई हुई कोठियां बंगाले के नवाब सिराजुद्दौला ने लूटली। और ५७ में लार्डक्लाइवनेप्लासीके संग्राम में नवाब को जीतकर बंगाला, विहार, औरउडीसा, की सूबेदारी आपलेली औरतभी से इनके राज्य की प्रथम जड़जमी और कलकत्तेकी शोभा बढ़नेलगी ॥

कलकत्ते के १२ मील उत्तर में श्रीरामपुर नामीएक छोटेसे नगरमें १८४५ ई॰ तक डेन लोगों का अधिकार था तभी अंगरेजोंकाअधिकारआया यह कमिसनरियों का प्रधान वासस्थानथा अबतक भी यहां कमिसनरियों का एक कालेजहै और बहुत कमिसनर लोगरहते हैं इसके उत्तरमें वर्दवान नगरहै जिस के कुछदूर पर रानीगंजनामकस्थान है यहांवहुतपत्थरी कोइलों की खानहै मुर्सिदाबाद उसके उत्तर है यह नगर पहले बंगालेकी राजधानी थी कलकत्ताके ७० कोश ईशान कोनपर ढाकानगर है जो प्राचीन काल से मलमल के लिये प्रसिद्ध है कलकत्ता के १४० कोस वायुकोन पर पटना नगर गंगाके तट पर है यहां चावल नील और कपड़ों का व्यापारहोता है कलकत्ताके ११० कोस नैरऋत कोनपर कटक नाम नगर महानदी के तट पर है २१ कोस दक्षिण पर विख्यात जगन्नाथ देव का मंदिर है जो हिन्दुओंका बड़ा तीर्थस्थान है और दूर २ के लोग यात्रा

करके आते हैं कलकत्ताके ३०० कोस नैऋत कोन पर नागपुर है यह पहले बरार देशकी राजधानीथी १८५३ में अंगरेजी-राज्य में मिलगया ॥

जिला

बंगाले में इतने जिले हैं

विभाग	जिला
प्रेसिडेन्सी	२४ परगना, नदिया, जसोहर, मुर्शिदाबाद
बर्द्दवान	बर्द्दवान, बंकुड़ा, बीरभूमि, मेदिनीपुर, हुगली, हवड़ा,
राजशाही	दीनाजपुर, मालदा, राजशाही, रंगपुर, बगुड़ा, पाबना, दार्जिली, जलपाईगुड़ि, और कूचबिहार,
ढाका	ढाका, फरीदपुर, बकरगंज, मैमनसिंह, त्रिपुरा, और-त्रिपुरापर्वत
चटग्राम	चटग्राम, नवाखाली, और चाटग्रामपहाड़
पटना	पटना गया शाहाबाद मुजफ्फरपुर द्वारभंगा सार्न चं-पार्न
भागलपुर	मुंगेर, भागलपुर, पूर्निया और सोंताल
उड़ीसा	कटक, पुरी, बालेसर,
छोटानागपुर	हजारीबाग लोहारडागासिंह भूम और मानभूम

बंगाली लोगोंके स्वभाव

बंगाली लोग शांत शीलस्वभाव बुद्धिमान और साहसहीन होतेहैं विद्यालाभमें इनका यत्न है परंतु विद्यालयछोड़नेपर उद्यमी ना कम नहीं रहता येबहुधा शिथिलपरिश्रमीहै

भाषा

बंगाले में बंगाली उर्दू और उत्कलभाषा प्रचलितहै इनके सिवाय आसामी प्रभृति भाषाओंकाभी व्यवहार होताहै ॥

उत्तर पश्चिम प्रदेश वा हिन्दू स्थान

इसके उत्तर में हिमालय अथवा नेपाल पूर्वमें बंगाल द-

सिवामें रेवा बुंदेलखंड सागर ग्वालियर धौलपुर भरतपुर इसका क्षेत्र फल २०९६६ वर्गकोस है औरमनुष्य संख्या प्राय ९३००००० है इसदेशके जिनस्थानों से गंगा यमुना रामगंगा गोमति घाघरा औरसोणप्रभृति नदी प्रवाहित होतीहैं यह सम्पूर्ण समतलदेशहै इसमें कहीं२ ऊंचीनीची भूमिभीहै ।

जल पवन

उत्तरपश्चिम प्रदेशका जलपवन प्रायःउष्णहै परंतु स्वस्थता करनेके लियेबहुत उपयोगी है यहां वृष्टि बहुत थोड़ी होतीहै ग्रीष्म ऋतु में यहां कभी२ ऐसीउष्णवायु चलती है किसहनहीं होती वहां ग्रीष्म ऋतुमें जैसाग्रीष्म का आधिक्य होताहै शीतऋतु में ऐसा शीतकाभी आधिक्य होता है इस प्रदेश के बीच नैनिताल मसोरी उत्तमस्वस्थ कर स्थान है ।

भूमि

यहांकी भूमि प्रायःउर्वराहै परंतु स्थान २ में अल्पजल है वहां खेतोंकेबीच गहरा कुआ खोदकरपानीनिकालतेहैं ।

खेती

यहां उत्पन्न खेतियों के बीच गेहूं प्रधानहै परंतु यहां केलोग जौं, भुट्टा, और बाजरा बहुत खातेहैं यहां किसी २ जिले में चावल भी उत्पन्न होतेहैं इनके सिवाय चूंट, मटर प्रभृति अनाज और आलू खजूर निम्बू सन्तरे आता अमरूद आम अंगूर इत्यादि फल मेवे उत्पन्न होतेहैं देहरादून और कुमाऊंमेंउत्तम चाय उत्पन्नहोतीहै रुहेलखंडमें चावल चीनी रूई सन,पाट,तम्बाकू औरनील उत्पन्न होताहै ।

बन

यहां इतने बन हैं कमाऊं का बन, देहरादून, रुहेलखंड गोरखपुर और कांसी का जंगल इन जंगलों में बड़े २ मोटे २ वृक्ष होते हैं । इनमें शालादि पेड़ों सिवाय यूरोपीय और आस्ट्रेलिय वृक्ष भी बोये गये हैं

खानिद्रव्य

बुंदेलखंड के भीतर पन्ना नामक स्थान में हीरों की खान है चुनार और मिर्जापुर में अच्छे २ संगमर्मर के पत्थर मिलते हैं ॥

जंगली जन्तु

हिमालय के निकटस्थित प्रदेशों में बाघ, चिता, रीछ, बनबिल्ली, हाथी जंगलीग या पहाड़ी बकरी कस्तूरीवाला मृग, चमरीगाय, और जंगली कुत्ते, बहुत हैं । यहां गाय भैंस और बिल्ली प्रभृति नानाविध ग्राम्यजीव हैं इनके सिवाय यहां अनेक भांति के सांप और जलचर जीव और पखेरू देखे जाते हैं ।

वाणिज्य द्रव्य

इस प्रदेश से रुई, नील, लवण, चीनी, तम्बाकू नाना प्रकार का अन्न, शोरा, पशम, शाल दुशाले, भांति २ की छींट, बनारसी दुपट्टे खीनखाब के वस्त्र गुलाब अतर और गलीचा वाणिज्य के लिये अन्य देशों में जाता है ।

रहने वाले

यहां के लोग देखने में सुंदर परंतु बहुत लंबे नहीं होते, ये लोग, साहसी, बलवान, सच्चरित्र और दयालु होते हैं परंतु यहां बहुत गंवार, मठुवे लोग भी देखे जाते हैं और यहां

हिन्दी और उर्दू इन दो भाषाओं का व्यवहार है ।

प्रदेश विभाग

उत्तरपश्चिम प्रदेशीय गवर्मेन्टके अधीन सात ७ कमिश्नरीहैं । जैसा बनारस इलाहाबाद आगरा, मेरठ, रुहेलखंड, कुमाऊं, औरझांसी. और ७ विभागों में ३६ जिलेहैं

विभाग	जिला
बनारस	आजमगढ़, मिर्जापुर, बनारस, गाजीपुर, गोरखपुर, और बस्ती
इलाहाबाद	कानपुर, फतहपुर, बान्दा, हमीरपुर, इलाहाबाद, औ जौनपुर
आगरा	मथुरा, आगरा, फरुकाबाद, मैनपुरी, इटावा, औरई टा
मेरठ	देहरादून, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, बुलंदशह र, अलीगढ़
रुहेलखंड	बिजनौर, मुरादाबाद, बदाऊं, बरेली, औरशाहजहां पुर
झांसी	झांसी, जालन, ललितपुर,
कुमाऊं	हटिसगढवाल कुमायुं और तेराई

प्रसिद्ध नगरोंका वर्णन

बनारस जौनपुर केपूर्व और गाजिपुरके दक्खिन गंगाके पूर्व तटपर स्थितहै

यह वरुना और असिनामक दो नदीके मध्यमें स्थितहै इसलिये संस्कृत में इसका नाम वाराणसीहै और जिस का अपभ्रंशबनारस है यह नगरकलकत्तासे २०० कोस दूरपरहै यह संस्कृत विद्या का स्थान है औरहिन्दुओं का सर्वप्रधानती र्थस्थानहै यहांकी चीनी बडी प्रसिद्ध है और इसका वाणिज्य बहुत दूरतक विस्तृत है यहां गंगा नहाने के लिये मणिकर्णी का केदार दशास्वमेधादि अनेकघाटहैं यहां राजामानसिंहकृत बहुतकोशलमय एक मानमंदिर है इसके ९॥ कोस ∴

हृदीयस सिकरल नाम स्थान में अंगरेज़ वास करतेहैं और वहां गवरमेन्ट कालेज प्रभृति देखने योग्य स्थानहैं इस के पश्चिम पार में रामनगर नामक स्थान है यहांवर्त्तमान काशीराज वासकरतेहैं काशीके नीचे गंगा उत्तर दिशाकोवहती है इसलियेवहां दिशाओंका निर्णय नहीं होता ॥

मिर्ज़ापुर

यह नगर भी गंगातटपर अवस्थित है यहां रेशम और रूई कावहुतवाणिज्य होताहै इस से कुछ इधर चनार प्रसिद्ध किलाएकपर्वत पर बना हुआ है

जौनपुर

यह गोमती नदिके तीरपर है यहां अकबर कावनाया एक दृढ़ पुलहै ॥

इलाहाबाद

यहगंगा और यमुनाके संगमपर बसाहै संस्कृत में इसे प्रयाग बोलतेहैं औरयहभी कहतेहैं कियहांसरस्वती नदी गुप्त होकरवहती है यह बम्बईसेध ८६ कोसहै यहांएक दृढ़ किलाहै जिसके भीतर अक्षयवट १ स्तम्भ और एक देवमंदिरहै प्राचीनकाल में यहभारद्वाजमुनिका आश्रमथा अब अंगरेज़ी की उत्तर पश्चिम प्रदेशीयराजधानीहुई कईएक वर्षहुएकि यहां हाईकोर्ट स्थापित हुआ और मेउरकालेज प्रभृतिविद्यालय नियतहुए यहभीहिन्दुओं कातीर्थ स्थानहै यहां से सन रूई नील औरचीनी औरदेशों में जाती है ॥

बान्दा—— इलाहाबाद के दक्षिण केनसनी के तट पर है इसका प्राचीन नाम कालिञ्जरगिरी **कानपुर**—— गंगानदी

के दक्षिन तट पर स्थितहै यहां सेनाकी छावनी है इसका
वाणिज्य बहुतहरविस्तनहै १८५८ ईस्वी में नानासाहिबने य
हां बहुत अंग्रेज़ोंकाहननकिया जिस स्थलमें वह हत्याका
ण्ड हुआथा उसके ऊपर एक समचतुष्कोण संदरबागहै
और उसके बीच एकसमाधिमंदिरहै इसके समीप स्थित बि
ठूर नामक स्थान महर्षिवाल्मीक का आश्रमथा ॥

फ़र्रुखाबाद — यहांएकटकसालथीजिसमें १८२४
ईस्वीतक रुपैये बनाये जाते थे परंतु अबबंदहोगये इसके
समीपवर्ती कनौज जिसे पूर्वकाल में कान्यकुब्ज,कहतेथे
मुसलमानो के आने के पहले बड़ा समृद्ध था और हिन्दू
राजा ओं की राजधानी थी उस के पास फ़तहगढ़ नामस्था
न में अंग्रेज़ों की एकछावनी है ॥

आगरा — यमुनानदी के पश्चिमतीरमेंबसाहै और
कलकत्तासे ३५५ कोस वायव कोनपर है यह नगर अकब
र के समयतक मुगलों की राजधानी थी और उस समय इस
समान सुन्दर दूसरा कोई नगर नथा इस नगर में शाहज
हांने अपनी बेगम स्मरणार्थक ताजमहलनामक मंदिरब
नाया जोपृथ्वी के सब गृहों से बहुत सुंदर है इसके तीन
कोसउत्तर में सिकंदर नगर के बीच अकबरकी समाधिहै
मथुरा वृन्दावन स्थान यमुना के तटपर है हिन्दुओंकेतीर्थ
स्थान हैं और श्रीकृष्णकी लीला के लिये प्रसिद्धहैं परंतु
अब यहां बानरोंकी चमत्कार लीलाहोती है वृन्दावनर
म्यस्थान है यहां अच्छे २ सुंदर मंदिर देखने में आते हैं

अलीगढ़ — यहां दौलतरावसेंधियाका बनाया प

सिद्ध दुर्ग (किला) है १८०३ ईस्वी में लार्ड लेकने सेंधिया के
सेनापति पेरिन को पराजित किया

मेरठ — यहांका जलपवन बहुत स्वास्थ्य करहै यहां
यूरोपदेशीय सबफलादि प्रायः उत्पन्न होते हैं कहते हैं
कि मेरठ प्राचीन काल में मयदानवकी राजधानीथा और
इसकानाम मिर्थथा

सहारनपुर — इसके उत्तर में जो हिमालय की श्रे-
णीहै उससे गंगा औरयमुना निकली हैं औरबहुतसी नहरभी
हैं यहां चमड़ेकाकामअच्छा होताहै यहां से होकर लोग
हरिद्वार में जातेहैं हरिद्वारकेसमीप रुड़की नामनगर में
इञ्जीनि॰ कालेज और बहुतकलविद्याकाघर है

देहरादून — यहांका जलपवन बड़ास्वास्थ्यकर है
औरइसलिये मसूरी नगर में अंगरेज लोग वायुसेवनक
रने को जातेहैं इसके समीपशिखरजिलानाम स्थान में
एक आश्चर्य जलप्रपात है ।

बिजनौर — मुजफ्फरपुर के पूर्व है यहां ईख गे-
हूं और कपास बहुत होतीहै इसजिले में गंगा प्रधान न-
दी है नजीबाबाद इसका सदर मुकाम है और बिजनौर
चांदपुर सम्भल हसनपुर प्रधान नगर हैं बिजनौर के द-
क्षिणमेंमुरादाबादहै जिसमें धान्यादि बहुत उत्तम उत्पन्न होताहै

बरेली — यह बदाउं के पूर्वमें है यहां की भूमि
बहुत उर्वरा है यहां अच्छे २ स्वादु फल उत्पन्न होतेहैं यहां
लकड़ी की कारमारी बहुत उत्तम होतीहै यहांपिलभीत-
नाम एक मंडीहै यहां पहाड़ी वस्तुओं का व्यापार होताहै

शाहजहांपुर— यह बरेली के पूर्व में है यहां गंगा सरयू और गोमती नदियां बहती हैं यहां का जलवायु अच्छा नहीं है यहां धान, गेहूं, जौ, तम्बाकू, और कपास आदि खेतियां उत्पन्न होती हैं यहां मिश्री बहुत अच्छी बनती है और हाथी बाघ आदि जंगली जीव बहुतायत से हैं

कुमायुं— और ब्रटिश गढ़वाल— इन दोनों जिलों में बहुत पर्वत हैं जिनसे अलकानन्दा आदि कई एक छोटी २ नदियां निकलकर गंगा में मिलती हैं अलकानन्दा की रेत में सोना मिलता है कुमायुं में प्रायः भूचाल होते रहते हैं यहां शाल देवदारु आदि पेड़ जंगलों में होते हैं और लोहा और शीशे बहुत मिलते हैं यहां धान कपास जौ गेहूं भुट्टा और तम्बाकू बहुधा उत्पन्न होता है किदारनाथ वैजनाथ देव-प्रयाग इत्यादि तीर्थस्थान भागीरथी और अलकानन्दा नदियों के संगमपर है रुद्रप्रयाग नाम तीर्थ स्वर गंगा मंदाकिनी और अलका नंदा नदी के संगम परहै अलमोरा कुमायुं का सदरमुकामहै नैनीताल इस में प्रसिद्ध स्वास्थ्यका स्थान है यह एक प्रतिनिधी कमिश्नर के द्वारा शासित होता है ॥

झांसी— यहां कपड़े का बहुत व्यापार होता है यहां तीर कमान बर्छी इत्यादि शस्त्र अच्छे २ बनते हैं यहां का सदर मुकाम मोंड है ॥

पञ्जाब

इस की उत्तर सीमा हिमालय, पश्चिम सीमा सुलेमान पर्वत श्रेणी और काबुल दक्षिण में सिंध प्रदेश की-

मरुभूमि और पूर्व में उत्तर-पश्चिम प्रदेश इसकी लंबाई-
४००० कोस और चौड़ाई ३२५ कोस और परिमाण फल-
५०००० वर्ग कोस है पंजाब के आधेसे अधिक करद औ
र मित्र राजाओं के अधीन है पंजाब में इंगरेजोंके राज का
क्षेत्रफल २५५०० वर्ग कोस है यहांकी मनुष्य संख्या-
१७५००००० से भी अधिक है इस में पांचनदी रहने से प्रा-
चीन काल में इसे पंचनद पुकारते थे फिर पंच आप जिस
से मुसलमान लोग पंजाब पुकारने लगे क्योंकि फारसी
भाषा में अप (जल) को आप कहते हैं पंजाब के उत्तर भा-
ग में पर्वत श्रेणी शोभा पाती है दक्षिण भाग समतल दे-
श है और इसके बीच से सिंधुनदी पंचधारा होकर बहती
है हिमालय के दक्षिण और पंजाब की उत्तर पूर्व सीमा
में जो पर्वतीय देश है उस में बहुत प्रकार के पत्थर मि-
लते हैं यहां बहुत लाल लवण की कान है पश्चिम में जो
पर्वत श्रेणी सिंधु और जेहलम के बीच स्थित दुआबे का
उलंघ्य सुलेमान पर्वत से मिलती है उस में बहुत लवण
फटकरी रसंजन और गंधक उत्पन्न होता है अब पंजाब
में पत्थरी कोइलों की कान भी निकली है पंजाब में ये पां
च नदी हैं सतलुज व्यास रावी चनाव और जेहलम,

यहां सिंधु नदी सब नदियों से बड़ी है और पांचों नदि
यां सिंधु में मिलकर अर्ब के सागर में गिरती हैं पंजाब
की भूमि पांच नदियों के द्वारा पांच भाग में विभक्त होती
है और प्रत्येक भाग को दुआबा बोलते हैं जैसा जालंधर
अथवा बिसतदुआबा सतलुज और व्यास के बीच में बारी

दुआबा आसा और रावीके बीच रचना रावी और चनावके बीच जच चनाव और जेहलम के बीच सिंधदुआबा जेहलम और सिंधु नदी के बीच है पंजाब की पांचों नदियों के नाम संस्कृत में ये हैं सतलज– शतद्रु, आसा–बिपासा, रावी– ऐरावती, चिनाब–चंद्रभागा और जेहलम वितस्ता हैं

जलवायु

पंजाब की जलवायु बहुत शुष्क और गर्म है यहां ग्रीष्मकाल में जैसी गर्मी होती है वैसीही शीत काल में सर्दी होती है इस प्रदेश के बीच डलहौजी, शिमला, सबाटू, कोहमरी धर्मशाला अर्थात भागसू विशेष स्वस्थ कर स्थाने हैं।

खेती

पंजाब की भूमि उर्वरा है इसलिये यहां नानाविध खेतियां उत्पन्न होती हैं उन में से गेहूं नील कपास अफीम ईख तम्बाकू प्रधान हैं इनके सिवाय यहां धान जौं बाजरा मूंगी मटर जार भुरा सरसों सन कसुंभा क्षोले आलू आदि बहुत होते हैं और अम्ब अनार संतरा आडू खरबूजा सेब अंगूर इत्यादि स्वादु फल उत्पन्न होते हैं यहां सहत मोम मक्खन बहुत मिलता है मुलतान की हींग बड़ी अच्छी होती है जिला गुरगांव में और कांगडाकी पहाड़ियों में लोहा अच्छा मिलता है बन्नू और कई एक पर्वतों में शीशा अच्छा मिलता है ।

शिल्प अर्थात कारीगरी

पंजाब के और शिल्प कलाओं से अमृतसर, लाहौर और मुलतान इत्यादि नगरों में रेशमी वस्त्र और दुशाले

आदि वस्त्र बड़ुत प्रसिद्ध है ॥

व्यापार

पंजाबी लोग नाना देश से बड़ुविध द्रव्यादि लाकर सिंधुनदी के पश्चिम तटस्थ देशों में वाणिज्य करते हैं यहां से भी नाना प्रकार का अन्न, पशुओं के सींग, पशम, रूई, दुशाले, रेशम, लोहा, चाह, चमड़ा, तंमाकू, लवण, और घोडे, खच्चर, और २ देशों को जाते हैं सम्प्रति कांगड़ा जिला के बीच पालमपुर नामक नगर में प्रतिवर्ष एक मेला होता है जिसमें बड़ुत देशी विदेशी द्रव्यका व्यापार होता है दिवाली को ऐसाही बड़ाभारी मेला अमृतसर में भी होता है ॥

जंगली जीव

यहां सिंह, बाघ, चीता, रीछ, उल्कामुखी, भेड़िया, गिदड़, लोमड़ी, सूर, हरिन, बानर, लंगूर, इत्यादि अनेक जीव हैं जो बनमें रहते हैं ग्राम्य जंतुओं में भैंसगाय घोड़े भेड बकरी ऊंट और गधे बड़ुत हैं

कमिश्नरी

पंजाब में १० कमिश्नरी हैं जैसा पिशौर डेराजात, रावलपिंडी, लाहौर, मुलतान, जालंधर, अमृतसर, अम्बाला, दिल्ली, और हिंसार, इन १० कमिश्नरीयों में ३२ जिले हैं और १३२ तहसील हैं ॥

३२ जिले और उन के प्रधान नगरों के नाम नीचे लिखे जाते हैं ।

जिला प्रधान नगर अर्थात् तहसील

पिशोर	पिशोर अटक
कोहाट	कोहाट हंगू
हजारा	हजारा हरीपुर हैबटाबाद

येतीनों जिले पिशोर की कमिश्नरी में हैं

बनू	इसाखेल कालाबाग
डेरह इस्माईलखां	डेरह इस्माईलखां लइया कुलाची
डेरह गाजीखां	डेरह गाजीखां जमपुर

येतीन डेराजात में हैं

जिला	रावलपिंडी तहसील
रावलपिंडी	रावलपिंडी पिंडीघेप
जेहलम	तलागांव, जेहलम, पिंडदादनखां
गुजरात	गुजरात जलालपुर
शाहपुर	भेरा शाहपुर मियानी खुशाब

लाहौर

लाहौर	लाहौर कसूर शरकपुर चूनियां
गुजरांवाला	गुजरांवाला शेखूपुरा
फिरोजपुर	फिरोजपुर म्रालीवाल शबराउ मुदकी
मुलतान	मुलतान मुलतान शुजाबाद
झंग	झंग मघियाना
मुजफरगढ़	मुलतान मुजफरगढ़ कोटअडू
मिंटगुमरी	मिंटगुमरी पाकपटन

जालंधर

जालंधर	जालंधर राहों करतारपुर नूरमहल नकोदर
होशयारपुर	होशयारपुर ऊडमुड हरयाणा दसूया ऊना गढ़शंकर

कांगड़ा	नूरपुर कांगड़ा धर्मशाला
	अमृतसर
अमृतसर	अमृतसर मजीठा जंडयाला
स्यालकोट	स्यालकोट पसरूर
गुरदासपुर	दीनानगर कलानौर गुरदासपुर
	अम्बाला
अम्बाला	लुदिहा ना गुरगांव राईकोट
लुदिहा ना	लुदिहा ना गुरगांव राईकोट
शिमला	शिमलासबाटु महासूर कालका
	दिल्ली
दिल्ली	दिल्ली सूनापट फरीदाबाद
गुड़गावा	रेवाड़ी फिरोज़पुर फिरेक
करनाल	करनाल पानीपत बैलाना
	हिसार
हिसार	हिसार हांसी तोशाम फतयाबाद
रोहतक	रोहतक भिवाई झमूर
सरसा	सरसा इलामाबाद

अब कई एक जिले और नगरों का विशेष वर्णन किया जाता है ॥

पिशौर— यहां सिंध और कावल प्रधान नदी हैं गेहूं जौं भुट्टा यहां बहुत होता है यहां का चावल पृथवी के सब चावलों से उत्कृष्ट है पिशौर नगर अकबर ने बसाया यह सहर पनाह के भीतर बसा है अटक नामक स्थान सिंधनदी के पूर्व तट है यहां सिकंदर, तैमूर और म-

इरशाह ने इस नदी के पार होके भारतवर्ष में प्रवेश किया।

कोहाट इसकी भूमि उर्वरा है कोहाटनगर के कुछ पूर्व में सिकवनामक स्थान में कितने एक कुंड हैं जिनसे गर्म पानी निकलता है वहां बहुत गंधक निकलता है

लइया-यह प्रसिद्ध वाणिज्यस्थान है और सिंधु नदी के तीर से ५ कोस दूर पर है ॥

डेरहगाजीखां यह डेराजात कमिश्नरी के दक्षिण में है यहां बहुत दुष्प्राप्य जल है ।

यहां गेहूं बाजरा कपास और नील भी उत्पन्न होता है डेरहगाजीखां शहर वाणिज्य का स्थान है वहां रेशम और रुई का कारखाना बहुत है उसके समीप सखिसरो वर प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है ॥

रावलपिंडी-यहां बहुत मनुष्य रहते हैं और यहां एक बड़ा बाजार है

झेहलम- इस जिले में गेहूं जौ रुई बहुत उत्पन्न होते हैं यह शहर वितस्ता अर्थात् झेहलम नदी के दक्षिण तीर पर है १५४० ई. में रोहतास का प्रसिद्ध किला दिल्ली के बादशाह ने बनाया ॥

गुजरात-झेहलम और चनाब नदी के मध्य में है १८४९ ई. फरवरी में यहां अंगरेजों ने सिक्खों की सेना के पति शेरसिंह को पराजित करके पंजाब में अधिकार पाया इसी सन में इस जिले के बीच चुनियावाले गांव में सिक्खों के साथ अंगरेजों का एक बड़ी लड़ाई हुई ।

लाहौर- इस जिले के मध्य से ऐरावती अर्थात् रा-

वी नदी बहती है जिससे यहदोविभाग में विभक्त हुआ उनमें से प्रथम—रचनादुआबा औरदूसराबारीदुआबाकेबीच में है लाहोर रावीके पूर्व तीरमें है पंजाबकेलाटसाहिब यहां पर रहते हैं यहां गवर्मेन्टकालेज ओरियन्टलका-लेज, नार्मलस्कूल, मेडिकल और आर्टस स्कूल इत्यादि बहुतस्कूलहैं पंजाबके डारेक्टर का कार्यालय पंजाब युनिवर्सिटी कालेज के रजिष्ट्रार साहिबका कार्याल-य औरसेन्टहाल यहां पर है यहां डाक्टर श्रीमान् लाइ-टनर साहिब के यत्न से इंजेमन पंजाब अर्थात् शिक्षा-सभा नामक एक कमेटि है जिससे पंजाबको बहुत लाभ होताहै पंजाबकी चीफ़ कोर्ट प्रभृति मुख्य कच-हरियां यहां हैं लाहोर शहरपनाह के अंदर बसाहै इसकासदरबाजार अनारकली नामक स्थान प्रतिदिन उन्नति पाताजाताहै यहसदर शहरपनाह के बाहिर दक्षि-ण की ओर बसाहै और इसके ३ कोस पूर्व में मियामीर नामक एक बड़ी प्रसिद्ध छावनी है लाहोरशहरके समीप उत्तरकी ओर किला है जिसके समीप बादशाही मसजिद, और रणजीतसिंह की समाधिहै, और यहां से ३ तीनकोस उत्तर पश्चिमकी ओर नदीके दायें किनारे शाहदरा नामक स्थानमें जहांगीर बादशाह की बहुत देखने योग्य समाधि बनी है और लाहोर से पूर्व ३॥ कोस के अंतरपर शालामारनामक एकमनोहर उद्यान देख-होतेहैं कि शाहजहां बादशाहने इसेबनायाथा यहउद्यान(बाग) तीन मंजिल है और प्रत्येक मंजिल में फवारे

हैं जिनकी संख्या ३६· है कहतेहैं कि लाहौरकानाम पहले लवपुरथा श्रीमहाराजा रामचंद्र के बड़े बेटे लवनेइसेबसायाथा औरयहनगर चारों ओर दो कोस विस्तृत था यहनगर निःसंदेह बहुत प्राचीन है क्योंकि जबइसकी भूमि को खोदतेहैं तो बहुत प्राचीन गृहादियों के चिह्न देखने में आतेहैं १५२० ई· में बाबरने यहांअपनी राजधानी बनाई ॥

गुजरांवाला — यहरचनाडुआबे के बीचमें है घी, पशम, लोहा, यहां काबाणिज्य ह्वयाहै गुजरान्वाले शहरमें रणजीतसिंह के पूर्व पुरुष बासकरतेथें ॥

फिरोजपुर — इसजिले की अल्पभूमिमें खेति होती है और सब मरु और जंगल मय है यहां टूटे हुए बड़े २ महल और गहरे २ कूये बहुतदिखाई देते हैं इस से जानाजाता है कि प्राचीन कालमें इसकी बस्ती अधिक थी फिरोजपुर को फिरोजशाह तुगलक ने बसाया, मुदकी, सतलुजकेतीरहै १८४५ ई· में दिसम्बर महीनेमें इस स्थानपर सिख और अंगरेजों की बड़ीभारी लड़ाईहुई जिसमें सिख सेना पति लालसिंह ने बहुत वीरतासे लड़ाईकरके अंतमें अंगरेजोंके सेनापति गफ़ साहिबसे पराजितहुआ १८४६ में आलीवाल ग्राम और सुग्राम शहर में अंगरेज और सिखों से बड़ाभयंकर युद्ध हुआ था परंतु दोनों युद्धों में अंग्रेजों ने विजय पाई।

मुलतान — यहनगर लाहौर के दक्षिणपश्चिम चनाव नदीके पूर्व तीर पर शाहजहांबाद के अंतर्गत बसा

हुआहे यहां नानाविध सुस्वादुफल और धान्य उत्पन्न होते हैं दुशाला रेशम, रुई, मखमल, तिलेकपड़ा, गलीचे, प्रभृतिका व्यापार यहां बहुत होता है इसके समीप एक अंगरेजों की छावनी है ॥

जालंधर— यहां की जलपवन स्वास्थकर और भूमि उर्वरा है और यहां आंब और गेहूं ईख बहुत उत्पन्न होते हैं। और यहां जल बहुत थोड़ा गहरा है अर्थात् कहीं२ तो एक दो ही गज भूमि खोदने से जल निकल पड़ता है इस नगर में पहले लोदीवंश वास करता था, शहरके तीन ३ कोस पर अंगरेजी छावनी है ॥

कांगड़ा— इस नगर के समीप बहुत अच्छी चाह उत्पन्न होती है इसके १२ कोस ईशान कोन में मनिकरननाम एक उष्णकुंड है उसका जल ऐसा उष्ण है कि उसमें चावल डालने से शीघ्र ही पकजाते हैं और कांगड़ा के ११ कोस दूरी पर ज्वालामुखी नामक तीर्थ है जिसमें मंदिर के अंदर और बाहिर भी रातदिन अग्निकी ज्वाला निकलती रहती हैं कांगड़ा में एक टीले पर पत्थरका किला बहुत दृढ़ बना है और उसके बीच सेना रहती है धर्मशाला अंगरेजों की छावनी है और उसमें गर्मी के दिनों में बहुत अंगरेज रहने के लिये जाते हैं ॥

अमृतसर— लाहौर के उत्तर पूर्व २० कोस है यहां बहुत बस्ती है १५८१ ई॰ में गुरु रामदासने इस नगर के बीच एक ताल खुदवाया और उसका नाम अमृतसर इसलिये रक्खा कि यहां नहाने से मनुष्य अमर हो जायेंगे और उसदिन से

यहां बहुत यात्री आते हैं १७०९ में यहां गुविंद गढ़ का किला रणजीतसिंहने बनाया अमृतसरमें दुशाले और रेशम का व्यापार अधिक होताहै ॥

अम्बाला— इस जिले की बहुतभूमि निम्नतल है परंतु उर्वराहै यहां का प्रधान नगर अम्बाला है अम्बाले काजल पवन गर्म है थानेसर सरस्वतीनदीके बायें तट पर है १०१० ई. में महमूद गजनवी मुलतान से अबुल्फतह लोदी को कैद करले गया और फिर दूसरे वर्ष आकरथानेसर लूटा इसनगर के समीप कुरुक्षेत्र और कुरुक्षेत्र नामक झील है इसस्थान में कौरव और पांडवों का युद्ध हुआ और कहते हैं कि यह झील अर्जुन ने एक बाणसेबनायीहै।

लुधियाना— यह नगर लोदी घराने से संस्थापित हुआहै यहां के लोग बड़े शूरवीर होतेहैं और मोटे २ कपड़े पहनतेहैं लुधियाने में बहुततरह का कपड़ा बनता है यहांका पशमीरीदुशाला और अन्य २ द्रव्यों का व्यापार होता है।

शिमला— यह नगर हिमालय पर्वत के ऊपर बसाहै यहांका जलवायु बहुतस्वस्थकर है अंग्रेज लोग ग्रीष्मऋतु में प्रायः यहां आकर रहते हैं औरभारतवर्षके गवर्नर जेनरल अप्रेल से अकटूबर तक प्रति वर्ष यहां आकर रहतेहैं ।

दिल्ली— इसके उत्तर में लाहौर दक्षिण में अजमेर और आगरा पूर्वमें अवध पश्चिम में लाहौर और अजमेर इसजिले केउत्तर औरपश्चिम में यमुना और इसकी शाखा नदियां बहती हैं यहां की भूमि रेतली है पवन उष्णहै यहां

गेहूं, जौ, और भांति २ की दाल उत्पन्न होती है दिल्ली के समीप बहुत जलाशय और नहर हैं दिल्ली नगर यमुना के पश्चिम तीर बसा है यह बंबई से ४३९ और मंदराज से ६८६ कोस दूर पर है यह नगर पहले मुसलमान बादशाहों की राजधानी था १५२६ ई. में मुगल बादशाहों की जड़ जमाने वाला बाबर बादशाह इब्राहीम लोदी को जीतकर दिल्ली के सिंहासन पर बैठा पहले यह नगर यमुना के पूर्व तीर पर था १६४१ में शाहजहां बादशाह उसको पश्चिम तीर पर लाया और इसका नाम शाहजहानाबाद रखा यह नगर तीन ओर दीवार से घिरा हुआ है और इसमें ११ द्वार हैं औरंगजेब के समय यहां २० लाख की बस्ती थी यहां जुमामसजिद मोती मसजिद कुतबमिनार और लाल पथरी किला इत्यादि शोभायमान वस्तु हैं इंद्रप्रस्थ जो युधिष्ठिर की राजधानी थी उसके अब खंडहर शेष दिल्ली के समीप देखे जाते हैं १८७० ईस्वी की १ जनवरी महारानी विकटोरिया ने इस नगर में सारे भारतवर्ष के राजाओं को बुलाकर उनकी सम्मति से राजराजेश्वरी, (कैशरहिन्द) पदवी ली ॥

पानीपत ‒ यह शहर पनाह के भीतर बसा है इस नगर में तीन विख्यात लड़ाई हुई प्रथम १५२६ में बाबर और इब्राहीम के बीच जिसमें इब्राहीम पराजित हुआ और दूसरी १५५६ में अकबर ने हेमू को पराजित किया तीसरा अहमदशाह दुर्रानी ने सदाशिवराय भाऊ को १७६१ में पराजित किया। इस जिले का "सदरमुकाम" करनाल है॥

हिसार ‒ इस जिले के जंगल में सिंह और व्याघ्रादि

बहुत सानक जीव रहते हैं इसका प्रधान नगर हिसार ही है अकबर के समय यहां टांकिले थे ॥

बंबई अहाता

इस अहाते के अंतर्गत सबप्रदेश समुदय केवल अंगरेजों के अधिकार में नहीं किन्तु अन्य २ राजाओं के अधिकार में भी है । संपूर्ण सिंधुदेश, औरंगाबाद, विजयपुर, खानदेश, और गुजरात का कुछ अंश इस अहाते के अंतर्गत है इसकी उत्तर सीमा गायकवाड़ और हुलकर राज्य पूर्व सीमा सेंधिया और हैदराबाद का राज्य और मंदराज दक्षिण सीमा दक्षिण कनाड़ा और मैसोर पश्चिम सीमा अरबसागर और गुजरात इसका क्षेत्रफल ४६९२९ वर्ग कोस है और मनुष्य संख्या २५६००००० से कुछ अधिक है ॥

नर्मदा, सबरमती, माही, तापती, ये नदियां इसके उत्तर से बहकर काम्बे की खाड़ी में गिरती हैं पश्चिम घाट पर्वत और समुद्र लहरों के भाव से यहां का जलपवन और अहातों से स्वस्थकर है बंबई की कहीं २ भूमि यद्यपि रेतली और प्रस्तरमय है तो भी सामान्यता से बंबई की भूमि उर्वरा है यहां धान्य गेहूं, जौ, बाजरा, ज्वार, नील, तमाकू, काफी, पाट, कपास, ईख, और आलू प्रभृति फलमूल उत्पन्न होते हैं यहां मौआ नामक वृक्ष के पुष्पों से एक प्रकार का मद्य बनता है यहां के जंगल में बड़ी २ लकड़ी होती हैं माले प्रभाव नदी के तट में लोहा और धारावार जिला के बीच उम्वन पर्वत में सोना निकलता है बंबई में शिल्पविद्या की भी बहुत उन्नति हुई है यहां वस्त्र बनाने के लिये

विलायत से बहुत यंत्र आये हैं जिनसे बहुत अच्छे २ वस्त्र बनते हैं इनमें अच्छा कागज़ भी बनता है यहां कपास, गरम् मुशाला, काफी, आफीम, मिरचकाली, गजदं त, इत्यादिका आधार होता है विलायत से जो वस्तु स्वेज की राह आती है उनमें से बहुत द्रव्य पहले बंबई में उतर कर रेलसे अन्य २ स्थानों में जाताहै बंबई के जंगल में केशरहीन सिंह, बाघ, चित्रा, हुयना, वन्यमहिष, जंगलीसूर, जंगलीगधा, साही, लंगूर, इत्यादि जीवरहतेहैं और घोड़े, महिष, गाय, सूर, भेड़, बकरी, इत्यादि ग्राम्य जीव यहां बहुतहैं बंबई अहाते के दक्षिण और मध्यमें कनारी और महाराष्ट्री लोगवास करतेहैं येलोगबहुतकरके खेती करतेहैं तापती नदी के पूर्व खान्देश औरनाशिक प्रदेश में भीलकोल और ठाकुर नाम असभ्य लोग वासकरते हैं सितारके दक्षिण में जोग- हाड़ हैं उनमें रामशीनामक पहाड़ीलोगवासकरते हैं बंब- ई शहर और उसके चारों ओरजोग्रामहैं उनमें बहुत यूरोपी य फारसी औरयहूदी लोगवास करते हैं यहांगुजराती म- हाराष्ट्री औरकनाड़ी भाषाबोलीजाती हैं और फारसी उर्दू अर्बी अंगरेज़ी इत्यादि भाषाओंकाभी प्रचारहै बंबई के शासन कर्ताको गवर्नर बोलते हैं और बंगालेआदि लेफ- नण्टगवर्नरों से इसका अधिकार अधिकहै इसके शासन कार्य्य में सहायता करनेके लिये एक "कौंसल" भीहै ॥

प्रदेश विभाग

बंबई प्रेसीडेन्सी में तीन कमिश्नरी हैं प्रथमउत्तर क- मिश्नरी द्वितीयदक्षिणकमिश्नरी तृतीयसिंधुविभाग —

इन विभागों में २४ जिले हैं ॥

उत्तर विभाग में

जिला	प्रधान नगर
बंबई	बंबई और शालसिट
जिला	प्रधान नगर
कोलाबा	कोलाबा अलीबाग
ठाना	ठाना कल्याणी बेसीन
सूरत	सूरत मान्दवी
भड़ोच	भड़ौंच जंबूसर
अहमदाबाद	अहमदाबाद धौलिआ
खेड़ा	महमुदाबाद खेड़ा
पंचमहल	गोधरा चम्पनी
खान्देश	खान्देश धुलिया

दक्षिण विभाग

जिला	प्रधान नगर
अहमदनगर	अहमदनगर अकोला
नाशिक	नाशिक मालीगांव
जिला	प्रधान नगर
पूना	पूना जूरी पुरन्दपुर
सितारा	सितारा विजयपुर किरकी महाव लेश्वर
रत्नगिरी	रत्नगिरी विजयगढ़
शोलापुर	शोलापुर बारशी
धारावार	धारावार मूलगन्ध बंकापुर
उत्तरकनाड़ा	हनोवर कुन्दपुर
बेलगांव	बेलगांव चांदगढ़

कलादगी	कलादगी वागलकोट

सिंधु विभाग में

हैदराबाद	हैदराबाद मियारनी
थर "वा" पारकर	अमर कोट
करांची	करांची ताता
सिकारपुर	सिकारपुर सक्खर
उत्तरसिंधुसम्मुखजिला	जेकबाबाद अलीपुर

अब बंबई के कई एक विख्यात जिलों का वर्णन कियाजाता है ॥

बंबई— यह शहर एक छोटे द्वीप के ऊपर है वह द्वीप प्रायः ४½ कोश विस्तृत है इसके उत्तर में एक शालसिटका टापू है और इनके बीच एक पुल बना हुआ है यह शहर बंबई अहाते की राजधानी है इसके चारों ओर दीवार हैं यह कलकत्ता से ५६७ और मंदराजसे ३५० कोस दूर परहैं इस शहर में बंबई अहाते के गवर्नरादि प्रधान २ अधिपति वासकरते हैं यहां एक किला भी है बहुत फारसी व्यापारी लोग रहते हैं इसमें एक बहुत अच्छा बंदर है पहले बंबई शहर पोर्टगीजों के अधिकार में था १६६१ इंगलेंड के राजा २ चार्लसने उनसे इसको दहेजमें पाया और १६८३ में यहां अंगरेजोंने कोठी स्थापित की उसदिन से यह नगर अंगरेजों के अधिकार में है बंबई से सात आठ कोस की दूरी पर ऐलीफेन्ट नाम द्वीप है उसमें एक बड़ी विशाल हाथी की मूर्ति और अनेक देवताओं की प्रतिमा देखीजाती हैं शालसिट और कालीद्वी-

य में हिन्दू और बौद्धों के देवताओंकी बहुत मूर्तियांह नीहैं ॥

सूरत—ज्ञात होताहै किइसका प्राचीननाम सौराष्ट्र था यह ठाणा से भड़ोंचतकविस्तृत है सूरत नगर तापतीनदी के दहने किनारे पर बसा हुआहै १६१२ ई॰ में अंग्रेज लोगों ने एक कोठीबनाई १८०६ में यह अंग्रेजों के अधिकारमें आया

भड़ोंच—नर्मदा नदीके तीर पर एक प्रधान शहर है इसमें चामभोटाकागज़ वस्त्रादि व्यापारहोताहै ॥

अहमदाबाद—सबरमतिनदी और कांबेकीखाड़ी के पश्चिम में है अहमदा शहर सबरमतिनदीके पूर्वतटपर है मुसलमानों के राजके समय यहनगर गुजरातकी राजधानीथी यहांअहमदशाहबादशाहने एक जुमामसजिद और एक औरमसजिद है इसनगर के समीप एक सुंदर जलाशय है जिसकेबीचमें एकबड़ा अट्टालहबना है इसकेदोकोसदूरपर सबरमतीनदीके तीरमें शाहबाग नामक एक उद्यान है यहां पहले सोना, रेशम, चांदी, सोना काव्यापार होताथा अब यहांसेनील, रुई, अफीम, और अच्छा कागज़ औरदेशोंमें जाताहै ॥

नाशिक—अहमदनगर के उत्तरपश्चिम में ब्राह्मण लोग इसकोबनारसकीनाईं विद्या और धर्म्म का स्थान बोलतेहैं यहांबहुत देवमंदिर हैं ॥

पूना—बंबई के दक्षिणपूर्व यहां भीमानदी बहती है यहांकी भूमिप्राय नीरसहै ऐसा कि किसी स्थानमें हरतलताादिभी नहीं देखपड़तेहैं पूना बंबईसहाते के

और विद्यालोचनाका प्रधान स्थान है ॥

सितारा— पश्चिमीघाट पर्वत की कगासे इसे विभक्त करता है बहुतकालतक यह नगर महाराष्ट्रों अर्थात् मर्हट्टों की राजधानी थी सेवाजीने इसको स्थापन किया १८४८ ई० में यह अंग्रेजोंके अधिकारमें आया इसके उत्तर पश्चिम में वालेश्वरनगर महावालेश्वर पर्वत के ऊपर है यहांका जलपवन बहुतठंडा है अंग्रेजलोगप्रायः यहां वायुसेवन करने केलिये आते हैं सिंधुके उत्तरपश्चिम में बलोचिस्थान पूर्व में राजपूताना दक्षिण में कच्छ है इसका क्षेत्रफल ९३००० वर्गकोस है यह सिंधुनदीकेमुखसे पंजाबके संगम तक विस्तृत है यहां सिंधु औरउसकी शाखा नदी बहती हैं यहां की जलवायु नीरस औरउष्ण है किसी २ने सिंधुदेशको भारतवर्ष का मिसर कहा है इसके भागकी भूमि उर्वरा है जिसमें धान, गेहूं, भुट्टा, प्रभृति उत्पन्न होते हैं दक्षिण की भूमि जंगली औरमारू है वहां बहुतअरण्य जीव रहते हैं भारत में सिंधुप्रदेश प्रथम मुसलमानों के अधीन हुआ १८४३ में सरचार्लस ने पियरने इसदेश को जयकरके बंबई अहाता में मिलायदिया मियाणी नामक स्थान में यह लड़ाई हुई सिंधकीराजधानी हैदराबाद जो सिंधुनदी के पूर्व तटपर है यहां ढाल तलवारादि शस्त्र बहुत अच्छे बनते हैं सिंधुनदी के पश्चिम तीर पर ना ना नगर है ॥

करांची— यह एक बन्दर है यहां बहुत द्रव्य अन्यत्र

देशों से जहाजों से आतेजाते हैं सिंधुविभागमें हैदराबाद् करांची, सिकारपुर, औरथरपारकर ये जिले "डेवेन्यावली" हैं

मन्दराज अहाता

इस अहाते की उत्तर सीमा निजामका राज्यवरार और बंबई अहाता दक्षिण सीमा भारत महासागर पूर्व सीमा बंगाले का सागर पश्चिम सीमा अर्बकासागर इसकाक्षेत्रफल ३७०३२ वर्गकोस है और मनुष्य गणना प्राय: ७३३००००० सेकुछऊपर हैं मंदराज अहाते के पश्चिमभागमें पश्चिमीघाट पर्वत श्रेणी से बहुत छोटी २ नदी निकलती हैं इसकेवीचकाभाग समतल है इसमें कृष्णाकावेरी, गोदावरी, तङ्गभद्रा, और पनार, पलार, प्रधान नदीहैं कलिकट, कलापर, और चिलिका ये तीन झीलेंहैं उत्तर सर्कार की भूमिसमतल और बालुकामय अर्थात् रेतली है परंतु उसका कोई २ स्थान उर्वरा है करनाटक की भूमि मरु और वृक्षलतादिसे रहित है करनाटक का जलपवन भारतवर्ष में उत्तम है यहां उत्तर पूर्व मेन्सूननामक वायु वहतीहै मंदराज अहातेकेवीच नीलगिरी के उपरिस्थित उत्कम एड नगर बड़ा स्वस्थकर है मदराज में धान, नील, रुई, नारियेल, भुट्टा, और केला प्रभृति उत्पन्न होतेहैं त्रिवांकोड़, और कनाड़ा प्रभृति स्थानों में बड़े २ शहतीर होतेहैं मालावार औरपूर्व में चन्दन की लकड़ी बहुत उत्पन्न होती है मैसूर और मडुरा में चान्दी और रसाञ्जन मिलताहै मालावार प्रभृति स्थानों में लोहा पाया जाता है राजमहेंद्री गन्टूर और वि-

जिगापट्टन में हीरा और पद्मराग देखाजाताहै बल्लारी और नेल्लूर में तामा बनता है यहां के लोग रूई, रेशम, कागोर, लोहा, प्रभृतिके शिल्प में रत हैं ये लोग यूरोप, आमेरिका, चीन, बरमा, और कलकत्तादि स्थानों में व्यापार करते हैं जंगली जीवों में से कालासार, हयना, उलकामुखी और महिष प्रभृति प्रधान हैं ग्राम्य जन्तुओं में भेड़, बकरी, गाय, भैंस, और गधे इत्यादि जीव हैं यहां के रहनेवाले मनुष्यों में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, और यहूदी बहुत हैं यहां तामील, तैलंगी, और उड़िया ये तीन भाषा प्रचलित हैं बंबई की नाईं यहां एक गवरनर शासन करता है और उसकी एक सभा है ।

प्रदेश विभाग

मंद्राज अहाता ४ प्रदेशों में विभक्त है जैसा उत्तर मध्य दक्षिण और पश्चिम प्रदेश इन चारों में बाईस जिले हैं

उत्तर प्रदेश

जिला	प्रधान नगरादि
गंजाम	श्रीकाकूलम, ब्रह्मपुर
विजिगापट्टन	विजिगापट्टन विजयनगर बांटेपर
जयपुर	जयपुर
गोदावरी	राजमहेंद्री कारिंगा

मध्य प्रदेश

जिला	प्रधान नगरादि
कृष्णा	मुसलिपट्टन, गन्तूर, कन्दापिला, इलोर
नेलूर	नेलूर अंगोल
कड़प	कड़प रायुटी

बलारी	बलारी सेरीडुर्ग गुट्टी
कार्नूल	कार्नूल कम्बम
उत्तरअर्कट	अर्कट चित्तूर वेलोर
मंदराज	मंदराज चिंगलीपट कांचीपुर सडरास

दक्खिन प्रदेश

दक्खिन अर्कट	कडलूर कोटनद जिंदी
तन्जोर	तन्जोर टंकीबार नागोर कंम्बुकोनम
त्रिचन्नापली	त्रिचन्नापली श्रीरंगम
मदुरा	मदुरा दिंदीगल रामनद रामेश्वर
त्रिनीलवली	त्रिनीलवली पलांकोटा

पश्चिम प्रदेश

सेलम	सेलम त्रिपातुर
कंवाटूर	कंवाटूर धर्मपुर
नीलगिरी	उत्कमण्ड
उत्तर और दक्षिण मालाबार	कोचीन कनानोर तेलचेरी कालीकट बेपुर
द॰ कनाड़ा	मंगलोर

अब इनमें से प्रधान २ नगरों का वर्णन किया जाता है

उत्तर अर्कट—नेलूर के दक्षिण में है इसकी बहुधा भूमि रेतली है यहां चावल और कपास बहुत उत्पन्न होती है १७००० ई॰ के पहले अर्कट नगर कर्नाट की राजधानी थी उसके पश्चिम में विलोर और दक्षिण पूर्व में वंदी वास-१७५९ ई॰ में वंदीवासनगर फरासीसी गवरनर (लाली) इंगरेजों के सेनापती कर्नल कूट से पराजित हुआ इसके समीप अम्बर नगर बड़ा संदर है १७४९ इसीमें फ्रासीसों

ने इस नगर में अनारुद्दीन को मारडाला और १७६० में इसी नगर में अंगरेजों ने हैदरअली को पराजित किया

चिंगलीपट्टन– यह नगर पलार नदी के तीरमें है इसमें एक दृढ़ किलाहै पलिकटझीलकेबीच पलीकट नगर है पलार नदी के तीरमें कांचीपुरनगर जिस को कांजीवि रम भी कहतेहैं महाबलीपुर में बहुत पुराने देवमंदिरहैं।

मंदराज– यहकारोमंडल के किनारे पर बसाहै और मंदराजअहाता की राजधानी है यह कलकतासे ५३५ और बंबईसे ३७१ कोस दूरमें हैं यहांका व्यापारबड़ी हद तक विस्तृत है मंदराज के गवर्नर यहां वासकरते हैं भारत-वर्ष के बीच यहां ही अंगरेजलोग पहले आये १६३९ ई॰ में यहांकिलाबनाने के लिये कुछ भूमि इनकोमिली १६४३ इन्होंने सेंटजार्जनामक किलाबनाया १७०२ ई॰ में औरं-गजेब के सेनापतिदाउदखां ने इसपरचढ़ाईकिया १७४६ फरासीसी लोगोंने इसपर अधिकारकिया परंतु १७४९ ई॰ में जब अंगरेज और फरासीसों के बीच संधिहुई तबफि र यह नगर अंगरेजोंनेपाया १७६७ से १७८१ तक हैदरअ-लीने इसपर उपद्रव किया परंतु सफलनहुआ॥

दक्षिणअर्कट– यह पनारनदी के तीरपर अवस्थितहै यहां सेंटडेविडनामक किला है १७८१ ई॰ में सर आयर कू टने इसस्थानपर हैदरअलीको पराजित किया तंजोर इ सकीभूमिबहुत खेतीकी उत्पत्ति कारक है १७४५ ई॰ में अंगरेज लोगोंने टंकीबारकोडेनलोगों से मोललिया॥

कालिकट– मालाबार में है १७९७ ई॰ में पोर्टगाल

नाविक वास कोटि गाम इस नगर में प्रथम आया ॥

कमिश्नरी प्रदेश

जो स्थान पूर्व कथित तीन अहातों की शासन प्रणालीके अधीन नहीं हैं परंतु भारतवर्षीय सरकार के अधीन हैं और चीफकमिश्नर केद्वारा शासन होते हैं उसे कमिश्नरी प्रदेश बोलते हैं वहां का शासन प्रबन्ध चीफकमिश्नर डेपुटीकमिश्नर प्रभृतियों सेकिया जाताहै । आसाम, अवध, अयोध्या, मध्यप्रदेश, आजमेर, मेहरवरा, कुर्ग, हटशाबला, निजामदराज्य, अंडेमन ये आठ कमिश्नरी प्रदेश हैं इन्हें वेवंदोवस्ती कहते हैं ॥

आसाम

इसके उत्तर में भूटान पश्चिम में रंगपुर कूचविहार और जलपाइगुड़ी दक्षिण में मैमनसिंह त्रिपुरा और लुसाई पर्वत पूर्वमें मनीपुर और ब्रह्मादेश इसकाक्षेत्रफल १२४६३ वर्गकोस और मनुष्यगणना ५१००००० से कुछ ऊपरहै आसाम की नदी ब्रह्मपुत्रहै यह चारों ओर पर्वतों से घिरा है ब्रह्मपुत्र इसकेबीच होकर इसको दो भागों में विभक्तकरतीहुई बंगाले के सागर में गिरती है इसकी जलपवन बंगाले के समान है आसाम में भांति २ की धातु पाईजाती है यहांधान्य, अफीम, तमाकू, सुपारी, पान, बहुतउत्पन्नहोतेहैं यहांसेसोना, रेशम, लाख, सरसो, मिरच, और बेंत अन्य २ देशों में वाणिज्यकेलियेजाताहै यहां चाहभी बहुत उत्पन्न होती है पहिले आसाम बंगाल अहातेके अधीनथा परंत कुछदिन हुएकि इस-

के उत्तर पूर्व स्थित असभ्य पहाड़ी जातियों के उपद्रवसे इस से भिन्नकियागया इसकीराजधानी अबसिलंगहै सिल्हट औरकछाड़ भी इसमें मिलायेगयेहैं आसामतीन भागों में विभक्तहै प्रथम उत्तरआसाम, मध्यआसाम, औरनिम्नआसाम आसाम में ९ जिलेहैं ॥

जिला	प्रधान नगर
लखीमपुर	देवरूगढ़ उत्तरलखीमपुर जैपुर सदिया
शिवसागर	शिवसागर जोहरहट गोलाघाट
नागापहाड़	शामूगुटिंग देमापुर
दरंग	तेजपुर विश्वनाथ मंगलडिह
नौगांव	नवगांव
ग्वालपाड़ा	ग्वालपाड़ा धुबड़ी
कामरूप	गौहाटी नलबाड़ी बड़पेटा
गारोपहाड़	तूरा
खसियापहाड़	चेरापुंजी जोआई सिलंग
कछाड़	सिलचर हैलाकांदी
सिलहट	सिल्हट जयंतीपुर

आसामचिरकालसेहिंदुओं के अधीनथा १८३८ ई. में अंगरेजों ने इसके राजा पुरंदरसिंह को हटाकर अपना अधिकार पाया ॥

अयोध्या

इसके उत्तर में नेपाल दक्षिण में इलाहाबाद पूर्व में गोरखपुर पश्चिममें दिल्ली और आगरा इसकाक्षेत्रफल प्रायः २४ ६८ वर्गकोसहै मनुष्यगणना १०००००००सेभी कुछ

ऊपर है अयोध्यामें रामगंगा सरयू गोमति प्रभृति नदी बह-ती हैं यहांकी भूमि उर्वरा है यहां चावल, जौ, गेहूं सरसों, आलू, ईख, तमाकू, प्रभृति उत्पन्न होते हैं यहां हाथी, मृग, गंडार, रीछ, बाघ, प्रभृति वन्य जन्तु बहुत हैं अयोध्या में उनाव, गोंडा हरियाबाद प्रतापगढ़ फैजाबाद बैरच मुहम्मदी रायबरेली लखनौ सीतापुर सुल्तानपुर और हरदुई ये १२ जिले हैं ॥

लखनौ– अयोध्या की राजधानी गोमती नदी के तट पर बसा है फैजाबाद और एक नगर जो घाघरा नदी के तटपर बसा है इसके कुछ पूर्व में सरयू नदी के तीरपर प्राचीन अयोध्यानगर है जो सूर्यवंशियों की राजधानी थी ।

मध्यप्रदेश — १८६२ ई॰ में नागपुर सागर और नर्मदा प्रभृति प्रदेशों को मिलाकर मध्यप्रदेश बनाया गया है इसके उत्तर में बुंदेलखंड के अंतर्गत तेहरी अथवा पन्ना नामक राज्य पश्चिम और उत्तरपश्चिम में ललितपुर भूपाल सैंधिया राज्य बरार और निजाम का हैदराबाद दक्षिण और दक्षिणपूर्व में निजाम राज्य और गोदावरी जिला पूर्व में जैपुर और रेवा इसका क्षेत्रफल २१२५ वर्ग कोस है मनुष्य संख्या ९२ लाख के कुछ ऊपर है सतपुड़ी पर्वतश्रेणी इस के चारोंओर स्थित है गोदावरी नर्मदा महानदी और बानगंगा प्रभृति नदी इसमें बहती हैं नवगांव और सेउनी बन्ध ये दो झीलें इसमें हैं यहां गेहूं भुटा पाट प्रभृति उत्पन्न होता है यहां हीरा लोहा सोना और कोइलों की खान है मध्यप्रदेश चार भागों में विभक्त हुआ है नागपुर जबलपुर नर्मदा और छत्तीसगढ़

येचार विभाग हैं ॥

नागपुर विभाग

जिला	प्रधान नगर
नागपुर	नागपुर कामटी
भंदाड़ा	भंदाड़ा महरी
चंदा	चंदा आरमोरी
वार्दा	हिंगनघाट पूली
बालाघाट	हट्टा लाजी

जबलपुर

जबलपुर	जबलपुर, मुनगज
सागर	सागर गुराकोट
डुमो	डुमो हट्टा
सिउनी	सिउनी
मंडला	मंडला

नर्मदा विभाग

होसंगाबाद	होसंगाबाद ऊदी सुहागपुर
नरसिंहपुर	नरसिंहपुर
बैतूर	बैतूर मुंटाई
चंदोवाड़ा	चंदोवाड़ा
निमार	बुरहानपुर

छतीस गढ़

रईपुर	रइपुर राजिम
बिलासपुर	रतनपुर बिलासपुर
सम्भलपुर	सम्भलपुर

जिला उत्तर गोदावरी। कुमगोंडियान मध्यप्रदेशमें १९ कईराज्यहैं जैसा बस्तार, खारोंडी, रैगढ़, बड़गढ़, सारंगढ़, पटना, सोनपुर, बिंद्रानवागढ़, कालाहाण्डी, करौंद, कवर्धा, खैरागढ़ नंदगांव छुईखदान।

आजमेर

आजमेर अर्वली पर्वतके पूर्व में और जयपुर के नैऋतकोन में है यह भारतवर्ष के बीच यह एक छोटा प्रधान देशहै इसके पूर्वीभाग रेतली और पश्चिमीभाग पथरेली भूमिहै इस में प्रायः नदी नहीं है केवल कितनेएक एक बड़े २ जलाशय हैं जिनकेबीच पुष्कर प्रसिद्ध है सुहदय आजमेर नगर पहाड़केबीच है यह पहले उत्तर पश्चिम प्रदेशीय सर्कार के अधीनथा १८७१ ई. से कमिश्नरी हुआ ॥

कुड़ग — कुड़गकी उत्तर सीमा मैसूर और कनाड़ा पूर्व सीमा मैसूर पश्चिम सीमा मलवार कनाड़ा दक्षिणसीमा मालाबार इसकाक्षेत्र फल प्रायः २९ वर्गकोसहै और मनुष्यगणना ११५००० है कुड़ग का बहुतसाभागजंगलों से घिराहै और उन जंगलों में बहुधा हाथी बाघ चीता बिल्ली इत्यादि बहुत जीवरहते हैं इसकी भूमि ऊंची नीची और पथरेली है यहां के लोग सुंदर और उद्योगी होते हैं इनकी स्त्री एकसे अधिक भी पती रखसक्ती हैं पहले यह देश स्वाधीन था अब मैसूर के कमिश्नर के अधिकारमें है ॥

हिंदोस्तान

इसके विषयमें पूर्वप्राय द्वीपके वर्णनके समय अभी

तरह वर्णन कियाजायेगा ।

निज़ामदत्तराज्य

निज़ाम के कार्य्य में जो अंग्रेजी सेना नियुक्त है उसके खाने पीने के लिये निज़ामने जोराज्य अंग्रेजों को दिया है उसकानाम निज़ामदत्तराज्य है और उसके दोभाग हैं पूर्व बरार और पश्चिम बरार पूर्व बरार में अमरावती इलीचपुर और ऊन ये तीन जिले हैं पश्चिमबरार में अकोला वुलदाना और वेसीम येतीन जिले हैं पहले इलीचपुर इसका प्रधान नगर था उसकेदक्षिणपश्चिममें आरगाम नगर जिसमें विलज़ली ने सेंधिया की सेना को पराजय किया ।

अंडेमन द्वीपश्रेणी

यद्यपि यह द्वीपश्रेणी भारतवर्ष के बीच नहीं है तोभी भारतवर्ष के गवर्नर जेनरल के शासनमें है इसका अधिकांश जंगल पड़ा है पोर्टविपर यहां प्रधानबंदर है यहां सब कैदीलोग भेजे जाते हैं १८७२ में फर्वरी महीने में इस स्थान में एकमुसलमान ने भारतवर्ष को गवर्नर जेनरल लार्ड मिओ को मारडाला कुछदिनवीतेनीकोवरद्वीप भी इसमें मिलायागया ये सब द्वीप बंगाले के सागर में हैं ॥

भारतवर्ष में अंग्रेजों के यहां सम्पूर्ण अधिकार उनका विषय लिखागया अब यहां केस्वाधीन कई और मित्रराज्यों का वर्णन किया जाता है ॥

स्वाधीनराज्य

नेपाल — इसकी राजधानी कठमांडू वाकाष्ठमण्डप क्योंकि इस नगर में बहुतकाठकेबनेहुएमंदिर हैं नेपाल

की भूमि उर्वरा है यहांका वाणिज्य द्रव्य हाथी शालकाठ कस्तूरी चांवल लोहा पाहन तांबा रेशम मोम रुई इलायची खपर(कत्थ) और हरड़ इत्यादि वस्तु हैं शिवरात्री के दिन यहां बहुत यात्री आते हैं ।

भोटान — इसकी राजधानी तासीसूदन पुनाक और तमसूथेदो प्रसिद्ध नगर हैं कर्द और मित्रराज्य ।

सिकम — यह नेपाल और भोटान के मध्य में है पृथिवी के समस्त पर्वतों के शिखरों से ऊंचातम पर्वत शृङ्ग गौरी शंकर इसके अंतर्गत है यहां का राजा तमलंग नगर में रहता है और बौद्ध धर्मावलम्बी है यह ६०००) रु अंग्रेजों को बर्सौड़ी कर देता है और स्वाधीनता से राज्य करता है यहां धान्य संतरा तांबा और चूना उत्पन्न होता है ॥

कूचबिहार — जिला रंगपुर और भूटान के बीच है इसका प्रधान नगर बिहार है सम्प्रति यहां का राजा नाबालग होने से गवर्नमेण्ट ने इसका प्रबन्ध अपने हाथ में लिया है १८७८ ई० की ६ छठी मार्च को यहां के राजकुमार से ब्रह्म धर्म के आचार्य बाबू केशव चन्द्र सेन की लड़की का ब्राह्ममतानुसार विवाह हुआ यहां धान्य तमाकू पाट सरसों और बांस उत्पन्न होते हैं यहां का राजा अंगरेजों को ६७०००॥।=) रु० कर देता है ॥

बघेलखंड — यह इलाहाबाद के दक्षिण और बुंदेलखंड के पूर्व में है विन्ध्याचल इस के बीच में है इसकी राजधानी रेवा यहां राजा हिंदू है और अंगरेजों को कर नहीं देता यहां गेहूं, जौ, मूंगी मोंठ इत्यादि अन्न-

उत्पन्न होता है बुन्देलखंड—यह इलाहाबाद के दक्षिण और २ रेवा के पश्चिम में है यहां किसी २ स्थान में हीरा मिलता है इस प्रदेश में बहुत छोटे २ राजा हैं ॥

भरतपुर—यह आगरा के पश्चिम में है इसका विस्तार बहुत नहीं है इसकी राजधानी भरतपुर यहांका किला अतिशय दुराक्रम्य है १८०५ लार्ड लेक ने इसपर चढ़ाव किया परन्तु सफल न हुआ १८२६ में फिर अंगरेज इसे अपने अधिकार में लाये ॥

धौलपुर—यह राज्य ग्वालियर के उत्तर और भरतपुर के दक्षिण है इसका प्रधान नगर धौलपुर चर्मन्वती नदी के तीरपर बसा हुआ है ॥

भूपाल—यह मालवे के बीच है इसके पूर्व सागर और नर्मदा प्रदेश और तीन ओर ग्वालियर का राज्य है इसकी राजधानी भूपाल है अब इस में एक बेगम राज्य करती है

ग्वालियर वा संधिया का राज्य इसके उत्तर में धौलपुर पूर्व और दक्षिण में बुंदेलखंड सागर नर्मदा भूपाल और इंदौर इसका प्रधान नगर ग्वालियर है इसके कुछ दूर पर पनार और महाराजपुर है जिन में १८४३ ई॰ में मरहठों को पराजित किया इसके दक्षिण पूर्व में शिप्रा नदी के तीर पर उज्जैन नगर जो पहले विक्रमादित्य की राजधानी थी। ग्वालियर का राजा केवल कुछ अंगरेजी सेना को पालता है और कुछ इसके सिवाय नहीं देता ।

राजपूताना वा राजवाड़ा यह सिंध से यमुना तक विस्तृत है अब यह देश उदयपुर जयपुर जोधपुर कोटा बुंदी

अलवर बीकानेर जैसलमेर कृष्णगढ़ बांसवाड़ा प्रताप- गढ़ डूंगरपुर करौली और सिरोही ये १४ राज्य हैं पहले अ- जमेर और मेहरवारा भी इसके अंतर्गत थे परंतु अब अंगरेज़ों के अधीन हैं यहां लूनी सुकरी आदि नदियां बहती हैं इसके बीच में अर्वलीपर्वत जिसके पश्चिमें रे- तली मरुभूमि है राजपूताना की जलवायु ग्रीष्मकाल में बड़ी तपन होती है जैपुर और जोधपुर के बीच संभर झी- ल है जिसमें बहुत नमक उत्पन्न होता है ।

उदयपुर— अर्वली पर्वत के पूर्व में है पहले चित्तौड़ इसकी राजधानी थी अब उदयपुर है उदयपुर का रा- णा सूर्यवंशी और सब राजाओं से कुलीन है ॥

जयपुर— यहां की राजधानी जयपुर बड़ा सुंदर ब- ना है कहते हैं कि राजा जयसिंह ने इसे बसाया है ।

जोधपुर वा मारवाड़— अर्वलीपर्वत के पश्चिम में है इसका प्रधान नगर जोधपुर है जैसलमेर यह जोधपु- र के पश्चिम इसका प्रधान नगर जैसलमेर है ।

बीकानेर— जोधपुर के उत्तर । अलवर जयपुर के उत्तर इस राज्य के बीच लसवारी नामक ग्राम में १८०३ में लार्ड लेक ने सेंधिया की सेना को पराजित किया ॥

बड़ौदा— वा गायकवाड़ यह कांबे खाड़ी के दोनों ओ- र पर है तापती माही नर्मदा सवरमती और बनास यह- हां की मुख्य नदी हैं राजधानी बड़ोदा माहीनदी के पूर्व तीर पर है । सुप्रसिद्ध द्वारिका नगर इसी राज्य के पश्चि- म में समुद्र तट पर है काठीगढ़ वा गुजरात के प्राय द्वीप

के दक्षिण प्रान्त में सोमनाथ पट्टन जिसनगर में सोम-
नाथ महादेव का बड़ाभारी मंदिर बनाया १०२४ ई. में
गजनी के बादशाह महमूद ने इसे तोड़ा ॥

कच्छ बड़ोदा के पश्चिम यह राज्य एक द्वीपकी तरह मा
लूम होताहै। क्योंकि पूर्व में कच्छकीखाड़ी गुजरात से
पृथक् करती है पश्चिममेंसिंधु नदी की एक शाखा इसे
सिन्धुदेशसे पृथक् करतीहै दक्षिण में समुद्र उत्तरमें ल-
वणमय दलदल भूमि है इस दलदल भूमिको रणबोल-
तेहैं वर्षाकाल में यह समुद्र के जल से भरजाती है और
समय में इसकी किसी स्थान में झील किसी स्थानमें विस्तृ-
त लवण क्षेत्र और किसी स्थान में गोमहिषप्रभृति पशु-
ओं से आकीर्ण तृणाच्छन्न क्षेत्रदेखपड़ते हैं जानपड़ताहै
किरण पहले समुद्रका अंश था अबसमुद्र इससे हटगया
प्रतिवर्ष यहां बहुत रुपये का लवण उत्पन्न होताहै ॥

बहावलपुर — यहराज्य जैसलमेर औरबीकानेर
के उत्तर पश्चिम सतलजनदी के पूर्वतट में गारा औरदा
जमूताना के बीचमें है यहां धान्य नील तमाकू औरचीनी
आदि उत्पन्न होतीहैं यहां की राजधानी बहावलपुर है
यहांका वाणिज्य प्रसिद्ध है और यहां के अधीश्वरकी खा
उपाधि होती है ॥

पटियाला — यहलुदियाने के दक्षिण औरबहा-
वलपुर के उत्तर पूर्व में है इस राज्य की — राजधानी प-
टियालानगर है यहां की भूमि बहुत उर्वराहै और ना
नाविधकी खेती उत्पन्न होती है यहां का राजा अंग्रेजी स-

जारको १०० सवारकर देता है पटियाले के उत्तर सतलज और जमुना के बीच कोहलूर हंडूर सिरमोर और भवि शहर ये ४ छोटे राज्य हैं इन सबके पश्चिम में सुकेत और मंडी नामक दो छोटे राज्य हैं उनके पश्चिम हिमालय के गर्भ में ऐरावती नदी के तटपर चम्बा का राज्य है इस राज्य में तांबा लोहा और शीशे की खान है यहां के जंगल में बड़ी २ लकड़ी मिलती है यहां का राजा अंगरेजो को ५ हजार रुपैया करदेता है ॥

गढ़वाल — यह राज्य हिमालय पर्वत के गर्भमें कुमायूं और हरिसगढ़वाल के उत्तर पश्चिम है इसका प्रधान नगर टिहरी है यहां गंगा जमुना उत्पन्न हुई हैं इसलिये बहुत यात्री लोक प्रतिवर्ष आते हैं ।

काश्मीर — यह भारतवर्ष के उत्तर पश्चिम प्रांत में है इस के चारों ओर पर्वत मध्यभाग समतल क्षेत्र है इसकी भूमि उर्वरा है और चावल और सुस्वादु फल उत्पन्न होते हैं काश्मीर में बहुत छोटी २ झील हैं इनमें से उलर सबसे प्रसिद्ध है यहांकी उपत्यकाभूमि में गुलाब फूल के खेत हैं इन गुलाब फूलों से अच्छा अतर निकलता है काश्मीर की जलवायु अतिमनोहर है काश्मीरी शालतो सर्वत्र प्रसिद्ध हैं काश्मीरकी राजधानी श्रीनगर झेहलम नदी के तटपर बसा है १५८६ में अकबरने काश्मीर को अपने राज्य में मिलाया और इसे पृथिवी का स्वर्ग वर्णन की १८१९ में काश्मीर राज्य सिक्खोंके अधीन हुआ १८४५ में गुलाब सिंह राजा हुआ काश्मीर का राजा

अंग्रेजों को तीन जोड़े शाल १ घोड़ा १२ तिबती बकरी कर देता है ॥

हुलकर — यह राज्य ग्वालियर राज्य के दक्षिण पश्चिम में नर्मदा नदी के दोनों तटपर विस्तीर्ण है इस की भूमि उर्वरा है यहां गेहूं इख अफीम तमाकू और कपास बहुत परिमाण से उत्पन्न होताहै १८ ६३ में हुलक रवंश के स्थापन कर्त्ता का जन्म हुआ है यह सामान्य अवस्था से क्रम से राजा हुआ था इसकी राजधानी इन्दौर विन्ध्याचल के उत्तर में है ।

हैदराबाद — यह राज्य बहुत विस्तृत है इसके उत्तर पूर्व में मध्य प्रदेश दक्षिण में मदराज अहाता पश्चिम में बंबई पूर्व में बड़ोदा और गोदावरी नदी है इस की उत्तरसीमा में तापी और दक्षिण में तुङ्गभद्रा और कृष्णा नदीबहती हैं इस राज्य में बहुत जागीर दार हैं इसके अल्प अंशी मुख्य अधीश्वर के हाथ में है यहांके प्रधान अधीश्वर की उपाधि निजाम है इसकी राजधानी हैदराबाद है इसकी भूमिउर्वरा है परंत अधिक जंगली है हैदराबाद नगर के तीन कोस पश्चिम में गोलकुंडा यहां पूर्वकाल में बहुत हीरा पाया जाता था हैदराबाद के उत्तर पश्चिम में विदर और औरंगाबाद है औरंगाबाद से तीन कोस दूरीपर इलोर की विख्यात गुफा है औरंगाबादके २५ क्रोश उत्तरपूर्व में आशय नामग्राम है यहां १८०३ में सेनापती विलजली ने संधिया और नागपुर के अधीश्वर का पराजय कियाथा ॥

मैसूर—यह राज्य हैदराबाद के दक्षिन पूर्व और पश्चिम घाट पर्वत के मध्यमेंस्थित है इसके उत्तर में तुङ्गभद्रा और हाज़िरी और दक्षिण में कावेरी नदी बहती है यहां की जलवायु बहुत शीत वा उष्ण नहींहै यहां धान्य गेहूं और नाना प्रकार के मीठे फल होतेहैं यहां जंगल में सगून प्रभृति बड़े वृक्ष होते हैं यहां कनारी (कर्नाटी) भाषा बोली जाती है हैदरअलीके समय में मैसूर एकबड़ा प्रसिद्ध राज्य था १७९९ इसी में अंग्रेजों ने श्रीरंगपट्टन में हैदरअली के बेटे टीपू को मार कर उसकी गद्दीपर महाराज कृष्ण उदयवार को बिठाया परंतु मैसूर केराजा राज्य शासन में असमर्थ होने पर अंग्रेजों ने १८३२ में अपने हाथमें लिया और इसके शासन के लिये एक कमिश्नर नियुक्त किया है उनके अधीन कुरग का राज्यभी है अब मैसूर में तीन कमिश्नरी हैं नन्दीदुर्गविभाग अष्टग्राम विभाग और नागर विभाग इन तीनों में ८ जिला हैं बंगलोर कुलर तुकुर मैसूर हासन साईमोज्ञा कादूर और चित्रदुर्ग बंगलोर में मैसूर के कमिश्नर रहतेहैं कुलर में हैदरअली का जन्महुआथा श्रीरंगपट्टन मैसूर की राजधानी है ॥

कोचीन—मालाबार के दक्षिण में है यहां सेगून प्रभृति बड़े २ वृक्ष उत्पन्न होते हैं चावल मिरच इलाचीनी नारीके आदियहां बहुत उत्पन्न होतेहै यहांनौद्री और नायक प्रभृति लोग वास करते हैं ॥

त्रिवांकोड़ इसकीराजधानीत्रिविन्द्रमहै—यह

राज्य कुमारी अन्तरीपके उत्तर ओर को चौके दक्षिण आठ कोस विस्तीर्ण है यहां के जंगल में हाथी व्याघ्र महिष और बन्दर बहुत हैं यहांसे मिरच इलायची दालचीनी और चन्दनकाष्ठ आदि अन्य देश में जाते हैं ॥ ∴

कोलापुर और सावंतवाडी — यह दो राज्य महाराष्ट्रों के अधीन हैं कोलापुर बीजापुर के अंतरगत सितारा के दक्षिण में है सांवतवाडी गोआ के अधीन है ॥

॥ फ्रासीस और पोर्टगेजों का राज्य ॥

अबतक भी भारत वर्ष के किसी स्थान में फ्रासीस और पोर्टगेजों का अधिकार है ॥ फ्रासीसों का अधिकार ॥

पांडुचेरी — कारोमंडल के किनारे मदरास से ३८ कोस दक्षिण में यहां फ्रासीसों का गवर्नर रहता है ॥

कारिकाल — कावेरी नदि के संगम पर अवस्थित है और मंदराज से ६० कोस दक्षिण में है

माही — मालावार के किनारे पर है बंगाले में चंदर नगर कलकत्ता के १० कोस उत्तर हुगली नदी के पश्चिमतीर पर है ॥

यानन — उडेसा उपकूल में है

पोर्टगेजों का अधिकार

गोआ — कनाड़ा के उत्तर है इ माउम पश्चिम उपकूल में है डियदीप काठिगढ़ प्राय: द्वीपके दक्षिण में है ॥

भारतवर्ष के दक्षिण में लंकाद्वीप है यह द्वीप अंडाकार है यहांकी भूमि उर्वरा है यहां बहुमूल्य धातु ओं की खान है और इसके समीप समुद्र में प्रति वर्ष बहुत

रुपय के मोती मिलते हैं इसकी लंबाई ९० कोसहै और चौड़ाई इसकी ६२ कोस इसका प्रधान नगर काएडी त्रिंको माली और कोलंब है ।

गाल नामक एक नगर है यहां डाकके जहाज ठहरते हैं अब लंका के सिवाय और २ छोटे द्वीपों का वर्णन पहले कर चुका हूं ॥

भारतवर्षकी शासनप्रणाली ॥

भारतवर्ष में अंग्रेजों के जितने अधिकार हैं उनपर एक प्रधान शासन कर्ता और चार मंत्री कर्तव्य करते हैं इस प्रधान शासन कर्ता को गवरनरजेनरल वा वाइस राय कहते हैं और उन चार मंत्रियों को कौंशिलर कहते हैं गवरनर जेनरल और कौंसिल मिलकर जो सभा करते हैं उस सभा को सुप्रीम कौंशिल वा गवरनरजेनरल इन कौंशिल कहते हैं सन्धी युद्धादि जितने कार्य सब इस सभा के अधीन हैं

प्रथम इससभासे भारतवर्षीय अधिकार संबंधि समुदय कानून प्रस्तुत होते थे कुछ दिन के पीछे कानून प्रस्तुत करने के लिये और एक स्वतन्त्र सभा संस्थापित हुई थी जिसे लेजिसलेटिव कौंशिल वा व्यवस्थापिक समाज कहते थे अब वह सभा भी दूर हुई उसके स्थान में एक साधारण व्यवस्थापिक समाज और प्रत्येक हाते में एक २ विशेष व्यवस्थापिक संस्थापित हुई है साधारण समाज अंगरेजों के सम्पूर्ण अधिकार के लिये कानून बनाती है परंतु प्रत्येक हाते के अधिकार में जो २

विशेष कानून की आवश्यकता होती है ये सब उस अ-
हाते की व्यवस्थापक सभा से बनते हैं ।

साधारण सभामें गवरनर जेनरल आप और प्रत्येक
अहाते की सभा में उसअहातेकागवरनर जेनरल सभा-
पती होते हैं प्रत्येक सभाके मिम्बरों में कोई नौकर औ
र कोई एक सर्कार के नौकर जो नहीं देशी और अंगरेज़
रहते हैं, मंदराज बंबई इनदोनों अहातों में एक एक ग
वरनर और उसके साथ दो दो कौंशिलर रहते हैं बंगा-
ल प्रयाग और पंजाब में एक २ शासनकर्ता रहता है
जिसको लफटनेण्टगवरनर बोलते हैं ये सब अपने२
अधिकार में कर्त्तत्व करते हैं परंतु गवरनर जेनरल इन
कौंशिल का अधीन होता है गवरनर जेनरल इनकौंशि-
ल "कौंशिलआफ़ इंडिया" नामक सभा के अधीन होता
है यहसभा इंगलेंड में संस्थापित है इसके अध्यक्ष का
नाम सेकरटर आफ स्टेट है उस सभा में और ९९ सभा-
सद होते हैं जबभारतवर्षका कोई प्रबन्ध सुनियम से
नहीं होता तो सेकरटरी आफ स्टेट को पार्लिमेण्ट ना-
म महासभा और इंगलैंड की रानी के समीप उत्तरदाता
होना पड़ता है इसलिये सेकरटरी आफस्टेट की ऐसीक्ष-
मता है कि वह अपने कौंशिलर के मतों को अतिक्रम क-
रके अपनी बुद्धि के अनुसार कार्य्य करसकता है ॥

बंगाला मंदराज और बंबई इनतीन प्रेसीडेन्सी की
राजधानी में इंगलेंड देश के कानून प्रचलितहैं इनतीनों
राजधानी और इलाहाबाद नगर में हाईकोर्ट नामक एक२

प्रधान विचारालय स्थापित हुआ है । पंजाबके सर्वोत्तम प्रधान विचारालय को चीफकोर्ट बोलते हैं अंग्रेजों का शासन कार्य्य कलेक्टरी दीवानी और फौजदारी इस प्रणाली से सम्पन्न होता है जहां राजकर विषयक प्रबन्ध होता है उसे कलेक्टरी बोलते हैं और जहां सम्पती और अधिकार विषयक मुकद्दमा की निष्पती होती है उसे दीवानी अदालत बोलते हैं जहां मारपीट चोरीप्रभृतीका न्याय होता है उसे फौजदारी बोलते हैं ॥

कलकत्ता मंदराज और बंबई इन तीन नगरों के सिवाय और सबस्थान में हिन्दू और मुसलमान शास्त्रोक्त कानून प्रचलित है कोई २ स्थान उपर्युक्त प्रणाली से शासित नहीं होता उन सब स्थानों का कानून स्वतन्त्र है वहां कमिश्नर वा एजेण्ट नामक प्रधान राजपुरुष और उनके अधीन में और २ न्यायकर्त्ता नियुक्त होते हैं उनसब स्थानों को कमिश्नरी वा एजन्सी बोलते हैं भारतवर्षीय स्वाधीन करद और मित्रराज्य में एसाप्रबन्ध नहीं है वहां के राजा लोग प्रायः यथेच्छाचारी होते हैं परन्तु अंगरेजों की भाँति प्रजा से अधिक कर नहीं लेते ॥

पूर्वी प्राय द्वीप

एशिया के नकशे में बंगालकी खाड़ी के पूर्वतटपर जोबड़ा प्राय द्वीप देख पड़ता है उसे पूर्वी प्रायद्वीपबोलतेहैं बंगाले की खाड़ी औरचीनी समुद्रके बीच जोदेशहै सब इसके अन्तर्गत है इसपूर्वी द्वीप में अनेक पर्वतश्रेणी उत्तरसे दक्षिणतक विस्तृत हैं उन पर्वतों के बीच

बड़े २ उर्वर क्षेत्र हैं जो बड़ी २ नदी के जलों से अच्छी तरह सींचे जाते हैं ऐरावती और सैलूपन नामक दो नदी दक्षिण की ओर बहकर मार्टावान की खाड़ी में गिरती हैं मिननदी स्याम की खाड़ी में गिरती है मेकमनदी चीनके समुद्र में गिरती है

जलवायु खेती इत्यादि

यहां की जल वायु भारतवर्ष की नाईं है परंतु कुछ उससे आर्द्र है यहां की भूमि उर्वरा है खेती बहुत अच्छी होती है जंगल में बड़े २ पेड़ हैं जिनमें टीकनाम एक वृक्ष है जिसकी गोन्द से रबर बनता है गोटापार्चा के वृक्ष भी बहुत पाये जाते हैं धान्य खेतियों में प्रधान है परंतु यहां के लोग साबुदाना और नारियल इत्यादि फलों को बहुत खाते हैं यहां के जानवर भारतवर्ष की नाईं होते हैं परंतु यहां बड़े बन्दर हाथी और सिंघुचोटक प्रभृति बहुत होते हैं यहां खानि द्रव्य बहुत हैं दक्षिण पश्चिम में अच्छी टीन मिलती है इसके बीच ब्रह्मा, स्याम, मलाया, अनाम, और लेपस, ये पांच प्रदेश हैं ॥

ब्रह्मा

ब्रह्मा का क्षेत्रफल ३८००० वर्गकोस और लोक संख्या ४०००००० है इसके उत्तर में आसाम और चीन पूर्व में लेपस और स्याम है दक्षिण में बंगाले की खाड़ी पश्चिम में बंगाले की खाड़ी और बंगाला इस देश का दक्षिण का भाग समतल क्षेत्र उत्तर में वन और पर्वत हैं यहां की भूमि अतिशय उर्वरा है यहां धान्य गेहूं आदि खेति बहुत होती है यहां चाह भी उत्पन्न होती है परंतु चीन की भांति वह अच्छी नहीं होती है यहां सोना चांदी लोहा सीसा और पत्थरी कोइले की खानि हैं यहां कि

खानि में नानाविधमणि और बहुत चिटा संखमर्मर भी मिलता है यहांके भूगर्भ में एक प्रकारका तेल मिलता है बहुत गहरा कुआ खोद कर लोक उसतेल को निकाल कर दीपक जलाते हैं भारतवर्ष के जंगल में जितने पेड़ हैं ब्रह्मा के जंगलों में भी उतने ही हैं यहां के घोड़े बहुत छोटे होते हैं परंतु बहुत कठिनता सहसके हैं और चलते हैं इसदेश में हाथी बहुत होते हैं उन में स्वेतवर्ण के हाथी भी देखने में आते हैं। ब्रह्मा के लोग स्वेत हाथी का बहुत मान करते हैं और इसको राज्य का बहुधा मंगल कर समझते हैं इस के लिये प्रासाद बनाते हैं और वह प्रासाद राज गृह के समीप ही बनाया जाता है उस स्वेत हाथी के शयन के लिये मखमल की शय्या उसके स्थान में बिछाई जाती है उसके सन्मुख के दोनों पांव को बान्धने के लिये चांदी की जंजीर हीरे और सोने की चित्रकारी के साथ बनाई जाती है इस की सेवा के लिये प्रायः एक हजार मनुष्य नियुक्त होतेहैं जब एक स्वेत हाथी मरता है तो जबतक दूसरा वैसाही न मिले ब्रह्मा के लोग राज्य का बहुत अमंगल समझते हैं ॥

ब्रह्मा के लोग बहुत नाटे होतेहैं उनका रंग ताम्बेकी नाईं और शरीर सबल होता है ये लोगहिन्दुओं से बहुत असभ्य हैं परंतु किसी २ व्यवहार में हिन्दु ओं से भी सभ्य जान पड़ते हैं ये लोग अतिशय कुटिल अहंकारी और संदेह युक्त होतेहैं जूआ खेलने और अफीम खाने में इनका बड़ा अनुराग है इनकी स्त्री अंतःपुर में निरुद्ध वा अवगुंठन से आछन्नहीं रहती ये अपने सम्पूर्ण घरका काम और द्रव्या-

दि क्रय विक्रयभीकरती हैं पुरुष लोग एक से अधिक विवाह नहीं करते हैं परंतु वह भी हिन्दुओं की भांति बाल्यावस्था में नहीं करते ये लोग बौद्ध धर्मावलम्बी हैं इसलिये जाति भेद नहीं मानते हैं इनका धर्म शास्त्र पाली भाषा में लिखा है यहां के सम्पूर्ण शिक्षा कार्य्य पुरोहित मंडली के द्वारा सम्पन्न होते हैं पुरोहित लोग यावज्जीवन विवाह नहीं कर सक्ते हैं परंतु ये लोग अपनी इच्छा से पुरोहित के काम को छोड़ कर अन्यकामों में नियुक्त होतो विवाह कर सक्ते हैं यहां संग मर्मर पत्थर की नाना प्रकारकी मूर्त्ति पर वस्त्र धातु और मिट्टी के वर्तन बनते हैं यहां के लोग अच्छे २ जहाजभी बनासक्ते हैं । कहते हैं कि ब्रह्माके राजाओंका आदि पुरुष मगध देश में उत्पन्नहुआ था अब २५०० वर्षबीते हैं ब्रह्माकेराजा सम्पूर्ण स्वाधीन है जैसा की प्रजालोग उनका नामभी नहीं लेसक्ते हैं यदि कोई नाम ले तो राजा उसको मारडालताहै बीस वर्ष उमर होने पर दो वर्ष के पीछे प्रत्येक प्रजा को एक वर्ष करके राजा को बगार देना पड़ता है युद्धके समय समुदय कार्य्यक्षम प्रजा को युद्ध में जाना पड़ता है ब्रह्माकी नवीन राजधानी मंदालय इसके पहले रतनपुर औरउसके पहले अमरापुर थी रतनपुर को अंगरेज़ लोग आवाबोलते हैं येतीन नगर ऐरावती नदी के तीर परहैं इन के सिवाय यान्दावो पाहानागा और वहामो प्रभृति प्रसिद्ध नगर यहां हैं ॥ ❖ ❖ ❖

१८२४ और १८५२ इस्वी में जो संग्राम हुए थे उन में अंगरेजों ने ब्रह्माका पश्चिमी भाग चटग्राम से मलायातक समुदय स्थान अपने अधिकर में लाये वहां के राज्य प्रबन्धके लिये

तीन कमिश्नर नियुक्त हुए हैं ॥ ⁘ ⁘

१— अराकान का कमिश्नर आकाएब नगर में अव स्थिती करताहै अराकान के अंतर्गत ३ जिले हैं प्रथम आकाएब दूसरा रामड़े तीसरा सांडोपे। अराकान के लोगों को मग कहते हैं ब्रह्मा के लोग मगों को अपने पूर्व पुरुष जानते हैं ॥

२— मौलमीन का कमिश्नर मौलमीन नगर में निवास करता है मौलमीन कमिश्नर के अधीन जितनी भूमि है उस सब को तनासरिम बोलते हैं इस प्रदेश में ३ जिले हैं मौलमीन मारगुई और टेवाय। मौलमीन नगर प्रधान वाणिज्यस्थान ऐरावती नदी के तट पर बसा है ॥

३— पेगू का कमिश्नर पेगू नगर में रहता है पेगू नगर से प्रायः २७ कोस दक्षिण में ऐरावती नदी के तटपर रंगून नगर है रंगून में एक वड़ा ऊंचा अष्टकोन मंदिर है उस मंदिर में सोमदेव की पूजा होती है पेगू के कमिश्नर के अधीन ६ जिले हैं मर्तबान वेशिम रंगून टांगू प्रोम और मियांग।

बंगाल और ब्रह्मा के मध्य में मनीपुर नामक एक छोटासा प्रदेश है मनीपुर का राजा अवतक स्वाधीन है मनीपुर की राजधानी मनीपुर है मनीपुर के लोग हिंदू हैं ये लोग तोप वना सकते हैं ॥

स्याम

स्याम का क्षेत्रफल ५५००० वर्ग क्रोश और मनुष्य संख्या २८ ४५ ००० है ये ब्रह्मा के दक्षिण पूर्व में स्याम की खाड़ी पर है इस की उत्तर सीमा लेयस पूर्व सीमा अनाम दक्षिण सीमा स्याम की खाड़ी और मलाया पश्चिम सीमा

ब्रह्मा इसदेश का मध्य भाग समतल क्षेत्र है वहां मीनाम नदी बहती है इसके अन्य २ भाग जंगल और पर्वतों से घिरे हैं बंगले के समुदय द्रव्य यहां उत्पन्न होते हैं उन के सिवाय यहां इलायची तेजपत्र दालचीनी मिरच बहुधा परिमाण से उत्पन्न होते हैं यहां चावल बहुत न्यून मिलते हैं इस देश में मंगोस्तीन नामक एक प्रकार का फल होता है जिसका स्वाद आंब से भी बहुत मिष्ट है भारतवर्षीय समुदय ग्राम्य जन्तु यहां देखने में आते हैं इसके जंगलों में बाघ गेंडा और हाथी बहुत देखे जाते हैं ब्रह्मा की भांति यहांभी श्वेत हाथी का बहुत सन्मान है इसदेश में सोना तांबा लोहा और नानाविध रतन मिलते हैं यहांसे सीसम और सेगून प्रभृति अनेक प्रकार की लकड़ी और २ देशों में लेजाते हैं ॥

यहां लोगों का आचार व्यवहार ब्रह्मा देशीय लोगों की नाईं हैं यहां के मनुष्य बौद्ध धर्मावलम्बी हैं परंतु अन्य धर्मावलंबियों से द्वेष नहीं रखते हैं यहां के राजा स्वेच्छाचारी हैं युद्ध के समय सम्पूर्ण प्रजा को राजा की आज्ञा से युद्ध करना पड़ता है यहां के लोग गाने बजाने के प्यारे होते हैं और वाणिज्य के लिये चीन और भारतमहासागरीय द्वीप समुद्रों में जाते हैं कभी २ भारतवर्ष और सिंगल द्वीप में भी आते हैं यहां की राजधानी बंकाक मीनाम नदी के तट पर है इस नगर के सब घर काष्ठनिर्मित हैं और वर्षा काल में जल में डूबजाने के भय से यह ग्रह बांस के ऊपर संस्थापित होते हैं बहुत घर बांस के ऊड़प पर निर्मित होकर मीनाम नदी के जल में तैरते हैं रयुथिया नगर इसकी प्रथम

राजधानी थी स्याम के लोग अपने देशको टट्ट बोलते हे

मलाया

इसकी उत्तर सीमा स्याम पूर्व में स्यामकी खाड़ी दक्षिण में भारतमहासागर पश्चिम में बंगालेकीखाड़ी मलाया के मध्य भागस्थित काउमरूमध्य से रोमानियांके अन्तरीप तक समुदय स्थान पर्वत मय हें पर्वत के दोनो ओर की भूमि भंगीमती अर्थात् तरंग कीनाईं क्रमशः ऊंची नीची हे उस भूमि के अधिकांश जंगलमय हें इस देश में जायफल चन्दन मिरच सुपारी चावल बेंत नानाप्रकार की लकड़ी सोना रांगा हाथी दान्त बहुत पाये जातेहें भेड ओर घोड़े छोड़ कर यहां भारतवर्षीय समुदय जन्तु उत्पन्न होते हें यहांकीजलवायु बहुत अच्छी हे भारतवर्षीय अंगरेज लोग बीमार होकर चंगा होने के लिये यहां आतेहेंमलायादेशमें दो प्रकारके लोग बसते हें प्रथम आदिम लोग दूसरी मलाया जाती आदिम लोग बड़े असभ्य हें ओर सम्पूर्ण नंगेरहते हें ओर वन के फल मूल ओर अहेर से अपना पेट भरते हे येलोग वामन ओर काले होते हे इनके केश ऊनकीनाईं होठ मोटा ओर नाक चपटी होती हे मलाया जाती के लोग पहले सुमात्रा द्वीपमें बसते थे फिर खृष्टीय १२ शताब्दी में मलाया देश में आकर बसते हें इनका स्वभाव बड़ाभयानक हैंओर दस्यु हत्तीसे आजीविका करते हैं येलोग बहुत मूर्ख नहीं किन्तु लिखने पड़ने की चरचा रखते हें कुरान भी पड़ सकते हें किसी २ शिल्पकर्म में इनकी निपुणता देख पड़ती हे ओर इनमें से कोई २ वाणिज्यभी करते हें

परन्तु इनकी न्याईं धूर्त क्रूर विश्वासघाती और वैर निर्यातक मनुष्य इनकीनाईं पृथिवी में और नहीं हैं येलोग छोटी २ नावोंपर चढ़कर मलाया के समीपस्थ समुद्रमें दस्युवृत्ति करते हैं येलोग मुसलमानीधर्म मानते हैं और अफीम खाने जूआ खेलने में बहुत आसक्त हैं यहांके लोग नाना सम्प्रदायों में विभक्त होते हैं प्रत्येक सम्प्रदाय का राजा स्वाधीन है परंतु यहां की नाईं दरिद्र राजा और कहींनहीं हैं राजा का वासस्थान सामान्य झोंपड़ी सिंहासन मट्टी चटाई औरमानवेश लंगोटी रखते हैं राज्यकार्थ में सर्वत्र फलमूल वस्त्र और पक्षियों का विक्रय होताहै इनकी भाषा संस्कृत और अर्बी से मिलीहुई है इनके अक्षर अर्बी हैं

मलाया के लोग जायफल लौंग मोम लाह और हाथी दांत और २ देशों में लेजाते हैं इसका प्रधान नगर मलक्का जो १८२५ ई० में अंगरेजों ने डचलोगों से खरीदा सिंगापुर नगर मलाया प्राय द्वीप के प्रान्त में स्थित है १८१९ ई॰ में यह अंगरेजों के अधिकार में आया ये दो नगर और इनके अधीनस्थित प्रदेशों को स्ट्रेटसेटलमेण्ट बोलते हैं प्रसिद्ध पिनांग द्वीपजिसे प्रिंस पलाओ बोलते हैं मलायाके पश्चिम उपकूल के समीप बंगाले के सागर में अवस्थित है ॥

आनाम

इस के उत्तर में चीन पूर्व और दक्षिण में चीन सागर पश्चिम में लेग्रस और स्याम यह देश तीन भागों में

विभक्त है उत्तर में टांकिन मध्यमें कोचीन दक्षिण में कं
बोदिया इस देश के पूर्व और पश्चिम में उत्तर दक्षिण वि
स्तृत दो पर्वत हैं इनपर्वतों के मध्यस्थित देश सकलप्र
ति लम्बे हैं औरउनकी भूमि बहुत उर्वरा यहांबहुत धा
न्य चीनी रूई रेशम पाट तमाकू दालचीनी इलायची मि
रच नारियेल और सेगून आगूरु इत्यादि बड़े २ पेड़ होते
हैं चाह यहां होतीहै परंतु कुछ अच्छी नहीं होतीहै टांकि
न प्रदेश में सोना चांदी ताम्बा लोहा बहुत पाया जाता है
किसी २ नदी के किचड़ धोने सेंभी सोना मिलताहै यहां
शोरा और लवण बहुत उत्पन्न होता है भेड़ा गधा और ऊं
ट छोड़ कर और सब भारतवर्षीय जन्तु यहां उत्पन्नहोते
हैं यहां के लोग हाथी कामांस खाते हैं इसदेश के लोग
बड़े आलसी होते हैं परंतु जहाज और तोप बनाने में ब
हुतनिपुण हैं येसब बौद्ध हैं मरने के पीछे येलोगमृत
शरीर को दोवर्ष संदूख मेंरखते हैं और रोज उसके साम्ह
ने भोग चढ़ाते हैं

चीन देश का वर्णन

यह साम्राज्य स्काट् लेंड के साथ १ अक्षांशरेखा में है
और इसका आकार समुदय यूरोपका १ एक पञ्चमांश है
और इसके अन्तर्गत कोरिया, मंचोरिया, मंगोलिया, तिब्बत,
तरकीस्थान, और सुंगेरिया है परंतु मुख्य चीन स्पेन कीम
ध्यगत अक्षांश रेखापर है और उसका क्षेत्रफल ३१२०००
वर्ग कोश है ॥

चीन की पूर्व सीमा पीलासागर और स्थिरमहासागर

दक्षिण सीमा आनाम ब्रह्मा टांकिन की खाड़ी पूर्वीप्राय
द्वीप पश्चिमसीमा तिब्बत उत्तर सीमा चीनीतातार मंगोलि-
या मंचोरिया ॥

चीन का पश्चिमी भाग पर्वत मयहै परंतु अधिकांश
इसका निम्नतल है पूर्व में पेकिन और नानकिन के बीच
एकबड़ा विस्तृत समतल क्षेत्र है जो समुदय पृथिवी के
उर्वर क्षेत्रों में गिना जाता है इसके बीचसे बहुत नदियां
और नहरें बहती हैं उन नदियों में से ह्वांगहो यंगसीकि-
यांग और चूकियांग ये प्रधान हैं यद्यपि पेकिन नेपल्स
से बहुत दूर उत्तर में नहीं है तोभी यहां की जल वायु ने-
पल्स से ठंडी है शीघ्र परिवर्तित होती रहती है और यहां
शीतऋतु बड़ी प्रवल होतीहै मध्य देश में जल वायु की
प्रकृती मध्यमहै परंतु दक्षिण में गर्मी बहुत होतीहै जून
और जुलाई महीने में बहुत आंधी चलती है यहां रहने
हारे लोगचीन को फलोरीलेंड अर्थात् पुष्पोद्यान बोलते
है वस्तुतः इसमें जैसी अच्छे २ पेड़ मीठे फल संतर फूल
और बाग बनाने की सुचारु निपुणता है यहां चावल गेहूं
और अन्यप्रकार की खेतियां होतीहैं यहां बहुत अच्छी चाह
उत्पन्न होती है इनके सिवाय यहां तंबाकू कपास नील ची-
नी आंब और भांति भांति के संतरे और अच्छे मीठे फल उ-
त्पन्न होते हैं यहां नाना प्रकारके बांसहैं जिनसे बहुत का-
म बनते हैं यहां एक प्रकार का वृक्षहै जिसकी छाल से
कागज बनते हैं और एक ऐसा पेड़है जिसके दूध से मो-
मवती बनती है यहां कपूर और वर्निसके भी वृक्ष उत्पन्न

होते हैं यहां के लोग पत्र और अन्य प्रकार के लीय वृक्षों से भी भोजन बनाते हैं चीन में पत्थरी कोइला और सोना चांदी प्रभृति धातु बहुत पाई जाती है और यहां से चाह रेशम और स्थानों में जाते हैं चीन में बस्ती बहुत घनी है यहां के रहनेवालों की संख्या ४००००००० है इनका रंग पीला आंख छोटी और नाक भी छोटा होता है ये लोग प्रायः मूंछ डाढ़ी और सिर का अधिकांश मुड़ाडालते हैं केवल एक जगह वेणी रखते हैं जो इनके पीछे लटकी रहती है ये लोग बहुत मोटे मनुष्य का आदर करते हैं और दुबले मनुष्य को मूर्ख समझते हैं इनके मत में जिस स्त्री के पांव बहुत छोटे होंय मोटे पतले और काले केश आंखें छोटी होती है वह स्त्री बहुत रूपवती है और पांव को इतना सुंदरता का चिन्ह समझते हैं कि बाल्यावस्था से ये लोग पांव छोटे करने के लिये लोहे की जूती पहराती हैं भारतवर्ष से भी चीन की स्त्री अधिक कष्ट रहती हैं। चीनिलोग ज्ञान परिश्रमी और प्रतिभाशालि होते हैं ये लोग अपर जातियों की सहायता के बिना ही अपनी रीति से एक प्रकार सभ्यता को पहुंचे हैं परंतु खेद की बात यह है कि ये लोग जो हजार वर्ष पहले जैसे थे अब भी ठीक वैसे ही हैं जिस समय चीनी लोगों ने तोप निर्माण और दारू बनाया था जिस समय इन लोगों ने अयस्कान्त के गुण जान कर उसे दिग्दर्शन यंत्र अर्थात् "कम्पास" बनाया था और जिस समय इन्होंने काठ के अक्षर के बना कर पुस्तक छापने

की रीति निकालीथी उससमय बहुत यूरोपीय लोग पशु चमड़ा पहरते थे और बनके फल खातेथे और पशुओं कीभांति काल गंवातेथे अब ये यूरोपीय लोग तो सभ्यताके शिखर पर पहुंच कर पृथिवी का भूषण स्वरूपहुए हैं परंतु चीनी लोग उस समय जैसेथे अब भी वैसेहीहैं चीन देश में अतिशय निन्दनीय काम नहीं होता परंतु साधारण कोई २ बुरा काम और ठगना सदैव होताहै इन सब कामों के लिये केवल लाठी मारने वाला दंड दिया जाता है चीनी लोग अपने कुटुंब और आत्मीय जनों के ऊपर बहुत दयालु व्यवहार करतेहैं और बूढ़ों की सेवा अच्छी करते हैं परंतु परदेशी वा निःसम्पर्कीय लोगोंसे बहुत कठिन व्यवहार करतेहैं ये लोग लड़कपन में विवाह करतेहैं इसलिये इनके संतान बहुत होतेहैं चीनदेश में विद्या का बहुत आदर प्रचारहै केवलविद्यावत्ता के अनुसारही वहां की राजकीय पदवी "जज्कीमजिष्ट्रेटी" मिलतीहै इनकीभाषा में एक२ अक्षर एक२ शब्द का प्रतिरूपहै इसभाषा में ८०००० अक्षर हैं इसलिये इतनेही शब्द हैं परदेशी लोगों को इसके सीखने में बहुत परिश्रम करना पड़ताहै शिल्पविद्या में चीनी लोग बहुत निपुणहैं वे लोग जो देखते हैं उसका ठीक २ अनुरूप वस्तु बना लेतेहैं नीचे लिखे हुए दोनों अद्भुत कार्यों में इनका परिश्रम शीलता और कार्य्य कुशलता का परिचय मिलताहै प्रथम चीन की भीत जो तातारियों के उपद्रव दूरकरने के लिये चीन कीसीमा में बनी हैं इसकी लंबाई ७०० कोसहै और चौड़ाव ऐ

ता है कि ६ छो बुर्जके परस्पर पार्श्ववर्त्ती होकर १८ पराव न सके हैं दूसरा ह्वां चुंगु नाम नहर जिसकी लंबाई ३५० कोस है इसके देखने से यह ज्ञानहोता कि यह ठीक नदी है । चीनी लोग बौद्ध हैं परंतु बहुत यहां के पंडित लोग कंफ्यूछ का मत मानते हैं कंफ्यूछ के मत में एक ईश्वरउपासा है औरदया प्रभृति सत्कार्यों काअनुष्ठान प्रधान धर्म है चीन में प्रायः परदेशी लोग नहीं रह सकते हैं पहले विदेशी व्यापारी लोग केवल कांटन नगर में ही प्रवेश कर सकते और वहां चीनसम्राट केनिर्दिष्ट व्यापारियों से अपनी वस्तु बेचते चीन का महाराज अपने देशी व्यापारियों को विदेश में नहीं जाने देता था परंतु अब यह रोक नहीं है अबचीन के सब नगरों में विदेशी व्यापारी लोग प्रवेश करते हैं और चीनी लोग भी भारतवर्ष पूर्वी मायद्वीप हिन्दमहासागर के सब द्वीप कालीफोर्निया और आष्ट्रेलिया इत्यादि द्वीप और अन्यान्य देशों में जाते हैं चीन की राजधानी पेकिन यह नगर बहुत विस्तृत है और चीन के उत्तर की ओरहै यहां प्रायः १०००० लाख मनुष्यों की बस्ती है इसमें राजप्रासाद और सुंदर "बाग" हैं इसके ५० मील उत्तर में दुर्गोफसील है जो २००० वर्ष पहले बनीथी और दुर्योक नहरभी यहां बहती है ॥

नानकिन नगर - यह यंगसीकियांग नदी के तटपर है और पेकिन से ५५० कोस दक्षिण की ओर बसताहै इस में रेशमकार का शिल्पीकाम होता है ॥

कियांगसियाम - ये नगर पियांग चीन के पूर्व में हैं

इस ॥ १०००००० लाख मनुष्यों की वस्ती है और चीनी
वर्तन बनते हैं यह बात हम कह आये हैं कि पहले केव
ल कांटन नगर ही विदेशीय व्यापारियों का वाणिज्य स्था-
न था परंतु प्रथम चीन युद्ध के पीछे १८४२ इस्वी में ना-
नकिन की संधी के समय हांगकांग नगर अंगरेजों को
मिला और कांटन आमय फुचु निंगपो और सांगेही न
गर विदेशी व्यापारों के लिये छोड़दिये गये फिर दूसरी ल
ड़ाई के पीछे १८५८ इस्वी में टेनसिन की संधी के समय
केंचू स्वाटू टेवान ऐंगचू नियुचांग सिकियांग किउकियांग
और हांकू इन सब में भी विदेशी व्यापारियों का प्रवेशा
धिकार हुआ १८६० में पेकिन के चढ़ाव के पीछे जो संधी
हुई थी उस में टायनसिन नगर साधारण वाणिज्य
का स्थान हुआ और उसी दिन से इंग्लैंड का एलची पेकि
न नगर में बसता है केंचू नगर उत्तर उपकूल में एक बड़ा
भारी बंदर है कांटन नगर जो एक नदी मुख में बसा हुआ
है । उसका वाणिज्य बहुत विस्तृत है यहां के बहुत लोग
नाव और बेरने हुए घरों में बसते हैं १८५८ में फ्रांसीस
और अंगरेजों ने इसपर अधिकार पायाथा ऐसे ही फूची-
क स्वाटू आमय प्रभृति बंदर विदेशीय वाणिज्य के प्रभाव
से बहुत धन शाली होते जाते हैं ॥

चीन के समीपस्थ द्वीप

हेनन दक्षिण उपकूल के समीप यह बड़ा देश है
ऐक्य कुल है और १०००००० मनुष्यों की बस्ती है इसमें
किसी २ पर्वत पर सदैव हिम जमी रहती है यहां से बड़े ।

शाहतीर चावल चीनी मोती और मुंगा अन्यान्य देशों में जाताहै । फारमोसा द्वीप आनय के साम्हने स्थित है और परिमाण में स्काटलैंडसे आधा है इसमें एकज्वालामुखी पर्वत है जिसकी चोटी १२००० फुट उंचीहै इसपर्वत के पश्चिमकी ओर प्राय २०००००० चीनीलोग वास करतेहैं और पूर्व में उसदेशके लोग बसते हैं जो सम्पूर्ण स्वाधीनहैं फारमोसा द्वीप से चावल कपूर नून और गंधक अन्यान्य स्थानों में जाताहै चीनदेशकेराजदंडित लोग यहां निर्वासित होतेहैं । हांगकांग द्वीप कानटनसे ७५ मील दूर पर है यह द्वीप १८४२ इस्वी से अंग्रेजों का एक उपनिवेश हुआ है इसमें ९५००० मनुष्य रहते हैं इसके प्रधान नगरकानाम विकटोरियाहै मेकोउ नामद्वीप हांगकांग से ५० मील पश्चिम की ओर है १५८० इस्वी से यह पोर्टगेजों के अधीनहुआ ॥

कोरिया एक प्रायद्वीप जापान के साम्हने है इसका क्षेत्रफल ८०००० वर्गमील है और यह चीन को करदेता है इसदेशकाविषय बहुत थोड़ाही ज्ञातहुआहै इसदेशके लोगों की प्रकृति चीनी और जापानी लोगों से भिन्न है यहां से चांवल रूई पशम व्याघ्र चर्म्म पर्वती नमक और पत्थरीकोइला प्रभृति अन्य देशोंमें जाता है इसकीराजधानी हिंगीयांग वा कियागकीटाउ है ॥

मंचूरिया देश का वर्णन

मंचूरिया जो मंचूरियन लोगों की वासभूमि है मंचूरियन लोगों को साधारणतः तातारी कहते हैं परंतु इनका

प्रकृत नाम टंगसियन है १६ ४४ में इन्होंने चीन को अ
धीन किया और अबतक राजवंशीय और प्रधानक
र्म्म चारी लोग इसवंश के हैं १८ ५८ में अमूर के उत्तर
और उसरी के पूर्व स्थित देश सकल रुशिया के अ-
धीन ऊए हैं अब इसका क्षेत्रफल ३८ २००० वर्गमी
ल है और इसके अधिवासि ओं संख्या ३५०००० है
इसका दक्षिणभाग यद्यपि परन्तु मय हैं तोभी चीनके
दक्षिण भागकी नाईं उसमें खेती होती है, और भागों-
में मनुष्योंकी वस्ती विरल ही है और बऊत जंगल हैं
इसमें ये प्रधान नगर हैं ।१। मौकदीन जो पेकिन से
३८० मील ईशान कोनमें है यह पहले मंचूरियनरा
जाओंकी राजधानी थी (२) निगन्ता यह पेकिनके अ
ग्निकोनमें है (३) अइगून अमूर नदी पर मंगोलिया इ-
स देशकी उत्तरसीमा साईबीरिया, पूर्वसीमा मंचूरिया
और चीन, दक्षिणसीमा तिब्बत पश्चिमसीमा तातार औ
र मंगोलिया । इस देशके मध्यमें गोबा नामक बडी विस्तृ
त मरुभूमि है, इसके उत्तर भागमें अमूर और इनेसी नदि
योंकीः शाखा नदी वहती हैं । और इसमें ये नदियां वह-
ती हैं जो उवसा और इकी आरल झीलोंमें गिरती हैं ।
दक्षिण में हो आंगहो नदीशाखा नदी और कोकनार
झील में गिरने हारी नदियां हैं यहां के निवासि योंकी सं-
ख्या ४०००००० है और वे प्रायः पशुपालन व्यवहार क
रते हैं । यहां १२ ७५ से १३ ६८ चीनकाराजा राजकरते
रहे, इसके प्रधान नगर ये हैं — उर्गा जो बैकल झीलसे

३० मील दक्षिणमें है, वह नगर मंगोलिया की राजधानी है और यहां मंगोलियनका ईश्वर लामा रहता है।
बैकाल झीलसे २०० मीलपर मिमाचीन नगर है, यहां चीनीलोग रूसियों से व्यापारकरते हैं उर्गाके २००मील अग्निकोनमें करा कुर्रम नगरके खंड दिखाई देतेहैं, यहनगर प्रसिद्ध मुगल विजेता चंगेजखांकी राजधानी थी चंगेजखांने ११७६ से १२२७ ई तक इस नगरमें राज्यकिया।

तिब्बत देशका वर्णन

यह देश मराकोके साथ एक अक्षांशरेखा में है, इसका परिमाण फल १८०५०० वर्गकोस है और मनुष्य संख्या ६००००००है। इसकुन लव पर्वत को हिंदूलोग कैलास पर्वत कहते हैं। तिब्बतके उत्तर में चीनी तातार, पूर्व में चीन, दक्षिणमें भारतवर्ष, पश्चिम में तरान अर्थात् तातार तिब्बतके रहने हारे अपने देश को पियु अर्थात् बर्फस्थान बोलते हैं। तिब्बत ऊंचे समतल क्षेत्रों से बनाहै और इसके बीच में बहुत पर्वत हैं। यहांसे दक्षि एशियाकी प्रधान नदी सिन्धू, सतलज, यमुना ब्रह्मपुत्र ऐरावती प्रभृति नदियां निकलतीहैं। तिब्बतमें शीतका बहुत प्राडुर्भाव है यहां इतनवनादि बहुत थोड़े उत्पन्न होते हैं। इसलिये यहां लकड़ी बहुत कठिनतासे पाईजातीहै। यहां भांति २के पशु पक्षी देखने में आतेहैं, सर्व्वत्र ही गाय, भेड, बकरी घोडे और खच्चर देखनेमें आते हैं हिमालयके दुर्गम रास्ते

में गाडी वा गाय इत्यादि पशु नहीं चलसके इसलिये ति-
व्वतसे भारत वर्ष में मेष और छागोंमें लाद कर द्रव्य
लाते हैं यहां चमरी नामक एक प्रकार की गाय है जि-
सके दुम्ब का चमर बनताहै यहां कस्तूरी का मृग भी
पाया जाता है इस देश में उत्पन्न छाग अर्थात् बकरों
के लोम से शाल दुशाले बनते हैं ऐसे बकरे और दे-
शों में कहीं नहीं होते यहां कुत्ते बड़े बलवान और बड़े२
भारी होतेहैं यहांकी खानों मे सोना पारा सुहागा औ-
र लवण मिलता है भारत वर्षियों से तिव्वत वासियों
का कुछ व्यवहारादि नहीं मिलता तातार वासियों से इ-
नका शरीर बहुत मिलताहै ये लोग अतिशय आलस्य
शान्त और सन्तुष्टहोते हैं शाल और अन्यान्य पशमी
वस्त्रों का बुनना उनका प्रधान शिल्प है ये लोग सदैव
चीनों के साथ वाणिज्य करते हैं मरने के पीछे ये लोग
शव को फूकते और गाड़ते नहीं हैं किन्तु शमशानमें
फेंक देते यहां के लोग भेड़ का मांस बहुत खातेहैं ब-
हुत लोग कच्चे मांसको खालेतेहैं पांडवो की नाईं यहां
समुदय भाई मिलकर एक स्त्री से विवाह करते हैं उनमें
से बड़ा भाई स्त्री को प्रसन्न कर्ता है तिव्वती लोग बौद्ध हैं
इन के पुरोहितों का नाम लामाहै इन लामों में डालय
लामा और टिस लामा परम पूज्य हैं तिव्वतियों के मत
में डालय लामास्वयं ईश्वर मनुष्य के भेष से पृथिवी पर
रहताहै उसका मृत्यु नहीं परंतु समय २ शरीर परिव
र्तन होताहै । एकडालय लामाके मरनेपर किसीवि

शेष लक्षणाक्रान्त बालक को उसका अवतार जानकर उसकी गद्दीपर बैठा देते हैं और उसका मृत देह सोने में लपेट कर पूजा करते हैं टिसूलामाको बुद्ध देव का अंश समझते हैं ॥

तिब्बत की भाषा भारतवर्ष की भाषाओंसे नहीं मिलती परंतु इनकी लिखनेकी रीति फारसी से मिलती है और वर्णमाला नागरी से मिलती है प्राय १०० वर्ष हुए कि तिब्बत चीन के अधीन हुआ और चीनी प्रतिनिधी शासनकरता आकर राजकार्य्य करता है तिब्बतकी राजधानी लासा यहां लामाका एक मंदिर है इसलिये तिब्बती लोग इसको परम पवित्र स्थान कहते हैं । ले और रिहलम्बू तिब्बतके प्रधान नगर हैं । उनमें से ले लदाखकी राजधानी है और यह लदाख चीनके अधिकार में नहीं है किन्तु काश्मीर राजके अधीनहै।

तातार कावर्णन

इसके पश्चिममें कास्पियन फारस, अफगानिस्थान भारतवर्ष तिब्बत और चीन, उत्तर में रूस, यह, तातार देश दोविभागों में विभक्त है, एक स्वाधीन तातार ६०वा ७० वर्ष से लेकर फारसी लोगों ने विद्या की विशेष चर्चा करनी प्रारम्भ की बहुत दरिद्री मनुष्यों के बिना और सब लोगही अपने २ सन्तानों को विद्यालय में भेजते हैं यहां का काव्य बड़ा सुंदर है परंतु पदार्थ विद्या की कुछ आलोचना नहीं है फारस के राजाको शाह कहते हैं यह बड़ा यथेच्छाचारी है और प्रजाओं को दास की नाईं

जानते हैं यहां की शासन प्रणाली ऐसी बुरी है कि झग ड़ों में जो अधिक धन खर्च करे वही जय पाता है यहां शीआ मतावलम्बी मुसलमान रहते हैं । प्राचीन काल में फारसी लोग अग्निकी उपासना करते थे उनका प्राचीन आचार व्यवहार प्राचीन हिन्दूओं के आचार व्यवहार से बहुत मिलता है और प्राचीन संस्कृत भाषा प्राचीन फारसी से बहुत मिलती है जो लोग इन दोनों देशों के इतिहास मनोनिवेश से पढ़ते हैं उनको निश्चय यही यह ज्ञान होता है कि फारसी लोग और हिन्दू दोनो एक जातिय हैं परंतु समय से भिन्न प्रकार होगये हैं फारसी के पण्डित लोगों को सूफी कहते हैं अर्थात् वे लोग किसी प्रचलित धर्म प्रणालीका अनुगमन नहीं करते हैं अपनी इच्छा और युक्ति के अनुसार ईश्वरोपासना करते हैं फारसी लोगों के चरित्रादि पहले कहे गये हैं फारस को इरान भी कहते हैं ॥

फारस की राजधानी तेहरान कास्पियन सागर के ५० कोस और अलबुर्ज पर्वत के ४ कोस दक्षिण में है यहां ग्रीष्म ऋतु में ऐसी कड़ी गर्मी पड़ती है कि जो लोग समर्थ रखते हैं वे शहर छोड़ कर अन्यत्र चले जाते हैं इस्पहान फारस की पूर्वकाल में राजधानी था और तेहरान से १०५ दक्षिण एक उर्वर उपत्यका में है यहां अबतक इसका प्राचीन गौरव का चिन्ह इसके खंडहरों से पाया जाता है रेसट और अस्त्राबाद कास्पियन सागर के तीर स्थित दो बड़े बंदर हैं बूसार नामक एक बंदर

फारसकी खाड़ी पर है इसके ६० कोस पूर्व एक उर्वर उ-पात्यका में शीराज नामक नगर उद्यान और मदिरा के लिये प्रसिद्ध है इसके समीपफारस का प्रधान कवी हाफिज़ और शादी की समाधि है ठेवरज उर्मिया झील के समीपहै येज़द नगर मध्य में है और मेसद इशान कोन में है ये तीननगर सार्थवाह वणिकों का प्रधान व्यापार स्थान हैं हमदन नगर तहरान के नैऋत कोन में ६० मील परहै यहां पहले मेडों की राजधानी एकबटना नगर था पारसी पोलिसनामक नगर शीराज के ६९ कोस उत्तर में है यह प्राचीन फारसियों कीराजधानीथा और यहां अब जोखंडर मिलते हैं लोग उनको बड़े सिकंदर से नष्ट हुआ डाईरस का प्रासादखं-ड समझते हैं। उर्मिया नाम नगर ज़ुर्त्त की जन्म भूमिहै

अफगानिस्थान

इस के उत्तर में तातार पश्चिम में फारस दक्षिण में बलोचिस्थान पूर्व में भारतवर्ष-

इसका परिमाण फल २२५००० वर्गमील है औरवि स्तार हटानिपा से दूनाहै अफगानिस्थान का आ-कार नानाविध है उत्तर प्रदेशों में भयंकर हिम मयप र्वत सकल हिमालय से लम्बमान होरहे हैं ॥ जिन के बीच हिंदूकुश पर्वतहै और जिनमें से किसी २के शिखर सर्वदा वर्फ से ढपे रहते हैं इन पर्वतों के भी-तर बहुत मनोहर उपात्यका हैं जिन मे बहुत लम्बी २ चरागाह हैं दक्षिण में यहां बलोचिस्थान और

सईस्थान है उसके अधिक अंश वृक्ष लतादि विहीन परिशुष्क मरु भूमि हैं यहां के पवन से वालु उठकर खेतों की वहुत हानि करता है और वीच २ में वहुज-न समाकीर्णा मनुष्यालय और शस्य क्षेत्र भी देखे जाते हैं ऐसे देश भेदमें गर्मी सरदी का भी वहुत प्रभे द लक्षित होता है पश्चिम भाग में हैरात नगर के चा रों ओर जितने स्थान हैं शीत काल में वे सब बर्फ से ढप जाते हैं उत्तर भाग में भी शीत का अतिशय प्रादु र्भाव है गजनि नगर के समीपस्थित सब नदियां बर्फ से आवृत होती हैं मध्य भाग कन्दहार नगर के निक टस्थित स्थानों में शीत वा उष्णता का वहुत प्रादुर्भा व नहीं वह स्थान रमणीय है पूर्व भाग में पेशावर नगर के चारों ओर स्थित सब देश वहुत गर्म हैं पर न्तु वहां से वलोचि स्थान को प्रवेश करते ही फिर शी त का आधिक्य पाया जाता है

यहां गेहूं जौ और धान्यादि खेतियां और अनार अं गूर पिस्तादि उत्तम फल और तम्बाकू चीनी हींग वहुत उत्पन्न होते हैं यहां का तरबूज इतना वड़ा होता है कि एक वलवान पुरुष भी उसे उठा नहीं सक्ता यहां लोहा ताम्बा शीशा रसाञ्जन गन्धक सैन्धव लव ण फटकरी और सोना ये सब खानी द्रव्य हैं यहां वनचर जीव वहुत थोड़े हैं केवल कावल के निकट व्याघ्र और एक प्रकार का तरक्षु सिंह देखा जाता है औ र किसी २ वन में चिता वन्य गर्दभ और वन्य वकरी

ओर पालने हारे जीवों में यहां के दुम्बे की पूंछ कभी २ सेर से भी अधिक होती है और यहां के कुत्ते बड़े बल वान होते हैं बिल्ली की पीठ में लम्बे २ बाल होते हैं और हेरात के घोड़े बहुत प्रसिद्ध हैं यहां ऊंठ गधे खच्चर बकरे प्रभृति भी बहुत हैं यहां सांप और बिच्छू भी अनेक देखे जाते हैं यहां के लोग प्रायः पन चक्की और पवन चक्की के द्वारा गेहूं आदि पीसते हैं यहां पाल की वा गाड़ी कुछ भी नहीं है सब स्त्री और पुरुष ऊंठ और घोड़ों पर चलते हैं अफगानि लोग साहसी दृढ़शरीर सुश्रीकलोगे परिश्रमी और योधा होते हैं यद्यपि इनमें से बहुत लोग दस्यु वृत्ति करते हैं परंतु यहां आतिथेय और शरणागतों के पालक भी अनेक हैं इन में बहुविध जाति हैं और स्वाधीनतासे सब लोग रहते हैं यहां मुहम्मदी लोग रहते हैं, बलोचिस्थान के लोग बलवान और बड़े जवान होते हैं और डाका मारना इनकी आजीविका है इन में से बहुत लोगों का निर्दिष्ट गृह नहीं रहता है मैदान के बीच कम्बली यों के तम्बू बनाकर उनके भीतर निवास करते हैं अफगानिस्थान के उत्तर भाग में हिन्दूकुश पर्वत के ऊपर स्याहपोस नामक एक जाति के मनुष्य रहते हैं मुसलमान इनको काफ़र बोलते हैं ये लोग बड़े सुश्रीक साहसी और बलवान होते हैं इनकी भाषा संस्कृत भाषा से बहुत मिलती है ये लोग नाना विध हिन्दू देवता ओं की पूजा करते हैं परंतु

वर्त्तमान काल के हिन्दुओं के साथ इनका आचार नहीं मिलता है अफगानिस्थान और बेलोचिस्थान इन दोनों को काबल राज्य बोलते हैं यहां की भाषा का नाम पश्तो है और अक्षर फारसी के हैं यहां के बड़े मनुष्य फारसी भी पढ़ते हैं ॥

क्योंकि एक तो यहां प्रचंड धूप दूसरे जल की बूंद भी नहीं मिलती और न कोई वृक्ष है कि जिसकी छाया में क्षण भर बैठ कर विश्राम करें विशेषता जब इस मरु भूमि में आंधी चलती है तो तरंग मालाकीर्ण समुद्र से भी इसका दृश्य भयंकर होता है तब पर्वताकार बालुराशि इसके तल से उत्थित होकर दिङ्मण्डल को आछन्न करती है और जो कोई पदार्थ इसके सामने पड़ता है उसे एकबार ही ढांप लेता है । यहां दिन में जैसा प्रचण्ड धूप रात में वैसाही प्रचंड शीत होता है ।

अर्ब की भूमि सर्वत्र ही शुष्क है यहां नौगमनोपयोगी नदी वा झील नहीं हैं जल बड़ा दुष्प्राप्य है कभी २ दोचार वर्ष लों के बिन्दु मात्र भी वृष्टी नहीं होती पृथिवी की और भूमियों से अर्ब की भूमि रूखी है यहां निम्न भूमि से पर्वतीय प्रदेशों की जल पवन कुछ ठंडी है उत्तर भाग में समूम नामक एकप्रकार उष्णवायु बहती है जो मुख में लगने सेही स्वास बंद होकर प्राण निकल जाता है और उसके दूसरे क्षण में वह मृत शरीर स्फीत गलित और दुर्गंध युक्त होता है अर्बी लोग कहते हैं कि जब यह वायु बहती है उसके पहले गंधक की

गंध अनुभूत होती है और जिसदिशा से यह वायु आती है वह लाल होजाती है इस वायुसे बचने का एकही उपाय है जब वह वायु चलने लगती है तब प्राण हीन होकर मिट्टी में लेट जाना और जब तक वायु चले तब तक वैसा ही रहना तब कुछ विपद नहीं होता यहां के पशुभी स्वभाव सिद्ध संस्कार के बल से इस उपाय का अवलंबन करते हैं । अर्ब के ग्राम्य पशुओं में से घोड़े पृथिवी के घोड़ों से अच्छे हैं परंतु ऊंट यहां के बहुत उपकारी हैं केवल इस पर चढ़ कर अर्बी लोग पूर्वोक्त विस्तृत भयंकर मरुभूमि में पर्यटन कर सकते हैं इसलिये इसको वहां के निवासी मरुभूमि का जहाज़ बोलते हैं अर्बी लोग इसका दूधपीते हैं और ऊन से तंबू बनाते हैं मांस इस का उत्तम जान कर खाते हैं जंगली जीवों में हुन्डार गधा भेड़िया लवड़ी गिदड़ तरख और चित्ता ये प्रधान हैं ॥

अर्ब में सोने वा चांदी की खान नहीं है यहां लोहा सैंधव और लवण बहुत हैं कहीं सीसा भी पाया जाता है फारस की खाड़ी में स्थित बहरिन टापू के पास मोती उत्पन्न होते हैं लालसागर और फारस की खाड़ी में बहुत प्रवाल उत्पन्न होताहै अर्ब के निवासी दो बड़े भागों में विभक्त हैं एक बदूइन दूसरे किसान वा नगरवासी बदूईन लोग मरुभूमि के मध्यस्थित छोटे २ भूखंडों में रहते हैं इनका कोई घर बनाहुआ नहीं तंबू

में रहते हैं और जब इच्छा होती है तब एक स्थान से
तंबू उठाकर दूसरे स्थान में लेजाते हैं येलोग बलवा-
न स्त्री का सुरूपाकार और ताम्र रंग और ललाट
ऊंचा और बड़ा और उज्वल शरीर छोटा होता येलो-
ग अतिथी का बहुत सन्मान करते हैं परंतु इनकी
जीविका का बटमार एक प्रधान उपाय है । किसान
वा नगर वासी लोग और २ देशों के किसानों से बड़े
भिन्न नहीं है उनका आकार बहुतेरों से कुछ भिन्न
नहीं है केवल उनका शरीर कुछ दीर्घ है इनके बी-
च में व्यापार और शिल्प विद्या भी प्रचलित है पूर्वोक्त
फारसी की खाड़ी में उत्पन्न मोतियों का व्यवसाय प्रथा
म रूपसे इनकेही अधीन है । मध्यसमय में अर्ब में
लिखने पढ़ने की चर्चा बहुत थी और अनेक उत्तम २
ग्रंथ भी बने परंतु अब यहां लिखने पढ़ने की चर्चा
एकबारही उठगई है यहां मुहम्मदी धर्म्म प्रचलित है
और यहां हीं इसकी उत्पत्ति हुई थी अर्बके उत्तर प-
श्चिम प्रदेश रूमके अधीन हैं दक्षिण पश्चिम प्रदेश
यमन के बादशाह के अधीन है और दक्षिण पूर्व
प्रदेश मस्कट के सुलतान के अधीन हैं और इससे
अतिरिक्त प्रदेश पूर्वोक्त बहुतेरे भ्रमण कारी जाति-
के अधीन है ॥

मक्का और मदीना ये दो अर्ब के प्रधान नगर हैं
और जिस प्रदेश में येहैं उसे हिजाज़ कहते हैं मक्का
लालसमुद्र से ३० कोस परहे इस के चारो ओर मरु

भूमि है और यह मुसलमानों का महातीर्थ है यहां ५७१ ई॰ में मुसलमान धर्म प्रचारिक मुहम्मद का जन्म हुआ मुहम्मद ने कहा है कि मुसलमानों को एक बार मक्का दर्शन करना बहुत आवश्यक है इसमें काबा नामक एक मसजिद है और यह मुसलमानों का बड़ा पवित्र धाम है इस मसजिद में हजरुल असवद नाम एक पत्थर है और चांदी से मढ़ा है यात्री लोग इसकी ७ परिक्रमा पकचुम्बन करते हैं यहां जम जम नामक एक कूआ है मुसलमान कहते हैं कि यह स्वर्ग से उतरा है और इस पवित्र जल के स्पर्श से सब पाप दूर होजाते हैं जिस हीरा पर्वत की गुफा में मुहम्मद ईश्वर का ध्यान कर्ताथा वह भी मक्के के पासही है।

मदीना।—यहां मुहम्मद की समाधि है यहां भी बहुत यात्री आते हैं इन दो नगरों के सिवाय जिड्डा साना मोका एडन मस्कट ये सब स्थान भी अर्ब में प्रसिद्ध हैं जिड्डा एक प्रधान बंदर है समुद्र पथ से जो वस्तु और यात्री मक्के में जाते हैं वे जिड्डा होके जाते हैं। और भारतवर्ष की तार की खबर जिड्डा में होकर इंगलेंड में जाती है साना जीमन की राजधानी है मोका काफी के लिये प्रसिद्ध है और एक प्रधान बंदर है। एडन जो बाबुलमंडप के मुहाने पर है १८३९ ई॰ में अंगरेजों के अधिकार में आया मस्कट एक अच्छा नगर है और फारस की खाड़ी पर बसा है और यहां व्यापार का भी बहुत प्रचार है ॥

मध्य में एलसाडनामक नगर वहाबियों की राज-धानी है ये वहाबी लोग गत सतावधि में प्रबल हुएथे ये लोग मुहम्मद को ईश्वर के तुल्य पूज्य नहीं मानते हैं उसको केवल एक भविष्यद्वक्ता कहते हैं उनके केवल ईश्वर ही पूज्य है इन लोगोने एकसमय सारे अरब को अधीन करलियाथा परंतु मिसर के बादशाह मुहम्मद अली इनको मक्के और मदीने निकाल दिया ॥

अरबावा की खाड़ी और मुर्दा झील के मध्यमें पिट्रानामक प्राचीन इडिम की राजधानी का खंडहै यह १८१२ ई॰ में बास्क हारड नामक भ्रमिक से प्रकट हुआ है

फारस

इसके उत्तर में जार्जिया कास्पियन सागर और तातार पश्चिम में एशियाई रूम दक्षिण में फारस की खाड़ी पूर्व में अफगानिस्तान और बलोचिस्तान। यह उत्तर अक्षांशों के २६ अंश से ३९ अंशतक विस्तृत और पूर्व देशान्तर के ४४ अंश से ६१ अंशतक लंबा-है इसकी लंबाई फुरात और दजिला के मिलने से अफगानिस्थान तक ३८० कोस और चौड़ाई कास्पियन सागर से फारस कीखाड़ी तक ३५० कोस है इसका क्षेत्र फल है मनुष्यसंख्या ९०००००० फारस में एकसमतल देश है जिसमें प्रधान रूप से लवणमय मरुभूमि है इसके उत्तर और पश्चिम में एलबुर्ज पर्वत श्रेणी और कुर्दिस्थान के पर्वत हैं इसके दक्षिण

में जो समतल क्षेत्र और पर्वत हैं वे सब उपजाऊ नहीं उत्तर देशस्थित प्रदेश सकल सुंदर और उर्वर हैं फारस के वायुकोन में उर्मिया की लवणमयझील है जिसकी ऊंचाई समुद्र तल से ४५०० फीट है फारसकी अवशिष्ट भूमि रेत से आच्छन्न है उन सब स्थानों को गर्मसर अर्थात् उष्ण प्रदेश कहते हैं इन में ग्रीष्म ४ महीने ऐसी प्रबल होती है कि वहांके रहने वाले से भी सहा नहीं जासकता उस समय यदि कोई प्रदेश से मनुष्य वहां आकर पीड़ित होजाय तो उसको अच्छा होना बड़ा कठिन है फारस में नदी बहुत न्यून और छोटी हैं और ये नदियां समुद्र में न पहुंच कर मध्यस्थित झीलों में गिरती हैं कास्पियन सागरके तीरपर जो एक मरुक्षेत्र है उसमें भी ग्रीष्मकाल में ग्रीष्म का प्रादुर्भाव होताहै परंतु शीतकालमें वह बहुत रमणीयहोताहै वहां का वायु सर्वदा सजल है स्वास्थ्य का अनुकूल नहीं क्योंकि समतलक्षेत्र के मध्यस्थित क्षेत्र उन्नत और शुष्क ये भूखंड पर्वतोंसे आकीर्ण हैं और उन पर्वतों के बीच फारसियों का प्रकृत वासस्थान और शस्य क्षेत्र हैं परंतु उनका भी अधिकांश मरुभूमि है उस मरु को कबीर मरु कहते हैं इसके किसी २ स्थान में शुष्क क्षेत्र कोई २ स्थान लवण मय कोई २ स्थान जलमय और किसी २ स्थान में बालुका स्थल लहरों की तरह ऊंचीनीची दिखाई देताहै फारस की भूमि कृषी कर्म के लिये

विशेष अनुकूल नहीं है यहां की भूमि बड़ी कठिन
है जल सेचन के बिना यहां कुछ उत्पन्न नहीं होता
है यहां गेहूं चावल जौ इत्यादि खेती होती और यहां
के बागों में पिंडी खजूर अंजीर अनार आड़ू बादाम
अखरोट अंगूर और नारंगी आदि फल उत्पन्न हो-
ते हैं उनमें से शेषोक्त दो फल बहुत सुखती हैं तूत
रूई तिल प्रभृति भी यहां बहुत होते हैं यहां रेशम
और गलीचों के कारखाने बहुत हैं यहां के अश्व
यद्यपि वेग में अरब के घोड़ों से न्यून हैं परंतु उन से
सुंदर बहुत हैं यहां घोड़े और ऊंट के मिलाप से
एक जाति की खच्चरें उत्पन्न होती हैं और खच्चरों से
बलवान हैं और यहां की भेड़ लंबी पूंछ के लिये प-
सिद्ध है एक एक का बोझ २५ सेर के लगभग हो-
ता है यहां गाय प्रभृति ग्राम्य जंतु बहुत हैं और
जंगली जीवों में सिंह रीछ वन्य सूकर छोटे व्याघ्र
चीता और नाना प्रकार हरिन और खरगोश प्रधा-
न हैं। यहां खानी द्रव्य बहुत है परंतु उनका व्यव
हार थोड़ा होता है उत्तर पूर्व में है आमू और सार
ये दो नदियें आराल झील में गिरती हैं इन नदियों के
तीर पर बहुत उर्वर प्रदेश है जिसमें चावल गेहूं रू-
ई खरबूजा तरबूज और अच्छे २ फल उत्पन्न होते हैं
यहां ग्रीष्म काल में गर्मी बहुत होती है ऐसे शीत
काल में पाला अधिक पड़ता है यहां के मनुष्यों की
संख्या ५०००००० है ये सब पशु चारन करते हैं

और मुसलमान धर्मावलम्बी हैं ये लोग प्राचीन इ-स्किथिय जाति की नाईं युद्ध में साहसी होते हैं परंतु क्रूर और विश्वास घाती होते हैं दक्षिण भाग में इन की अधिक बस्तियें हैं और येलोग वहां बहुत परिमाण से रूई उत्पन्न करते हैं ये लोग जहां घास और पानी का आधिक्य देखते हैं वहां ही स्थिती करते हैं परंतु वहां के घासादि निःशेषित होने पर और २ स्थानों में जाते हैं इसलिये इनकी कहीं नियत रहने की ज-गह नहीं है येलोग दासों का विक्रय करते हैं रूस वा फारस के प्रान्त में जो स्त्री पुरुष इनके सामने आ ते हैं वे लोग उसे पकड़ कर दास बना कर बेच डाल ते हैं यहां ताजिक और उजबेग नामक २ सम्प्रदायों के मनुष्य हैं ये लोग कुछ सभ्य और परिश्रमी हैं ये लोग बुखारा कोकंद और कुन्दज प्रदेशों में वास क रते हैं और फारस भारतवर्ष तिब्बत चीन और रू-शिया के लोगों से व्यापार करते हैं इतिहासों में ता-तार बहुत प्रसिद्ध है समय २ यहां के लोगोंने अपने देश से निकल कर बहुत राज्यों का नाश किया अब तक इस देश के लोग रूम की गद्दी पर बैठे हैं चिंगा न तैमूर और भारतवर्षी मुगलों का पहला बादशा ह इस देश में उत्पन्न हुए थे तातार राज्य ८ भागों में विभक्त है यथा तुरकिस्थान, खीवा, कोकन, बुखारा, तुर्कमानिया और कुंदज यहां बहुत छोटे २ स्वाधी न राज्य थे परंतु अब रूसी लोग क्रमशः इस देशमें

अपना अधिकार बढ़ाते जाते हैं येलोग तासकंद न-
गर को अधिकार में लाकर समरकंद के समीप तक प
हुंचगये हैं येलोग जिस प्रकार गति से दक्षण की ओ
र आते हैं उस से बहुत मनुष्य अनुमान करते हैं कि-
भारतवर्ष इनका प्रधान लक्ष है ॥

तुरान का प्रधान नगर बुखारा यह बहुत वणिज्य
का स्थान है प्राचीनकाल में यह बहुत प्रसिद्ध था अ
बतकभी यहां १,२०,०००, मनुष्योंकी बस्ती है और
बहुत मसजिद औरपुस्तकालय हैं ॥

समरकंद—यह भीएक प्रधान नगर है बुखारा
से ५४ कोस पूर्बमें है यह नगर १३७० से १४०५तक
तैमूर की राजधानी रही बुखारा के अग्निकोनमें ९०को
सकी दूरीपर बालक नगरहै जो बकटरिया देशकी
राजधानी था और २ नगरो में से बदरवसां पद्मरा
ग मणि के लिये, कोकन औरतासकंद खीनखाब
और अन्यविध पट्टवस्त्रके लिये और खीवा दास व्य
वसाय के लिये प्रसिद्ध हैं । मस्रेमाना और मर्व नग
र होकर बहुत समुद्रीयव्यापारी लोग जाते हैं ।

पशिया में का रूस

यूरोप के अन्तर्गत बालटिक सागर के पूर्व तीरसे
जितना यूरोपखण्ड है और पशिया के समुदाय उत्त
रांशों का नाम रूस है । यह भूमिखण्ड एक राजाके
आधीन है । उन्में से जो भाग यूरोप के अन्तरगत है
उस को यूरोपीयरूस और जो खण्ड पेशिया के अन्त

गत है उसे एशियाईरूस कहते हैं । एरोप के वर्णन के समय यूरोपीयरूस का वर्णन किया जायगा अब एशियाई रूस का वर्णन करते हैं ।

इसके उत्तर में उत्तरमहासागर, पूर्व में स्थिर-महासागर, दक्षिण मे चीनी तातार, तरान, और फारस और पश्चिम में यूराल पर्व्वत वा यूरोपीयरूस । इस का क्षेत्रफल १३७५००० वर्ग कोस है और मनुष्यसंख्या ६०००००० है । काकासस पर्वत के दक्षिण और फारस वायुकोण स्थित कुछ अंश छोड़के समुदाय एशियाई रूस को साईबीरिया कहते हैं । साईबीरिया उत्तर महासागर के गर्भ से निर्गत होकर क्रमशः उन्नत हुआ है । इस के दक्षिण मे आलटाई पर्वत, डरियाजाबूलोनाय ष्टेनोभय पर्वत हैं । मध्यस्थित भूमि कुछ समतल है और उसमे ओबी, इनेसी और लीना ये तीन नदियें बहती हैं । दक्षिण-पूर्व मे वेकल झील है जो कि एशिया की सब मीठी झीलों से बड़ी है और इसकी लम्बाई ३६० मील और चौड़ाई ५० मील है । शीतकाल में इसमें ४ फुट बरफ जम जाती है ।

एशियाईरूस का उत्तर और पूर्व भाग बड़ा शीतप्रधान है । वहां ९ वा १० महीने तक शीतऋतु रहती है और यह सर्वदा बरफ से आच्छन्न रहता है । वहां की बड़ी २ नदियें बरफ राशि के नीचे

बहुत धीरता से और निःशब्द होकर बहती हैं इस के मध्यभाग मे भी शीत का बहुत प्रादुर्भाव होता है। केवल दक्षिण भाग मे बड़ा २ विस्तृत बन और खेतियों से भराहुआ धरातल देखने मे आता है। साईबीरिया के उत्तरभाग को तन्द्रा कहते हैं। और वहां कुछ वृक्षलतादि उत्पन्न नहीं होते न वहां कोई जीव रहता केवल समय २ एक प्रकार पक्षी का शब्द सुना जाता है। साईबारिया के उत्तरपूर्व की सीमा मे कमस्कटका नामक प्रायद्वीप है जिस में कई एक ज्वालामुखी पर्वत हैं।

एशियाई रूस के जो अंश फारस के उत्तर मे है उस में शीर्वाण नामक एक प्रदेश है उस प्रदेश का पूर्वप्रान्त बड़ा आश्चर्यस्थान है। वहां भूमि के नीचे से एक प्रकार का तेल सदा निकलता रहता है। वह तेल दो प्रकार का होता है एक कृष्णवर्ण द्वितीय श्वेतवर्ण। कृष्ण वर्ण तेल सूर्य्यकिरण के संयोग से थोड़ा सा लालवर्ण होकर प्रदीप्त होता है बहुत लोग उस से दीआ जलाते हैं। श्वेतवर्ण तेल वायु के स्पर्श से झटपट जलपड़ता है। जलमे निक्षिप्त होकर भी यह प्रज्वलित होजाता है इसलिये वहां के मनुष्य क्रीडा करने के लिये समय २ उस तेल को समुद्र मे फेंकते हैं यह तेल जितनीदूर तक फेल आता है उतनीदूर तक जलमय समुद्र अग्निमय होजाता है। उस तेल की खान

से प्रायः तीन कोस की दूरी पर एक आश्चर्य्य अग्नि क्षेत्र है उस क्षेत्र के किसी अंश मे अग्नि प्रज्वलित होती है और किसी अंश मे से राशीभूत बाष्प निकलता है। उस क्षेत्र के समीप एक अग्निमय झील भी है। समय २ वह अग्निमय क्षेत्र और यह अग्निमय झील प्रज्वलित होकर समुदाय स्थान को अग्निमय कर देते हैं परन्तु आश्चर्य्य यह है कि उस अग्नि में हाथ लगाने से हाथ जलता नही। प्राचीन समय में इस अग्नि क्षेत्र को देखने के लिये नाना देशों से यात्री लोग आते थे। आज तक भी बहुत आते हैं। पहले कह चुके हैं कि साईबीरिया का बहुत अंश शीतप्रधान है वहां कुछ उद्भिजादि नहीं उत्पन्न होते। केवल दक्षिण और पश्चिम की भूमि उर्वरा है वहां पर शस्यादि उत्पन्न होते हैं। साईबीरिया में नानाविध वन्यजन्तु हैं कि जिनका लोम बहुत काम मे आता है उन मे से बीवर, मारटन प्रभृति प्रसिद्ध हैं। यहां पर रैन्डियर नामक एक प्रकार का हरिण होता है कि जिस के मुख में लगाम लगाकर वहां के रहने वाले शाकटादि चलाते है। इस हरिण को बङ्गभाषा में बलाहरिण बोलते हैं। यहां के कुत्ते भी गो घोड़ा आदि बड़े २ चौपायों की नाई भार वहन करते हैं यहां के कुत्तों का स्वभाव एक बड़ा आश्चर्य्य सा है। ग्रीष्मऋतु में ये वन मे घुस कर अपना २ आहार खोज लेते हैं परन्तु शीत के

आरम्भ में ही अपने स्वामी के पास आजाते हैं। साईबीरिया के अनेक स्थानों में वन्यगर्द्दभ और वन्य घोड़े देखने में आते हैं। बेकल झील के ती २ में कस्तूरीकामृग और वन्यशूकर चरते हैं। काकाषास पर्वत के समीप पर्वतीय छाग और बीशान नामक जन्तु होते हैं। यहां की खानों में सोना, चांदी और लोहप्रभृति नानाप्रकार के धातु उत्पन्न होते हैं।

साईबीरिया में नानाजातीय मनुष्य वास करते हैं। जो लोग यूरोपीय रूस से राजदण्ड के कारण निर्वासित होते हैं वे लोग इस स्थान में भेजे जाते हैं। क्योंकि यहां पर वास करना बड़ा क्लेशकर है। यहां के राजकार्य्य करने के लिये जो लोग यूरोपीय रूस से जाते हैं ३ वर्ष के पीछे उन को बड़ी उच्च पदवी मिलती है। साईबीरिया ३ प्रदेशों में विभक्त है। १म पाश्चात्य २य मध्य। ३य प्राच्य। यहां के रहने वाले बड़े असभ्य हैं। कमस्कटका के रहने वाले लोगों का शरीर नाटा सा और चक्षु भी छोटे से होते हैं। ये लोग सर्वदा एक स्थान से और स्थान में घूमते हैं और कुत्तों से अपने द्रव्यादि सम्भार उठाते हैं। यहां पर साम यिद नामक एक जातीय मनुष्य हैं जिनकी स्त्रियें १३ वा १४ वें वर्ष में सन्तानप्रसव करती हैं और ३० वर्ष के पीछे उन की सन्तति होना बन्द होजाता है।

सामयिद लोग अपनी स्त्रीसे बहुत घृणा से व्यवहा
र करते हैं । साईबीरिया में प्रायः क्रिस्चन, मुसल-
मान, बौद्ध, और पौत्तलिकप्रभृति समुदाय धर्म्मा
वलम्बी मनुष्य वास करते हैं ।

एशियाई रूस के प्रधान नगर पश्चिम में
टोबालस्क जो १५९० ईस्वीमें जार्मक नामक सा
इबीरिया के जय करने वाले किसी मनुष्य ने इसको
बनवाया । श्रामस्क और टोमस्क ये दो नगर वा-
णिज्यके लिये प्रसिद्ध हैं । बार्नौल नगर ओबी
नदी के तीर पर है । ईकाटरीनबर्ग और नीज्नी
ताज़ीलस्क ये दो नगर यूराल नदी के तट पर स्थि
त हैं और सोना और लोहा नाम धातु के खान होने
के कारण प्रसिद्ध हैं । मध्य में ईर्कुटस्क बैकाल
झील के समीप है और वाणिज्य के लिये प्रसिद्ध है।
कायेखटा नामक नगर में रूसी लोग चीनीलो-
गों से व्यापार करते हैं । आमूरनदी के तीरस्थित
नार्चिनिस्क नगर में शीशा लोहा और बहुमू-
ल्य पत्थरों की खान है । पूर्व में याकूटस्कनामक
नगर लीना नदी के तीर पर है यहां पर लोम और
हस्तिदन्त का वाणिज्य होता है और खटस्क समु-
द्र के तीर में ओखटस्क नगर है ।

जर्जियाप्रदेश जो १८०२ ईस्वी में फारसियों
से रूसों के हाथ में आया । काकेशस पर्वत के दक्षि
ण में है । यहां के रहनेवाले बड़े सुन्दर हो

ते हैं और ग्रीसदेशीय चर्च के नियम मानते हैं इस का प्रधान नगर टेफ्लीस और एरीवान् और काकु ये दो यहां प्रसिद्ध स्थान हैं

एशिया के समीपस्थ प्रधान द्वीपों का वर्णन ॥

जापान

जापान सागर की पूर्वसीमा में कई एक द्वीप हैं जिन्का साधारण नाम जापान है। उनमें से नाईफन, केऊसेऊ, सिक्काफ और येशो ये प्रधान हैं। सिंघालीनका दक्षिण अंश और लाचूद्वीप जो केऊसेऊ से ३०० मील दक्षिण पर है ये भी जापान साम्राज्य के आधीन हैं। जापान राज्य उत्तर-दक्षिण में विस्तृत है और इस में बहुत बडे २ पर्वत हैं कि जिन्में से कई एक ज्वालामुखी भी हैं। जापान की भूमि उर्वरा है इसलिये यहां पर कृषिकार्य बहुत उत्तम रूप से होता है। यहां पर धान्य, चाह और रूई ये सब शस्य प्रधान रूप से उत्पन्न होते हैं। यहां पर ग्राम्य वा वन्यजीव दीख नहीं पड़ते। यहां बहुत सुवर्ण उत्पन्न होता है और चांदी, तांबा, शीशा, लोहा, गन्धक और पत्थरी आदियों की भी बहुत खानें हैं। जापान में अच्छे खिलौने और मट्टी के पात्र प्रस्तुत होते हैं जापान का क्षेत्रफल ९५००० वर्गकोश और लोकसंख्या ३०५०००० है। जापानी लोग चीनियों की नांई देखने में आते हैं। ये लोग बड़े बुद्धिमान, परिश्रमी हैं। और

सर्वदा विद्याकी चर्चा करते रहते हैं । और ये बौद्ध मतावलम्बी हैं । परन्तु इनमें से कई एक मनुष्य नानाविध देव और देवियों की पूजा भी करते हैं । जापानियों की भाषा चीनियों की भाषा से पृथग्रूप है । उनकी वर्णमाला में ४७ अक्षर हैं उन सब अक्षरोंका आकार भी चार प्रकार का है । स्त्री और पुरुष भिन्न २ प्रकार के अक्षरों का व्यवहार करते हैं ।

बहुत दिन तक जापान में विदेशीय वाणिज्य बन्द रहा । कोई विदेशीय आदमी यहां प्रवेश नहीं कर सकता, और यहां के रहनेवालों में से भी कोई विदेश में नहीं जासकता केवल थोड़े से चीनवालों के जहाज और दो डचों के जहाज एक बेर बरस भर में नागासकी में जाकर वाणिज्य करते थे । परन्तु अब यह सब प्रतिबन्ध हटगया । १८५४ ई॰ में यूनाईटेड्स्टेट के लोगों ने यहां वाणिज्य करने की आज्ञा पाई और १८५५ में ब्रिटिशवालों ने भी आज्ञा पाई ।

जापान की राजधानी जेदो है । जो कि नीफन के दक्षिण पूर्व में है । यह नगर बड़ा विस्तृत है । यहां के राजा का गृह इतना विस्तृत है कि उसी को देख के एक नगर मालूम पड़ता है । जापान के एक और प्रधान नगर का नाम मायाको है जो कि जेदो के १३० मील दक्षिण पश्चिम में है । यह नगर भी नाईफन द्वीप के अंतर्गत है । मनुष्य ई

येद्दो द्वीप का प्रधान नगर है। और नांगासखी केऊ सेऊ का प्रधान नगर है।

जापान के सिवाय यशिया के समीप भारतसमुद्र में, वोर्नियो, सुमात्रा, जावा, मिन्दिनियो, सिलेवस, और लूजनप्रभृति द्वीपश्रेणी हैं। श्राशीनिया के वर्णन मे उनका विशेष वर्णन किया जायेगा।

यूरोप

यूरोप की उत्तर सीमा उत्तर महासागर, पश्चिमसीमा अटलांटिक महासागर, दक्षिणसीमा अजोफसागर, कालासागर, मारमोरा कासमुद्र और भूमध्यस्थ समुद्र और पूर्वसीमा कास्पियन समुद्र, यूरालनदी और यूराल पर्वत है इस का क्षेत्रफल ९३०००० वर्गकोश है। और मनुष्यसंख्या २५४०००००० है।

यद्यपि यूरोप पृथ्वी के और महादेशों से छोटा है तथापि यूरोप की शक्ति और प्रभुता सब से बढ़ कर है। शिल्पादि में इसकी बहुत उन्नति हुई है। यूरोप में बहुत छोटे २ समुद्र खलीज और खाडियों के होनेसे वाणिज्य के लिये बहुत सुगमता होती है। यूरोप में निम्नलिखित देश हैं॥

ग्रीस वा यूनान टर्की वा रूम, रूस, स्वीडन नार्वे, डेन्मार्क, हालेण्ड, वेल्जियम, जर्मनी, प्रूशिया, आस्ट्रिया, इटली, स्विट्ज़र्लेण्ड, फ्रान्स, स्पेन, और पोर्तगाल हैं॥

यूरोप महादेश के समीपस्थित द्वीपसमूह भी यूरोप के बीच में गिने जाते हैं, जैसा ब्रिटिश द्वीप समूह जि-

स के अन्तर्गत इंग्लेण्ड, स्काट्लेण्ड और आयर्लेण्ड हैं। ऐसे ही सिसली माल्टाप्रभृति द्वीपों को भी यूरोप के बीच ही गिनते हैं ।

अब क्रम से यहां के समुद्रों का वर्णन कियाजाताहै

प्रधान समुद्रों का वर्णन

श्वेत समुद्र, रूसके उत्तर में

उत्तर समुद्र वा जर्मन सागर, इंग्लेण्ड और यूरोप महादेश के बीच ।

बाल्टिक समुद्र, डेन्मार्क, जर्मनी, रूस और स्वीडन के बीच, यह बड़ा गंभीर है और यहां अधिक मीठा जल गिरने से इस का जल महासागर की नाईं लोना नहीं । शीतकाल में यह बहुत जम जाताहै।

आइरिश समुद्र वा सेन्टजार्ज का मुहाना, इंग्लेण्ड और आयर्लेण्ड के बीचमें है ।

इंग्लिश चेनल्, इंग्लेण्ड और फ्रान्स के बीच मे है ।

भूमध्यस्थमहा सागर, जो यूरोप को आफ्रिका से पृथक् करता है। यह पूर्व पश्चिम में ११५० मील लम्बा है ।

स्थान २ में इस की गहराई बहुत है महासमुद्र से इस का जल लूना है और नीचे लिखे हुए समुद्र इसके अंश हैं ।

टारहेनियन समुद्र इटली के पश्चिम में ।

आयोनियनसमुद्र, इटली और ग्रीस के बीच

आड्रियाटकसमुद्र वा वीनेष की खाड़ी इटली और टर्की के बीच,

ईजियन् समुद्र ग्रीस और टर्की के बीच ।

मारमोराका समुद्र,

यूरोप और असियाई टर्की के बीच काला समुद्र और अजोफ समुद्र रूस और टर्की के बीच ।

इन के सिवाय यूरोप में और भी छोटे २ समुद्र हैं ।

प्रधान खाड़ी और खलीजों का वर्णन

उत्तर में बोथीनि या की खाड़ी,

फिनलेण्ड और रीगा की खाड़ि यें बालटिक समुद्र के पूर्व मे हैं ।

काटीगट और स्केगारक ये दो खाड़िये वालटिक और उत्तर समुद्र के बीच में हैं ।

बिस्के की खाड़ी फ्रान्स के पश्चिम मे हैं ।

ला इन की खाड़ी, दक्षिण मे है ।

जिनोआ की खाड़ी इटली के उत्तर पश्चिम मे है ।

नेपल्स की खलीज इटली के पश्चिम मे है ।

टारन्टो की खाड़ी इटली के दक्षिण में ।

कारिन्थ की खाड़ी यूनान के पश्चिम मे ।

सिलोनी की खाड़ी टर्की के दक्षिण में

प्रधान मुहानो का वर्णन

सोन्ड. स्वीडन और ज़ीलेण्ड के बीच ग्रेटबेल- जीलेण्ड और फ़ूनन के बीच ।

लिटल वेल्बालटिकसमुद्र के पश्चिम में ।

डोवर — उत्तर समुद्र और इंग्लिश चैनल के बीच

जिब्राल्टर — भूमध्यस्थ और अटलाण्टिक महा-

सागर के वीच ।
बोनीफेशियो कार्सिका और सार्डीनिया के वीचमे सीना, इटली और सिसली के वीच ।
ओट्रेन्टो ऽ आड्रियाटिक समुद्र को प्रवेशमार्ग आर्ईने लिस, भूमध्यस्थ और मार्मारा के सागर के वीच।
कान्स्टेन्टीनोपल वा बोस्फारस, कालेसागर का प्रवेश मार्ग
काफा वा ऐनीकेल कोला और अजोफसागर के वीच

यदि फ्रान्स के दक्षिण-पश्चिम से श्वेतसमुद्र तक और कास्पियन सागरके उत्तर तक सूधी रेखा खेंची जावे तो उन रेखा ओं के वीच यूरोप का एक तृतीयांश आजाये गा जिस मे केवल प्रायद्वीप होंगे, यथा :—

स्केन्डीनीविया जिसके अन्तरगत लेपलेण्ड भी है जिस के आधुनिक नाम नार्वे और स्वीडन हैं ॥
इस की एक दिशा में श्वेत समुद्र
अन्य दिशा में बालटिक और उत्तरमहासागर है॥
डेन्मार्क - जिसें जटलेण्ड प्रायद्वीप है, बालटिक और उत्तर सागर के वीच ।
कार्टेन्टीन - फ्रान्स के उत्तर पश्चिम में, ब्रिटेनी - फ्रान्स के पश्चिम में ।
स्पेन और पोर्तगाल जिस को आईवेरियन् प्रायद्वीप कहते हैं । भूमध्य और अटलांटिक समुद्र के वीच इटली - भूमध्य और आड्रियाटिक समुद्र के वीच
मोरिया - ग्रीस का दक्षिण-

भाग क्रिमिया— रूस का दक्षिणभाग

यूरोप का ते बो श्रेणी द्वीप हैं ।

जिन का वर्णन नीचे किया जाता है ।

नोवाजेम्ला और स्पिट्
ज़बर्गन् द्वीप और लाफो-
डेन द्वीपश्रेणी उत्तरमहा-
सागर में ।

आइसलेण्ड द्वीप, फेरो, से-
टलेण्ड, पश्चिमद्वीपसमूह
और ब्रिटिशद्वीप समूह
अटलाण्टिक महासागर में
जीलेण्ड और फूनन द्वीप
काटिगट की खाड़ी मे ॥
ओलेण्ड, गथलेण्ड ओजल,
डेगो और आलेण्ड द्वीपसमू
ह बाल्टिक सागर मे ॥

बेली आरिक द्वीपसमू-
ह जिन्मे से ईविका, मा-
जरका, और मीनका प्र-
धान हैं ।

कार्सिका, सार्डीनिया सि-
सिली, आयोनियन द्वी-
पसमूह, क्रेटी, नेग्रोपा-
न, साक्रेदिश और का-
न्डिया ये सब द्वीप भूम
ध्यस्थ महासागर में ।

आयद्वीपों को मिलाके राइन नदी से निस्टर नदी तक यदि एक सूधी रेखा खींची जाय तो उस से यूरोप दक्षिण – पश्चिमीय, पर्वतीय प्रदेश और उत्तर-पूर्वीय समतल क्षेत्र में विभक्त होता हैं ।

उन पर्वतों में से एलप्स पर्वतश्रेणी प्रधान है ।

एलप्स पर्वतश्रेणी इटली फ्रान्स स्विट्जर्लेण्ड और जर्मनी के बीच। इस की सबसे ऊंची चोटी मान्टब्लेन्क है जो स्विट्जर्लेण्ड के दक्षिण मे है और १५७८४

टाईवर नदी—ऐपिनाईन पर्वत से निकलकर इट-
ली के मध्य से भूमध्यस्थसागर में गिरती है ।

रोन नदी— ऐल्प्स पर्वत से निकल कर फ्रान्स से
होकर लीयन की खाड़ी में गिरती है । ईब्रो नदी-
स्पेन के पर्वत से निकल कर भूमध्यस्थसागर में
गिरती है ।

टेगस और डाडरो नदी— स्पेनदेशीय पर्वत से नि
कल कर स्पेन और पोर्तुगाल के बीच से अ टला-
ण्टिक महासागर मे गिरती है ।

लायारनदी— सिविनसपर्वत से निकलकर फ्रा-
न्स के बीच होकर विस्के सागर में गिरती है ।

सीननदी— फ्रान्स के अन्तर्गत बर्गन्डीप्रदेशीय
पर्वतों से निकलकर इंग्लिश मुहान्ना में गिरती है ।

राईन नदी— स्विटजर्लेण्ड देशीय पर्वत से निकल
स्विटजर्लेण्ड जर्मनी और होलेण्ड मे होकर जर्मन
समुद्र में गिरती है ।

एल्पा नदी जर्मनी के अन्तर्गत बोहीमिया प्रदेश
से निकलकर प्रूशिया के बीच होकर जर्मन समु
द्र में गिरती है ।

ओडर नदी— जर्मनीसे निकलके प्रूशिया मे हो
कर वालटिक समुद्र मे गिरती है ।

टेमस नदी— ग्लस्टर प्रदेशीय पर्वत से उत्पन्न
होकर इंग्लेण्ड के बीच से जर्मन सागर में गिर
ती है ।

टे नदी—स्काट्लेण्ड के बीच से बह कर जर्मन समु द्र में गिरती है ।

स्यानन-नदी—आयर्लेण्ड के अन्तरगत एलनझील से निकल कर अटलाण्टिक महासागर में गिरती है ।

यूरोपीय सब समुदाय नदियों में से वाल्गा सबसे बड़ी है ।

प्रधान झीलों का वर्णन

वेनर और वेटर स्वीडन में ।

लडोगा — रूस में ।

ओनीगा, सायमा, पजाना और पेईपस-ये सब रूस में जनेवा-स्विट्ज़र्लेण्ड में ।

कान्स्टेन्स—स्विटजर्लेण्ड और जर्मनी के मध्यस्थित

ज़्यूरिक, ल्यूज़रन, और न्यूसाटल स्विटज़र्लेण्ड में ।

मेगीयर, कोमो और गार्डो इटली में ।

बलाटन, आस्ट्रिया में ।

यूरोप के अधिक अंश उत्तर सम कोटिबन्ध में है। केवल अति अल्प अंश उत्तर हिम कोटिबन्ध की सीमा के बीच है । इसलिये पृथिवीस्थित और महादेशों की नाईं यहां बहुत शीत वा गरमी नहीं। यूरोप के पाश्चात्यप्रदेश उसके प्राच्यदेशों से अधिकतर उष्ण है ।

क्योंकि यहां दक्षिण-पश्चिमी वायु अटलाण्टिक

महासागर में होकर आती है ।

साधरणतः यूरोप को तीन कोटिबन्ध में विभक्त किया जाता है । प्रथम दक्षिण कोटिबन्ध । द्वितीय मध्य कोटिबन्ध । तृतीय उत्तर कोटिबन्ध ।

दक्षिण कोटिबन्ध मे स्पेन, पोर्तुगाल, फ्रांस का दक्षिण अंश, इटली, तुर्किस्तान दक्षिण अंश और ग्रीस है । इन सब देशों में शीतऋतु थोड़ी और ग्रीष्म ऋतु अधिक होती है ।

मध्यकोटि बन्ध में फ्रान्स के मध्य और उत्तर अंश, ग्रेट ब्रिटन, स्वीडन और नार्वे का दक्षिण अंश, जर्मनी, हंग्री, और रूस का दक्षिण अंश हैं ।

इन देशों मे चार ऋतु स्पष्टरूप से मालूम होती हैं ।

उत्तर कोटिबन्ध में नार्वे और स्वीडन का उत्तर अंश, लापलेगड, फिनलेगड और रूस का उत्तर अंश है । यहां ग्रीष्म ऋतु थोड़ी और शीत ऋतु अधिक और लोशकर होती है । यहां कई महीने तक नदी, झील और समुद्रप्रभृति जलाशय बरफसे आच्छन्न रहते हैं ।

यूरोप के दक्षिण देशों में द्राक्षा, कार्पास, संतरा, अंजीर निम्बू, दाना, चावल, तमाकू, गेहूं और भुट्टा, आदि उत्पन्न होते हैं ।

और वन में ओकवृक्ष, देवदारु और बदाम के वृक्ष उत्पन्न होते हैं ।

मध्यदेशों में होता, और नानाप्रकार के शस्य, सेऊ, आड़ू अखरोट इत्यादि फल उत्पन्न होते हैं और वनों में ओक देवदारु प्रभृति वृक्ष उत्पन्न होते हैं ।

उत्तर प्रदेशों में उद्भिज बहुत ही थोड़े उत्पन्न होते हैं ।

नार्वे और स्वीडन के उत्तर गेहूं नहीं उत्पन्न होता। यूरोप के खानिज द्रव्यों में से लोहा, शीशा ताम्बा और टीन प्रधान हैं । सोना और चांदी बहुत अल्पपरिमाण से मिलते हैं ।

बेलजियम और ब्रिटन में पत्थरी कोले की खानि बहुत हैं ।

परन्तु फ्रान्स, प्रूशिया, आस्ट्रिया, और रूस में भी पत्थरी कोले मिलते हैं ।

घोड़ा, गो, भेड़, कुत्ता, और रेन्डि-यर प्रभृति व्यवहारिक पशु यूरोप में बहुत दीख पड़ते हैं पक्षियों में से ईगल, गीध, चील बाज और बुलबुल ये प्रधान हैं

टर्की को छोड़कर यूरोप के समुदाय देशों में क्रिश्चन धर्म मानते हैं । केवल टर्की में ही मुसलमान रहते हैं ।

समुदाय यूरोप की शासनप्रणाली तीन प्रकार की है । यथा रूस, आस्ट्रिया और प्रूशिया में नियमतन्त्र । ब्रिटन इटली, स्पेन पोर्तुगाल, बेलजियम, हालेण्ड, डेन्मार्क, स्वीडन, नार्वे और ग्रीस में प्रजातन्त्र। स्विटज़र्लैण्ड आदि स्थानों में साधारणतन्त्र ।

अब यूरोप के देशों की स्थिति स्थान और जिन २ देशों का जो २ प्रधान नगर है उसका वर्णन किया जाता है ॥

देश	स्थितिस्थान	राजधानी
इंग्लेण्ड	यूरोप के पश्चिम स्काटलैण्ड के दक्षिण	लन्डन
स्काटलेण्ड	इंग्लेण्ड के उत्तर	एडिन्बर्ग
आयर्लेण्ड	इंग्लेण्ड के पश्चिम	डब्लिन
फ्रान्स	इंग्लेण्ड के दक्षिण	पेरिस
स्पेन	फ्रान्स के दक्षिण-पश्चिम	मड्रिड
पोर्चुगाल	स्पेन के पश्चिम	लिस्बन
स्विट्जर्लैण्ड	फ्रान्स के पूर्व	बर्न

देश	स्थितिस्थान	राजधानी
इटली	स्विट्जर्लैण्ड के दक्षिण	रोम और फ्लारेन्स
बेल्जियम्	फ्रान्स के उत्तर पश्चिम	ब्रुसल्स
हालेण्ड	बेल्जियम् के उत्तर	एम्स्टर्डम्
जर्मनी	फ्रान्स और बेल्जियम् के पूर्व	फ्रेन्कफोर्ट
डेन्मार्क	जर्मनी के उत्तर	कोपनहेगन
नार्वे	यूरोप के उत्तर पश्चिम	क्रिश्चियानिया

स्वीडन	नार्वे के पूर्व	स्टाकहोम
प्रूशिया	बाल्टिक समुद्र के दक्षिण	बर्लिन
रूस	यूरोप के पूर्व	सेन्ट पीटर्स बर्ग
आस्ट्रिया	प्रूशिया के दक्षिण	वायना
देश	स्थितिस्थान	राजस्थानी
टर्की	रूस और आस्ट्रिया के दक्षिण	नोपल
ग्रीस	टर्की के दक्षिण	एथेन्स

यह पहले कह आये हैं कि यूरोप और सब महादेशों से छोटा है परन्तु इसके अधिवासियों की संख्या बड़ी है। यूरोप के मनुष्य धाराप्रवाही परिश्रम, अध्यवसाय नैपुण्य और व्यापारों के द्वारा और सब देशों के मनुष्यों से सभ्य, विद्यावान् और समृद्ध हुए हैं। अब समस्त पृथिवी में इन के बराबर कोई नहीं। जो पांच राजबल समुदाय पृथिवी में श्रेष्ठ गिने जाते हैं। वे यूरोप के ही हैं। जैसा ग्रेट ब्रिटन, जर्मन राज्य, रूस फ्रान्स और आस्ट्रिया ॥

अब संक्षेप से यूरोप के देशों का वर्णन किया जाता है

ब्रिटन

ब्रिटन द्वीप तीन प्रधान भागों में विभक्त है—इंग्लेण्ड, स्काट्लेण्ड और वेल्स । परन्तु अब इंग्लेण्ड और वेल्स इन दोनों को ही इंग्लेण्ड कहते हैं ।

इंग्लेण्ड

इसके उत्तर में स्काट्लेण्ड, पूर्व में जर्मन सागर, दक्षिण में इंग्लिश मुहाना और पश्चिम में अटलाण्टिक महासागर, सेन्टजार्ज का मुहाना और आइरिश सागर हैं । इंग्लेण्ड के पूर्व उपकूल निम्न भूत है पश्चिम प्रस्तरमय । और बीच २ में यह सागरशाखा होने से आरा की नाईं शोभायमान है ।

इंग्लेण्ड के अग्निकोण में बहुत दलदल क्षेत्र है । इसकी मध्यस्थल की भूमि भङ्गिमती इस के पश्चिम और उत्तरभाग में कई एक अनुच्च पर्वत भी हैं । इस देश के समुदाय समतलक्षेत्र तृण और शस्यों से पूर्ण हैं ॥

इंग्लेण्ड पृथिवी के जिस स्थान में अवस्थित है उस के अनुसार यहां बहुत शीतातप का आधिक्य होना चाहिये परन्तु चारों ओर जल से वेष्टित होने से उतना नहीं होता ।

भारतवर्ष की अपेक्षा इंग्लेण्ड में शीत का बहुत प्रादुर्भाव है । यहां की वायु सजल, अनच्छ और ग्रीष्म में उष्ण और हिम में शीतल होती है । स्वास्थ्य के लिये यहां की वायु अतिशय उपयोगी है और

उस का यह गुण है कि वह मनुष्य का आलस्य हर क
र देती है । इंग्लेण्ड के पश्चिम भाग में सर्वदा वृष्टि
होती रहती है ।

पूर्व भाग में बहुत वृष्टि नहीं होती ।

इंग्लेण्ड की भूमि समतल और उर्वरा है । यहां
विविध शस्य उत्पन्न हो सकते हैं । परन्तु गो प्रभृति
तृणभोजी पशुओं के चरने के लिये बहुत भूमि अ
कृष्ट ही पड़ी है ।

प्राचीन काल में इंग्लेण्ड में बहुत जंगल थे । पर
न्तु अब कृषि की उन्नति होने से बहुत जंगल नष्ट
न होगये हैं ।

यहां के जंगलों में ओक, भूर्ज, एलम्, आस,
और देवदारु ये वृक्ष प्रधानरूप से उत्पन्न होते हैं ।
खेतियों में गेहूं, जव और ओट ये प्रचुर हैं और फ
लों में बेर, सेव, चेरी, अखरोट और पियारा ये अ
च्छे २ उत्पन्न होते हैं ।

यहां के आरण्य जन्तुओं में हरिण और आरण्य
हय प्रसिद्ध है । ग्राम्यजन्तुओं में भेड़, घोड़ा और
गौ प्रधान हैं ।

इंग्लेण्ड में पत्थरी कोला बहुत परिमाण से मिल
ता है ।

यहां ताम्बा, शीशा और दस्ता भी बहुत परिमाण
से उत्पन्न होते हैं । यहां के वाणिज्यद्रव्यों में रेशम,
पशम, कार्पास के वस्त्र, लोह और इस्पात से बने हुए

नाना प्रकार के अस्त्र और यन्त्र, पित्तल और ताम्रमय पात्र, काच और मट्टी के बरतन, टोपी, प्रकाशक बत्ती, साबुन और चमड़ा प्रचुर परिमाण से प्रस्तुत हो कर प्रायः पृथिवी के समस्त देशों में प्रेरित होते हैं। इन के सिवाय यहाँ लवणाक्त शुष्क मत्स्य और मांस, आलू, मक्खन और पनीर प्रभृति उत्पन्न होते हैं।

इंग्लैण्ड के रहने वाले मनुष्यों को अंग्रेज कहते हैं। ये लोग बलवान, साहसी, तेजस्वी, परिश्रमी अध्यवसाय विशिष्ट, बुद्धिमान, चतुर और युद्ध में निपुण होते हैं। समुद्रयुद्ध में इन के सदृश और कोई जाति पृथ्वीभर में नहीं। ये लोग स्वाधीनता की सर्वथा रक्षा करते हैं और सभ्यता में पूरे हैं। ये लोग हठात् किसी काम में हाथ नहीं लगाते परन्तु एक बेर जिस में हाथ लगाते हैं उसे सिद्ध करके ही छोड़ते हैं॥ ये सर्वदा परिच्छन्न रहते हैं और इन का वासस्थान बहुत रमणीय होता है। ये लोग वाक्य में जैसी धर्म की बड़ाई करते हैं उन के कार्य में एसी धर्मभीरुता नहीं दीख पड़ती। इंग्लैण्डीय शिल्पकार्य्य अतिशय विस्तृत और और आश्चर्य-कर है। अंग्रेज लोग शिल्पकार्य में जैसे और सब जातियों से श्रेष्ठ हैं वाणिज्य में उस से भी अधिक हैं। पृथिवी में ऐसा स्थान नहीं है जहां अंग्रेज व्यापारी होकर नहीं जाते। वाणिज्य के निरन्तर अनुशीलन करके अंग्रेजलोग बहुत समृद्ध

हुए हैं। देखो वाणिज्य करने के लिये प्रवेश कर अंग्रेज लोग भारतवर्ष प्रभृति बड़े २ देशों पर कैसी प्रभुता विस्तार करते हैं। इंग्लैण्ड में विद्या की चर्चा बहुत है। यहां साधारण मनुष्यों की शिक्षा के लिये रविवारिकपाठशाला प्रात्यहिक पाठशाला प्रभृति छोटे २ विद्यालय स्थान २ में स्थापित हैं

बड़े और मध्यम अवस्था के लोगों की शिक्षा के लिये प्रायः प्रतिनगर में एक २ अच्छा विद्यालय स्थापित हुआ है। इंग्लैण्ड में आक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज, लंडन, और डर्हम येचार विश्वविद्यालय हैं। उन में से प्रथम दो बहुत प्रसिद्ध हैं। वहां पाठकरके अंग्रेज लोग साहित्य,पदार्थ और गणितादि विद्या में पारदर्शी होते हैं ॥

इंग्लैण्ड की भाषा को अंग्रेजीभाषा कहते हैं। भारतीयब्रिटनराज्य में इस भाषा से पुस्तकादि रचित होते हैं। इंग्लैण्ड की शासनप्रणाली बहुत अच्छी है ॥

यहां के राजपद पुरुषानुक्रमिक अर्थात् एक राजा की मृत्यु के पीछे उसका उत्तराधिकारी स्त्री वा पुरुष हो सिंहासन अधिकार करते है जैसा अब एक स्त्री राजपद में अभिषिक्त है जिनका नाम महारणी विक्टोरिया हैं। महारानी और उसके मन्त्रिगण सर्वदा कानून के अनुसार काम करते हैं। पार्लीमेण्टनामक सभा में ये सब कानून प्रस्तुत हो-

सेस कैन्ट में । बीचीहेड ससेक्समें । नीडुलैस आईट द्वीप में पोर्टलैण्ड-प्वाइन्ट डार्सेट में स्टार्ट-प्वाईंट डेवन में । लीज़ार्ड और लैण्डस् एण्ड कार्नवाल में ।

पश्चिम उपकूल में-हार्टलैण्ड-पाइन्ट डेवन में। वार्नस् हेड गैलमर्गन में । सेन्ट डेविड सेड पेम्ब्रोकमें ग्रेट ओर्मीज़ हेड डेन्बाई मे । सेन्ट- बीज़हेड कम्बलैण्ड में ।

प्रधान २ द्वीपों का वर्णन

उत्तर मे— होली आईलैण्ड वार्विक के समीप पहले यहां प्रधान धर्मास्थल का स्थान था । फार्नी द्वीप और कोकेट द्वीप होली आईलैण्ड के दक्षिण में ।

पूर्व मे-सेपी द्वीप टेमस नदी के मुहाना मे । थेनेट द्वीप कैन्ट के समीप अब यह द्वीप भूमि के साथ मिल गया है ।

दक्षिण में-वाईट द्वीप है हैम्पशायर के समीप है यह स्थान स्वस्थता के लिये बहुत प्रसिद्ध है न्यूपोर्ट इसका प्रधान नगर है और उसके उत्तरतीर में ओस- बर्ननामक राजप्रासाद है जिस में महारानी सदा रहती हैं सिली द्वीप कार्नवाल के समीप है। चैनल द्वीपसमूह जिस के अन्तर्गत जर्सी, गरन्सी, अलर्नी और सार्क द्वीप हैं केवल ये ही द्वीपसमूह नार्मन अधिकार का अवशेष है । सेन्ट-हेली-

यार्क और सेन्ट पीटर ये दो इस के प्रधान नगर हैं । यहां की वायु स्वास्थ्य कर है और यहां बहुत कर नहीं देने पड़ते इसलिये बहुत आदमी यहां आके रहते हैं । पश्चिम में- लंडी द्वीप २ सिस- स्तल के मुहाने में । पेंडालसी और होलीहेड कार्न्सवरशायर के समीप । वेलनी द्वीप लैन्कशायर के समीप । मैन द्वीप आईरिशसमुद्र में । इस में कैसल टौन, पील, डगलस और रामसे ये नगर हैं । यहां सीस शीशे की बहुत खाने हैं ।

प्रधान २ पर्वतों का वर्णन

उत्तर में- पीनाईन पर्वतश्रेणी चेवीअट पहाड़ों से डर्बीश्यिर पिक तक विस्तृत है । इस के अन्तर्गत क्रासफेल, पारन्साईड इंगलबर्ग और टेनीगेन्ट ये पहाड़ हैं ॥

कम्ब्रियन पर्वत श्रेणी जिस में स्कैफिल, स्कीडा और हेलीवेलैन ।

वेल्स के मध्य में- प्लीनलीमन पर्वत है । वेल्स उत्तर में- केडार इद्राडिस, अेरन फौडी, पेनानीग और पलीमाडन हैं । ब्रेक पर्वत श्रेणी वेल्स के दक्षिण में हैं । इंग्लैण्ड के दक्षिण में डीवोनियन पर्वत श्रेणी है जो समर्सेटसे डेवन होकर कार्नवाल तक विस्तृत है ।

इन के सिवाय डर्सैट हिल्स साउथ डौन्स नार्थ डौन्स प्रभृति छोटे २ पहाड़ इंगलैण्ड में बहुत हैं ।

प्रधान समतल क्षेत्रों का वर्णन

सेन्टरल प्लेन वा मध्यसमतल क्षेत्र इंग्लेण्ड के मध्य में है। चेसाइयर प्लेन पिनाईन और वेल्स के पर्वतों के बीच में है।

यार्क का समतल क्षेत्र—पिनाईन और वोल्ट्स के बीच में है। ईस्टर्न समतलक्षेत्र चिल्टर्न पहाड़ के पूर्व में। वेल्ड उत्तर और दक्षिण डौन्स के बीच। सेलीसबरी वेल्टशायर में। डार्थमूअर डेवन में ये दो उच्च समतल क्षेत्र हैं।

प्रधान २ झीलों का वर्णन

डार्वेण्टवाटर वा केस्वीकील, विंडरमियर और बूलिस वाटर काम्बोरियन पर्वतों में। ह्विटिंग्स मीमियर हंटिंग्डनशायर में यह अब प्रायः सूख गया है। बालाझील उत्तर वेल्स में।

इंग्लेण्ड की झीलों में कम्बोरियन पर्वतस्थित झीलें बहुत रमणीय हैं। और वीण्डरमियर सब झीलों में से बड़ी है।

प्रधान २ नदियों का वर्णन

पूर्व में—टाईन, वेअर और टीज़ये नदियें पूर्व दिशा में बहती हुई जर्मन सागर में जा गिरती हैं। औसी यह अपनी सहायक डार्विएट, स्वेल, यूरी, नीड प्रभृति नदियों के सहित अग्निकोण में बहकर हम्बरमोत्थ में गिरती है। ट्रेन्ट यह अपनी सहायक सोर, डव, और डार्विएट नदियों के साथ ईशान

कोण में बह कर हम्बरमौथ में गिरती हैं ॥

वीयम अग्निकोण की ओर बहती है । वेलैएड, नेन और ग्रेट औस ये ईशान कोण में बह के वास में गिरती हैं । यार, स्टोर, आरवेल ये पूर्व दिशा में बह कर जर्मनसागर में गिरती हैं ।

टेम्स, जिस में दक्षिण की ओर से मोल, वे। और केनेट नदियां और उत्तर की ओर से चर्वेल, टेम कोल्न और ली नदी मिलती हैं, पूर्व दिशा में बह कर जर्मन समुद्र में गिरती हैं । मेडवे ईशानकोण में बह कर टेम्स के मुख में गिरती है ॥

दक्षिण में— औसी, इचिन टेस्ट, आवन, स्टोर, एक्सी, और टामर ये नदियें दक्षिण दिशा में बह कर इंग्लिश समुद्र में गिरती हैं । पश्चिम में— टा और टेरेट उत्तर की ओर बहकर ब्रिस्टल के मुहाने में गिरती हैं ।

लोवर— आवन पश्चिम की ओर बह कर ब्रिस्टल के मुहाने में गिरती है ॥

सेवरन, वी और आस्कये नदियें दक्षिण की ओर बह कर ब्रिस्टल के मुहाने में गिरती है । डी और वेयर उत्तर की ओर बह कर आइरिशसमुद्र में गिरती हैं । मर्सी, रीवल और लन ये नदियें पश्चिम की ओर बह कर आइरिशसमुद्र में गिरती हैं । ईडन यह उत्तर की ओर बहकर स्लिफार्थ में गिरती है ।

समुदाय इंगलाण्डदेश ४० प्रदेशों या कौण्टी में और २ वेल्स १२ प्रदेशों में विभक्त हैं । उन के नाम नीचे क्रमशः लिखे जाते हैं ।

उत्तर पूर्व स्थित प्रदेश ॥

प्रदेश	प्रसिद्ध २ नगर
नार्थम्बरलैण्ड	न्यूकैसल, नार्थशील्ड, टाईनमौथ मार्फेथ, आलनवीक और बार्विक

प्रदेश	प्रसिद्ध २ नगर
डर्हम	डर्हम, सण्डर्लैण्ड साउथशील्ड, हार्टलपूल, स्टाकटन और डार्लिंगटन

इन प्रदेशों में शिल्प और कृषि की चर्चा बहुत है । नार्थम्बरलैण्ड में अब तक भी एक प्राचीन रोमीय दीवार का खण्ड मिलता है बार्विक नगर ट्वीड नदी के किनारे पर । पहले यह एक स्वतंत्र नगर था अब यह नार्थम्बरलैण्ड के साथ मिलगया है । इसके १२ मील अग्निकोण पर फ्लाडन फील्ड नामक स्थान है जहां १५१३ ईस्वी में स्काटलैण्ड का राजा जेमस चौथा पराजित हुआ । टाईन नदी के किनारे में— टाईनमौथ, नार्थशील्ड साउथशील्ड, इनतीन नगरो में जहाज बनाए जाते

हैं और यहां से पत्थरी कोला और देशों में भेजा जाता है। न्यूकैसल और गेटस्हेड इन शहरों में विस्तृत पत्थरी कोलों की खान है और नानाविध यंत्र रस्सी, शीशा और रसायन द्रव्य प्रस्तुत होते हैं यहां टाईन नदी पर दुहला पुल है। उनमें से ऊपर की छत पर से रेल जाती है और नीचे से आदमी, घोड़े, बग्गी प्रभृति चलते हैं। वेअर नदी के किनारे में सण्डरलैण्ड है यहां पर बहुत जहाज बनते हैं। डर्हम में विश्वविद्यालय है।

टीज़ के किनारे पर स्टाक्टन नगर जहां से बहुत पत्थरी कोला और देशों में जाता है। डार्लिंगटन यहां वस्त्र प्रस्तुत और धातुओं का वाणिज्य होता है। हर्टलपूल टीज़ के मुख में है। यहां एक अच्छा बंदर है जिस में प्रतिदिन वाणिज्य की उन्नति होती है

प्रदेश प्रसिद्ध २ नगर

प्रदेश	प्रसिद्ध नगर	विशेषवर्णन
यार्क	यार्क, लीड्स, ब्रेडफोर्ड, हेलीफाक्स, हडार्सफील्ड, वेकफील्ड, शेफील्ड, डन्कास्टर, स्कारबरो	यार्क नगर बड़ा प्राचीन औस नदी के किनारे पर स्थित है। यहां हाड्रियन, सेवारस और कान्स्टेन्टाइन प्रभृति रोम के सम्राट कुछ दिनों के लिये रहे थे। यहां द्वितीय आर्क बिशप वास करता है। यार्क के पश्चिम में मार्स्टन मूर नामक स्थान है जहां कि क्रामवेल ने १६४४ ई॰ में चार्लस प्रथम की सेना को जीता। इसके दक्षिण पश्चिम में टौटन नामक स्थान है जहां १४६१ ई॰ में यार्क वालों को जय मिली। शेफील्ड में छुरी, कैंची आदि लोह द्रव्य तथा और धातुओं का कारखाना है।

	हौरबी हाल	लीड्स नगर ऐर नदी के तीर पर बसा है। यहां बड़ा भारी पशम का कारखाना है। हाल नगर हम्बर नदी के तीर से एक प्रधान बन्दर है। यह समुद्र के किनारे पर है यहां कप्तान कुक साहेब का जन्म हुआ। इस के २२ मील दक्षिण-पश्चिम में कार्कडेल नामक गुफा है जहां बड़े २ हाथी और सिन्धुघोटक प्रभृति जन्तुओं की हड्डियें मिलती हैं ॥
डर्बी	डर्बी, बेल्पर, वार्कसवर्थ मैटलक, चेस्टर फील्ड	डर्बी, नाटिंगहम। और लिसेस्टर ये तीन बड़े नगर टेरन्ट नदी के तीर में हैं। इन में मोजा, गोटा और फीता प्रभृति का कारखाना है। १७४५ ई॰ में प्रिन्स चार्ल्स डर्बी तक आया था और उसके ४ महीने में पराजित हुआ ॥
स्टैफर्ड	स्टैफोर्ड, लीचफील्ड, टैमवर्थ, बर्टन और स्टोक बारसलम हेनली, उल्वर हेम्पटन बील्सटन और वाल्सल और वेडनसबरी।	स्टैफोर्ड मे चमड़े का कारखाना है। लीचफील्ड में २ बड़ा गिरजाघर है। यहां १७०९ ई॰ में महाकवि जान्सन का जन्म हुआ। स्टोक बरसलम और हेनली टेरन्ट नदी के तीर पर स्थित हैं, और सुन्दर मृन्मय पात्रों के लिये प्रसिद्ध हैं।
लिसेस्टर	लिसेस्टर लाफबर्ग, आश्बीडिला जौकी।	

नाटिङ्गहम इनप्रदेशोमें अनेक पत्थ कोलोंकी भूमिये हैं। यार्कशायर इंग्लैण्ड के सब प्रदेशों से बड़ा है। यहां विविध द्रव्यों का कारखाना	नाटिंगहम न्यूआर्क	
लिन्कन	लिन्कन बा॰ स्टन, ग्रैन्थाम, ग्रेन्थम, ग्रेन्सबर्ग, ग्रिमिसबी	लिन्कन नगर वीथम नदीके किनारे पर है ॥ रोमवालों ने प्रथम ही इस नगर को बनाया। यहां एक रमणीय गिरजाघर है। बास्टन नगर में विस्तृत शस्यका आपार है ॥ ग्रेन्थम नगर के समीप वुलीसरोप नामक स्थान में १६४२ ई॰ में सर न्यूटनसाहिब का जन्म हुआ ॥
रटलैण्ड	ओकहम आपिंगहम	
नार्थम्पटन	नार्थम्पटन पीटर्बर्ग वेलिंगबर्ग	यह नगर लेननदी के तीर में है। यहां अनेक चमडे के कारखाने हैं। इस के १२ मील पश्चिम मे नेस्बी नामक स्थान है जहां १६४५ ई॰ में क्राम्बेलने चार्ल्स प्रथम को जीता। पीटर्बर्ग नगर लेन नदी के तीर में है। इस के पास फथारिङ्गे॰ नामक एक किला है जहां क्वीनमेरी कैद हुई थी और १५८७ ई॰ में उसका सिर काटा गया।
बेटफोर्ड	बेडफोर्ड, लिटन, बाजार्ड, डन्स्टेबल, लूटन	

हंटिंगडन	हंटिंगडन सेन्ट आइविस, सेन्टनिओटस, स्टील्टन	यह नगर ओस नदी के तीर मेंहै। यहा १५९९ में काम्वेल का जन्म हुआ ।
कैम्बिज ×२ इन प्रदेशों में खेती अच्छी होती है ।	कैम्ब्रिज, इलाई, वीसविच, न्यूमार्केट	यह नगर काम नदी के तीरमें है यहां एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय है जिसमें विशेष करके गणित की अच्छी तरह चर्चा होती है।
नार्फाक	नार्विज, यआरमौथ लीनरेजिस थेटफोर्ड	यह नगर यार नदी के तीर में है और बहुत प्राचीन है। यहां हेनरीपहले के समय से पशम का कारखाना चला आता है।
सफ़फोक	इपसविच लोएस्टफ़ टिलबरी सडबरी, सेन्ट एडमसडस	टिलबरी टेमी नदी के तीरमें है यहा १५८८ ई. में एलिजे बेथ की सेना ने स्पेनियों से युद्ध किया ।
ऐसेक्स ×३ इन प्रदेशों में अनेक कारखाने हैं और अच्छी तरह खेती होती है	कैम्सफोर्ड, कोलचेस्टर हार्विच, माल्डन, वार्किङ्ग.	

मिड्लसेक्स	लंडन	यह नगर ब्रिटिश सम्राज्य की राजधानि है। इसकी लम्बाई १० मील और चौड़ाई ७ मील है। यह समुद्रतीर से २८ कोस दूर पर टेम्स नदी के उभयतीर मे अवस्थित है। अब यह नगर पश्चिम मे वेस्टमिनिस्टर उत्तर मे मेरिलबोनके वर्गे ह्निस व री, टौर हमलेट और दक्षिण में सौथवर्क और लेम्बेथ प्रभृति पल्ली को अपने अन्तर्गत करके बड़ा विस्तृत हुआ है। पृथिवी के समुदाय नगरों मे यह वाणिज्य का श्रेष्ठ स्थान है यहां के अधिवासियों का धन और उद्यम और सब नगरों के अधिवासियों से बढ़ कर है।
		यहां का एक२ महल्ला एक नगर के समान है।
	ब्रेन्टफोर्ड, स्टेन्स, आक्सब्रिज	यहांका गृह तीनलक्षमा होता है। उनमें से लन्डनटवर, राय्यल ऐक्स चेन्ज इंग्लंड का बेन्कघर, सेन्ट पाल्स का गिरजा, यूनिवर्सिटी, ब्रिटिश अजायबघर, पार्लिमेण्टगृह, वैस्टमिनिस्टर आदी ये गृह बहुत प्रसिद्ध हैं।
हार्टफोर्ड	हार्टफोर्ड, सेन्ट आल्बन्स, वेयर	टेम्सनदी के तलवर्त्म पुल भी बहुत आश्चर्य है। ऊपर से जहाज और नौका जाती है और नदी के नीचे ऐसे कौशल से पुल बना है कि उस से मनुष्य गाड़ी घोड़ा और रेल चलती है।
बकिंगहम	बकिंगहम, ओलनी, आइलजबरी	लंडन के समीप बहुत अच्छे२ जानेके योग्य स्थान हैं। जैसा कि इसके दक्षिण-पूर्व में सीडनहम जहां कि क्रिस्टलपेलेस नामक बहुत अच्छा महल है।

	ईटन, ग्रेटमालो	ईटन नगर में १४४० ई. में हेनरी ६ठे ने एक पाठशाला बनाई थी कि जो आजतक विद्यमान है ।
आक्सफोर्ड	आक्सफोर्ड	यह नगर एक विश्वविद्यालय के लिये प्रसिद्ध है जो विश्वविद्यालय ऐल्फ्रेड ग्रेट के समय से बना हुआ है । पृथिवी में यह विश्वविद्यालय सब से सम्पन्न है । इसके अन्तर्गत १९ कालेज हैं । और एक बड़ा भारी पुस्तकालय है ।
	बीटली, उडस्टक, बानबरी, हेनरी	
बार्कशायर	रीडिंग, न्यूबरी, ऐबिंगडन, विन्डसोर, वेरेटज़ ।	विन्डसोर नगर में एक किला, महल, और उद्यान हैं। विजयी विलियम के समय से इंग्लैण्ड के राजालोग वहां पर वास करते रहे ।
प्रदेश	नगर	विशेषवार्ता
सरी	गिल्डफोर्ड, एप्सम, क्राइडन, डेप्टफोर्ड, रिचमंड, किंगस्टन, चार्टसी,	
केन्ट	मिडस्टोन, ग्रेनविच,	यहां पर लम्बहद का बागिज्या है ।

रोचेस्टर	यहां एक अच्छा गिरजा है और एक दुर्ग का खराड मिलता है ।
ग्रीनविच	यहां एक राजकीय पर्य्यवेक्षणिका है जिस को १६७५ ई॰ में चार्लिस दूसरे ने बनवाया। और यहां से प्रायः देशान्तरों की गणना होती है। और इसमें एक हास्पिटल है जहां नाविक लोगों की चिकित्सा होती है ।
उलविच	
बेखम	
ग्रेवसेन्ड	
सिपरनेस	
मार्गेट	
रैम्सगेट	
सैन्डविच	
डील	
कैन्टरबरी	यहां इंग्लैंड का प्रधान आर्क बिशप अर्थात् धर्म प्रचारक वास करता है। यहां ११७० में टामस-ए-बेकेट मारा गया। डोवर से फ्रान्स में आने का रास्ता है। डोवर से केलाय २१ मील दूर पर है ।
डोवर	
फाकस्टोन	
ससेक्स — लूइज़	
हेस्टिंग्स	इस के समीप एक युद्ध १०६६ ई॰ में हुआ था जिसमें विजयी विलियम ने सैक्सनों के राजा हैरल्ड को जीत कर इंग्लिश सिंहासन अधिकार किया

	ब्राईटन	
	पोर्ईसम, चिचेस्टर	
	र, हर्सहम	
हेम्पिसशायर	विन्चेस्टर,	यह एक इंग्लण्ड का प्राचीन नगर है सेक्सनों के समय यह इंग्लण्ड की राजधानी था और ऐल्फ्रेड का। यह समाधिस्थान है। पोर्ईसमौथ इंग्लण्ड के युद्धीय जहाजों का प्रधान स्थान है।
	सौथम्पटन,	
	पोर्टस् मौथ,	
	गस्पोर्ट	
सेलिसबरी	सेलिसबरी	सेलिसबुरी आवन नदी के तीर पर है।
	डेवीजेस्,	
	वैस्टबरी	यहां एक अच्छा गिर्जा घर है जिस्की चोटी बहुत लम्बी है।
	ट्रोब्रिज	
	स्कालेट	
डोर्सेटशायर	पुली, वेअरहम	
	वेमौथ ब्रिडपोर्ट	
	ब्लैन्डफोर्ड	
	सेफ्टिसबरी	
डेवनशायर	एक्सिटर	यहां बहुत वाणिज्य है और एक बड़ा अच्छा गिरजा घर है। और सैक्सनों के समय में यहां बड़ी रौनक थी॥
	टाईवर्टन	
	टर्की, प्लाईमौथ,	यह इंग्लण्ड के युद्धीय जहाजों का द्वितीय स्थान है।
	डिवनपोर्ट.	
कार्नवाल	लन्सेस्टन	
*४ इन प्रदेशों में प्रधान रूप से खेती होती है।	बड्मिंग	
	ट्रूरो,	

समुद्रतीरस्थित नगरों में वाणिज्य और मत्स्यका व्यापार है। विल्टशायर और डेवन में दो एक कारखाने भी हैं। डेवन और कार्नवाल में ताम्बा और टीन की खान हैं।	फलमौथ केम्बर्न	
ऐडवर्ड तृतीय के समय तक इंग्लैण्ड के राजा के बड़े लड़के को ड्यूक आफ कारनवाल की पदवी दी जाती थी।	सेन्ट आईविस,	
समरसेटशायर	बाथ, फ्रोम, ब्रिज वाटर टौन्टन	बाथ में स्वास्थ्यकर उष्णप्रस्रवण हैं। यहां ड्यूक-आफ-मनमौथ अपने चचा जेम्स द्वितीय से विद्रोह उठाकर १६८५ में पराजित हुआ। इस के समीप ऐथल्नी नामक स्थान है जहां पर अलफ्रेड ग्रेट ८७८ में छिप रहे थे।
ग्लासेस्टरशायर	ग्लासेस्टर ब्रिस्टल	ग्लासेस्टर में एक अच्छा गिरजाघर है। यहां हूपर नामक एक धर्मप्रचारक मेरी के समय १५५५ ई० में जलाया गया। इस से १५ मील दक्षिण में बर्कली नामक स्थान है जहां १३२७ में ऐडवर्ड दूसरा मारा गया। ब्रिस्टल आवन नदी के तीर में एक प्रधान बन्दर है इस के पास
	क्लिफटन चेल्टिंगहम	क्लिफटन नाम एक रमणीय ग्राम है सिबास्टियन कैबोट जिसने न्यू-

	स्टोर	फोंडलैण्ड को आविष्कार किया और सोथी नामक कवि विस्टल के अधिवासी थे। यहां भारतवर्षीय ब्राह्म धर्म के प्रथम प्रचारक राजा राममोहन राय की समाधि है।
कर्थ		
वोर्सस्टरशायर	वोर्सेस्टर	वोर्सेस्टर में चीनदेश के अच्छे बरतन बिकते हैं। और १६५१ ई. में चार्लेस द्वितीय को क्राम्वेल ने पराजित किया।
	किडरमिनिस्टर	किडरमिनिस्टर में बहुत अच्छे गलीचे होते हैं।
	स्टोरब्रिज	
	डडली	
वार्विकशायर	वार्विक,	
	कवेन्ट्री	
	बरमिंगहम	यहां सब प्रकार के धातुओं के अस्त्र बहुत अच्छे रूप से बनते हैं।
	रगबी	
	स्ट्रेटफोर्ड	आवन नदी के तीर पर है। यहां पर १५६४ महाकवि शेक्सपीयर का जन्म हुआ।
श्रापशायर	श्रूसबरी	
	वेनलक	
	ब्रिजनर्थ	
	लडलो	
हीअरफोर्ड	हीअरफोर्ड,	
शायर	लेमिनिस्टर	
मन्मौथ	मन्मौथ	
४ ५ से ७ प्रदेश सावरन् नदी के किनारे पर हैं। वार्विक शायर के पश्चिम में लो हें के प्रधान वाणिज्यस्थान हैं		
	चेपस्टो	
	न्यूपोर्ट	

ग्लासेस्टर और	एबरगेवीनी,	
ये आक्सफोर्ड प्रदेश पशुचारण स्थान के लिये प्रसिद्ध हैं। और न प्रदेशों में खेती और कारखाने हैं।		
चेशायर	चेस्टर	यह इंग्लेण्ड का बहुत प्राचीन नगर है। इसके चारों ओर चौड़ी दीवार है।
	कांग्लिटन,	
	मेक्लिसफील्ड	
	स्टाकफोर्ट	
	नार्थविच	
लैंकेशायर	लैंकेस्टर	
	प्रेस्टन	
	लिवरपूल	यह नगर लंडन के नीचे है और इंग्लेण्ड साम्राज्य के समुदाय बंदरों से बड़ा है।
	मेन्चेस्टर	मेन्चेस्टर के अधिवासियों की संख्या लंडन को छोड़ इंग्लेण्ड के सब नगरों से बड़ी है। यहां कार्पास वस्तुओं का बड़ा कारखाना है।
	[illegible]	
	आनमेडलक,	
	आस्टन लीन	
	अंडरलीन	
	स्टेलीब्रिज	
	ओल्डहम	
	रोकडेलवारी,	
	बोल्टन,	

	ब्लैकबर्न,	
	बोल्टी,	
	वीगन,	
	वारिंगटन,	
	प्रेसकट	
वैस्टमो	अपलबी,	
रलैगड	केन्डल,	
कंम्बरलैगड	कैरलआईल,	में एक प्राचीन दुर्ग और गिरजा घर है।
वैस्टमोरलैगडमे सम्पूर्णरूपसे खेती होती है और देशोमें पत्थरीकोलेकी खानि बहुत हैं।	ह्वाईटहैवन	
	वारकिंगटन,	
	केसविक	
लैंकशायर के दक्षिण पूर्व में बहुत कारखाने वाले नगर हैं।		

वेल्स प्रस्तरमय प्रदेश है इसलिये यहां खेती अच्छी नही होती, यहां पर बहुत पत्थरी कोले और लोहे की खान हैं। वेल्स बहुत काल तक स्वाधीन रहा १२८२ मे एडवर्ड प्रथमने ने इस को जीत कर अपने देशके साथ मिला लिया, उसी दिन से इंग्लैगड के राजा के प्रथम लड़के की पदवी प्रिन्स-आफ-वेल्स होती है। इस मे १२ प्रदेश हैं यथा

फ्लीन्टशायर फ्लीन्ट,

होलीवेल,

	मोल्ड, सेन्ट,	मोल्ड के समीप पत्थरी कोले, लोह और शीशे की खान है।
डेन्बिग	आसबडेन्बिग,	होली वेल में शीशा ताम्बा और जिन्क की खान है।
	रूथिंग,	
	रेक्सहम,	रेक्सहम, वेलसपुल मण्टगुमरी और न्यूटन इन नगरों में फलालैन का वाणिज्य है।
कारनरवन	कारनरवन	कारनरवान के किले में ऐडवर्ड दूसरे का जन्म हुआ
	बंगर	
ऐंगलसी	काल्हेबूमारीज़,	
	होलीहेड,	
मेरियनेथ	डलजली	
	वाला,	
मन्टगुमरी	मान्टगुमरी,	
	वेल्सपुल,	
	न्यूटन	
कार्डिगैन	ऐबारिस्ट	
	हीथ	
	लैम्पीटर	
पेम्ब्राक	पेम्ब्राक	यहां बड़े २ जहाजोंका कारखाना है।
	मिल्डफोर्ड	
	हेवरफोर्डवेस्ट,	
	सेन्टडेवीस	
केअरमर्थन	केअरमर्थन,	
	लेनली,	
ग्लेमर्गन	कार्डिफ,	
	लैण्डफ, स्वान्सी,	

	मरमार टाईविल	गरघार ड्राई बिलग्रह है एक प्रायद्वीप और देश में सब गा- एं से बड़ा है।
डेनमार्क	डेन्मार्क	
पेड्डनर	न्यूर्डेडनर	
	ग्रिद्दिन	
इंगलैण्ड के	औपनिवेशिक	और विदेशीय अधिकार
देश	यूरोप में	
	स्थिति स्थान	विशेषोल्लेख
हेलीगोलैण्ड	ऐल्ब नदी के मुख में	यह एक छोटा सा द्वीप है
जिब्राल्टर	स्पेन के दक्षिण में।	यह एक दृढ़ किला है

देश	स्थितिस्थान	विशेषोल्लेख
माल्टा	भूमध्यसागर के बीच और सिसिली के दक्षिण में	यह एक छोटा सा द्वीप है।
आयोनियनद्वीपसमूह	भूमध्यसागर में	
	एशिया में	
भारतवर्ष	र	
लंका द्वीप	भारतवर्ष के द-क्षिण में	
एडन----	अरब के दक्षिण	यह एक दृढ़ दुर्ग है
पेगू----	ब्रह्मा के दक्षिण	
सिंगापुर	मलाया के दक्षिण पर एक द्विप है	
हांगकांग--	चीन के दक्षिण	यह एक द्वीप है
	आस्ट्रेलिया में	
आस्ट्रेलिया टे समीनिया न्यू- जीलैण्ड	आस्ट्रेलिया के इस के अन्तर्गत दक्षिण। पूर्व द्वीप हैं। सब मिलके ग्रेटब्रिटन के तुल्य हैं।	

प्रदेश	स्थितिस्थान	विशेषवार्त्ता,
	आफ्रीका में	
सिर लिओन गीनी	पूर्व उपकूल में ॥	
सेन्ट हैलीना	केप कलोनी के दो हजार मील उत्तर-पश्चिम में	यह एक छोटा सा द्वीप है
केपकलोनी और नेटल	आफ्रीका की दक्षिण-सीमा में।	
मारीस	मेडागास्कर के पूर्व मे।	यह छोटा सा द्वीप है।
केप कोस्ट, गम्बिया, आसेंसन द्वीप और अन्य छोटे २ स्थान भी हैं ॥		
	आमेरिका	
ब्रिटिश नार्थ एमेरिका	-	इसके अंतर्गत डो॰ कनेडा हडसन बे प्रदेश न्यूब्रन्सविक, नोवा स्कोशिया, न्यूफौंडलैण्ड इत्यादि हैं ॥
ब्रिटिश वेस्ट इण्डिया द्वीप समूह	उत्तर और दक्षिण एमेरिका के बीच	
ब्रिटिश गाइना	दक्षिण एमेरिका के उत्तर मे	
हंडोरास	मध्य एमेरिका में।	
फाकलैण्ड द्वीप समूह	पैटागोनिया के पूर्व में ॥	

इन के सिवाय केप ब्रिटन, प्रिन्स एडवर्ड द्वीप इत्यादि स्थान भी अंग्रेजों के अधिकार मे हैं।

इंगलैण्ड के समुदाय विदेशीय अधिकार मिल के समुदाय यूरोप के १९ गुणा अधिक है और ग्रेट ब्रिटन से ४९ गुणा अधिक है ।

स्काट्लैण्ड

इस की उत्तर-सीमा अटलान्टिक महासमुद्र, पूर्व सीमा जर्मन महासमुद्र दक्षिण सीमा आइरिश समुद्र और इंगलैण्ड और पश्चिम सीमा अटलान्टिक महा समुद्र है ।

स्काटलैण्ड में समतल क्षेत्र बहुत विरल है । यहां पर्वत और उसके अन्तर्देश आकार की स्वाभाविक भिन्नता के कारण स्काट्लैण्ड दो भागों में विभक्त है । एक उन्नत दूसरा न्यूनभाग । उत्तर-पश्चिम, और मध्यभाग उन्नत है । वहां की भूमि बहुत बन्धुर और पर्वतमय है । अवशिष्ट अंश निम्न है जिस में कई एक समतल क्षेत्र भी देखने में आते हैं । स्काट्लैण्ड में झीलें बहुत हैं । कई एक झीलें देखने में बहुत सुरम्य हैं ।

स्काट्लैण्ड की जल वायु इंगलैण्ड की नाईं है परन्तु कुछ शीतल है । इसके पश्चिम और दक्षिण अंश अट्-लान्टिक समुद्र के समीप होने से सर्वदा उनमें बहुत वृष्टि होती रहती है । इस कारण वे अंश कोमल और आर्द्र है । इस के पूर्व अंश साधारणतः शुष्क हैं और वहां वसन्त ऋतु में सर्दी तथा पूर्व वायु बहती है । मध्यदेश पर्वतमय और शीतल है ।

स्काटलेण्ड अतीव बन्धुर और अनुर्वर है इसलिये इस की एक चतुर्थांश भूमि खेती के योग्य है परन्तु ई अंश में केवल खेती होती है । स्काटलेण्ड के किसान लोग कृषिकार्य्य में बहुत निपुण हैं परन्तु मही के दूषित होने से ये लोग कुछ कर नहीं सकते । इंग्लेण्ड में जितने प्रकार के शस्य होते हैं स्काटलेण्ड में भी उतने ही होते हैं । और इंग्लेण्ड में जितने प्रकार के पशु हैं स्काटलेण्ड में भी उतने ही है । इस लिये इन का वर्णन पृथक् रूप से नहीं किया जाता स्काटलेण्ड के खानिज द्रव्यों में से पत्थरी कोला, लोहा, शीशा, पत्थर और स्लेट प्रधान हैं ।

स्काटलेण्ड में कारपास, और अन्य प्रकार के सूत्रों के वस्त्र और पशमी कपड़ों का कारखाना बहुत है। यहां का मत्स्य व्यवसाय भी विस्तृत है । स्काटलेण्ड का क्षेत्रफल ८०५२ वर्गकोश है और मनुष्यसंख्या ३१ लाख । स्काटलेण्ड के अधिवासियों को स्काच कहते हैं । इन का आहार व्यवहार और परिच्छद अंग्रेज़ों के बराबर ही है । ये लोग अतिशय परिश्रमी कष्टसहने वाले, साहसी मितव्ययी और सावधान हैं । ये लोग विविध शिल्पकार्य्यों का अनुष्ठान करते हैं वाणिज्य में भी ये लोग अंग्रेज़ों से न्यून नहीं ।

एडिनबरा, ग्लासगो, एबर्डीन और सेन्ट आन्ड्रस इन चार नगरों में एक२ विश्वविद्यालय है ।

इन के सिवाय यहां और भी बहुत पाठशाला हैं। स्काट्लेण्ड पहिले स्वतन्त्र राज्य था १६०३ ई॰ में इंग्लेण्ड के अधीन हुआ और १७०७ ई॰ में इसकी पार्लिमेण्ट सभा इंग्लेण्ड की पार्लिमेण्ट सभा से मिलगई अब इसकी नदी पर्वतादियों का वर्णन किया जाता है।

प्रधान खाड़ी और झीलों का वर्णन

पूर्व में—फर्थ—आफ—फोर्थ फर्थ—आफ—टे, मोरे फर्थ, डर्नक—फर्थ, क्रामार्टी फर्थ और बूली फर्थ।

उत्तर में—पेण्टलेण्ड फर्थ आर्कनी द्वीप और ज़मीन के बीच।

पश्चिम में—लोच ब्रूम, लोच न्हो, लोच एरिव, लोच लिवन लोच फेल, लोच फाईन, फर्थ-आफ—क्लाईड, लोचला फ़ाण्ड, लोच रीमन्

इन के सिवाय बहुत मुहाने हैं जिन्में से साउण्ड आफ—आईलिं ड्रूरा, मूल और स्लीट ये प्रधान हैं।

दक्षिण में—लूसवे, वीकटन वेस्लोवे फर्थ।

इन्में से फर्थ—आफ—फोर्थ और फर्थ—आफ—क्लाईड के मध्यस्थित प्रदेशों मे बहुत खाने हैं।

मोरी फर्थ सब से बड़ा है। स्लोवे फर्थ बहुत गंभीर नहीं।

भाटा के समय इस के समुदाय अंश प्रायः बाहिर होजाते हैं। परन्तु ज्वार भी शीघ्र ही आजाता है इसलिये यहां नौका चलानेमें बहुत विपत्ति होती है।

प्रधान २ अन्तरीपों का वर्णन

पूर्व उपकूल में—सेन्ट-ऐबीस-हैड, फाईफनेस्स व
डन नैस्स, बूचाननेस्स, किनार्डिस हैड टार्बिटनैस्स।
उत्तर उपकूल में डन्कन्सबे हैड, डनेटहैड, केप रैथ प-
श्चिम उपकूल में बटआफ—लूइस, आर्डना—मरकै
न पाईन्ट, मुल-आफकेनटायर, पसिल पाइंट
दक्षिण में—मूल आफगैलो वे, बेरीहैड, सोरनैस्स

प्रधान २ द्वीपों का वर्णन

उत्तर में—शेटलैण्ड द्वीपसमूह इसके अन्तर्गत २५
द्वीप हैं जिन्में—मेनिलैण्ड, येल और आनेस्ट ये प्र
धान हैं आर्किनिया द्वीपसमूह। इस के अन्तर्गत
२९ द्वीपों में मनुष्यों की बस्ती है।

पश्चिम में—पेटलन्ड और बूट द्वीप। — — — फ-ल्का
ईडमे है। हेब्राईड्स द्वीप समूह जिस के अन्तर्गत आ
ईले जूरा स्टाफा, आयोना, मुलरम, स्काई, लूइस—
नार्थ आइस्ट बेनबेकूला, सौथ आइस्ट और बारा ये
द्वीप हैं। लूइस द्वीप स्काटलाण्ड के और द्वीपों से
बड़ा है इस का प्रधान नगर स्टार्नोवे। आयोना द्वीप
एक छोटा है, परन्तु प्राचीन समय में यहां धर्म और
विद्या की चर्चा बहुत थी। इस में आजतक भी बड़ी २
धर्मशालाओं का खण्ड और स्काटदेशीय राजा
की समाधि मन्दिर दीख पड़ते हैं।

स्टाफा द्वीप आयोना द्वीप के उत्तर में है इस में फिंग
ल्सकेव नामक एक गुफा है जो पृथिवी के बड़े स्वा-

भाविक आश्चर्यों में से है ।

प्रधान २ पर्वतों का वर्णन

पहले कह चुके हैं कि स्काट्लैण्ड की भूमि पर्वत मय है और पश्चिम की प्रायः समस्त भूमि ऊंची है और पूर्व की भूमि नीची है । स्काटलैण्ड की प्रधान २ पर्वतश्रेणी एक दूसरे से समानान्तर रूप से स्थित हैं और दक्षिण—पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर विस्तृत है स्काटलैण्ड के समुदाय पर्वतों को ३ श्रेणी में विभक्त करते हैं । प्रथमें लोकृथर और चेविपट पर्वत । दूसरा ग्रेम्पियन । तृतीय नार्थरन् हाईलैण्ड । दक्षिण में— लोथर और लेड पर्वत डेम्फ़पल को पीवल्स और लेनार्क से जुदा करता है । चेविपटपर्वत स्काट्लैण्ड और इंग्लैण्ड के बीच में है । लामार मूरिस पर्वत टीड नदी के उत्तर किनारे में हैं ।

मध्य में—ग्रेम्पियनपर्वतश्रेणी जिसका सबसे ऊंचा शिखर बेन्नेविस है उत्तर में—नार्थरन् हाईलैण्ड जिसका सबसे ऊंचा शिखर बेनवाईविसहै। बेननेविस स्काटलैण्ड के सब पर्वतों से ऊंचा है ।

प्रधान २ नदियों का वर्णन

स्काटलैण्ड की सब नदियें प्रायः पूर्व दिशा में बहती हैं केवल क्लाईट पश्चिम में और येनन और नीथ दक्षिण में बहती हैं । फोर्थ, अानन और नीथ ये नदियें स्लोवे फार्थ में गिरती हैं ।

डी ओर इस्की शाखा केन ग्राइरिश समुद्र में गिरती हैं। ड्डीडनदी दक्षिण में टेविपट, पूटिक ओर उत्तर में लीडर ओर येडर नदियों से मिल के पूर्व की ओर वहकार जर्मनमहा समुद्र में गिरती है। क्लाईड यह नदी डगल्ला ओर आवन नदी से मिलके उत्तर–पश्चिम दिशा में वह के फर्थ–आफ क्लाईड में गिरती है। यहां इरवाईन, आइर ओर डून ये तीन नदियें भी गिरती हैं।

ऊपर लिखी ऊई नदियें लोथर ओर चेविपट पर्वत श्रेणी में से उत्पन्न ऊई हैं। फर्थ, ओर इसकी शाखें टेईथ ओर आलान नदियें पूर्वदिशा में वह के फर्थ–आफ फोर्थ में गिरती हैं यहां डाईन, एस्क, डेवन ओर लेवन ये नदियें भी गिरती हैं। टे नदी इस्की दाहिनी ओर से आर्न ओर अलमराड ओर बाईं ओर से ड्रूमेल, गैरी ओर इस्ला नदियों से मिल के दक्षिण–पूर्व में वह कर फर्थ आफ टे में गिरती है। सौथ–एस्क नार्थ–एस्क, डी ओर डान ये नदियें पूर्व की ओर वह के जर्मन महासागर में गिरती हैं।

डेवरन्, इस्पाई, फिराड हारन् नेईरन् ओर नेस् ये नदियें उत्तर–पूर्व में वहके मरे फर्थ में गिरती हैं। पूर्वोक्त नदियें ग्रेम्पियन् पर्वत श्रेणी में से उत्पन्न होती हैं॥

प्रधान २ झीलों का वर्णन

स्काटलेराड में वऊत झीलें हैं उनमें से प्रधान ये

हैं,—ग्रेम्पियन पर्वत के दक्षिण में—लाच लोमण्ड स्टर्लिङ्ग और डम्बरटन के बीच में है।

यहां से लिवननदी निकल के फर्थ—आफ—क्लाईड में गिरती है। इस झील का क्षेत्रफल ४५ वर्गमील है और ग्रेट ब्रिटन में यह झील सब से बड़ी है लोच-केट्र, आर्ईन झील पार्थशायर में है। लोच इरन्‌लोचटे, लोच रैनक ये झीलें भी पार्थशायर में हैं।

लोच ईरक यह झील इन्वर्नेस्स शायर में है। लोच लेगन लोचलोची, ऐक और नैस्स इन्वर्नेस्स शायर में हैं। लोच-आ झील आर्गाइलशायर में है।

हाईलैण्ड पर्वत के उत्तर में लोच सीन्, आर्कबेग, लोचशील, लोच मरी और ऐसिन्ट ये झीलें हैं।

समुदाय स्काट्लैण्ड ३३ प्रदेशों में विभक्त है। जिन्का विशेष वर्णन नीचे लिखा जाता है,

प्रदेश	नगर	विशेष—वार्त्ता
वार्विक	ग्रीनलडनस्ओर	
	कोलडुस्ट्रीम	
राक्सबरा	जेडबरा	
	हाविक	
	केल्सा	
	मेलरोज	
सेलकार्क	सेलकार्क	
	गेलासैल	
पीवल्स	पीवल्स	

इन्वरलियन
हैडिंगटनवा हैडिंगटन
ईस्टलोथियान् डन्बार
नार्थवार्विक
प्रेस्टोनपान
पेडनवराया पेडन्बरा
मिडललोथियान् लीथ
पोर्टोबेलो
मसलबरा
डाकिन्थ
लिन्लिथगोवा लिन्लिथगो
वैस्टलोथियान् बोरोस्टोनेनेस
बाननेट
स्टयरलिङ्ग स्टयरलिंग
वैन्नकवर्न
फलकार्क
केरन्
ग्रेन्जमोथे
क्लैकमानन क्लेकमानन
आलोआ
डलार
किनरस्स किनरस्स
फाईप क्रूपर
डन्फर्मलाईन

प्रदेश	नगर	विशेषतायें
	कार्ककाल्डी	
	डाईसार्ट	
	सेन्ट ऐन्ड्रूस	
पार्थशायर	पार्थ	
	डंकेल्ड	
	ब्लेअरगौरी	
	क्रिफ	
	अकराईर	
	डम्ब्लेन	
	कैलेरडर	
फारफर	फारफर	
	डन्डी	
	आरब्रोथ	
	मराट्रोज़	
	ब्रेचिन	
किन्कार्डाईन	स्टोनहैवन	
	लारेन्सकाक	
	बार्वी	
ऐबरडीन	ऐबरडीन	
	पिटरहैड	
	फ्रैसरबरा	
	हन्टली	
बैन्फ	बैन्फ	

	पोर्टशाय
	कूलन
	किथ
एल्जीन तथा	एलजीन
मरे	फारेस्त
	फकाबास
नैरेराड	नैरेराड
	कौडर
इन्वरनेस्स	इन्वरनेस्स
	फोर्टविलियम्
	फोर्ट अगस्टस
	फोर्ट जार्ज
	फोर्ट्री
रास्स और	डिङ्ग्वाल
क्रामर्टी	पोर्ट रोज
	टाईन
	क्रामर्टी
	स्टोर्नोवे
सौदर्लैण्ड	डार्नक
	गलस्पी
कैथनेस्स	वीक
	थर्सो
आर्क्नी और	कार्कवाल
शटलैण्ड	स्टार्मनेस्स

	लार्गिक
आर्गईल	इन्वेरेरी
	ओवान्
	कैम्बलटौन
	डनू
बूट	ब्राथसे
	ब्राडिक
	मिल्पोर्ट
डम्बर्टन	डम्बरटन
	हेलेन्सबरा
	कार्किनटिलक
लैनार्क	लैनार्क
	हेमिल्टन
	राथर्ग्लेन
	ग्लासेगा
	आइड्राई
रेनफ्रू	रेनफ्रू
	पाइस्ली
	जानस्टान
	पोर्टग्लासेगा
	ग्रीनक
आयर	आयर
	लार्गस्
	आईरवान

	टून
	आइरवाईन
	किल्मर्नक
	स्टूअर्टन
	गर्वन
	मेबोल
वीक्टन	वीक्टन
	स्ट्रेनेरर
	पोर्टमेट्रिक
कार्ककाउ	कार्ककाउब्राईड
ब्राईट	केसलडोगलस
	न्यूगेलवे
डम्फ्रेस्स	डम्फ्रेस्स
	ऐनन
	मोफथ
	लेन्गहोलन,
	सेन्कोहर

आयर्लेएड

इस के उत्तर पश्चिम और दक्षिण में अटलान्टिक महासागर और पूर्व में आइरिश समुद्र और सेन्टजार्ज का मुहाना है ।

आयर्लेएड के पूर्व उपकूल अभग्नि-मान, उत्तर और पश्चिम उपकूल आरा की नाईं भङ्गाकार और प्रस्तर मय हैं । अभ्यन्तर भाग पहाड़ और समभूमि कि

क्रमसे स्थिति होने से उन्नतानत है ।

आयर्लैण्ड नातिशीतोष्ण देश है । इस में इंग्लैण्ड न गर की नाईं शीत वा उत्ताप नहीं, किन्तु इस की वायु इंग्लैण्ड की वायु से सजल है । आयर्लैण्ड की भूमि स्वभावसे उर्वरा है । इंग्लैण्ड में जितने प्रकार के शस्य होते हैं इस में भी वे बहुत परिमाण से उत्पन्न होते हैं परन्तु यहां के कृषिकार्य्य की रीति अच्छी नहीं इंग्लैण्ड में जितने प्रकार के पशु हैं यहां भी वैसे ही हैं । इस द्वीप में किसी प्रकार का सांप नहीं ।

आयर्लैण्ड मे तामा, लोहा, शीशा, और थोड़े परिमाण से सोना और चांदी भी मिलते हैं । यहां पत्थरी कोलों की खानें बहुत नहीं । यहां मारबल पत्थर भी मिलते हैं और पर्वतों मे शंखमर्मर भी मिलता है । आयर्लैण्ड में एकमात्र वस्त्र का कारखाना है जिसका स्थान बेल्फास्ट नामक नगर है । उत्तर पूर्व और पश्चिम में स्थित नगरों में मस्लीन नामक वस्त्र और फीता प्रस्तुत होता है यहां मत्स्यव्यवसाय का बहुत विस्तार नहीं ।

आयर्लैण्ड के लोगों को आइरिश कहते हैं । ये लोग आहार व्यवहार और परिच्छद में अंग्रेजों के तुल्य हैं । ये लोग आनन्दचित्त और सद्वक्ता, कष्टसह, निर्भय और अभिलषित विषय में एकाग्र होते हैं । यहां के सामान्य लोग बहुत सुशिक्षित नहीं होते । शिल्प वा वाणिज्य विषय में इनका विशेष

प्राधान्य नहीं । आयर्लैण्ड के डब्लिन नगर में एक विश्वविद्यालय है और स्थान २ में और भी विद्यालय हैं। ११७२ ई॰ में हेनरी दूसरे के समय आयर्लैण्ड इंग्लैण्ड से मिलगया और १८०१ ई॰ में इसकी पार्लिमेण्ट ग्रेट ब्रिटन की पार्लिमेण्ट के साथ मिलगई । आयर्लैण्ड और इंग्लैण्ड इन दोनों देशों के कानून एक ही हैं । इस के शासन के लिये यहां पर क्वीन का एक प्रति निधि मात्र रहता है ।

प्रधान २ खलीओं और खाडियों का वर्णन

पूर्व उपकूल में—वेक्स फोर्ड हार्बर, डब्लिनवे, ड्रागहेडावे, डण्डगनवे कार्लिङ्ग फोईलफ, डन्डमवे, स्ट्रेंगफोईलफ और वेलफास्ट ये खाडियें हैं ॥

उत्तर उपकूल में लफफाइल और स्वीली ।

पश्चिम उपकूल में डनीगेल, स्लीगो, किलालावे, ब्लैकसाड्वे, ब्रेडहेवन, गेलवे, मौथ-आफ-सेनन, ट्रेली, डिंगल, केन्मेयर, बैंट्री वे ।

दक्षिण उपकूल में—किन्सेल, कार्क, योगल, डंगरवन्, वाटर फोर्ड हरबर ।

प्रधान २ अन्तरीयों का वर्णन

पूर्व उपकूल में—विक्लो हेड, होथहेड ।

उत्तर उपकूल में हेअर हेड, वेंगरहेड, मेलिन हेड, फ्राडीफोलेण्ड ।

पश्चिम मे रासर पाइण्ट, एरीजहेड, स्लाईनहेड, लूफहेड कोहेड और मीजनहेड ।

दक्षिण मे—केप क्लीयर, कारनसोर पाइएट ।

आयर्लेण्ड के अन्तरीपों में उत्तर और पश्चिमस्थित अन्तरीप ऊंचे हैं । बैंगरहैड के समीप जाइएट्स का जुए नामक एक प्राकृतिक उच्चस्तम्भ है जिसमें हजारों छोटे २ स्तम्भ मिले हुए हैं । इसकी ऊंचाई ४०० फ़ुट और लम्बाई ७०० फ़ुट और चौड़ाई ३५० फ़ुट

प्रधान २ द्वीपों का वर्णन

उत्तर में—रैथलिन् टोरी, नार्थ आईल्स आफ़ अरन्, ।

पश्चिम में—ऐक्अर, साउथ ऐरान आईल्स, क्लैर आइला, वैलन्सिया,

दक्षिण में—केप क्लीयर द्वीप, ग्रेट आइलैण्ड वा कोव द्वीप ।

प्रधान २ पर्वतों का वर्णन

आयर्लेण्ड का अधिक अंश निम्न है यहां पानी निकलने का रस्ता अच्छा नहीं इसलिये यहां अब तक भी इसका ⅙ अंश जलमय है । यहां की पर्वत श्रेणी बड़ नहीं ।

उत्तर में—मोरन् पर्वत जिसकी सब से ऊंची चोटी स्लीव डोनार्ड है । पेरीट्रम का पर्वत, कालीडोनियर पर्वत, डेनीगेल का पर्वत जिस के अन्तर्गत स्लीव-लैग, एरीगेल और स्लीवलीग हैं ।

पश्चिम में—नेफिन् क्रोक, पैट्रिक कोनीमारा ।

मध्यस्थित समतल भूमि के दक्षिण मे—ब्लीक्लो पर्वत, टीपेरैरी पर्वत जिस मे स्लीव ब्लूम, आर, किप,

गाल्टी और नाक मिलेडाम पर्वत हैं ।

आयर्लैण्ड के पर्वतों की सर्वोच्च चोटी कारण्टुआल जो केरी पर्वतों में है ।

प्रधान २ नदियों का वर्णन

आयर्लैण्ड की कई एक नदियों का उत्पत्तिस्थान ऊंचा है और उनमें से बहुत नदियों में नौ चलती हैं ।

पश्चिम में—शैननदी और इसकी शाखें ईनी, ब्रुस्ना, मेग्, फारगस, और शाक जो दक्षिण—पश्चिम दिशा में बहके अटलान्टिक महासमुद्र में गिरती है ।
दक्षिण में बेण्डन, ली, और ब्लैकवाटर दक्षिण—पूर्व में बहके अटलाण्टिक महासमुद्र में गिरती हैं ।
स्यूर और बैरो दक्षिण में बहके वाटरफोर्ड हार्बर में गिरती हैं ।

पूर्व में—स्लेनी दक्षिण पूर्व में बहके वेक्सफोर्ड में गिरती है ।

लीफी और बयेनी उत्तर-पूर्व में बहके आइरिश समुद्र में गिरती हैं ।

उत्तर में लेगन उत्तर—पूर्व में बहके बेल्फास्टलाफ में गिरती हैं । बेन और फाइल उत्तर में बहके अटलाण्टिक महासागर में गिरती हैं ।

आरन् उत्तर पश्चिम में बहके डनीगाल बे में गिरती है

प्रधान २ झीलों का वर्णन

आयर्लैण्ड में झीलें बहुत हैं । प्रायः इसका १/५० वां अंश झीलों से भरा है ।

लाफनियाग, यह झील आयर्लैण्ड की सब झीलोंसे बड़ी है लाफहेलन, वेफिन, री, और डार्ग स्रानन नदी के तीर मे हैं लाफ आरन्, अटार गोना, आन्नू नदी के पास हैं । सीलन और डिवारागा ईनी नदी से मिली ऊई है। एनेल और आरल बुसाना नदी से मिली ऊई हैं । लफ कारड जिस्का जल किलाला की खाड़ी में गिरता है ।

आयर्लैण्ड की सब झीलों से किलर्नी की झीलें बऊत सुन्दर हैं और ये केरी पर्वतों में हैं ।

आयर्लैण्ड पहिले प्रधान चार प्रदेशों में विभक्त होकर ३२ विभागों मे विभक्त है ।

उत्तर में—अल्स्टर जिस में ९ विभाग हैं । मध्य और दक्षिण—पूर्व में लिनिस्टरप्रदेश जिस के १२ विभाग हैं ।

दक्षिण—पश्चिम में मानस्टर जिस में ६ प्रदेश हैं और पश्चिम में कैनट जिस में ५ प्रदेश हैं ।

प्रदेश	नगर	विशेषवार्त्ता
डाऊन	डाऊनपेट्रि	
	न्यूरी	
	न्यूटानर्डस	
	डनाघाडी	
आमीरम्	कैरिक	
	फार्गसे	
	बेलफास्ट	

	लिस्बर्न
	बैलीमैन
लंडनडेरी	लंडनडेरी
	कोलरेन
डनीगैल	लीफोर्ड
	बेलीशैनन
	डनीगैल
	लेटरकिनी
टाईरन्	उमाघ
	स्ट्रैबेन
	डंगैनन
आर्माग	आर्माग
	लर्गान
मनाहान	मनाहाम
	क्लोन्स
कैवन्	कैवन्
	बाल्टर्बैट
फार्मैनाघ	एनीस्किलन
लौथ	ड्रघेडा
	डण्डक
	आर्डी
	कर्लिङ्‌फोर्ड
मीथ	ट्रीम, नैवन
	केल्स

डब्लिन	डब्लिन
	किङ्स्टाउन
	बाल्बिगेल
बीक्लो	बीक्लो
	आर्क्लो
किल्डेयर	लेथी
	नेस
	किल्डेयर
वेक्सफोर्ड	वेक्सफोर्ड
	येनीस्कर्थी
	न्यूरस्स
कार्लो	कार्लो
	टूलो
किल्किनी	किल्किनी
	केलन
	टोमस्टोन
कीन्सकौराटी	पर्टार्लिङ्टन
	मेरीबरा
	मौण्टमेलिक
किङ्सकौ राटी	टोलामोर
	पर्सन्सटोन
	फिलिप्सटोन
वेस्टमीथ	मुलिङ्गर
	ऐथ्लोन

	कैसलपोलार्ड,	
लङ्-फोर्ड	लङ्-फोर्ड	
	ग्रेनार्ड	
टीपारैरी	क्लान्मेल	
	कैरीकन्	
	सियोर	
	टिपारैरी	

प्रदेश	नगर	विशेषवार्त्ता
	कैसल	
	यारल्स	
वाटरफोर्ड	वाटरफोर्ड	
	डंगावान्	
	लिस्मोर	
	टैलो	
कार्क	कार्क	
	क्वीन्सटौन	
	किन्सेल	
	बैंडन	
	यूघल	
	फारमय	
	मैलो	
कैरी	ट्रैली	
	डिङ्गल	
	किलर्नी	

लिमृरिक	लिमृरिक
	रैथकेल
क्लेयर	ईनिस्स
	किल्रस्स
	किलैलो
गैलवे	गैलवे
	लफरेस्स
	वेलीनस्सलो
	टूआम
मेयो	कैसलबार
	वेस्टपोर्ट
	वैलीना
स्लीगो	स्लीगो
लेट्रिम्	केरीकन
	मेमन
रास्सकामान	रास्सकामान
	वयेली

नार्वे और स्वीडन नार्वे और स्वीडन ये दे। देश अब एक राजा के अधीन हैं । और दोनों मिल के एक बड़ा विस्तृत प्रायद्वीप बनते हैं जिसे स्केन्डीनेविया कहते हैं ।

इन की उत्तर सीमा में उत्तरमहासागर, पश्चिम में अटलांटिक और जर्मन महासागर, दक्षिण में बाल्टिक समुद्रस्थित स्केगारक और कैटिगट और

पूर्व में बाल्टिक समुद्र बोथीनिया की खाडी और रूस ।

ये दो देश मिल के ग्रेट ब्रिटन से १½ गुना बडे हैं। इस प्रायद्वीप के ईशान कोण से इस के मध्यस्थल होकर नैर्ऋतकोण तक कई एक उन्नत और वन्धुर पर्वत हैं । नार्वे में झील, पर्वत, जलप्रपात, शिलोच्चय और हृतक विस्तीर्ण बड़े २ जंगल दीख पडते हैं । नार्वे में काफ्लेन, डफ्रेन वा डोवरफील्ड, और हर्डेन्जरफील्ड ये तीन प्रधान पर्वत हैं । नार्वे की नदियों में बडी कठिनता से नौ चलती हैं क्योंकि जब सूर्य के तापसे ग्रीष्म ऋतु में हिमसंहति गल जाती है तो उन का वेग प्रचण्ड होजाता है और शीतकाल में जमी रहती हैं ।

नार्वे की प्रधान नदी ग्लोमेन जो स्केगारक में गिरती है । नार्वे के उपकूल में बहुत सागर शाखें हैं जिन के समीप लाफ्फ़ेन प्रभृति छोटे २ द्वीपसमूह हैं नार्वे के पश्चिम उपकूल में मालस्ट्रोम नामक एक भयानक आवर्त्त है । नार्वे के उत्तर अंश उजाड पडे हैं इस के अन्य अंशों में बड़े २ जंगल पशुचारणभूमि और बहुमूल्य खानि हैं ।

यहां से शाहतीर और लोह और देशों में भेजे जाते हैं । और इस के उपकूल में मत्स्यों का भी बहुत व्यापार है । स्वीडन में भी नार्वे की नाईं हृष्य वस्तु हैं परन्तु इस में कोई पर्वत नहीं इस में बहुत वेगव-

ती नदियें वहती हैं कि जिन्में से गोटा, डाल और टर्निया प्रसिद्ध हैं। यहां झीलें बहुत हैं जिन्में से वेन र, वेटर और मेलर प्रसिद्ध हैं। इस देशका प्राय एक— चतुर्थांश ¼ जंगलों से भरा है। जिन्में अधिक जलाने की लकड़ियें हैं। इस के दक्षिण और मध्यप्रदेश में खेती अच्छी होती है स्वीडन का लोह बड़ा प्रसिद्ध है। इस में ताम्बे की खानियें भी हैं।

स्कागिडनीविया प्रायद्वीप उत्तरमहासागर के होने से बहुत ठण्डा है। यहां शीत ऋतु बहुत कालतक रहती है और कष्टप्रद है। यहां शरत् और बसन्त बहुत थोड़ी होती हैं। ग्रीष्म भी थोड़ी होती है परन्तु बहुत उष्ण है। यहां सेप्टेम्बर से एप्रिल महीने तक बरफ गिरती रहती है। ग्रीष्म केवल तीन मही ने होती हैं उन तीन महीनों मे दिवसमान १८ घण्टा होता है।

इस प्रायद्वीप में ग्राम्यजन्तुओं में से बकरा, भेड़, घोड़ा, गौ और सूअर प्रधान हैं। अरण्य जन्तुओं में से भेड़िया, तरक्ष, लेमिङ्ग नामक इन्दुर जातीय जन्तु, उल्वरिन् नाम हिंस्र जन्तु, हरिण, उल्कामुखी, बड़े २ रीछ और रैनडीयर प्रधान हैं।

नार्वे में जव ओट, सन् और पट प्रधान रूप से उत्पन्न होते हैं।

स्वीडन मे भी जव, सरसों और आलू होते हैं। नार्वे और स्वीडन के अधिवासी लोग लम्बे

साहसी, सरल, परिश्रमी और अतिथिसत्कारक हैं, परन्तु ये लोग बहुत मद्य पीते हैं और इसी से निन्दनीय कार्य्यों में प्रवृत्त होते हैं नार्वे के लोग सभ्य हैं और स्वीडन के लोग सम्पूर्ण असभ्य हैं ।

स्वीडन में दो विश्वविद्यालय हैं और बहुत छोटे २ विद्यालय हैं ।

नार्वे ९७ विभागों मे विभक्त है जिन सब को एम्ट कहते हैं । नार्वे का प्रधान नगर क्रिश्चियाना जो देश के अग्निकोण मे समुद्र तट पर अवस्थित है इस नगर में एक विश्वविद्यालय है यह एक प्रधान बन्दरों मे से गिना जाता है और यहां से शाहतीर की लकड़ी अन्य देशों में भेजी जाती है । बरजन, ड्रन्थिम, रोरास काङ्गसबर्ग, फ्रेड्रिकशाल्ड और हमरफेस्ट ये सभी नार्वे में प्रसिद्ध नगर हैं । इन्मे से बर्जन नगर मे शुष्क मत्स्य का व्यापार होता है । ड्रंथिम नगर प्राचीन राजधानी थी । रोरास नगर में ताम्बे की और कंग्सबर्ग नगर में चांदी की खान है । फ्रेडरिक शैल्डमे स्वीडन के अधिपति द्वादश चार्लस की १७ १८ ई. में मृत्यु हुई ।

नार्वे के शासन के लिये स्वीडन के राजा का एक प्रतिनिधि रहता है परन्तु यहां के कानून स्टार्टिङ्ग नामक नार्वे वाले की सभा से प्रस्तुत होते है यहां का धर्म्म प्रोटेस्टेण्ट है । स्टाकहोम स्वीडन की प्रधान राजधानी है, यह नगर बाल्टिक समुद्र और

मेलार झील के संगम पर है । यह एक प्रधान बन्दर है । शीत काल में जब यहां की नहरें ज म जाती हैं तब ये बहुत सुन्दर दीखाई देती हैं । अपसल, गटनवर्ग, कारसक्रोन, डेन्माटाना कौपिङ्ग, कालमार और फाहलन येभी स्वीडन में प्रसिद्ध नगर हैं इन मे से अपसल नगर स्टाकहोम से ४० मील दूर है और बहुत प्राचीन है और इसमे एक प्रसिद्ध विद्यविद्यालय है जहां प्रसिद्ध प्राकृतिकतत्त्वज्ञ लीनियससाहिब अध्यापक था । गेटनबर्ग नगर बडे २ शाहतीर की लकडी और लोहे का वाणिज्यस्थान है ।

कार्लसक्रोन नगर बालटिक समुद्रस्थित पांच छोटे २ द्वीपों में है और स्वीडन के युद्धीय जहाजों का स्थिति स्थान है । डेन्मारा नगर में बहुत लोहे की खान हैं । बाल्टिक समुद्रस्थित ओलेराड और गाथलेराड द्वीप स्वीडन के अधिकार में हैं । वेस्ट इराडीज में सेराट बर्थ लोमियो द्वीप स्वीडन के अधिकार मे है ।

लैपलेराड—यह देश स्वीडन के उत्तर पूर्व मे है और नाममात्र से स्वीडन और रूस के अधिकार मे है क्योंकि यह देश ऐसा गरीब है कि इस पर किसी का शासन करना आवश्यक नहीं । यहां के रहने वाले रेराडीयर के झुंडों को लेकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते है और

उन का दूध और मांस इन का आहार है और चमड़ा इनका वस्त्र है ।

यूरोपीय रूस

इस के उत्तर में उत्तर महासागर, पूर्व में यूराल पर्वत, यूराल नदी और कास्पियन् झील, दक्षिण में काकेशसपर्वत कालासमुद्र, टर्की और आस्ट्रिया और पश्चिम में आस्ट्रिया, प्रशिया, बाल्टिक समुद्र और स्वीडन हैं ।

रूस का साम्राज्य यूरोपका आधा, एशिया के ड़े से भी अधिक और उत्तर आमेरिका के कुछ अंश लेकर विस्तृत है ।

यूरोपीय रूस की भूमि प्रायः सर्वत्र ही समतल है केवल इसमें यूराल पर्वत, काकेशस पर्वत और लैपलैण्ड फिनलैण्ड और क्रिमिया में कई एक छोटे २ पहाड़ हैं । इन में से फिन्लैण्ड के पहाड़ों को वल्दई कहते हैं । इस देश के उत्तरभाग में जंगल और जलमय स्थान हैं, दक्षिण भाग में स्टेप नामक प्रसिद्ध मरुभूमि है । यह मरुभूमि नीपर नदी के तीर से काले और कास्पियन समुद्र तीर होकर एशिया खण्ड तक विस्तृत है । इस का आकार सर्वत्र समान है और एकरूप रोओं से आच्छन्न है इस में कोई उच्चलता भी नहीं होती । शीतकाल में यह स्थान बरफ़ से आच्छन्न होता है और समय २ में प्रचण्डवायु बहती है उस समय यहां कोई जीव रह

नहीं सकता, ग्रीष्मकाल में भी यहां गरमी का बहुत प्रादुर्भाव है।

पूर्वोक्त वल्डाई पर्वतों से ये नदियें निकली हैं-पेटकोरा और डवीना उत्तर दिशा में जाके उत्तर महासागर में गिरती हैं। नेवा डूना और नीमिन बाल्टिक सागर में गिरती हैं। निस्टर, बग, नीपर और डान नदियें दक्षिण में हैं। वाल्गा और इस की शाखा नदियें कास्पियन् झील के दक्षिण पूर्व में बाल्टिक समुद्र और उत्तरमहासागर के बीच बहुत झीलें हैं उन में से लडोगा, ओनीगा, सेईमा और पीपस प्रधान हैं। बाल्टिक समुद्र में पेलण्ड, डेगो और ओसेल ये द्वीप हैं और उत्तरमहासागर में नोवा जेम्ला, वैगास और स्पिट ज़र्गीन ये द्वीप हैं। रूस का जल-वायु भिन्न २ प्रदेश में भिन्न २ प्रकार का है। समान अक्षरेखा में स्थित यूरोप के और देशों से इस में शीत और ग्रीष्म का प्रादुर्भाव है। इस के उत्तर स्थित लापलेण्ड देश में छे महीने शीत और छे महीने ग्रीष्मऋतु रहती है। हमारा एक वर्ष उन के एक दिन के तुल्य है। मालूम होता है कि प्राचीन हिन्दूलोग इसको पितृलोक कहते थे। इस की थोड़ी निम्नभूमि में ग्रीष्मऋतु में भी बरफ जमी रहती है।

रूस के केवल एक षष्ठांश भूमि में खेती होती है उत्तरभाग में राई, जव और ओट ये प्रधान हैं, मध्य और दक्षिण भाग में बहुत परिमाण से गेहूं उत्पन्न

होती है । यहां तमाकू, पट्ट और मक्की होती है । फलों में से यहां बेर, चेरी, आलूबुखारा, अनार, और तरबूजा होते हैं ।

रूस के मध्यभाग में बहुत विस्तीर्ण जंगल है उस में बहुत बड़े २ शाहतीर की लकड़ियें मिलती हैं। इन के सिवाय यहां ऐसे भी वृक्ष हैं कि जिन्से तारपीन का तेल और तार निकलती है । यहां यूराल पर्वत से सोना, चांदी, तामा, शीशा, और प्लेटिनम धातें निकलती हैं । फिनलैण्ड प्रदेश में तामा और दस्ता मिलता है मध्यस्थल और दक्षिण भाग में लोहा बहुत उत्पन्न होता है ।

यहां गौ, महिष, छाग, मेष और अश्वप्रभृति नाना प्रकार के चतुष्पद जन्तु हैं । आजकल मेरीनो और तिब्बती बकरा यहां पोषित होते हैं । लापलैण्ड में रेण्डीयर बहुत उत्पन्न होते हैं । वन में रीछ बाघ, कस्तूरा प्रभृति हरिण और बीवर आदि लोमश चतुष्पाद जन्तु बहुत मिलते हैं । यहां की झील और नदियों में मत्स्य बहुत उत्पन्न होते हैं ।

रूस का क्षेत्रफल ५७०००० वर्गकोश है और अधिवासियों की संख्या ७२०००७० है । रूस के लोग विद्याभ्यास और सभ्यता में और सब यूरोपीय लोगों से कम हैं । यहां नानावंशीय और नानाभाषी लोग रहते हैं । यहां के समुदाय विद्यालय गवर्नमेण्ट के अधीन हैं । यहां की शासनप्रणाली राज-

तंत्र है अर्थात् एक अपरिमित क्षमता शाली सम्राट् समुदाय साम्राज्य पर प्रभुता करता है इस को जार भी कहती हैं । यहां परीक्षा से बिना कोई पुस्तक नहीं छपा जाता ।

प्रधान २ नगरों का वर्णन

आर्केञ्जल डूवीना नदी के संगमस्थान पर है। यह पहले एक प्रधान बन्दर था । सेन्टपीटर्सबर्ग रूस की राजधानी १७०३ में बड़े पीटर ने इसको बना था यह नीवा नदी के बांए किनारे पर स्थित है इस में नाना प्रकार के कारखाने और विस्तृत वाणिज्य हैं। इस नगर में इस के बनाने वाले की एक अच्छी प्रतिकृति स्थापित है । क्रन्स्टेट यह नगर सेन्टपीटर्सबर्ग से १० कोश दूरी पर है । और यह नीवा नदी के प्रवेश मार्ग में है इसमें एक सुदृढ़ किला है रूसियों का बाल्टिक समुद्रस्थित युद्ध जहाजों का यह प्रधान विश्रामस्थान है । हेलसिंगफार्स यह नगर फिनलैण्ड प्रदेश की राजधानी इस में एक बहुत दृढ़ किला है । विल्ना नगर बहुत विस्तृत वाणिज्य का स्थान है इस्मोलेनस्क १८१२ में यहां फरासिसों ने आक्रमण किया था । कीव नगर, रूस के बीच यहां ही पहले ख्रीष्ट धर्म का प्रचार हुआ इसलिये लोग इसे अब तक भी पवित्र समझते हैं । खरसन नगर जिस में १७९० ई॰ में प्रसिद्ध जनहितैषी हवर्ड साहेब की मृत्यु हुई ओडेसा यह

नगर १७ ९२ ई॰ में बसा और प्रधान वाणिज्य का स्थान है। क्रिमिया प्रदेश में सिम्फरपुल प्रधान नगर है।

सिवस्तपुर और एक नगर है जहां १८ ५५ ई॰ में भयंकर युद्ध के पीछे अंगरेज और फरासीयों मिल कर अपना अधिकार विस्तार किया। नवईचार्कस्क यह नगर कस्साक लोगों का प्रधान वास स्थान है। कार्कोव इस में एक विश्व विद्या लय है। ओरेल नगर में रूस के उत्तर और दक्षिण भागों के वाणिज्य का विनिमय होता है। कैलूगा नगर में लोह, वस्त्र और चमड़े के कारखाने हैं तूला नगर बर्मिंहं॰हम नगर के तुल्य है।

मस्को जो सेन्टपीटर्सवर्ग से ३९७ मील दक्षिण-पूर्व मे है रूस की प्रथम राजधानी था १८ १२ ई॰ में जब फरासियों ने इस पर चढ़ाई की तो रूसियों ने इस को जलाया था यह नगर विस्तृत वाणिज्य और कारखानों का स्थान है, यहां अब तक भी प्राचीन रईस लोगों की सन्तति वास करती हैं, यहां के गृह यद्यपि अच्छी रीति से निर्म्मित नहीं तथापि यह देखने में बहुत सुन्दर है, यहा क्रेमलिङ्॰नामक एक प्रसिद्ध राजप्रासाद है जिस के तोरण में ५९०० मन का एक घण्टा लटकता है। नीझ़नीनवगई नगर में जूलाई से सैप्टम्बर तक एक मेला होता है जिस में एशिया और यूरोप से अढ़ाई लाख मनुष्य आते है। काज़न और सराटव नगर विस्तृत वाणिज्य के स्थान हैं आस्ट्रखान नगर वल्गा नदी के संगमस्थान से २२ कोस दूर पर है यहां मत्स्य और

ऊपर इन्हों का बाणिज्य बहुत है सर्केशिया प्रदेश रूस के दक्षिण-पूर्व सीमा में है यह देश एशिया और यूरोप के मध्यस्थित है यह काकेशस पर्वत के उत्तरमें कास्पियन् समुद्र से काले समुद्र तक विस्तृत है यहां के मनुष्य बहुत साहसी और सबल होते हैं और यहां की स्त्रियें बहुत सुन्दर होती हैं ।

पोलेण्ड—यह प्रदेश रूस और प्रूशिया के बीच में है पहिले यह स्वाधीन था परन्तु गतशताब्द के अन्त में यह रूस, प्रूशिया और आस्ट्रिया के अधीन हुआ इस के प्रधान नगर वार्शा जो कि विस्चुला नदी के तीर में है पहले यह नगर पोलेण्ड की राजधानी था वार्सा के उत्तर में पुलटस्क नामक नगर है जहां १८०६ ई॰ में रूसियों का निपोलियन् के साथ युद्ध हुआ ।

प्रूशिया ॥

इस की पूर्वसीमा मे रूस और पोलेण्ड; दक्षिण मे आस्ट्रिया, सेक्सनी और छोटे २ जर्मन राज्य; पश्चिम मे फ्रान्स, बेल्जियम और हालेण्ड और उत्तर में है नोवर, डेन्मार्क और बाल्टिक समुद्र है । प्रूशिया के पश्चिम प्रदेश पर्वत मय हैं अवशिष्ट भूमि निम्न और चौड़ी है । इसमें नीमेन, विस्चुला, ओडर वर्था एल्ब और राइन नदियें बहती हैं । सडेटिक पर्वत श्रेणी दक्षिण-पश्चिम से सेलिशिया तक विस्तृत है प्रूशिया के पश्चिमकी जलवायु स्वास्थ्यकर है पूर्व में शीत और ग्रीष्म इन दोनों का ही बहुत प्राबल्य होता है । मध्य में

ग्रीष्म ऋतु उतनी ही गरम होती है जितनी कि फ्रान्स के पश्चिम में और शीत ऋतु ऐसा शीतल होता है जैसा कि नार्वे के दक्षिण-पश्चिम में इसकी अधिक भूमि उर्वरा है परन्तु यहां रेती भूमि भी बहुत है और इसका १/५ अंश जंगलों से भरा हुआ है। शस्यों में से यहां राई, गेहूं, ओट, आलू, तमाकू और हाला होती हैं। कहीं २ सन भी होती है। यहां वस्त्रों का कारखाना हैं लोह, ताम्बा और पीतल के द्रव्य और मट्टी के बरतन और अन्य भी नाना प्रकार के यन्त्र यहां निर्मित होते हैं

प्रूशिया का राज्य तीन भागों में विभक्त है यथा पश्चिम, मध्य और पूर्व

प्रदेश	नगर	विशेषवार्त्ता
पोमेन	मेमल	यहां से शस्य और बडी २ लकडियें और २ देशों में भेजी जाती हैं
	टिल्सिट	यहां १८०७ ई॰ में रूस के राजा ऐलैवजेराडर प्रथम नियोलियन ने पहिले मेल लड़ा ॥
प्रीगाल	कनिङ्सवर्ग	यह प्रूशिया की प्रथम राजधानी था यहां फ्रेडरिक जो ब्रैण्डिनवर्ग का सर्दार था, १७०१ ई॰ में प्रूशिया का राजा हुआ
	फ्रेडलेण्ड	यहां १८०७ में फरासीसियों ने रूसियों को पराजित किया
विस्चुला	डेनजिक और एल्बिंक	ये प्रधान बन्दर हैं

	हरुन्	यहां १४७३ ई॰ में प्रसिद्ध ज्योतिषी कोपर्निकस्क का जन्म हुआ।
ओडर	स्टेटिन्	यहां शस्य का बहुत वाणिज्य होता है
	फ्रैंकफोर्ट	यहां कपडों का कारखाना है और प्रत्येक वर्ष में तीन वेर मेला होता है।
	ब्रेस्ला	यहां पशमी और कार्पास वस्त्रों के कारखाने हैं
एल्ब	मैगडिवर्ग	इस में एक बड़ा भारी किला है और यहां पशमीना और चीनी बरतनों का वाणिज्य है
	विटनवर्ग	यहां १५१७ ई॰ में प्रथम समाजसंस्कार आरम्भ हुआ।
	हैली	यहां १६८४ ई॰ में हैंडलसाहेब का जन्म हुआ यहां एक विश्वविद्यालय भी है।
	फिस्लन	यहां १४८३ ई॰ में लूथर का जन्म हुआ।
	लूज़न	यहां गस्टावस्एडल्फस १६३२ ई॰ में पराजित हुआ
हैवल और स्प्री	ब्रेण्डन्बर्ग	प्राचीन राजधानी
	पोटसडैम् बर्लिन्	यहां बहुत प्रासाद और बड़े२ बराक हैं प्रूशिया की राजधानी यहां जितने कारखाने और विद्या की चर्चा होती है जर्मनी के किसी और नगर में इतने नहीं। यहां का विश्वविद्यालय १८१० ई॰ में स्थापित हुआ है

		और पृथिवी में बड़ा प्रसिद्ध है क्योंकि राजाने यथेष्ट धनदान करके बड़े २ विद्वान् और विचक्षण लोगों को इसकी अध्यापना मे नियुक्त कियाहै। सोलेफटक को पार होकर इसनगर में प्रवेश होताहै
राईन	डसलडर्फ	यहां कारपस और रेशम के कारखाने हैं।
	कोलन	यह प्राचीन नगर है और यहां अच्छा ओडीकलन प्रस्तुत होता है और यह बड़ा विस्तृत वाणिज्य स्थान है
	ऐचिन वा ऐक्सला शेपिली	यहां सार्लिमन् का वास गृह था और यहां जर्मन सम्राट् — लोगों को राजतिलक मिलताथा और यहां १६६८ और १७४८ ई. में संधि हुई.
	मनस्टर	यहां १६४८ ई. में वेस्टफेलिया की सन्धि हुई
	ऐरनब्रिट	
	स्टीन	यहां एक बड़ा प्रसिद्ध किला है
	मिराडन	इस के समीप ९ ई. में रोम की सैन्य जर्मनी से पराजित हुई।

सम्प्रति प्रूशिया और फ्रान्स में जो युद्ध हुआ था उसमें प्रूशिया ने कई एक देश जीते परन्तु उनका अब तक कुछ निर्धारण नहीं हुआ।

प्रूशिया के लोगों का आचार व्यवहारादि जर्मन वालों की तरह है यहां के अधिवासियों की संख्या २३५००००० है। यहां विद्याशिक्षा में लोगों का बहुत अनुराग है। राजनियम के अनुसार यहां निखिल प्रजा को बाल्यकाल में विद्याध्ययन करना पड़ता है जो लोग विद्याध्ययन का व्यय नहीं दे सकते सर्कार से उन को

खरच मिलता है और यहां के राजनियमके अनुसा
र समुदाय प्रजा को युद्धविद्या सीखनी पड़ती है य-
हां बर्लिन, बन, ब्रेस्ला, हेलीकनिग्सबर्ग और ग्रि-
फसवल्ड इन नगरों में एक २ विश्वविद्यालय है।

डेन्मार्क

इस के उत्तर में स्कागारक पूर्व में कारीगट सौण्ड
और बालटिक समुद्र, दक्षिण में जर्मनी और पश्चि
म में जर्मनमहासागर है। डेन्मार्कदेश प्रायः सर्व
त्र समतल है इसकी पश्चिम उपकूल की भूमि द-
लदल और बालुकामय है डेन्मार्कराज्य महादेशि-
क और द्वैपिक इन दो प्रधान भागों में विभक्त है।
महादेशिकभागविस्तीर्ण प्रायद्वीप है जो कि जर्म
न के उत्तर से बराबर उत्तर की ओर जाकर स्को अन
रीप में निःशेष हुआ। द्वैपिक भाग में शीलेण्ड
हार्इन, लालेण्ड फलस्टर, बरनहम प्रभृति छोटे२
कई द्वीप हैं। इस की नदियों में हार्इडर नदी सब
से बड़ी है यहां शीतका जितनाप्रादुर्भाव होना चा
हिये उतना नहीं ग्रीष्मकाल के विना और सब ऋ
तुओं में यहां का जलवायु सजल और हिममय हो
ता है। यहां राई, जव, ओट, मटर आलू और तमा
कू अधिक उत्पन्न होते हैं। यहां गौ, अश्व भेड़,
सूकर, और भैंसा प्रभृति नानाप्रकार के जन्तु हैं
यहां का कुत्ता बुद्धि और शक्ति के लिये प्रसिद्ध है।
डेन्मार्क के लोगों को डिनेमार कहते हैं ये लोग

धीर, बलवान् और विवेचक हैं इनकी सभ्यता सम्पूर्ण है ।

कोपन हेगन इस की राजधानी है और जीलेण्ड द्वीप के अन्तर्गत हैं इस में एक विश्वविद्यालय है और सुन्दर २ प्रासाद बहुत हैं ।

यद्यपि कोपनहेगन में एक अच्छा दृढ़ किला है तथापि १८०१ ई॰ में नेल्सन साहेबने इसपर अधिकार किया था रास्कील्ड् ऐल्सीनर अल्वर्ग और ओडेन्स इस के प्रधान नगर हैं इनों से रोस्किलनगर प्राचीन राजधानी था ऐल्सीनर नगर में जहाजों का महसूल लेते हैं । अल्वर्ग जटलेण्ड की राजधानी और ओडेन्स फूनन द्वीप की राजधानी है । महादेशिक विभाग मे फ्रेनेस्वर्ग और अल्टोना प्रधान बन्दर हैं । आइसलेण्ड द्वीप फेरो पुञ्ज, ग्रीन्लेण्ड देशका पश्चिम उपकूल, कारिगट समुद्रीय द्वीपों मे सण्टाक्रूस और पश्चिम आफ्रिका के अन्तर्गत गीनी देश के समीपवर्त्ती कितने एक छोटे २ द्वीप ये सब विदेशीय अधिकार हैं ।

आइसलेण्ड एक बड़ा द्वीप है और भूमध्यस्थ अग्नि के जोर से उत्पन्न हुआ है इसका आकार बड़ा बन्धुर है । इस में प्रायः तीस ज्वालामुखी पर्वत हैं उनमे से हेकला अतिशय प्रसिद्ध है । यहां बहुत उष्ण प्रस्रवण भी हैं । इस देश का प्रधान नगर रैकाविक है ।

उत्तर जर्मन राज्य

इस में हैनोवर, उल्डेनवर्ग, मेकलन वर्ग स्क्यूरिन्, मेगलमवर्ग स्ट्लीड, फ्री-सिटीज़ आफ-ल्यूबेक, हैम्बर्ग, ब्रीमेन, ब्रन्सविक, ऐनहल्यडेसउकोथन, ऐनहल्यवारन्वर्ग, लीपी देस्कम्बर्ग, लीपीडिटमल्ड ये प्रदेश हैं ।

हैनोवर के दक्षिण में हार्जनामक पर्वत श्रेणी है जिस में अच्छे २ सहृदय स्थान हैं और बहुमूल्य खान हैं । अवशिष्ट सब प्रदेश समतल हैं और भूमि वालुकामय है । यहां की तीर भूमि बहुत निम्न है यहां एल्ब, वेज़र और एनसपे तीन नदियें बहती हैं मेकूलनवर्गस्क्यूरि और स्ट्लीन ये प्रदेश प्रूशिया और होलस्टीन के बीच में है इस की राजधानी स्क्यूअरिंग और विज़मर और टस्टकनामक दो प्रधान बन्दर हैं

फ्रीसिटीज़-ल्यूबेक ट्रेवनदी के किनारे में एक प्राचीन नगर है । हैम्बर्ग एल्ब नदी के किनारे पर है यह बहुत वाणिज्यस्थान है । ब्रीमेन नगर वेज़र नदी के किनारे पर है यह एक प्रसिद्ध बन्दर है यहां अमेरिका के लोग आकर वाणिज्य करते हैं और तमाकू का बहुत कारखाना है । ये सब नगर स्वाधीन हैं । १२४१ ई॰ में हेन्साकी सन्धि के द्वारा इन की स्वाधीनता हुई है ।

हैनोवर—यह प्रदेश

जर्मन महासागर के तीरमे है और ऐल्ब और होले एड के के बीच मे है । यह १८२५ ई॰ तक एक सामान्य सर्दार के अधीन था १८१४ से यह एक राज्य बना और वर्तमान ब्रिटन के राजवंशीय हैनोवर से आये हैं । १७१४ ई॰ से १८३७ तक ब्रिटन और हैनोवर एक राजा के अधीन थे उसके पीछे दोनो अलग२ होगये क्योंकि हैनोवर के राज नियम के अनुसार स्त्री को राज्य नही मिलता । इस्का प्रधान नगर हैनोवर है यह बड़ा विस्तृत वाणिज्य स्थान है और हार्सेल नामक प्रसिद्ध ज्योतिर्विद् का जन्म स्थान है गटिंजेन नगर मे एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय है और २२ प्रदेश का विषय कुछ जानने के योग्य नहीं ।

हालेण्ड

हालेण्ड को पहिले लोग निदरलेण्ड कहतेथे १८१४ से इस का नाम हालेण्ड हुआ॰

इस की पूर्वसीमा हैनोवर, प्रूशिया, राईनिक; दक्षिण में बेलजियम; पश्चिम और उत्तर में जर्मन महासागर ।

हालेण्ड अतिनिम्न और समतलदेश है स्थान२ में समुद्र मुख इस के भीतर दूरतक विस्तृत है । पहले समुद्र की जलवृद्धि से इस के अनेक अंश डूब जाते परन्तु अब हालेण्डवालों ने एक बन्ध निर्म्माण करके उक्त उपद्रव को वारण किया है । यहां की प्रधान नदियों में शील्ड, मास और राईन हैं ।

यहां और बहुत कृत्रिम नदियें हैं । यहां के खली-जों में जूईडर्जी, लौवरजी और डलार्ड ये प्रधान हैं। जूईडर्जी के सामने एक द्वीपश्रेणी है जिनमें से टेक्सिल प्रधान है । यहां समुद्र के समीप बहुत झीलें हैं परन्तु वे सब छोटी २ हैं । पहले डलार्ड-वे और जूईडर्जी भी झीलें थीं अब जर्मन महासा-गर में मिल गयी हैं । हालैण्ड के पश्चिम उपकूल में अत्यन्त रेत दीख पड़ती है ।

हालैण्ड में बहुत जल है और कोई पर्वतादि नहीं इस लिये यहां समुद्रवायु सदा बहती है । आकाश सर्वदा सजल मेघ और कुज्झटिका से आच्छन्न । शीत काल में बहुत नद नदियें जम जाती हैं यहां कारखाने बहुत नहीं परन्तु हर रोज़ वृद्धि पाते हैं यहां का वाणिज्य बहुत विस्तृत है । मत्स्य का वा-णिज्य यहां बहुत है । यहां के अधिवासियों में पशु पालन और दूध दही मक्खन आदि का व्यवसाय बहुत लोग करते हैं । यहां की खेतियों में से गेहूं, सन, पट, मूंज, और तमाकू प्रधान हैं । हालैण्ड-वासियों को ओलन्दाज़ वा डच कहते हैं । ये लोग अतिशय परिश्रमी, परिमितव्ययी, सीधे और साव-धान हैं परन्तु इन को अहंकार बहुत है । ये लोग सभ्यों में भी गिने जाते हैं ।

हालैण्ड की राजधानी ऐम्स्टर्डम ऐम्स्टल नदी के तीर पर है । २०० बरस पहिले सारे यूरोप में यह

प्रसिद्ध वाणिज्य स्थान था परन्तु अब भी यह वाणिज्य के लिये प्रसिद्ध है यह नगर एक उच्च भूमि में निर्म्मित हुआ है और इसके प्रवेश करने में ३०० पुल लंघ कर जाना पड़ता है

रटर्डम, हार्लेम, लीडेंन, अल्कमार, केम्परडौन और डीहेल्डर ये सब प्रधान नगर हैं। इनों से

लीडेन नगर १५७३ ई॰ में स्पेनवालों से आक्रान्त हुआ उस समय स्त्रियें भी अस्त्र लेकर लड़ीं थीं उन स्त्रियों के सन्मान के लिये १५७५ में यहां एक विश्वविद्यालय स्थापित हुआ।

यहां ओट्रेट और ग्रनिङ्गेन इन दो नगरों में भी एक २ विश्वविद्यालय है यहां जेराडम नामक एक नगर है जहां प्रसिद्ध रूसका राजा पीटर स्त्रयं नौका काम सीखने को आया था। हरन् नामक नगर में स्कोटेन्स नामक नाविक का जन्म हुआ जिस ने दक्षिण ऐमेरिका की दक्षिण सीमा आविष्कार करके इसका नाम हरन् अन्तरीप रक्खा हालैण्ड का विदेशीय अधिकार भारतसागरीय द्वीपश्रेणियों में से जावा, मलक्का, बोर्निओ, सुमात्रा द्वीप का कुछ अंश, बांका और टर्नेट प्रभृति छोटे २ द्वीप।

आफ्रिका में गीनी उपकूल स्थित कई एक छोटे २ किले, दक्षिण आमेरिका में सुरीनम अर्थात् डच गाइना और कूरेकव द्वीप, कारिब सागरीय द्वीप श्रेणियों में सूएन, आयरसावा, सेन्ट उस्टेसस,

और सेन्ट मार्टीर्स का कुछ अंश ।

बेल्जियम

इस की उत्तर सीमा हालेण्ड; पूर्व में लिम्बर्ग और राइनिक प्रूशिया दक्षिण में फ्रान्स पश्चिम में जर्मन महासमुद्र । बेल्जियम का दक्षिण प्रान्त उच्च और बन्धुर उत्तरभाग समतल और समुद्रतल से निम्न । यहां भी बहुत लहरें आती हैं । पश्चिम में शील्ड नदी और पूर्व में मास नदी बहती है बेल्जियम में हालेण्डकी नाईं शीत का इतना प्रादुर्भाव नहीं है यहां की भूमि स्वभावतः उर्वरा नहीं परन्तु किसानों के परिश्रमों से इसकी ऐसी उर्वरता हुई है कि लोग इस को यूरोप का उद्यान कहते हैं यहां के शस्यों में से गेहूं, राई; पट, सन, तमाकू और मुख्य है यहां के वनों में ओक भूर्ज और आसप्रभृति अनेकप्रकार के वृक्ष होते हैं ।

यहां के खानिज द्रव्यों मे से पत्थरी कोला बहुत परिमाण से उत्पन्न होता है और लोह तांबा शीशा गन्धक और फटकड़ी भी स्थान २ में मिलती है । यहां कारपसवस्त्र और पशमीने के कारखाने भी है बेल्जियम के अधिवासियों को बेल्जियन कहते हैं ये लोगभी अतिशय परिश्रमी और शिल्पकुशल होते हैं ये लोग प्रत्यह अपने देश के वाणिज्य को बढ़ाते हैं इन की भाषा साधारणतः फ्रेञ्च है यहां शिक्षा का अच्छा बन्दोबस्त नहीं । इस की राजधानी

ब्रुसेलस सेन नदी के तीर मे है + यहां अच्छे सुन्दर गलीचे मस्तुत होते हैं ब्रुसेलस के दक्षिण में वाटर्लू नामक ग्रामक्षेत्र है जिस में १८१५ ई. में अंग्रेजों ने निपोलियन् को जीता । इस के दक्षिण-पूर्व में रामीलीस नामक स्थान है जहां १७०६ ई. में मलबरा ने जय पाई आन्टर्प, गेण्ट, टुर्ने, मेक्लिन, लूवेन आस्टेण्ड ब्रूजेस, नामूर, मनस, चार्लीराय और लीज ये प्रधान नगर हैं ॥

इन में से आन्टर्प नगर पहिले यूरोप के उत्तर देशीय समस्त नगरों से प्रधान वाणिज्यस्थान था परन्तु १५७६ ई. और १८२५ ई. के स्पेनवालों के आक्रमण से इस का वाणिज्य कुछ घट गया है । तो भी बेलजियम् और नगरों से प्रधान वाणिज्य स्थान है यहां एक अच्छा किला है । गेण्ट नगर २६ द्वीपों मे बसा है यहां एक अच्छा गिरजाघर है और रूई के कारखाने हैं । औडीनर्डे में १७०८ ई. में यूजीन से फ्रेन्सलोग पराजित हुए । टुर्ने में गलीचों के कारखाने हैं और इस के समीप फोण्टेनाय नामक स्थान है जहां १७४५ ई. में अंग्रेजलोग पराजित हुए थे । मेक्लिन नगर में गोटे के कारखाने हैं । लेवून नगर में पहिले एक विश्वविद्यालय था । लीज और नामूर नगर में लोहे के द्रव्य बहुत मस्तुत होते हैं

+ हालेण्ड और बेलजियम् १२६४ से १४३१ ई. तक बर्गण्डी के ड्यूकों के हाथ में रहे । १४८२ ई. में आष्ट्रिया के राजा मैक्सिमिलियन ने बर्गण्डी की रानी मेरी को ब्याहके इन पर अधिकार पाया ॥

इस के पीछे उनका पुत्र फिलिप स्पेन की राजकुमारी ज्आन्ना को बिवाहा। उस का पुत्र चार्लस ५ वां आस्ट्रिया, स्पेन और हालेण्ड, बेलजियम का राजा हुआ उसके पीछे उसके पुत्र फिलिप दूसरे के समय डच लोग विद्रोही हुए परन्तु बेलजियन लोग इस के अधीन थे। १८१४ ई॰ में बेलजियन लोग डचों से मिलगये और १८३० वर्त्तमान स्वतन्त्र राज्य स्थापन किया।

फ्रान्स

इस की उत्तर सीमा में नर्वे दिया प्रशिया बेलजियम और इङ्गलिश चेनल; पूर्व में सार्डीनिया स्विटजर्लैंड और बेडन, दक्षिण में भूमध्यस्थ सागर और स्पेन और पश्चिम में अटलांटिक महासागर है। फ्रान्स के पूर्व और दक्षिण-पश्चिम प्रान्त पर्वतों से आच्छन्न हैं इस का अभ्यन्तर भाग अवरन् और लाङ्गुडक प्रदेश को छोड़कर प्रायः सर्वत्र समतल है इसके सर्वोच्च पर्वतों में से पिरेनीज़ जो इसे स्पेन से पृथक् करता है। ऐल्पस् पर्वत दक्षिण-पूर्व में इटली से इस को विभक्त करता है। जुरा स्विट्जर्लैण्ड की सीमा में हैं। इन के सिवाय और भी इसमें छोटे २ पर्वत हैं। इस में राईन, मोसल म्यूस, स्कार वा शील्ड, सोम्ह्, सीन और इसकी सहायक नदियें, लोने और, मार्नी और ग्राइस लायर और इसकी सहायक नदियें तथा रोन, सायन इत्यादि नदियें हैं। यहां की खाड़ियों में भाईकेलस बे, बिस्के की खाड़ी और लाइन की खाड़ी प्रधान हैं। फ्रान्स की जलवायु शुष्क, आमोद कर और स्वास्थ्यजनक है इसके पश्चिम भाग में शीतातप समान हैं, दक्षिण भाग में गर्मी अधिक है

और उत्तर पूर्व भाग में शीत अधिक है फ्रान्स की भूमि प्रायः सर्वत्र ही उर्वरा है फ्रान्स में नाना प्रकार के शस्य उत्पन्न होते हैं यहां दाखा, मेवा, नारङ्गी और जैतफल बहुत उत्पन्न होते हैं । फ्रान्समें मद्य बहुत प्रस्तुत होती है । इसमें जंगल बहुत देखने में आते हैं । और २ यूरोप के देशों में पत्थरी कोलों की आगसे रसोई होती है परन्तु फ्रान्स में लकडी से ।

फ्रान्स में रेशम, पशम, और कारपस वस्त्रों के कारखाने बहुत हैं । खनिजों मे से यहां लोह पत्थरी कोला और लून बहुत होता है । इस का क्षेत्र फल ११३०० वर्गकोश है फ्रान्स के रहनेवाले को फरासीस कहते हैं । फरासीस लोग साहसी परिश्रमी और स्थल युद्ध में निपुण होते हैं ये लोग बहुत शिल्पविद्या और लौकिक आचार व्यवहार में विशेष अभिज्ञ हैं ये लोग स्त्रियों का विशेष सन्मान करते हैं और सम्पूर्ण सभ्य हैं । फ्रान्स की लोकसंख्या ३८०००००० है । फ्रान्स की शिक्षाप्रणाली बहुत अच्छी है यहां पेरिस, पायेटियर्स, टूलोज और मांटपेलियर इनचार नगरों में एक २ विश्वविद्यालय है । इन के सिवाय और भी १९ प्रधान विद्यालय हैं । कहते हैं कि फ्रान्स में पुस्तक और संवादपत्र मिलकर प्रतिवर्ष २४०००० लाख मुद्रित होते हैं । फ्रान्स में पहिले राजतन्त्र शासन प्रणाली थी परन्तु सम्प्रति प्रूशिया के साथ युद्ध होने के पीछे यहां साधारणतन्त्र प्रणाली प्रच-

क्तिन हुई हैं परन्तु यह प्रणाली भी सर्वसम्मत नहीं हुई । पहले फ्रान्स देश ३४ प्रदेशों में विभक्त था परन्तु १७८९ ई. के विद्रोह के पीछे यह ८६ प्रदेशों में विभक्त हुआ परन्तु अब प्रुसिया के युद्ध में इस के कुछ अंश प्रूसिया के अधिकार में गये ।

ष्ट्रेसबर्ग — राईन नदी के तीर पे बसा है यह नगर दृढ़ कोट के भीतर है इस में विस्तृत वाणिज्य है और एक प्रसिद्ध गिरजाघर है यह पहले जर्मनों का प्रधान नगर था १४३६ ई. में यहां गटनबर्ग ने मुद्रायन्त्र के लिये प्रयत्न किया इस के दक्षिण में के-मार मलहूसन दो नगर हैं जिन में लोहे का वाणिज्य बहुत है मोज़ल नदी के तीरस्थित मेटस् नगर और नानसी नगरों में बहुत वस्त्र प्रस्तुत होते हैं वालाङ्सीन, कैम्ब्रे, लील और मर्डी नगरों में कपड़े प्रस्तुत होते हैं । डंकर्क फ्रान्स के उत्तर प्रान्तस्थित एक प्रधान बन्दर यह १६५८ से १६६२ ई. तक अंग्रेज़ों के अधिकार में था । कैले — डोवर के मुहाने पर बसा है यह १३४७ ई. से १५५८ ई. तक अंग्रेज़ों के अधिकार में रहा बोलन नगर में बहुत मत्स्य का व्यवसाय होता है । उत्तर ओर का वर्ती इंग्लिश सागर तीर में है उन में से शेरबर्ग बन्दर में बहुत फरासीसियों के युद्ध के जहाज़ स्थिर हैं। एबेविल नगर के ९ मील उत्तर में क्रेसी नामक स्थान है जहां १३४६ ई. में एडवर्ड ३ ने फरासियों को पराजित किया ।

ऐगिन्कोर्ट ऐबिविल के १० कोस उत्तर-पूर्व मे है ज-हां १८१५ ई॰ में हेनेरी पांचवे ने फरासीसियों पर ज-यलाभ किया। हेवर नगर सीन नदी के तीर मे है और एक प्रधान वाणिज्य स्थान है। रुऐन नगर भी सीननदी के तीर मे है। यहां विजयी विलियम् मरग-याथा। पेरिस नगर फ्रान्स की राजधानी है और सी-ननदी के उभय तीर में बसा है यूरोप महादेश मे इ-तने बड़े लम्बे और बहुत मनुष्य युक्त नाम नगर नहीं है इस में बहुत सुरम्य अट्टारिका और नाना प्रकार के विद्यालय हैं।

यहां अच्छी २ पोशाक और अन्यान्य विलासोपयो-गी द्रव्य प्रस्तुत होते हैं। इस के समीप सेण्टडेनी स, सेवीर और बर्सेल ये तीन नगर हैं। बर्सेल नग-र प्रस्तवण, राजप्रासाद और उद्यान के लिये प्रसि-द्ध है। ट्रैस नगर मोजे और वस्त्र के व्यवसाय के लि-ये प्रसिद्ध है। सीन नदी की सहायक नदियों के कि-नारे में रीम्स नगर कार्पसवस्त्र के लिये प्रसिद्ध है प-हिले यहां फ्रान्स के राजा राजतिलक लेते थे। की-एटन नगर जहां स्पेन के राजा फिलिप दूसरेने १५५७ ई॰ में फ्रान्सवालों को पराजित किया। ब्रेस्ट, लारिये-एट, टसफोर्ट और रसल ये नगर अट्लाण्टिक महा-सागर के तीरस्थित हैं और इन में युद्ध जहाज ठहरते हैं। बेननगर में बन्दूक की संगीन पहिले पहिल बनी थी इसलिये उसका नाम बैनेट है।

लायूर नदी के तीर में नाण्ट्स, अङ्गर्स, टूर्स, आर्लीन्स और सेण्ट इटायन ये नगर हैं इन्में से नैण्टिस् नगर में जहाज बनते हैं और विस्तृत विदेशीय वाणिज्य है यहां १५९८ ई॰ में हेनरी चौथे ने प्रोटेस्टण्टों के अनुकूल आज्ञा प्रचार किया था। टूर्स नगर में ७३२ ई॰ मे चार्लस् मार्टेल ने फरासियों को पराजित किया था ।

आफ्रिका

यह एक महा देश है जो और महा देशों की अपेक्षा बहुधा अयन मण्डल के बीच है परन्तु इसका उत्तर और दक्षिण अंश उष्ण समकोटि मण्डल के अन्तर्गत है। आफ्रिका में कोई प्रदेश नहीं दीख पड़ता कि जिस में शीत के कारण बहुत मनुष्यों की गुञ्जाइश न हो सकी हो जैसा कि एशिया के उत्तर में है। यद्यपि आफ्रिका परिमाण में एशिया के दो तिहाई के बराबर है तोभी इसका जलपवन ऐसा है कि इस में एशिया के बराबर मनुष्यों की वसति हो सकी थी, किन्तु नहीं है– इस में दो कारण हैं। एक तो इस मे बड़ी उजाड़ और जंगल बहुत हैं, दूसरा कारण यह है कि इस के रहने वाले बड़े असभ्य हैं और इस में किसी तरह का सुशासन नहीं यही मनुष्यसंख्या की वृद्धि के न होने में कारण है।

भूपृष्ठ पर जितने महादेश हैं उन सब से आफ्रिका उष्ण है। प्रायः इस का सम्पूर्ण अंश 'सहारा' नामी विस्तृत मरुस्थल से व्याप्त है. यह 'सहारा' क्षेत्र १० उत्तर अक्षांश से २० उत्तर अक्षांश तक विस्तृत है। इस का मध्यस्थल एक माल क्षेत्र है जिसकी ऊंचाई समुद्रतल से २००० फुट है उसके चारों ओर की भूमि बहुत ही निम्न है; यहां तक कि उत्तर और पश्चिम में समुद्रतल से भी निम्नभूमि है। सहारा का समुदय अंश रेकत (रेतला) नहीं इसके अधिक अंश पत्थर से ढंपे

हुए हैं। इस में किसी प्रकार का हरनवा जेला पायन हीदी खपड़ता। और यहां कभी वर्षा नहीं होती। इस में व हुत दूर २ पर एक फुवारा पानी का बड़ी सड़क के पास २ दीख पड़ता है इस कारण वणिक् लोग अप ने ऊंठों की सहायता से एक फुवारे से दूसरे तक जा कर किसी तरह इस पर से गुजरते हैं। सहारा देश बहुत ही गर्म हैं विशेष करके निम्न अंश समुद्र से अतिशय उष्ण हैं, इस से ऐसा भी अनुमान किया जाता है कि यहां से समुद्र अल्प दिन हुए सूख गया होगा,।

आफ्रिका का मध्यभाग अर्थात् इस का जो अंश उत्त र १० अक्षांश रेखा से दक्षिण १० अक्षांश रेखा तक वि स्तृत है उस के विषय में अब तक बहुत थोड़ा जाना ग या है। यह अंश सहारे से सम्पूर्ण भिन्न प्रकृति का है इस में पानी की बहुत सुगमता है। आफ्रिका के मध्यदेशों में से जिस २ स्थान पर भ्रमणकारी अं ग्रेज लोग गए हैं वे सब स्थान उर्वर और समृद्ध हैं औ र उनमें मनुष्यों की वसति भी बहुत निविड़ है। मध्य आफ्रिका के पूर्व और दक्षिणपूर्व देशों में असंख्य ब ड़े २ झील और नदियें हैं और उसी स्थान में जिन २ से नीलनदी निकली है वे जलाशय स्थित हैं। नी लनदी आफ्रिका के पूर्व में दक्षिण से उत्तर में बहती है। कांगो नाम और एक नदी मध्य में पूर्व से पश्चिम में बहती है और निरक्षरेखा से पांच या छः अंश की

दूरी पर है। जेम्बेसी नामतीसरी नदी इस के दक्षिण पूर्व में बहती है। आफ्रिका के जोअंश उष्णमण्डल के बाहर हैं जैसाकि (१) केप-कलोनी जो इस के दक्षिण में है और (२) बारबारिउपकूल जो इस के उत्तर में हैं। (३) इनमें जलपवन बहुत अच्छी है परन्तु वर्षा बहुत थोड़ी होती है।

आफ्रिका में सब से ऊंचे जो अबतक विदित हुए हैं पर्वत ये हैं — किलिमञ्जरो जिस्की ऊंचाई २१,००० फ़ुट है। यह पर्वत श्रेणी जञ्जिबार उपकूलसे बहुत दूर नहीं है और उस की समानान्तराल है। इस पर्वत श्रेणी का किलिमीनजरो नाम शिखर जो २१,००० ऊंचा यद्यपि निरक्षरेखा के समीप है तो भी इस के अग्रभाग सदैव बरफ से छपे रहते हैं। प्राचीन भूगोलवेत्ताओं ने इसे चन्द्रपर्वत कहा है। यह पर्वत ऐबिसीनिया के उत्तर में है। अटलासनामक पर्वतश्रेणी जिस्का विषय बहुत प्राचीन काल से विदित हुआ है, बारबारी उपकूल के समीप और समानान्तराल है। इस्के कई एक शिखर १५,००० फ़ुट ऊंचे हैं। कमेरूनपर्वत गिनी के समीप है इस की ऊंचाई १४,००० फुट है। यह सम्भव है कि यह पर्वतश्रेणी नाइजर और कांगो नदी के स्रोतोंके बीच जो अपवाहिका है वहां तक चली गई होगी परन्तु आफरिकाके इस अंशको अबतक किसीने देखा नहीं। इसलिये कोई जानता नहीं कि वहां ऐसा उच्चपर्वत है या नहीं।

आफ्रिका की नीलनदी बहुत प्रसिद्ध है । आजकल बहुत लोग इसे पृथ्वी की समुदय नदियों में से बड़ी कहते हैं । यह पहले कहागया है कि यह नदी आफ्रिका के पूर्व एक सीमा से दूसरी सीमातक बहती है । इस का विस्तार २,०००,००० वर्ग मील है । इस का प्रवाह किसी स्थल में बहुत वेग से चलता है । किसी स्थल में उच्च स्थान से गिर रहा है और किसी स्थल में आवर्त्तमय है इसलिये बहुत दिनतक इस का उत्पत्तिस्थान विदित नहीं हुआ— ऐसा कि पहिले समयमें नीलनदी का मूल ढूंढना असम्भव बातों में गिना जाता था, परन्तु बीस बरस के अन्दर अंग्रेजी भ्रमणकारी बेकर, स्पेक और लिविङ्गस्टोन साहिबों ने इसके उत्पत्तिस्थान के निर्णय में बहुत पता लगाया ।

नीलनदी का निम्न प्रवाह मिसर और नूबिया के बीच में से चलता है । प्रायः प्रतिवर्ष जून महीने से सितम्बर तक इन देशों में इसनदी का प्लावन होता है जिस से यहां की भूमि उर्वरा होती है । पूर्व और मध्यआफ्रिका में वर्षाऋतु में बहुत पानी बरसता है जिस कारण नदी बढ़कर इन देशों को प्लावित करती हैं ।

मिसरदेश की दक्षिणसीमा और नूबिया में नीलनदी के प्रसिद्ध जलप्रपात लक्षित होते हैं । उभयपार्श्वस्थित पर्वतों से नदी के प्रवाह अधिक संकोचित होने से ऐसे प्रपात उत्पन्न हुए हैं ।

नूबिया के दक्षिण खारतमनामक स्थान में यह नील-

नदी और दो शाखा नदियों से सङ्गत ऊई है; उनमें से ए
क का नाम "ब्लुनील" जो दक्षिण पूर्व दिशा से प्रवाहि
त होकर एबसीनिया होकर आती है। दूसरी को "ह्वा
इटनील" कहते हैं। यहनदी दक्षिण दिशा से आती
है। खारतम में ब्लुनील अधिकतर चौड़ी है इसलिये
प्राचीन समय में लोग इसी को ही प्रकृत (असली) नी
लनदी समझते थे, परन्तु इसका उत्पत्ति स्थान बङ्गत समी
प में है। ह्वाइटनील का उत्पत्तिस्थान निरक्षरेखा के द
क्षिण बङ्गत दूर में है। अब इस बात का निश्चय ऊआ है
कि यह ह्वाइटनील विक्टोरिया निन्ज़ा और ऐलबर्ट
निन्ज़ा नामक दो विस्तृत झीलों से निकली है। जबतक
इनझीलों में गिरती ऊई नदियों के विषय में विशेष क
रके नहीं जाना जावे तब तक इन्को ही नीलनदी का
मूल समझना चाहिए।

विक्टोरिया निन्ज़ा झील के दक्षिण और नैऋत को
न की ओर ५०० चार सौ मील ह्वीपर और जेज़्ज़िबार
की एक अक्षांशरेखा में एक बड़ी विस्तृत झील है, जिसे
टैङ्गानिका झील वा उजिजि समुद्र भी कहते हैं। उसझी
ल वा समुद्र के पूर्व तीर पर उजिजि नाम एक शहर है।
इस नगर से कभी२ दास और हाथी के दांत से बने ऊए
वस्तु बेचने के लिये जेज़्ज़िबार में भेजे जाते हैं। यहां
से जेज़्ज़िबार पहुंचने में पांच या छ महीने लगते हैं।
टैङ्गानिका झील से ललावानामी एक बड़ी नदी निक
लती है। थोड़े दिन ऊए यह नदी आविष्कृत ऊई।

इसके आविष्कार होने पर यह सोचा गया कि शायद लुलावा नदि विक्टोरिया निञ्जा झील में गिरती हुई हो गी और टेङ्गानिका झील नील नदी का मूल होगी। परन्तु इस बात का अच्छी तरह से निर्णय हुआ है कि, लुलावा नदी आफ्रिका के मध्यदेशों में होकर पश्चिम की ओर बहती है और पीछे से 'कङ्गो' नाम से पुकारी जाती है। इसलिये नील और कङ्गो नदी की वाटरशेड अबूवाहिकाभूमि अवश्य ही टेङ्गानिया और निञ्जा नामदोनों झीलों के बीच में होगी।

टेङ्गानिका झील के पश्चिम के ओर थोड़ी ही दूरपर जेम्बेसी नाम एक बड़ी नदी का मुख दीख पड़ता है। यह नदी कङ्गो नदी की विपरीत दिशा अर्थात् दक्षिण से पूर्व दिशा में बह कर भारतमहासागर में मडागास्कर द्वीप के सामने गिरती है।

आधुनिक भ्रमणकारी लेफ्टेनेण्ट केमारनने कहा है कि कङ्गो नदी जो पश्चिम की ओर बह कर अट्लाण्टिक महासागर में गिरती है और जेम्बेसी नदी जो पूर्व दिशा में बहकर भारतमहासागर में गिरती है इन दोनों नदियों के बीच वाटरशेड या अबूवाहिकाभूमि इतनी थोड़ी है कि जिस साल जलप्लावन बहुत बढ़के होता तब उन के मध्य स्थितभूमि प्रायः अदृश्य होजाती और उन्होंने यह भी कहा कि यदि इनके बीच बीसमील लम्बी एक कनाल वा प्रणाली बनाई जावे तो इन दोनों नदियों में सदाकाल के लिये नावसे जाने आने का मार्ग होसकता है।

जैम्बेसीनगर में विक्टोरियाफाल्सनामी जो जलप्रपात है वह पृथिवी के समुदय जलप्रपातों से बड़ा और चमत्कारी है और अमेरिकास्थित नाइयाग्राफाल्स नाम से प्रसिद्ध जलप्रपातों से अधिकतर सुरूप है।

पश्चिम अफ्रिका की बड़ी प्रसिद्ध और कांगो छोड़ के सब से बड़ी नदी नाइजर है जिसका बेसिन अर्थात् खात महासमुद्र के दक्षिण और गिनि की खाडी के ऊपर में है। इसकी गति बहुत वक्र है इसलिये यह भिन्न २ देशों में भिन्न २ नामों से पुकारी जाती है। मध्य अफ्रिकास्थित टिम्बकटु के समीप यह नदी जलिबा नामसे प्रसिद्ध है और समुद्र के समीप क्वारा वा कोयारा नामसे प्रसिद्ध है। यह जिस देश के बीच से बहती है वह देश समृद्ध, ऊर्वर, विविधशस्य से पूर्ण और जनाकीर्ण है परन्तु वह देश यूरोप वासियों के लिये अच्छा नहीं, बहुत पीडाकर है। इस नदी के किनारे पर रहने वाले नीग्रोलोग नीग्रो जाति के आदर्श स्वरूप हैं इन्में नीग्रोजाति के सम्पूर्ण लक्षण मिलते हैं।

अफ्रिका की पश्चिम सीमापर सिनीगाल, गैम्बिया और रायो ग्राण्ड ये तीन बड़ी नदियें हैं। इन के बीच सिनिगैम्बिया नामी ऊर्वर प्रदेश है। इस देश की प्रकृति नाइजर नदी के तीरस्थितदेशों के समान है। इस देश में यूरोपीय लोगों की बहुत बसतियें हैं परन्तु वहां यूरोपीय लोग प्रायः तापसे मरजाते हैं।

की संख्या आजतक भी अधिक दीख पड़ती है । इन दिनों में प्राचीन बर्बरभाषा के खुदे हुए अक्षर पढ़े गये हैं । बर्बरजातीय मनुष्यों की बसति के कारण देश का नाम बार्बरी हुआ । आल्जीरिया में इन बर्बरों को काबिल कहते हैं । उत्तर आफ्रिका में अरबी लोगों की संख्या अधिक देखी जाती है । वे सब उन मुसलमानों के वंश में उत्पन्न हुए हैं जो अरब से इसदेशको जीतने के लिए आयेथे । उन देशों में अरबीभाषा का व्यवहार बहुत है । मुअर नाम से प्रसिद्ध मनुष्य मिश्रजातीय हैं अर्थात् इनमें से कोई २ तो बर्बर वा प्राचीन निवासियों के वंश में उत्पन्न हुए और कोई २ पूर्वोक्त अरबियों के वंश में से उत्पन्न हुए । मिसर देश में जो कप्टनामी मनुष्यजाति वास करती है, वह मिसर के पुराने निवासियों की सन्तति है । वे लोग एक तरह के ईसाई हैं । इनमें यह एक आश्चर्य है कि इनके पूर्वपुरुषों की प्रतिकृति, जैसी मिसर के प्राचीन कीर्तिस्तम्भों में दीख पड़ती है, इनके आकार भी ऐसे हैं ।

एबीसीनिया के निवासियों में से कोई तो सैमेटिक जाति का है और बर्बर लोगों से बहुत सादृश्य रखते हैं और अब सिह जो "गल्ल" नाम से प्रसिद्ध हैं वे सोमालिजातीय मनुष्यों की नाईं नेग्रोसे सादृश्य रखते हैं ।

आफ्रिका में ऐसे बड़े २ वन्य जीव दीख पड़ते हैं कि उन के सजातीय जीव और किसी देश में नहीं दीख पड़ते । और यह भी स्थिर हुआ है कि ऐसे बहुत वन्यजीव

नाई हैं। नाक मोटा और चपटा है, सिर लम्ब और संकुचित है। ललाट स्फीत होता है और ओंठ बहुत मोटे होते हैं

सहारा मरु से नूबिया के दक्षिण समुद्र देशों में नानाप्रकार के नीग्रो लोग वास करते हैं। केप कालोनी और दक्षिण आफ्रिका में जो काफ्रीजातीय मनुष्य वास करते हैं, उन के आकारादि नीग्रोजातीय मनुष्यों से बहुत मिलते हैं। परन्तु साधारणतः वे लोग उन से कुछ सुदृश्य और थोड़ा होते हैं। उन देशों मे हटेण्टटनामी और एक जातीय मनुष्य भी दीख पड़ते हैं। इन का आकार और मनोवृत्ति ऐसे कुत्सित हैं कि मनुष्यसमाज में उपमा नहीं मिलती। आफ्रिका के पूर्वप्रान्त, जो अरब के सामने सामने हैं, वहां और एबीसीनिया के अग्निकोण में स्थित देशों में 'समालि' नाम से प्रसिद्ध एक जातीय मनुष्य वास करते हैं। यद्यपि इन्का आकार आदि नीग्रो जातीय मनुष्यों से बहुत भिन्न है, तोभी वे उन्हीं की शाखा में गिने जाते हैं।

उत्तर आफ्रिका, बार्बरी प्रदेश मिसर, नूबिया और एबीसीनिया इन देशों में नानाजातीय मनुष्यों की बसति है। उन्में से ककेसियान्तर्गत सेमेटिक जातीय मनुष्य ही अधिक हैं। वे अरबी और यहूदियों से बहुत सादृश्य रखते हैं। यह अनुमान होता है कि यहां के आदिम निवासि लोग बर्बर जातीय थे, क्योंकि उन

आफ्रिका के दक्षिण में आरेञ्ज नाम से प्रसिद्ध
एक बड़ी नदी है। इस नदी के स्रोत में अधिक करके
सोने की कनियां दीख पड़ती हैं और इसी प्रधान के
रदनदी बाल के स्रोत में बड़े २ हीरक खण्ड भी थोड़े
दिन से आविष्कृत हुए हैं।

पूर्वोक्त विक्टोरिया निन्ज़ा अलबर्ट निन्ज़ा और
टेङ्गानिका झीलों के सिवाय अफ्रीका में और भी बड़ी २
झीलें आविष्कृत हुई हैं। जैसा उत्तर आफ्रीका रेती
और पथरी भूमि से पूर्ण है वैसा मध्य और दक्षिण
आफ्रीका की भूमि उर्वर और सजल है। नैयासा झी
ल जिस की लम्बाई २०० मील और चौड़ाई ५० मील
है, जैम्बेसी नदी से मिली हुई है। इसके किनारे पर
मनुष्यों की वसति बहुत घनी है और दासवाणिज्य
का यही प्रधान स्थान है। उत्तमाशा अन्तरीप (केप-
आफ-गुडहोप के समीप गमी नाम से प्र
सिद्ध और एक बड़ी झील है।

ऊपर कही गई झीलें तीस बरस के अन्दर २ आ
विष्कृत हुई हैं। पहिले समय आफ्रिका में केवल
एक ही झील विदित थी जो चांदवा सार नाम से प्रसि
द्ध है यह झील शारजब नदी से मिली हुई है और स
हारा मरु के दक्षिण में है।

आफ्रिका नीग्रो वा काफ्रि जातीय मनुष्यों का आदि
म वासस्थान है। इस जाति के मनुष्यों का वर्ण और
आंखें सम्पूर्ण काली हैं। केश काले और पशम की

गई हैं। नाक मोटा और चपटा है, सिर लम्ब और संकुचित है। ललाट स्फीत होता है और ओंठ बड़त मोटे होते हैं

सहारा मरु से नूबिया के दक्षिण समुद्र देशों में नानाप्रकार के नीग्रो लोग वास करते हैं। केप कालोनी और दक्षिण आफ्रिका में जो काफ्रीजातीय मनुष्य वास करते हैं, उन के आकारादि नीग्रोजातीय मनुष्यों से बड़त मिलते हैं। परन्तु साधारणतः वे लोग उन से कुछ सुदृश्य और योद्धा होते हैं। उन देशों मे हटेण्टटनामी और एक जातीय मनुष्य भी दीख पड़ते हैं। इन का आकार और मनोहत्ति ऐसे कुत्सित हैं कि मनुष्यसमाज में उपमा नहीं मिलती। आफ्रिका के पूर्वप्रान्त, जो अरब के आमने सामने हैं, वहां और ऐबीसीनिया के अग्निकोण में स्थित देशों में 'समालि' नाम से प्रसिद्ध एक जातीय मनुष्य वास करते हैं। यद्यपि इन्का आकार आदि नीग्रो जातीय मनुष्यों से बड़त भिन्न है, तोभी वे उन्हीं की शाखा में गिने जाते हैं।

उत्तर आफ्रिका, बार्बरी प्रदेश मिसर, नूबिया और ऐबीसीनिया इन देशों में नानाजातीय मनुष्यों की बसति है। उन्में से ककेसियान्तर्गत सेमेटिक जातीय मनुष्य ही अधिक हैं। वे अरबी और यहूदियों से बड़त सादृश्य रखते हैं। यह अनुमान होता है कि यहां के आदिम निवासि लोग बर्बर जातीय थे, क्योंकि उन

आफ्रिका के दक्षिण में आरेञ्ज नाम से प्रसिद्ध एक बड़ी नदी है । इस नदी के स्रोत में अधिक करके सोने की कनियां दीख पड़ती हैं और इसकी प्रधान के रद नदी वाल के स्रोत में बड़े २ हीरक खण्ड भी थोड़े दिन से आविष्कृत हुए हैं ।

पूर्वोक्त विक्टोरिया निञ्जा अलबर्ट निञ्जा और टेङ्गानिका झीलों के सिवाय अफ्रीका में और भी बड़ी २ झीलें आविष्कृत हुई हैं । जैसा उत्तर आफ्रीका रेती और पत्थरी भूमि से पूर्ण है वैसा मध्य और दक्षिण आफ्रीका की भूमि उर्वर और सजल है । नैयासा झील जिस की लम्बाई २०० मील और चौड़ाई ५० मील है, जैम्बेसी नदी से मिली हुई है । इसके किनारे पर मनुष्यों की बसति बहुत घनी है और दासवाणिज्य का यही प्रधान स्थान है । उत्तमाशा अन्तरीप (केप-आफ-गुडहोप के समीप गमी नाम से प्रसिद्ध और एक बड़ी झील है ।

ऊपर कही गई झीलें तीस बरस के अन्दर २ आविष्कृत हुई हैं । पहिले समग्र आफ्रिका में केवल एक ही झील विदित थी जो चाडवा सार नाम से प्रसिद्ध है यह झील नाइजर नदी से मिली हुई है और सहारा मरु के दक्षिण में है ।

आफ्रिका नीग्रो वा काफ्रिजातीय मनुष्यों का आदिम वासस्थान है । इस जाति के मनुष्यों का वर्ण और आंखें सम्पूर्ण काली हैं । केश काले और पशम की

जैम्बेसीनगर में विक्टोरियाफाल्सनामी जो जलप्रपात है वह पृथिवी के समस्त जलप्रपातों से बड़ा और चमत्कारी है और अमेरिकास्थित नाइयाग्राफाल्स नाम से प्रसिद्ध जलप्रपातों से अधिकतर सुरूप है।

पश्चिम आफ्रिका की बड़ी प्रसिद्ध और कङ्गो छोड़ के सब से बड़ी नदी नाइजर है जिसका वेसिन अर्थात् खात सहारामरु के दक्षिण और गिनि की खाड़ी के उत्तर में है। इसकी गति बहुत वक्र है इसलिये यह भिन्न २ देशों में भिन्न २ नामों से पुकारी जाती है। मध्य आफ्रिकास्थित टिम्बकटू के समीप यह नदी जलिबा नामसे प्रसिद्ध है और समुद्र के समीप क्वारा वा कोयारा नामसे प्रसिद्ध है। यह जिस देश के बीच से बहती है वह देश समृद्ध, उर्वर, विविधशस्य से पूर्ण और जनाकीर्ण है परन्तु वह देश यूरोपवासियों के लिये अच्छा नहीं, बहुत पीडाकर है। इस नदी के किनारे पर रहने वाले नीग्रोलोग नीग्रोजाति के आदर्श स्वरूप हैं इनमें नीग्रोजाति के सम्पूर्ण लक्षण मिलते हैं।

आफ्रिका की पश्चिम सीमापर सिनीगाल, गेम्बिया और रायो ग्रायड ये तीन बड़ी नदियें हैं। इन के बीच सिनिगेम्बिया नामी उर्वर प्रदेश है। इस देश की प्रकृति नाइजर नदी के तीरस्थित देशों के समान है। इस देश में यूरोपीय लोगों की बहुत बसतियें हैं परन्तु वहां यूरोपीय लोग प्रायः तापसे मरजाते हैं।

की संख्या आजतक भी अधिक दीख पड़ती है। इन दिनों में प्राचीन वर्बर भाषा के खुदे हुए अक्षर पढ़े गये हैं। वर्बरजातीय मनुष्यों की बसति के कारण देश का नाम बार्बरी हुआ। आल्जीरिया में इन बर्बरों को काबिल कहते हैं। उत्तर आफ्रिका में अरबी लोगों की संख्या अधिक देखी जाती है। वे सब उन मुसलमानों के वंश में उत्पन्न हुए हैं जो अरब से इस देश को जीतने के लिए आये थे। उन देशों में अरबी भाषा का व्यवहार बहुत है। मुअर नाम से प्रसिद्ध मनुष्य मिश्रजातीय हैं अर्थात् इन्में से कोई २ तो वर्बर या प्राचीन निवासियों के वंश में उत्पन्न हुए और कोई २ पूर्वोक्त अरबियों के वंश में से उत्पन्न हुए। मिसर देश में जो काप्‌ट नामी मनुष्यजाति वास करती है, वह मिसर के पुराने निवासियों की सन्तति है। वे लोग एक तरह के ईसाई हैं। इन्में यह एक आश्चर्य है कि इन्के पूर्वपुरुषों की प्रतिकृति, जैसी मिसर के प्राचीन कीर्तिस्तम्भों में दीख पड़ती है, इनके आकार भी ऐसे हैं।

ऐबीसीनिया के निवासियों में से कोई तो सेमेटिक जाति का है और वर्बर लोगों से बहुत सादृश्य रखते हैं और अब सिए जो "गल्ल" नाम से प्रसिद्ध हैं वे सोमालिजातीय मनुष्यों की नाईं नेग्रोसे सादृश्य रखते हैं।

आफ्रिका में ऐसे बड़े २ वन्य जीव दीख पड़ते हैं कि उन के सजातीय जीव और किसी देश में नहीं दीख पड़ते। और यह भी स्थिर हुआ है कि ऐसे बहुत वन्यजीव

हैं जो पृथिवी के और २ स्थानों में अधिक दीख पड़ते हैं परन्तु आफ्रिका में नहीं है, जैसा कि आफ्रिका में किसी प्रकार का रीछ नहीं होता। तो यह निश्चय है कि जितने बड़े २ वन्य जीव आफ्रिका में दीख पड़ते हैं इतने और किसी देश में नहीं। यहां यह भी कहना उचित है कि आफ्रिका में केवल भिन्न २ प्रकार के ही ऐसे जीव नहीं रहते बरूक, उन्की संख्या भी अधिक है। किसी २ समय दक्षिण आफ्रिका में कृषासार मृग के झुराड, जिस में २०,००० एकत्र मिले होते हैं, आते हुए देखे जाते हैं। विशेषकर्के जब अनावृष्टि के कारण ये अपने पूर्ववासस्थान छोड़के दूसरे स्थान में जाते हैं।

आफ्रिका के प्रायः सर्वत्र ही हाथी बहुत दीख पड़ते हैं। केवल उत्तर प्रान्त में नहीं। ये हाथी भारतवर्ष के हाथियों के बराबर हैं केवल दांत और माथे में कुछ भिन्नता रखते हैं। पहले रोमन लोग यहां से हाथी लेजाकर युद्ध के लिये तैयार करते थे। क्योंकि उस समय तोप का व्यवहार नहीं था। उस समय भूमध्यसागर के दक्षिण उपकूल में हाथी बहुत परिमाण में रहते थे।

आफ्रिका में गराडार चार प्रकार के हैं जिन्में से दो काले और दो श्वेत वर्ण के हैं, उन्का आकार हिंदुस्तान के गराडारों से बहुत मिलता है। सहारा के दक्षिण इनकी संख्या बहुत है। वे जीव निर्जनप्रिय हैं। हिप्पोपोटेमस, जो एक प्रकार के मोटे चाम वाले बड़े जीव हैं अब

केवल आफ्रिकामें ही दीख पड़ते हैं । इन्का आका-
र और परिमाण गाडरों के तुल्य है, भिन्नता यह है
कि इन्के नाकों से सींग नहीं निकलते, । और नाक
बहुत चौड़ा होता है । ये जीव सर्व्वदा दश बीस एकत्र
रहते हैं । मिसर से केपकलोनी तक जितनी नदियें
हैं । उन सभों में वे दीख पड़ते हैं । वे उद्भिद खाकर
प्राणनिर्वाह करते हैं; और किसी प्रकार के अपराध
के बिना किसी की हानि नहीं करते । पश्चिम आफ्रि-
का में दूसरे प्रकार के सिन्धुघोटक दीख पड़ते हैं ।
प्राचीन समय में समुदय यूरप और एशिया के पश्चि-
म देशों में सिन्धुघोटक बहुत थे ।

आफ्रिका में बड़े २ शूकर हैं जिन्के दांत बहुत स-
रम होते हैं । यहां हिराक्सनामी एक प्रकार के छो-
टे जीव देख पड़ते हैं जिन्की लम्बाई दो फुट से कम
होती है, इन्के दांत और पाद सूअर के बराबर हैं पर-
न्तु इन्की चेष्टा खरगोश की नाईं होती है ।

आफ्रिका में अच्छे सुन्दर गधे मिलते हैं । दक्षिण
आफ्रिका में जाब्रानामक जीव के यूथ बहुत मिलते हैं ।
जाब्रा देखने में एक बड़े गधे की नाईं है, परन्तु इस्का स-
मुदय शरीर बाघ की नाईं काला और श्वेत रोमरेखा से
व्याप्त है । जाब्रा बहुत ही शीघ्रगामी है और बहुत दुः-
ख से पालित होता है । आफ्रिका में और दो प्रकार के
वन्य जीव दीख पड़ते हैं जिन्को ज्यालाजी (भूप्रकृतिवि-
द्या) वालों ने जाब्रा कहा है परन्तु असल में गधे से उन

की बहुत भिन्नता नहीं दीख पड़ती ।

उत्तर आफ्रिका में गृहपालित जन्तुओं में से एक घोड़े ही अधिक देखे जाते हैं जिनमें से बहुत अरबी घोड़ों के तुल्य होते हैं ।

केपकालोनी से भूमध्यस्थसागरपर्य्यन्त समुदय आफ्रिकाखण्ड में सिंह सदैव देखे जाते हैं । थोड़े दिन हुए कि अंग्रेज़ों ने केपकलोनी स्थित अपने अधिकार से समुदय सिंह निकाल दिये हैं ।

आफ्रिका में व्याघ्र नहीं है । यहां चीता वनबिडाल और तज्जातीय छोटे २ जीव बहुत हैं । गीदड़, भेड़िया आदि जीव भी बहुत हैं ।

आफ्रिका में साधारण हरिण नहीं दीखपड़ता पर न्तु यहां जिराफ नाम एकप्रकार का बड़ा जीव है जिसका आकार हरिण से बहुत सादृश्य रखता है । जिराफका शरीर एक लम्बे हरिण की नाईं है । भिन्नता यह है कि उसका सम्मुख भाग ऊंचा और पिछला भाग नीचा होता है । इसका शिर भी हरिण की नाईं है परन्तु कण्ठ बहुत लम्बी है, इतनी कि यह बीस फ़ुट ऊंचे वृक्ष से भी पत्र खासक्ता है । यह जीव बहुत धीर, और हरिण की नाईं स्वभाववाला भी है । न्यूबिया से केप कलोनीतक यह जीव रहता है विशेषकरके पूर्व आफ्रिका में इनकी संख्या बहुत है । पृथ्वी पर इसके बराबर और कोई जीव देखने में नहीं आता

ऊंट, जिसे मरु का जहाज कहते हैं, इसका अवदा-

व समुद्दय उत्तर आफ्रिका में होता है; और पश्चिम के द्वीपों (कनेरी) में भी इसका व्यवहार होता है ।
ऊंट की यह एक विचित्र शक्ति है कि यह पानी पीने से बिना ही मरुभूमिस्थित कठिन कंटकवाले जंगलों के पत्रादि खाकर बहुत दिन चलसक्ता है ।
यह प्रचण्ड सूर्य्य की किरणों से उत्तप्त बालू और पत्थरों में अनायास से जाता है ।

कृष्णसारमृग, भारतवर्ष के केवल शुष्क प्रदेशों में दीख पड़ते हैं, परन्तु आफ्रिका इनका प्रधान वासस्थान है । आफ्रिका में इस जाति के मृग असंख्य और नाना प्रकार के दीख पड़ते हैं । प्राकृतेतिहास में अनभिज्ञ लोग कालासार वा कृष्णसार को हरिणजातीय समझते हैं, किन्तु असल में वे एक प्रकार के छाग जातीय हैं । आफ्रिका में एलण्ड नाम से प्रसिद्ध एक प्रकार का काला सारमृग है जो कि बैल के बराबर होता है । कालासार मृग के यूथ विशेषकर के दक्षिण आफ्रिका में बहुत दीख पड़ते हैं ।

छाग, भेड़ा और बैल आफ्रिका के पशुओं में से प्रधान हैं । केप में महिष ऐसे भयङ्कर हैं कि उन को कोई भी नहिं पालसक्ता । वे ऐसे बलवान होते हैं कि सिंह से लड़सक्ते हैं ।

आफ्रिका में बांदर नानाजाति के और असंख्य हैं परन्तु उनमें से हम दोजातीय बांदरोंका विशेष वर्णन करेंगे, जो कि मनुष्य से अधिक सादृश्य रखते हैं । उनमें

से चिम्पैन्ज़ि नामक एक प्रकार का बांदर है उस्का रंग काला होता है । यह पांच फ़ुट ऊंचा होता है । आफ़्रिका के पश्चिम उपकूल और गबून नदी के किनारे पर वे असंख्य दीख पड़ते हैं । इन्की बुद्धि असाधारण है । दूसरे को गोरिला कहते हैं जो मनुष्य से निहायत सादृश्य रखता है । इस का बल असीम है। काङ्गो नदी के किनारे पर इस जाति के बंदर बहुत हैं । गिनी में मैण्ड्रिल नामी एक प्रकार का बांदर है । जिस्का मुंह कुत्ते के बराबर है और चिबुक की हड्डी नील रङ्ग की है, और नासिका लाल है । हिन्दुस्तान में इस प्रकार के बंदरों को कभी २ खिलाने के लिये जाते हैं।

आफ़्रिका में पक्षी भी बहुत बड़े २ और नानाजाति के हैं । उनमें से उष्ट्रपक्षी बड़ा प्रसिद्ध है । यह ४ से ६ फ़ुट तक ऊंचा होता है । यह उड़ नहीं सक्ता, परन्तु ऐसा दौड़ता है कि बड़े वेगवाले घोड़े से भी पकड़ा नहीं जाता। पेरिस नगर में धनी लोग लड़कों की गाड़ी चलाने के लिए इस जाति के पक्षी को पालते हैं । इस्का पर भी बहुत काम में आता है ।

आफ़्रिका में नानाजातीय बड़े २ सर्प देखे जाते हैं, उनमें से कोई २ विषवाला और कोई विष से रहित होता है । आफ़्रिका में असंख्य और नानाप्रकार के कीड़े पतङ्ग और सरीसृप देखे जाते हैं । आफ़्रिका में एक प्रकार की ऐसी मक्खी है कि जिस्के डसने से घोड़े बैल आदि गृहपालित जीव प्रायः मर जाते हैं ।

आफ्रिका में कितने प्रकारके उद्भिज्ज हैं ये अब तक सम्पूर्ण विदित नहीं हुए और जो विदित हुए उनकी प्रकृति भी ठीक २ नहीं जानीगई ।

आफ्रिका की दक्षिण सीमा छोड़कर और समुदय स्थानों में चावल उत्पन्न होते हैं । आफ्रिका के दक्षिण भाग में तालवृक्ष अधिक होते हैं । आफ्रिका के उत्तर में खजूर का वृक्ष बहुत होता है और वहां के रहने वालों के खाद्यों में यही प्रधान है । आफ्रिका में अयनमण्डल के बीच जितने देश हैं, उन सबों मे प्रायः हिन्दुस्तान के समुदय वृक्ष अधिक परिमाण से बोए जाते हैं । और आमली और रूई के वृक्ष प्रायः सर्वत्र ही दृष्ट होते हैं । उत्तर आफ्रिका में भूमध्यस्थ समुद्र के किनारे पर यूरप के दक्षिणदेशस्थित वृक्षसमुदय मिलते हैं । आफ्रिका के दक्षिण अयनमण्डल के बहिःस्थित देशों में अनेकप्रकारके फूलों के वृक्ष मिलते हैं जो कि हिन्दुस्तान में नहीं दीख पड़ते । यहां गोपारयनाम से प्रसिद्ध एक प्रकारका वृक्ष है जिसका तीर, दूध के सदृश होताहै । इनके सिवाय यहां और भी नानाविध वृक्ष उत्पन्न होते हैं । जैसा मेहगनि, सेखन, बाबल इत्यादि

पहिले पहिल आफ्रिका में दास व्यापार विस्तृत था परन्तु आजकल अंग्रेजों कीकृपा से बहुत कम होगया ।

आफ्रिका में सोना, ताम्बा, हीरा आदि बहुत प्रकार

के खनिज धातु मिलते हैं ।

आफ्रिका के प्रदेशों में से केवल समुद्र के किनारे, पर स्थित कोई एक प्रदेश और द्वीपों की अवस्था कुछ विदित हुई है जिन का नाम नीचे, उत्तर पश्चिम दिशा से आरम्भ कर, क्रम से लिखा जाता है ।

(१) मोराक्को (२) अलजीरिया (३) ट्यूनिस, त्रिपोली बारका (ये तीन देश बार्बरीप्रदेश नाम से प्रसिद्ध हैं)। (४) मिसर, न्यूबिया, (५) ऐबिसीनिया (६) जेञ्जीबार (७) मोजांबिकी (८) केप कालोनी (९) बेंगएला, काङ्गो, लाङ्गो (१०) गीनी (११) आफ्रीका द्वीपसमूह ।

मोराक्को

यह प्रदेश अटलांटिक समुद्र के किनारे से अटलास पर्वत तक विस्तृत है । यह देश उर्वर और मनुष्यों से पूर्ण है । यहां की मनुष्यसंख्या ४,०००,००० के लगभग है, जिनमें से मुअर, अरबी और बर्बर जाति मिले हैं । इसकी प्रधान राजधानी मोराक्को जिसमें ५०,००० मनुष्य रहते हैं । इस देश में चावल, अंगूर, गेहूं, रुई, तमाकू इत्यादि बहुत उत्पन्न होते हैं । यहां के राजा को सुल्तान कहते हैं । यह बड़ा यथेच्छाचारी है । यहां अटलास पर्वत १०,००० फुट ऊंचा है और उसपर सुन्दर वन शोभायमान है । इस पर्वत के दक्षिण पूर्व में क्रम से नीचे होकर सहारा के बालू में मिलगये हैं। इसकी उपत्यका में खजूर वृक्ष बहुत हैं, । इसलिये इसे खजूरकी भूमि कहते हैं ।

अलजीरिया

यह राज्य मोराक्को के पूर्व में है । प्राचीन काल में यह देश न्यूमिडिया नाम से प्रसिद्ध था । ख्रष्टीय सोलहवीं सदी में तुरष्क का सुल्तान इसे अपने अधिकार में लाया ।

१८३० ई० तक यह राज्य मुसलमानों के अधिकार में रहा । उस समय मुसलमान यथेच्छाचार शासन कर्त्ता रहा । तब इसकी अवस्था शोचनीय रही और यहां के लोग समीप के समुद्र में डाकू मारते रहे । १८३० ई० में सौभाग्य के वश से यह देश फरासीस के अधिकार में आया । इसकी राजधानी अलजियर्स जो देखने में यूरोपीय नगरों के सदृश है । इसमें और चार प्रधान नगर हैं । यथा—बयाने, ट्रिमिजन, बोन और कन्सटान्टिया ।

इस देश का प्राकृतिक आकार मोराक्को जैसा है । भेद यह है कि मोराक्को के पश्चिम में समुद्र है और इसके उत्तर में । अलजीरिया के दक्षिण में अटलासपर्वत की श्रेणी चली आती है और उसपर खजूर वृक्ष की श्रेणी तड़ागी की नाईं शोभा पाती है । आजकल अलजीरिया में २००,००० यूरोपीय मनुष्य वास करते हैं जिनके बीच फरांसीसों की संख्या अधिक है । और यहां ३,०००,००० कृष्णवर्ण मनुष्यों का वास है । इसकी राजधानी में ६०,००० मनुष्य वास करते हैं । अब फरांसीसलोगों के सुनियम से यहां पर कई

और पशम के कारखानों ने बहुत उन्नति पाई है और नमक की खाने निकाली गई हैं ।

ट्यूनिस, त्रिपोली और बारका

ट्यूनिस—अलजीरिया के पूर्व में है । यह देश एक प्राय द्वीप है । इसकी उत्तरसीमा 'वन' अन्तर सिसिली द्वीप से ४५ कोस के बीच में है । यह देश मुसलमान के अधिकार में है और इसके स्वामी को 'बे' कहते हैं ।

मुसलमान अधिकारों में से यहां की शासनप्रणाली बहुत अच्छी है । इसका राजा नाममात्र कुस्तुन्तुनिया के सुल्तान के अधीन है परन्तु वास्तव में यह स्वाधीन है । यहां के रहने वालों की संख्या २,०००,००० हैं । यहांभी अटलास पर्वतश्रेणी खजूर हलों से आच्छन्न होकर विस्तृत हुई है । इसकी राजधानी ट्यूनिस नाम से प्रसिद्ध है । उस के समीप फिनिसीय राज्य का प्रधान नगर कार्थेज का खण्ड दीख पड़ता है ।

त्रिपोली—ट्यूनिस के पूर्व में है । बरका इसराज्य के अन्तर्गत है । यह देश देखने में ऊपर कहे हुए तीन राज्यों से सम्पूर्ण भिन्न है क्योंकि यहां अटलासपर्वत सहारे के रेतों में मिल गया है । इसलिये त्रिपोली और बारका राज्य श्वेतवालुका समुद्रवत् प्रतीयमान होता है । और अरब के लोग इन्हें श्वेतसमुद्र कहते हैं । इनमें खेती बहुत थोड़ी होती है । ये दोराज्य किसी एक मुसलमान पातशाके अधीनहैं । इसकी राजधानी त्रिपोली है ।

मिसर और न्यूबिया

मिसर देश नील नदी के दोनों पुलिन पर स्थित है और चारों ओर पर्वत से वेष्टित है। इसकी चौड़ाई सर्वत्र प्रायः सात मील है। इस के सीमन्तपर्वत किसी स्थल में नदी से ११ ग्यारह मील दूरी पर हैं और किसी स्थल में नदीतट निहायत समीपवर्त्ति है। मिसर का जो खण्ड नील नदी के पश्चिम किनारे पर है उसमें बड़े २ शहर बसे हुए हैं। इसके उत्तर में भूमध्यस्थसागर, पूर्व में स्वेज का मुहाना और लालसमुद्र दक्षिण में न्यूबिया और पश्चिम में लिबिया और बारका। हर साल नदी के प्रवाह से समुदय देश प्लावित होने का कारण क्षेत्रसमुदय कृषि के उपयोगी होते हैं। इस लिये इस देश को 'नदीमातृक' कहते हैं। यहां वर्षा नहीं होती॥

मानचित्र वा नक्शे में मिसरदेश की चौड़ाई सात मील से अधिक देख पड़ती है परन्तु समुदय देश मनुष्य का वासोपयोगी नहीं है। नील नदी की संकीर्ण (कम चौड़ी) पुलिनभूमि और छोटे २ ओएसिसनाम से प्रसिद्ध क्षेत्रों के सिवाय समुदय मिसरदेश बालुका से पूर्ण मरुभूमि है।

मरुभूमि के बीच जो दूर्वा दल श्यामल, शस्यपूर्ण ऊर्वर क्षेत्र दृष्ट होते हैं, उन्हीं को 'ओएसिस' कहते हैं। समुद्र के बीच द्वीप सकल जैसे शोभित होते हैं मरुभूमि के बीच ओएसिस भी वैसे ही हैं। उन ओएसिस क्षेत्रों

में से 'सिश्रोया' बहुत प्रसिद्ध है । यह क्षेत्र नील नदी के तीर पर स्थित 'वेनिसाउयफ' नगर से ९८ कोस पश्चिम में है । यहां जुपिटर श्रामान नामक देवका एक मन्दिर था ।

नूबिया, मिसर की दक्षिण सीमा से ऐबीसीनिया तक, विस्तृत है । यह देश मिसर के अधिपति खेदिव के अधीन में है यहां नीलनदी दो पर्वतों के बीच बड़े वेग से बहती है । मिसर श्रौर नूबिया के बीच एक बड़ा जल प्रपात है । यही प्रथम प्रपात है । श्रौर इसी प्रपात से उन की भाषा भिन्न हुई है । क्योंकि मिसर के लोग अरबी, भाषा बोलते हैं श्रौर नूबिया के लोग बर्बरी भाषा बोलते हैं । नूबिया के बीच पांचवें जलप्रपात तक नील नदी एक रूप से बहती है, श्रौर यहां भी थोड़ी भूमि मनुष्य के वासोपयोगी श्रौर खेती के योग्य है।

यूरोप के ऐतिहासिकों के मत में पृथिवी में एकमात्र मिसरदेश के इतिहास ही बहुत प्राचीन काल से मिलते हैं । इस्से २००० वर्ष पहिले के इतिहास अद्यापि वर्त्तमान है । उस प्राचीनकाल में इस राज्य का प्रताप बड़ा प्रबल था । श्रौर उसी समय बड़े २ मन्दिर श्रौर पिरामीड समूह इस देश में बने थे, जिस्के खण्ड अबतक विद्यमान हैं । इन पिरामीडों में से कोई २ त्रिकोण, कोई चतुष्कोण, कोई २ इस्से भी अधिककोणविशिष्ट है । वे सब इष्टिका खण्ड की नाईं क्रमशः सूक्ष्म होकर उत्थित हुए हैं । वे ऊंचे लम्बे बड़े २ पत्थरों से बने हुए हैं । मिसर के अधिप-

ति को खेदिव कहते हैं । यह खेदिव नाममात्र से कुस्त-न्तुनिया के सुल्तान के अधीन है परन्तु वास्तव में यह सम्पूर्ण स्वाधीन है ।

मिसर में नानाजातीय मनुष्यों की वसति है । उनमें से अरब, कप्ट, तुरक्क, यहूदी और बारबर ये ही प्राचीन अधिवासी हैं । वे सब मुसलमान धर्म्म मानते हैं । यहां अपरजातीयमनुष्य यथा अंग्रेज, फरासीस और जर्म्मनप्रभृति वाणिज्यादि कार्य्य के लिये बसे हैं । मिसर में मनुष्यसंख्या ४,०००,००० और नूबिया में ३,०००,००० । मिसर देशीयों के अवयव अरब वालों की नाईं हैं और इन दोनों देशों के मनुष्य हीं अधिक करके इन्द्रिय के अधीन होते हैं ।

कुछ दिन हुए कि मिसर के खेदिव ने फरासीस इञ्जिनीयरों के द्वारा स्वेज को काट कर मुहाना बनाया था। जिस से जहाजों के जाने आने में बहुत सुगमता हुई ।

मिसर की राजधानी कैरो नगर जो नील नदी के पूर्व किनारे पर बसा हुआ है । यह नगर आफ्रिका के समुदय नगरों में से विस्तृत है । यहां ३५०,००० मनुष्यों का वास है । यहां इतनी बड़ी २ मसजिदें देखी जाती हैं कि जिन्के समान पृथिवी में और कहीं नहीं । सिकन्द्रिया मिसर का एक प्रधान नगर और बंदर है । यह नगर नील नदी के मुख पर स्थित है । इसमें २,०००,००० मनुष्य रहते हैं । इस नगर को बड़े सिकन्दर ने २००० बरस हुए बनाया था । २ यह नगर सौ बरस तक

पृथिवी के प्रधान नगरों में से गिनाजाताथा। इसमें क्लियो पेट्राका निडेल' और 'पम्पि का पिलर' नामक दो बड़े स्तम्भ हैं। यहां से स्वेजतक एक रेल की सड़क भी बनी है। और स्वेज से कैरो तक दूसरी रेल की सड़क भी बनी है। इनके सिवाय सम्पूर्ण आफ्रिका में और कहीं रेल नहीं है। केवल केप कलोनी में एक छोटी सी सड़क है। मिसर में डामियेटा रसेटा सायद और स्वेज़ ये सब नगर भी बड़े प्रसिद्ध हैं।

न्यूबिया की राजधानी खार्तुम इसमबाकोका ईस्माम्बुल और मेराटीप्रभृति और भी प्रधाननगर हैं न्यूबिया अब मिसराधिप की अधीनता में आया है।

मिसर और न्यूबिया इन दोनों देशों में ग्रीष्म बड़ा है और दोनों में ही एक प्रकार के शस्य उत्पन्न होते हैं।

ऐबीसीनिया

यह न्यूबिया के दक्षिण और लाल समुद्र के दक्षिण पश्चिम कोण में है। ऐबीसीनिया एकविस्तीर्ण अधित्यका में स्थित है। इसके अग्निकोन इतने २ ऊंचे पर्वत हैं कि उनके शिखरोंपर सदा ही बरफ जमी रहती है। ऐबीसीनिया उच्चभूमि है इसलिये इस की प्रकृति मिसर और न्यूबिया से सम्पूर्ण विभिन्न है। यहां वैशाख से आश्विन तक वृष्टि बहुत होती है जो वृष्टि नील नदी के परीवाह का हेतु है।

ऐबीसीनिया में भी नानाजातीय मनुष्य वास करते हैं। इसके प्राचीन अधिवासियों का आकार यूरोपीयों से बहुत सादृश्य रखता है। मनुष्यवंश निर्णय करने वाले पण्डित लोग कहते हैं कि, ऐबीसीनिया के प्राचीन अधिवासी लोग फारसकी खाड़ी के तीर से यहां आए होंगे। और वे यह भी कहते हैं कि वे लोग ही आफ्रिका में सबसे पहिले सभ्य हुए। और मिसर के लोगों ने उन्से सभ्यता सीखी। परन्तु आज कल इस देश में किसी प्रकार की सभ्यता का चिन्ह नहीं देखा जाता। जब रोमसाम्राज्य नष्ट होकर कुस्तन्तुनिया में साम्राज्य स्थापित हुआ, तब ऐबीसीनिया के लोग खृष्टधर्म में दीक्षित हुए। अब तक भी यहां के लोग ईसाई हैं। उन के अतिरिक्त यहां अरब के मुसलमान, यहूदी और नीग्रोलोग रहते हैं। १८६७ ई॰में ऐबीसीनिया के राजा ने अपनी कितनी एक अंग्रेजी प्रजाको कैद किया था तब लार्ड नेपियर की अधीनता में अंग्रेजी सैन्य इस पर चढ़ाई के लिये भेजा गया। उसी साल इसका राजा अंग्रेजों से लड़कर मर गया और समुदय झगड़ा भी मिट गया परन्तु उसी दिन से यहां कोई निश्चित राजा नहीं और यह देश अंग्रेजों के अधीन है। ऐबीसीनिया में मनुष्य संख्या ४,०००,००० है।

ऐबीसीनिया में झीलें बहुत हैं। उनमें से बहर जाना वा डेम्बिया झील बहुत प्रसिद्ध है। इस ऐबी-

सीनियादेश को हबश भी कहते हैं ।

जैञ्जिबार

यह देश निरक्षरेखा पर और एक मुसलमान सुल्तानके अधीन है । पहिले यह दासव्यवसाय का एक प्रधान विपणीस्वरूप था । यहां से दासलोग अरब में भेजे जाते थे । यहां का उपकूल बहुत उष्ण और आर्द्र है । यह देश समुद्र के किनारे से क्रम से ऊंचा होकर अन्त में २०,००० फुट उच्च पर्वतरूप से परिणत हुआ है । पृथिवी में इस्के सदृश सुन्दर प्रकृति का देश और नहीं परन्तु इस्के अधिकारियों के दोष से यह बहुत हीनावस्थामें है ।

मोजाम्बिकी

यह देश जैञ्जिबार के दक्षिण में है और इसकी प्रकृति और आकार भी जैञ्जिबार की नाईं अर्थात् उपकूलभाग उष्ण और आर्द्र है । इसमें पहिले पोर्तुगीज़ लोगों का अधिकार बहुत था परन्तु अब बहुत थोड़ा होगया । उनके अधिकार में अब तक भी दास का वाणिज्य चला आता है ॥

दक्षिण आफ्रिका और केपकोलोनी आदि ।

आफ्रिका की दक्षिण सीमामें दृष्टि नहीं होती इसलिये यह प्रदेश बड़ा शुष्क है । आफ्रिका के दक्षिण प्रान्तसे समुद्रतीर से पश्चिम की ओर ३२० कोस जाने पर एक खाड़ी देखी जाती है, जिस्को डेल्लाविस की खाड़ी कहते हैं । कल्पित रेखा मान कर भूगोल वेत्ताओंने दक्षिण

आफ्रिका की उत्तर सीमा निश्चित की है । दक्षिण आफ्रिका में यद्यपि औरेञ्ज आदि नदियें नकशे में लिखी गई हैं तौभी यहां सदैव अनावृष्टि की सम्भावना रहती है । यहां की जल पवन उष्ण है । यहां गेहूं, दाखा और अपर यूरोपीय फल भी उत्पन्न होसके हैं। दक्षिण आफ्रिका में केप कालोनी और नेटल ये दो प्रदेश प्रसिद्ध हैं ।

केपकालोनी – यह प्रदेश औरेञ्ज नदी के दक्षिण से दक्षिण आफ्रिका की दक्षिण सीमा तक विस्तृत है । जब बहुतेरे मनुष्य इकट्ठे होकर एक देश से दूसरे देश में जाकर बसते हैं उसे हिन्दी में उपनिवेश और अंग्रेजी में कलोनी कहते हैं । पहिले डच वा ओलन्दाज लोगों ने आफ्रिका के इस प्रान्त पर आकर कालोनी अर्थात् उपनिवेश का स्थापन किया था इसलिये इस प्रदेश का नाम कालोनी है । और प्रसिद्ध उत्तमाशा अन्तरीप (केप आफ गुडहोप) इसके अन्तर्गत है इसलिये इस स्थान को केप कालोनी कहते हैं क्यों कि अंग्रेजी में अन्तरीप को केप कहते हैं । हिन्दी में इस स्थान को अन्तरीप उपनिवेश कहा जा सक्ता है ।

१८०६ ई॰ से यह स्थान अंग्रेजों के अधिकार में आया । यहां अब तक भी बहुत डच लोग वास करते हैं । यहां के डच लोग देखने में बहुत सुन्दर हैं। कोई २ दीर्घाकार बड़े बल शाली हैं । २००,०००

श्वेत मनुष्य रहते हैं। यहां के आदिम अधिवासियों को हटेण्टट कहते हैं। वे लोग काले और देखने में चीनदेशीयों की नाईं होते हैं। परन्तु यहां के यूरपियों के अत्याचार से इन की संख्या आजकल बड़ुत कम होगई है। केपकालोनी में १०,०००,००० भेड़ें और बैल ७००,००० इतने हैं। यहां का प्रधान नगर केपटौन है जिस में २५००० मनुष्य रहते हैं।

केप कालोनी के आस पास और छोटे २ उपनिवेश भी स्थापित किए गये जिनमें से नेटल प्रधान है। नेटल काफ्रियादेश में स्थित है। इसमें ५०,००० यूरोपीय और २५०,००० काफ्रीलोग रहते हैं। सम्प्रति यहां बड़ुत हीरे की खानें आविष्कृत ऊई हैं। नेटल की जल वायु अच्छी है। यहां रूई, इक्षु काफी, गेंडु और बुट्टा उत्तमरूप से उत्पन्न होते हैं।

१८७९ में यहां के देशियों से अंग्रेजों की लड़ाई प्रारम्भ ऊई जिस में फरासीस सम्राट का एकमात्र पुत्र मारा गया। इन के सिवाय और समुदय उपनिवेश स्थान बड़ुत छोटे २ हैं। ग्रिक्वालैण्डवेष नामक स्थान अब अंग्रेजी गवर्न्मेण्टके अधीनऊआ है

नै हूला कांगो, लांगो, . गो।

सहारा मरु के वायुकोण से लेकर आयाफ्रिसकी खाड़ी तक विस्तृत अट्लाण्टिक समुद्र के उपकूल भाग को पश्चिम आफ्रिका कहते हैं॥ इस पश्चिम आफ्रिका के दो अंश हैं (१) सिनिगेम्बिया अ-

प्रांत जिसके बीच सिनिगल और गेम्बिया नदी बहती है। दूसरे भाग को गिनि कहते हैं। यह गिनि भी दो अंश में विभक्त हुई। एक दक्षिण गिनि दूसरी उत्तर गिनि। इन्में से दक्षिण गिनि के अन्तर्गत ऊपर कहे हुए तीन प्रदेश हैं बेंगूला, कांगो और लांगो अंगो। इन तीन प्रदेशों को पहिले पोर्तुगीज ने अधिकार में लाये परन्तु अब इनके अधिकार में केवल दो तीन छोटे २ शहर और दो तीन वाणिज्योपयोगी स्थान हैं जो परस्पर दूरवर्त्ती हैं। उन्के व्यापारों में से कोई न्यायानुगत है, कोई न्यायविरुद्ध है जैसा दास व्यवसाय इत्यादि।

ये सब देश अतिशय उष्ण हैं। यहां का पवन सजल है और भूमि बहुत उर्वरा है, परन्तु यहां यद्यपि पोर्तुगीज़ लोग २५० वर्ष तक राज्य करते हैं तो भी कुछ उन्नति नहीं दीख पड़ती।

गिनि उपकूल
वा
उत्तर गिनि।

यह उपकूल भाग २,००० मील विस्तृत है और सर्पकुण्डल की नांई वक्राकृति है। लोग समझते हैं कि इसका सम्पूर्ण अंश अंग्रेजों के अधिकार में है परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं। केवल इस के अन्तर्गत कोई एक भिन्न २ देशों में अंग्रेजोंका अधिकार है। इस के अन्तर्गत सियरालियोन, दासोपकूल, आशाण्टि,

डहोमि, बेनिन और वियाफ्रा ये प्रदेश हैं। इनमें से सिरालियोन सब से प्रधान है और इसमें ५०,००० मनुष्य रहते हैं। इंगलण्ड से इस उपकूल का वाणिज्य चलता है विशेष करके नारिकेल तेल का।

इस उपकूल में लिब्रिया नामक स्थान बड़ा प्रसिद्ध है। यह देश सिरालियन और केप ग्राम के मध्य में है। यह देश स्वाधीन है और यहां की राजनीति भी स्वाधीनतन्त्र है। आमेरिका से छुड़ाए हुए नीग्रो (दास) लोग यहां भेजे जाते हैं। यहां उन को भेजने के तात्पर्य्य दो हैं। पहिला कि वे लोग अपनी पैत्रिक भूमि में आकर वास करें, दूसरा कि इनके द्वारा आफ्रिका में सभ्यता का विस्तार हो। क्योंकि दासता से छुड़ाए हुए नीग्रो लोगों में से बहुत से सुशिक्षित और न्यायपरायण होते हैं। यह स्थान १८४७ ई॰ में स्थापित किया गया, परन्तु इतने अल्पकाल में इसकी उन्नति अधिक हुई देख कर इसके चारों ओर के लोग इसी अधीनता में रहना चाहते हैं। आज कल यहां की मनुष्यसंख्या ७२०,००० है, जिनमें से ५-१९००० आमेरिका से छुड़ाए नीग्रो दास हैं। इसके प्रधान नगर का नाम मन्रोभिया है।

लिब्रिया के पूर्व और गिनि की खाड़ी के उत्तर में स्थित उपकूल को स्वर्णोपकूल (गोल्डकोष्ट) कहते हैं। इसके अन्तर्गत दो स्वाधीन नीग्रो राज्य हैं। और दोनों ही अधिक असभ्यावस्था में हैं। इनमें से एक आ-

शान्टी राज्य जिस्का प्रधान नगर 'कोमासी' है सन् १८७३ में इसपर अंग्रेज़ों ने चढ़ाई की और इस्के प्रधान नगर को जला दिया। दूसरा डहोमि जिस्का प्रधान नगर अबोमि है। यह इसलिये प्रसिद्ध है कि यहां के राजा के दो हज़ार सशस्त्र स्त्री शरीर रक्षक हैं, जिन को आफ्रिका में आमेज़न (योद्धास्त्री) कहते हैं।

सूदनराज्य

आफ्रिका के मध्य में सूदनराज्य है। यहां के रहनेवाले इसे टक्र कहते हैं। यूरोपीय लोग इसे सूदन वा नेग्रोसिया कहते हैं। इस्के उत्तर में सहारा, पूर्व में मिसर आदिदेश, दक्षिण में चंद्रपर्वत और पश्चिम में सिनिगाम्बिया और उत्तरगिनि है।

इस में काफ्रिजातीय लोग रहते हैं। सूदन में साकाटू, टिम्बकटू, फराडु, बुसा, कोना, कुका और सिगोवे प्रधान नगर हैं। यहां की जलपवन बड़ी उष्ण है। और यहां ग्रीष्म और वर्षा ये दो ऋतु बड़ी प्रधान हैं।

आफ्रिका द्वीपसमूह

आफ्रिका के समीप जितने द्वीप हैं वे सब प्रायः क्षुद्राकार हैं। उन्में से मेडागास्कर बड़ा है। यह द्वीप ब्रिटन से भी विस्तृत है और उस से दुगुने मनुष्य यहां रह सक्ते हैं, किसी २ भूगोल में इस्की लम्बाई ४६० कोस और चौड़ाई १९० कोस लिखी है।

यह पृथ्वी के समुदय प्रसिद्ध द्वीपों में गिनाजाता है। यह द्वीप सम्पूर्णरूप से स्वदेशीय के अधिकार में है। यहां के प्राचीन रहनेवाले नीग्रजातीय हैं और होवस जातीयमनुष्य जो मालयवंशीयों से बहुत सादृश्य रखते हैं, यहां पर राज्य करते हैं। यहां के मनुष्यों की संख्या ५,०००,००० है। इस की उत्तर सीमा से दक्षिण सीमा तक विस्तृत एक पर्वत है जिस्की ऊंचाई १०,००० फुट है। इस में अनेक प्रकार की खेती होती है। यहां बहुतेरे वृक्ष और पशु ऐसे हैं कि जो और देश में नहीं दीख पड़ते। इस्का प्रधान नगर टैनेनैरिवो वा टामाटेव।

मैडागास्कर के समीप ही मरिसस और बोरबों नाम दो क्षुद्र द्वीप हैं। उनमें से मरिसस अंग्रेजों के अधिकार में है और बोरबों फरासीसों के अधिकार में है। मरिसस पर्वताकीर्ण और बन्धुर है। इसमें ३,०००,००० लोग रहते हैं। और यहां के औपनिवेशिक लोग चीनी कारखाना करते हैं। बंगाले से यहां बहुत कुलीलोग और उनके खाने के लिये चावल भेजे जाते हैं, और इसलिये यह द्वीप क्षुद्र होकर भी कलकत्ते में बहुत प्रसिद्ध है। मरिसस और बोरबों ये दोनों ही देखने में बहुत सुंदर हैं दोनों ही ऊर्वर है। बोरबों में एक ज्वालामुखी पर्वत है जिससे प्रायः सर्वदाही अग्नि निकलती है। मरिसस में आबलूसप्रभृति बहुमूल्य वृक्ष उत्पन्न होते हैं।

केप वर्डद्वीपसमूह—ये द्वीप पोर्तगीज़ों के अधिकार में हैं। यहां गर्मी बहुत होती है इसलिये यहां खेती नहीं होती। यहां से लवण और छागचर्म और देशों में भेजे जाते हैं। मैकैरोनेसीय द्वीपसमूह जिसके अन्तर्गत तीन द्वीपसमूह हैं उनमें से कानेरी द्वीपसमूह और मेडीरा द्वीपसमूह यूरोप के बीच गिने जाते हैं। वे द्वीपसमूह अटलांटिक समुद्र के मध्यस्थित ज्वालामुखी पर्वत के शिखर स्वरूप हैं। इसलिये यहां की भूमि ऊर्वर है। अतिअल्पकाल व्यतीत हुआ कि कानेरी के ज्वालामुखी पर्वत से आग निकलने लगी। इसमें टेनेरिफ का पहाड़ सब से ऊंचा है उसकी ऊंचाई १२००० फ़ुट है। कानेरी द्वीपसमूह स्पेन के अधिकार में है। यहां बहुत अच्छी २ शराब बनती है। इसकी राजधानी सान्टा-क्रुज़। मेडीरा द्वीप पोर्तगीज़ों के अधिकार में है। यह द्वीपसमूह देखने में बहुत सुन्दर है। यह द्वीप मदिरा नामक मद्य के कारण प्रसिद्ध है। आजोर द्वीपसमूह कुछ उत्तर में है, इसलिये वहां मेडीरा से कुछ शीत का प्राबल्य है। ये द्वीपसमूह अच्छी २ नारंगी के कारण प्रसिद्ध है। यूरप में अज़र की नारंगी सेण्ट माइकेल नाम से पुकारी जाती है क्यों कि इन द्वीपसमूहों में सेण्ट मीकेल नाम द्वीप बड़ा है

फेरो द्वीप—यह प्राचीन धरती की पश्चिम सीमा पर है। सेण्ट हेलीना—यह द्वीप बहुत छोटा और

पर्वतमय है यहां फरांसीस सम्राट् नेपोलियन बन्दी हुआ था ।

आस्ट्रेलिया

आस्ट्रेलिया की लम्बाई पूर्व से पश्चिम तक २२०० मील है और इसकी चौड़ाई उत्तर से दक्षिण तक २००० मील है । इसलिये हिंदुस्तान से तिगुना है और समुद्र यूरोपके $\frac{3}{4}$ अंश के तुल्य है ।

आष्ट्रेलिया का एक तृतीयांश उत्तरायन वृत्त के बीच, इसलिये उस अंश की प्रकृति हिंदुस्तान की नाईं है । यहां नवम्बरसे गर्मी होती है उस के पीछे दिसम्बर जनवरी और फेब्रुआरी इन तीन महीनों में वर्षा होती है और उस समय देश की प्राकृतिक अवस्था ऐसी होती है जैसी वर्षाऋतु में कलकत्ते की होती है । आष्ट्रेलिया के बाकी दो अंश उष्णमण्डल के बीच हैं और इस अंश को दक्षिण आष्ट्रेलिया कहते हैं । यूरप के दक्षिणभाग की प्रकृति जैसी है, इस अंश की प्रकृति भी वैसी ही है इसलिये यहां अंग्रेज लोग इकट्ठे होके निवास करते हैं ।

आष्ट्रेलिया ऐसी एक अलांफरेरवापर है कि जिस कारण इसमें अधिक मनुष्यों की गुज़ाइश होसकी है । और यद्यपि यह यूरोप का एक चतुर्थांश है तो भी यहां मनुष्यवासोपयोगी वस्तु यूरोप से अधिक मिलती हैं अर्थात् यूरोप से यहां फल, खेती और छाग प्रभृति पशु बहुत उत्पन्न होते हैं ।

अबतक भी आष्ट्रेलिया के विषय में सम्पूर्ण ज्ञान नहीं हुआ। १६०६ ई॰ में डचों ने पहिले इसका आविष्कार किया और इसका नाम "टेरा आष्ट्रेलियाँ" अर्थात् दक्षिणक्षेत्र ऐसा नाम रक्खा परन्तु पीछे से इसे "न्यूहालेण्ड" इस नाम से पुकारने लगे १७६४ ई॰ में कप्तान कुक इसपर आयाथा। और ९८ ई॰ से अंग्रेजलोग इसपर उपनिवेश स्थापित करने लगे। लेटिन भाषा में इसे "टेरा आष्ट्रालिस" ऐसा कहते हैं जिससे अंग्रेजी में इसका नाम आष्ट्रेलिया हुआ है। आजकल यहां २,०००,००० अंग्रेजलोग निवास करते हैं और ये लोग धनी और शक्ति युक्त हैं। यहां के प्राचीननिवासी असभ्यलोग बहुत थोड़े हैं। अंग्रेजलोग इसकी सम्पूर्णभूमि पर अधिकार का दावा रखते हैं।

जैसा यूरोपप्रभृति और देशों का मध्यभाग ऊंचा होता है आष्ट्रेलिया का ऐसा नहीं। यहां जो पर्वत हैं उन में सब से बड़े पर्वत की ऊंचाई ७००० फुट है। यहां विक्टोरियानामक उपकूल के समीप एक ज्वालामुखी पर्वत है।

आष्ट्रेलिया में एक मात्र बड़ीनदी है जिसका नाम 'मरे' है यहां लवणक्षेत्र बहुत हैं इसलिये और जो २ छोटी नदियां हैं वे शुष्कप्राय रहती हैं। इस कारण यहां जलकष्ट अधिक हैं। इसके उत्तर भाग में दिसम्बर से जन्वरी तक सर्वदा ही वर्षा होती है।

यही यहां का ग्रीष्मऋतु है । दक्षिणभाग में जून से अगस्ततक अर्थात् यहां के शीतऋतु में पश्चिममहासागर से वायु बहने लगती है और बीच २ में वर्षा भी होती है परन्तु ऐसी वर्षा नियम से नहीं होती है । कभी २ स्थान २ पर दो तीन साल से वर्षा नहीं होती और ऐसी अनावृष्टि से वे सब स्थान मरुभूमि के सदृश होजाते हैं। आष्ट्रेलिया के मध्यमें बड़ी विस्तृत मरुभूमि भी है जिसकी प्रकृति आफ्रिका वा सिन्धु के तीरस्थित मरु के सदृश है। सम्पूर्ण आष्ट्रेलिया में ग्रीष्म ऋतु में उत्ताप बहुत बढ़ता है और इन दिनों में वहां लू चलती है । तो भी दक्षिण आष्ट्रेलिया की जलपवन अच्छी स्वास्थ्यकर है । यहां आकाश सर्वदा निर्मल रहता है और वायु सर्वदा शुष्क रहती है ऐसी कि शीतऋतु में भी यहां कुज्झटिकादि देख नहीं पड़ता । यह स्थान अंग्रेजों के लिये बहुत स्वास्थ्यकर है और अपरस्थान से यहां जो गोआदि गृहपालित पशुगण गए हैं वे भी यहां बहुत सुख से रहते हैं ।

जिस समय आष्ट्रेलिया आविष्कृत किया गया तब इसमें असभ्य लोग रहते थे और उनकी संख्या बहुत थोड़ी थी । आष्ट्रेलिया के आदिम असभ्य लोग ईषच्छ्यामवर्ण हैं । वे लोग अंग्रेजों से कुछ छोटे होते हैं । इनके केश काले और वक्र होते हैं, परन्तु हबशियों की नाईं पशु प्रकृतिक नहीं होते । वे लोग बहुत असभ्य होते हैं । इनके सदृश असभ्य पृथ्वी पर और कहीं नहीं दीख पड़ते । ये लोग स्त्रियों से ऐसा वर्तते हैं ।

जैसा कीलदाम से । इन्हों ने ऐसे असभ्य होकर भी बूमारैंग नामक एक प्रकार का नया यंत्र निकाला है

यह यंत्र बहुत कठिन काष्ठखण्ड से बनता है यह चपटा और धनुष की नांई टेढ़ा होता है इस में विलक्षणता यह है कि यदि हाथ से किसी उद्दिष्ट पक्षी को लक्ष करके इसको फेंका जावे और उस लक्षित वस्तु को न लगे तो फिर फेंकने वाले के हाथके समीप चला आता है । आष्ट्रेलिया का दक्षिण पूर्वभाग अंग्रेजों के अधिकार में है और उन प्रदेशों से इसका प्राचीन निवासी लोग प्रायः भाग गए हैं । जो अवशिष्ट हैं वे पशु चारणादि करते हैं । इसके आदिम रहने वाले उत्तर और उत्तर पश्चिम में अबतक भी देख पड़ते हैं । वे लोग न खेती करते हैं और न पशुचारण करते हैं इसलिये इनकी संख्या थोड़ी है । आष्ट्रेलिया में बाहर बाघ, हाथी, ऊंट हरिणादि प्रभृति बड़े २ वन्यजीव नहीं देख पड़ते जैसे एशिया वा आफ्रिका में देख पड़ते हैं । आष्ट्रेलिया में प्रधान आरण्य जीव कंगारु नाम से प्रसिद्ध है । इन जीवों के अगले दो पांव छोटे होते हैं और पीछे के दो पांव और दुम लम्बे होते हैं । वे जीव मूषिक की नांई पिछले पांव और दुम पर बैठकर अगले पांव के पञ्जों के द्वारा खाते हैं इसका सिर हरिण से कुछ २ सादृश्य रखता है । आष्ट्रेलिया में नानाप्रकार के जीव दीख पड़ते हैं । कोई २ आठ फुट लम्बे भी होते हैं । वे जीव उद्भिज्ज भोजी हैं,

और किसी को कुछ कहते नहीं। इनमें एक आश्चर्य-बात यह है कि इन की स्त्री जाति को पेट पर एक प्रकार की थैली होती है जिसमें वे लोग अपने छोटे २ बच्चों को एक स्थान से दूसरे स्थान में लेजा सकते हैं। ये जीव बड़े शीघ्रगामी होते हैं यहां तक कि वे अनावृष्टि के समय एक बूंद पानी के लिये सैंमील तक दौड़ते हैं।

आष्ट्रेलिया में और एक विचित्र बात यह है कि यहां के समुदय जीव प्रायः करके "पौच्ड" थैली विशिष्ट होते हैं। इसके अपर जीवों में बिल्ली, मूषिक, शश और रीछ के सदृश जीव बहुत हैं परन्तु इन सब जीवों के शरीर में ही थैली होती है ऐसी थैलीवाले जीवों को प्राणितत्वविद्या (जूआलोजी) में 'मरसूपियलस' कहते हैं। यहां फैलंगरनाम एक जीव होता है जिसे अंग्रेजलोग अपोसमस कहते हैं। इस जाति के जीव नानाप्रकार के दीख पड़ते हैं कोई २ तो भेड़े की नाईं बड़े होते हैं और कोई २ तीन इन्च लम्बे होते हैं। स्तन्यपायी जीवों में से आष्ट्रेलिया में कोयलमूषिक और चर्मचटिका (   ) होते हैं इनके शरीर में थैली नहीं होती।

वर्तमान समय में केवल आष्ट्रेलिया और उसके समीपस्थित द्वीपों में ऐसी थैलीवाले जीव देखे जाते हैं, परन्तु प्राचीनसमय में ऐसे जीवसमुदय पृथ्वी में रहते थे, ऐसा अनुमान होता है। आस्ट्रेलिया के

समुद्र में द्वैलप्रभृति बड़े २ मत्स्य भी रहते हैं

अष्ट्रेलिया में तोता, कबूतर, ईगल, बगले प्रभृति साधारण पक्षी भी बहुत दीख पड़ते हैं। इन के सिवाय यहां विशेष जातीय पक्षी भी बहुत हैं जो कि और स्थान में नहीं दीख पड़ते। जैसे यहां 'एमू' नाम एक प्रकार का उष्ट्रपक्षी है जो छः फुट ऊंचा होता है, परन्तु उड़ने के पर नहीं होते। यहां एक प्रकार का बड़ा पक्षी है जो १५ फुट ऊंची और ६० फुट परिधि की दीवार बनाकर उसमें डिम्ब त्याग करता है। यहां और एक प्रकार का पक्षी है जो बड़े २ लम्बे लतागृह बनाकर इसमें वास करता है। यहां काले स्वान पक्षी जो बहुत दिनतक यूरोप में अप्रसिद्ध वस्तुओं में गिने जाते थे, देखे जाते हैं।

अष्ट्रेलिया के उत्तर भाग की नदियों में कुम्भीर बहुत हैं। और २ उष्ण देशों की नाईं यहां भयंकर सर्प बहुत हैं और भारतवर्ष में जितने कीड़े और पतंग देखे जाते हैं वे सब यहां भी मिलते हैं। ग्रीष्मान्तर्गत और २ देशों में जो वृक्ष होते हैं वे इसके उत्तर भाग में भी होते हैं जैसे ताल, बांस इत्यादि और समशीतोष्ण मण्डल में जो वृक्ष उत्पन्न होते हैं इसके दक्षिण भाग में वे ही वृक्ष बहुत करके उत्पन्न होते हैं। यहां यूरोप की नाईं नानाजातीय रेवदाफलवृक्ष उत्पन्न होते हैं और यहां बबूल, जम्बु और चिड़ वृक्ष भी मिलते हैं। इनके सिवाय यहां ऐसे २ वृक्ष उत्पन्न होते हैं

कि जिन्के तुल्य वृक्ष आजकल और कहीं नहीं देखे जाते परन्तु प्राचीन समयमें ये पृथ्वी पर आम थे ऐसा चिन्ह मिलता है ।

आष्ट्रेलिया में अब इंगलैण्डप्रभृति देशों से बहुत प्रकार के पशु और दृक्षादि लेजाकर वर्द्धित किए जाते हैं । यहां गेहूं आलू, अन्ना, नारंगी और आड़ू का पौधा यथेष्टरूप से उत्पन्न किए जाते हैं ।

कुछ दिन पहिले अंग्रेज लोग अपने देश से फौजदारी में अपराधी हुए मनुष्यों को यहां भेजते थे, जैसा भारतवर्ष से निर्वासित लोग अण्डामन में भेजे जाते हैं । १७८८ ई॰ में पहिले अपराधी लोग "बोटानिबे" नामस्थान में भेजे गए । इस्कानाम "बोटानिबे" इसलिये हुआ कि जब कप्तान कुक साहिब को इस के उपकूल भाग का पता लगा तब इस स्थान पर जोसफबैंकस और डकर सोलण्डर ने एक बाग बनाया जिसमें ऐसे २ वृक्ष इकट्ठे किए कि जिनका नाम पहिले ज्ञात नहीं था । जैसे हिन्दुस्तान में, "काला पानी गया" इस वाक्य से 'किसी बड़े अपराध से निर्वासित हुआ' ऐसा अर्थ समझा जाता है वैसे ही अंग्रेजी में "बोटानिबे में गया" इस वाक्य से भी बहुत दिन तक ऐसा ही अर्थ विदित होता रहा ।

१८३० ई॰ में, यहां बसे हुए अंग्रेजों ने इस में अच्छी २ पशु चारणभूमि देखकर इसमें उपनिवेश स्थापन किया । जब उन्की संख्या बढ़ने लगी तब

यहां भेजे हुए कैदी लोगों को बहुत दुःख हुआ और उपनिवेश करनेवालों की संख्या दिन २ वृद्धि पाती रही विशेषतः १८५१ ई० में यहां अधिक परिमित सोने । के आविष्कार होने के कारण यहां उपनिवेश करने वाले बहुत ही बढ़ गए।

आजकल पृथ्वी पर आष्ट्रेलिया की खानें सब से समृद्ध हैं । यहां सोना, कोला और तामा अधिक परिमाण से उत्पन्न होते हैं ।

आष्ट्रेलिया नीचे लिखे प्रदेशों में विभक्त हुआ है । इन प्रदेशों के शासन के लिये इंगलैण्ड से एक गवरनर भेजा जाता है । यहां एक पार्लीमेण्ट सभा भी है ।

प्रदेश	प्रधान नगर	क्षेत्रफल वर्गमीलों में	मनुष्य संख्या
न्यूसौथवेल्स	सिडनी	३२३.४५०	५०३७९८१
वेस्ट आष्ट्रेलिया	पर्थ	९७४,००	२८,७६५
विक्टोरिया	मेलबोरन	८८,९९८	७३१,५९८
साउथ आष्ट्रेलिया	अडेलाइड	७६०,०००	१८५६२६
क्वीन्सलैण्ड	ब्रिस्बेन	६७८,६०००	१२०,१०४
टैस्मेनिया	होबार्टटौन	२५,२१५,	१०१,७८५

१ क्वीनविक्टोरिया के सम्मान के लिये इसस्थान को भी क्वीन्सलैण्ड कहा जाता है अर्थात् इनके राजमें ही यहां उपनिवेश स्थापित हुआ

२ टैसमैमून नाम किसीइ ने इसस्थान का आविष्कार किया इसलिये इस का नाम टैसमेनिया हुआ इस द्वीप की अवस्थिति सीलोन वा सिंहल द्वीप से उपमित हो सक्ती है ।

न्यूज़ीलेण्ड
वा
नवज़िलेण्ड

यह द्वीप समूह आष्ट्रेलिया के अग्निकोण पर है। इसके अन्तर्गत दो बड़े २ द्वीप और एक मनुष्य से शून्य छोटा सा द्वीप है। इसका क्षेत्रफल १०२,००० वर्ग मील है। यह द्वीपसमूह ब्रिटन से बहुत बड़ा है और प्रायः उसके विपरीतपदी है (   ) तथा निरक्षरेखा के बहुत समीपवर्ती है। १७६९ ई॰ में कप्तान कुक ने इसका आविष्कार किया उस समय वहां २००,००० आदिम निवासी रहते थे जिनका नाम मेओरिस है। वे लोग देखने में सुन्दर और लम्बे होते हैं तथा अपर असभ्यों से इनकी बुद्धि भी अच्छी है परन्तु वे नरमांसभोजन दोष से सर्वदा विरहित नहीं होते हैं। १८४० ई॰ में अंग्रेज़ लोगों ने यहां पहिले उपनिवेश किया। न्यूज़ीलेण्ड में एक पर्वतश्रेणी है जिसकी ऊंचाई ६००० फुट है। जिसके बहुत शिखर ज्वालामुखी भी हैं। यहां शूकर के सिवाय और किसी प्रकार का जीव देखने में नहीं आता। यह देश साधारणतः पहाड़ी और जंगली है।

न्यूज़ीलेण्ड के अधिवासियों ने ईसाई धर्म्म स्वीकार कर लिया है। वे पहिले से बहुत सभ्य हुए हैं। इनमें से बहुतेरों ने अच्छी तरह लिखने और पढ़ने का अभ्यास किया है। कई एक इंग्लेण्ड भी देख आये हैं, और कई एक न्यूज़ीलेण्ड पार्लिमेण्ट के सभ्य भी हुए हैं।

पोलीनीशिया

आष्ट्रेलिया के पूर्व में स्थिरमहासागर के बीच एक छोटे २ द्वीपों का समूह देखाजाता है इसको पोलीनीशियाकहतेहैं यह द्वीपसमूह एक शताब्दी हुई आविष्कृत हुआ है। उस समय इस मे बहुतसे काले कृष्णवर्णी मनुष्य रहते थे। इन्में से बहुत लोग आग्रह से मनुष्यों का लहू पीते थे और शूकरों के सिवाय अपर गृहपालित जीव नहीं रखते थे। वहां एक प्रकार का वृक्ष है जिस्का फल कटहर की नाईं बड़ा २ होता है। यहां के रहनेवाले रोटी की जगह उसी फल को खाते हैं, और यह भी कहते हैं कि ऐसे तीन वृक्षों से एक मनुष्य का सब प्रकार का निर्वाह होता है। पोलिनीशिय द्वीपसमूह की जलवायु नरमप्रकृति की है। इस्के चारों ओर बड़े २ समुद्र के होने से यहां गर्मी का जोर बहुत नहीं होता। इस्की स्थिति उष्णमण्डल के बीच होने से यहां कभी शीत काभी मालूम नहींहोता है। यहां नारिकेल वृक्ष भी बहुत हैं। इन द्वीपसमूह में ज्वालामुखीपर्वत बहुत हैं। जिन्की ऊंचाई १४,००० फुटतक भी होती हैं। इन्में से बहुत द्वीपप्रवाल (मूंगे) कीट से बने हुए हैं परन्तु खजूर आदि वृक्ष भी बहुत उत्पन्न होतेहैं।

इस द्वीपसमूह में अनेक अंग्रेज आकर बैठे हुए हैं ईसाई धर्मप्रचारक भी बहुत हैं। यहां सेण्डवीच द्वीपों में आमेरिकावासी अंग्रेज सदैव गमनागमन करते हैं।

सैण्डवीच द्वीपों का प्रधाननगर होनोलुलुनाम से प्रसिद्ध है। ह्वाईट द्वीपसमूह, फ्रान्सीसों के अधिकार मे है। और फिजिद्वीपसमूह १८७४ में अंग्रेज़ों के अधिकार में आया है।

आमेरिका

आमेरिका के उत्तर में उत्तर हिमसागर, पूर्व में अट्लाण्टिक महासागर, दक्षिण में दक्षिणमहासागर, और पश्चिम में स्थिर वा प्रशान्त महासागर। इसका परिमाण ३६,००,००० कोश है।

आमेरिका दो भागों में विभक्त हुआ है, एक को उत्तर आमेरिका और दूसरे को दक्षिण आमेरिका कहते हैं। इन दोनों भागों के बीच एक डमरूमध्य है जो पनामा नाम से प्रसिद्ध है।

उत्तर आमेरिका

इसके उत्तर में उत्तर हिमसागर, पश्चिम में स्थिर वा प्रशान्त महासागर, दक्षिण में स्थिर वा प्रशान्तमहासागर, पनामाडमरूमध्य और मेक्सिको की खाड़ी और पूर्व में अट्लाण्टिक महासागर।

उत्तर आमेरिका का परिमाण एशिया के आधे से छोटा है और दक्षिण आमेरिका से थोड़ा सा बड़ा है। उत्तर आमेरिका का अधिक अंश उत्तर हिममण्डल के मध्यमें है। इसका जो अंश ५२° अक्षांशरेखा के उत्तर में है उसमें ऐसा शीत है कि वहां मनुष्य नहीं रह सके

क्योंकि यहां गेहूं उत्पन्न नहीं होता, और नदी सकल उत्तर को बहती हैं ।

इसलिये साईबीरिया की नाईं यहां भी केवल दो चार पशुघाती व्याध पशुचर्म के लिये वास करते हैं इसलिये उत्तर आमेरिका यद्यपि दक्षिण आमेरिका से बड़ा है तो भी यहां वहां से मनुष्यवासोपयोगी वस्तु बहुत थोड़ी हैं । परन्तु यह देश अंग्रेजजाति के अधिकार में है इसलिये इस में नानाप्रकार की उन्नति हुई है । सभ्यता भी बहुत बढ़ गई है, और यूरोप के पीछे इस के सदृश समर्थशाली देश आजकल पृथ्वी पर और कोई नहीं देखा जाता ।

१४९२ ई. में कलम्बस नाम नाविक ने इसका आविष्कार किया । उस समय इस में एकजातीय मनुष्य रहते थे जिन्हें यूरोपीय लोग 'आमेरिका इण्डियन' कहते हैं, ऐसा कहना भ्रम है क्योंकि आमेरिका इण्डिया अर्थात् हिन्दुस्तान का अंश नहीं और न वहां के रहने वाले हिन्दुस्तान वासी हिन्दुओं से किसी तरह का शारीरिक सादृश्य रखते हैं इसलिये उनको केवल आमेरिकन कहना उचित है । परन्तु आजकल आमेरिकन इस नाम से यूनाईटेड स्टेट्स में रहने वाले अंग्रेज लोगों की प्रसिद्धि हुई हैं । इसलिये जब कभी आमेरिकन इण्डियन इस शब्द का व्यवहार होगा तब उससे आमेरिका के आदिम रहनेवालों को समझना चाहिए ।

उस समय आमेरिकनलोग सम्पूर्ण आमेरिकामें फैले हुए थे, नाना जातियों में विभक्त थे और उनकी भाषा में भी कुछ २ भिन्नता दिख पड़ती थी उनका वर्ण ताम्र की नाईं है और उनका शरीर अंग्रेजों से कुछ छोटा है इनका चिबुक ऊंचा और केश लम्बा, सीधा और काला है। लोग अनुमान करते हैं कि वे लोग मंगोलियनवंशीय हैं। प्राचीनकाल में मंगोलियनलोग वेहरिंग के मुहाने से आमेरिका को गए होंगे क्योंकि इतिहास एशिया ही समुदय मनुष्यजाति का प्रथमनिवासस्थान है। जब आमेरिका प्रथम आविष्कृत हुआ तब वहां के मनुष्यों की अवस्था व्याधों की नाईं थी। वे लोग खेती नहीं करते थे। केवल समुदय देशों में बर्छी और तीरों से हरिण और महिषप्रभृतिपशुओं को मार २ कर फिरते थे। इस कारण वहां मनुष्यसंख्या बहुत थोड़ी थी क्योंकि जितने स्थानपर वनचर वृत्ति से एक मनुष्य प्रतिपालित होता है यदि खेती की जावे तो उतने ही स्थान पर पचास मनुष्य निवास करसके हैं। उस समय केवल मेक्सिको और पेरु के लोग कुछ उन्नत अवस्था में थे। वहां वसति बहुत सघन थी और वहां के रहनेवाले खेतीकरते थे और बहुत शहर भी वसे हुए थे। वहां इतिहास और राजनीती भी प्रचलित थी।

जिस समय आमेरिका आविष्कृत हुआ उस समय यूरोप में स्पेन राज्य सब का प्रभु था और समुद्र में

पोर्त्तुगालवालों की विजयपताका उड़ती थी। आमेरिका में सोना इतना अधिक दृष्ट हुआ कि उसकारण स्पेन के लोग बहुत ज़ोरशोर से आमेरिका और उस के समीपस्थित वेष्ट इण्डियन् द्वीपों को अपने अधिकार में लाने के लिये तयार हुए। उन्हों ने यहां आकर मेक्सिको और पेरू का ध्वंस किया। और ब्रेजिल मेक्सिको और वेस्ट इण्डियन् द्वीपों को छोड़कर प्रायः आमेरिका के समुदय दक्षिण अंश में उपनिवेश स्थापित किया। पोर्त्तुगालवालों ने ब्रेजिल पर एक उपनिवेश स्थापित किया। कुछ दिन पीछे अंग्रेज और फरांसीसों ने उत्तर आमेरिका के पूर्व उपकूल में उपनिवेश बनाया। अबस्पेन और पोर्तुगाल वाले वहां के प्राचीन निवासियों से रलगए आजकल इस महाद्वीप के प्रायः सम्पूर्ण देशों में प्रायः ऐसे संकरजातीय मनुष्य देख पड़ते हैं।

पहिले पहिले समुदय यूरोपीय विशेष करके स्पेन के लोग आमेरिका के प्राचीन रहने वालों से ऐसी कठिनरीति से वर्त्तने लगे कि थोड़े ही दिनों में उन का एक बार ही नाश होगया और जो ऐसे दुष्ट व्यवहार से बच रहे वे ब्राण्डी और शीतला से मरने लगे। यहां तक कि वहां बसे हुए यूरोपियों को अपने काम कराने के लिये मजूर मिलना मुश्किल होगया और उसी कारण आफ्रिका में दास वाणिज्य की प्रवृत्ति हुई॥

नीग्रोलोग आफ्रिका में खरीदेजाते और आमेरि-

का में दासकर्म के लिये भेजेजाते थे जब इस काम से बहुत मुनाफा होने लगा हजारहां दास आफ्रिका से भेजे जाते रहे और उनसे स्पेनी, पोर्तुगालवालों ने मिलकर संकरजातीय मनुष्य भी उत्पन्न किए।

आमेरिका में सन् १७५६ से १७६० तक अंग्रेजोंने फरासीसों से लड़कर उनके उत्तर आमेरिकास्थित उपनिवेश समुदय अपने अधिकार में कर लिया। फिर आमेरिका में बसे हुए अंग्रेज इंगलेण्ड के राजा से बिगड़ गए और सन् १७७५ ई॰ से १७८२ तक युद्ध करते रहे जिसका फल यह हुआ कि आमेरिका के यूनाइटेडस्टेटससमुदय स्वतन्त्र होगए और केवल कनाडादेश इंगलेण्ड के राजा के आधीन रहा। सन् १८२० ई॰मे स्पेनी औपनिवेशिक लोग अपने राजा से विरुद्ध होकर स्वतन्त्र होगए। इसी तरह वहां बसे हुए पोर्तुगीज़ लोगों ने भी ब्रेज़िल को स्वाधीन बनाया। इनदिनों में आमेरिका के आदिम रहनेवाले क्रम२ से ध्वंसप्राप्त हुए। १८२५ ई॰से, इंगलेण्ड, आयर्लेण्ड और जर्मनी से बहुत मनुष्य आकर यूनाइटेडस्टेटस में बसने लगे जिससे वहां मनुष्यसंख्या प्रतिदिन ही बढ़ती जाती है। १८६२ में समुदय दासलोग जो यूनाइटेडस्टेटस में थे छुड़ाए गए।

ऊपर लिखी हुई घटनाओं का फल यह निकला कि मेक्सिको छोड़कर समुदय उत्तर आमेरिका में और कोई जाति नहीं केवल अंग्रेज (जिनमें) आइरि

स और जर्मनलोग भी मिले हुए हैं, और नीग्रोलोग रह गए उन्में से अंग्रेजों की संख्या ४०,०००,००० और नीग्रों की संख्या ४,००००००। मेक्सिको और दक्षिण आमेरिका में आमेरिकन इण्डियन लोग अबतक भी हैं और उन की संख्या १०,०००,००० है। यहां पहिले संकर जातीय मनुष्यों की संख्या अधिक है विशुद्ध स्पेनी और पोर्तगालीयों की संख्या बहुत थोडी है।

उत्तर आमेरिका देखने में अच्छा है। पश्चिम उपकूल के समीप राकिनाम पर्वतश्रेणी उस्से समान्तराल होकर उत्तरसीमा से पनामाडमरुमध्यतक विस्तृत है। राकिपर्वत के कोई २ शिखर १६००० फुटतक ऊंचे हैं परन्तु उन्की ऊंचाई साधारणतः ८००० फुट है। जो नदियां स्थिरमहासागर और अट्लाण्टिकमहासागर में गिरती हैं उन्का वाटरसेड अर्थात् अपवाहिका राकि पर्वत से बना है। उन्केस्थान २ में यह पर्वतश्रेणी लम्बप्राय होकर अनेक उच्चसमतलक्षेत्ररूप से परिणत हुई है जिन्में से मेक्सिको का उच्चसमतलक्षेत्र बहुत प्रसिद्ध है, कैसकेडनाम और एक पर्वतश्रेणी उस पश्चिम उपकूल के बहुत समीप और समान्तराल है। पूर्वोक्त राकि पर्वत और इसकैसकेड पर्वतश्रेणी के बीच असंख्य उच्चसमतल क्षेत्र हैं, जिन्से जल बह कर ऊटानाम लवणमयझील में गिरता है, यह झील कास्पियनसमुद्र की नाईं गंभीर और प्रवाह शून्य है। यह समुद्र से ४२०० फुट उच्चस्थान पर है।

उत्तर आमेरिका की उत्तर-पश्चिमसीमा पर बड़ी२ ज्वालामुखी हैं। मेक्सिको एक प्रधानज्वालानिर्गम क्रिया का स्थान है।

यूनाइटेडप्रदेशों के पूर्व में आट्लान्टिक समुद्र के समीप और उस्से समान्तराल होकर आलिघनिनाम पर्व्वतश्रेणी है। इस पर्वतश्रेणी से मिसिसिपि और छोटी नदियां जो आट्लान्टिक में गिरती हैं उनका वाटरशेड (अपवाहिका) बना है। समुदय उत्तर आमेरिका जिस्के पूर्व में आलिघनिपर्वत, पश्चिम में राकि पर्व्वत और दक्षिण में मेक्सिको की खाड़ी और उत्तर में उत्तर हिमसागर है, एक विस्तृत समतल क्षेत्र है। मिसिसिपि और रेडनदी (जो उत्तर हिमसागर में गिरती है) के बीच एक अल्पोच्च वाटरशेड है।

उत्तर आमेरिका की प्रधान नदी मिसिसिपि जो पृथिवी की समुदयनदियों से बड़ी है, मेक्सिको की खाड़ी में गिरती है। मिसोरी नदी थोड़ी दूर वहकर मिसिसिपि से मिलके उसी नाम से पुकारी जाती है। इसकी दो करद नदियें हैं (१ पहिली) आहिओ जो पूर्व से आकर यहां गिरती है, दूसरी आर्कानसस जो पश्चिम से आकर इसमें गिरती है। वे दोनों नदियां भी बहुत बड़ी हैं।

उत्तर आमेरिका में सेण्टलारेन्सनाम दूसरी बड़ी नदी है। यह नदी पांच झीलों केबीच होकर उत्तर हिमसागर में गिरती है। यह नदी कुछ दूरतक यूनाइटेड-

प्रदेश ओर कानेड़ा की सीमास्वरूप रही शीतकाल में इसका जल जम जाता है ।

उत्तर आमेरिका के उत्तर में ओर भी बड़ी २ नदियां बहती हैं परन्तु बहुत शीत के अधीन होनेसे वे कुछ उसके उपकार में नहीं आतीं । उनमें से सस्कचियन, मेकेन्ज़िप - इत्यादि प्रधान हैं । रेड नदी कुछ दक्षिण में बहती है । इस के तीर पर स्थान २ में गेहूं उत्पन्न होते हैं ।

रायोग्रांडिल-नर्टे नदी टेक्सस नाम प्रदेश में होकर मेक्सिको की खाड़ी में गिरती है । रायो कोलोराडो नदी कालिफार्निया होकर स्थिरमहासागर में गिरती है । ये दोनों नदियें बड़ी प्रसिद्ध हैं ।

उत्तर यूरोप की नाईं उत्तर आमेरिका में भी असंख्य झीलें हैं । उनमें से पांच झीलें जिनके बीच से सेण्ट लारेन्स नदी बहती है, बहुत प्रसिद्ध हैं । ओर वाणिज्य के लिये बहुत उपकारी हैं । उनका नाम नीचे लिखा जाता है । सुपीरिया झील जो पृथिवी के समुदय स्वादु जल वाली झीलों से बड़ी है, परन्तु कोई २ यह भी समझते हैं कि आफ्रिका की विक्टोरिया नियञा झील इससे भी बड़ी है । ईरि ओर आण्टारियो नाम दो झीलों के बीच 'नाइग्रा' नाम जलप्रपात है जो पृथिवी के समुदय प्रपातों से बड़ा है । हूरन ओर निकारगुया ये दो झीलें भी बहुत प्रसिद्ध हैं । निकारगुया, पनामा डमरूमध्य में है ।

जब स्पेनियों ने आमेरिका का आविष्कार किया तब वे लोग प्रथम ही इस बात पर हैरान हुए कि आमेरिका के वृक्ष और पशु पुरानी पृथ्वी से सम्पूर्ण भिन्न प्रकार के दृष्ट हुए। उन का ऐसा हैरान होना ठीक था क्योंकि केपहरन और मेक्सिको में किसी प्रकार पुरानी पृथ्वी के पशु वा वृक्ष नहीं देख पड़ते। परन्तु उत्तर आमेरिका में ऐसे जीव और पशु बहुत हैं जो प्राचीन पृथ्वी के उत्तर प्रदेशों में मिलते हैं। दक्षिण आमेरिका की ओर लोग जितने जाते हैं उतने ही नए नए पशु और वृक्ष देखे जाते हैं।

आमेरिका के पशु साधारणतः अपने सजातीय प्राचीन पृथ्वी के पशुओं से छोटे और थोड़े शक्तिवाले होते हैं। हाथी, गण्डार, सिन्धुघोटक वा इनके तुल्य जातीय जीव उत्तर आमेरिका में नहीं देखे जाते। यद्यपि यहां वन्य सूकर और जंगली घोड़े अधिक परिमाण से देखे जाते हैं परन्तु यह अनुमान होता है कि वे पशु इसके प्राकृतिक नहीं किन्तु किसी समय यहां लाए गए होंगे।

आमेरिका के किसी २ स्थान में पुमा नामक एक प्रकार का बिडाल (बिल्ली) रहता है जो छै फुट लम्बा होता है परन्तु इसकी शक्ति और साहस प्राचीन धरती के चीतों के बराबर नहीं होती। दक्षिण आमेरिका से कनाडा तक ये जीव मिलते हैं, कनाडा में लिंक्स नाम एक प्रकार की बिल्ली भी रहती है। उत्तर आमेरिका के आधे प्रदेशों में नानाप्रकार के भेड़ और

लमडियें रहती हैं और गीदड़ नहीं होते। आमेरिका में राजहंस नहीं हैं।

आमेरिका के आग्नेय उपकूल में दोप्रकारके समुद्र कोऋ देखे जाते हैं। आमेरिका के जलजन्तु ओं में से अटूलाण्टिक समुद्र में तिमि जातीयमत्स्य बहुत हैं। स्तन्यपायिजलचरों मेंसे ग्रीनलेण्ड में हुेल प्रसिद्ध है वे ८० फुट तक लम्बे होत हैं। हुेल यद्यपि मत्स्यजाति में गिने जाते हैं तथापि असल में ये मत्स्य नहीं क्योंकि ये अपने बच्चों को दूध पिलाते हैं। ऐसी बात और मत्स्य में नहीं देखी जाती।

उत्तर आमेरिका में अनेक जातीय बड़े २ रीछ हैं। हरिण भी यहां नाना प्रकार के मिलते हैं। रेण्डियर नाम हरिण केवल उत्तर हिममण्डल में रहते हैं। उस प्रदेश के थोड़े दक्षिण में 'मुसडिया' नाम हरिण रहते हैं। वे समुदय हरिणों से बड़े होते हैं वे ७ फुट तक ऊंचे होते हैं। वापिटिनाम एक प्रकार का सुन्दर हरिण मेक्सिको के समीप मिलता है, यह पांच फुट ऊंचा होता है। उत्तर आमेरिका के मध्य में प्रङ्गवकनाम से प्रसिद्ध एक जातीय कालासार हरिण रहता है। राकि पर्वत में एक प्रकार का जंगली भेड़ा देखा जाता है।

उत्तर आमेरिका में विसन नामएक जातीय बड़े २ महिष देखे जाते हैं। मस्क-अक्स, नाम एकप्रकार का जंगली बैल भी यहां बहुत होताहै। यह प्र

मान होता है कि यूरोप से यहां पर बैल लाए गए हो गे । उत्तर आमेरिका के उत्तर प्रदेशों में बांदर नहीं होते परन्तु मेक्सिको और मध्य प्रदेशों में बहुत मिलते हैं आमेरिका के बांदर छोटे २ होते हैं । यहां के जंगली जीवों में अपोसम बहुत प्रसिद्ध हैं । ये जीव देखने में बड़े बिडाल की नाईं हैं । ये पशु यूथचर नहीं हैं, रीछ वा और २ शीत देश के पशु ओं की नाईं ये समुदय शीतकाल में प्रायः गंभीर निद्रा में रहते हैं । ये जब सोने को जाते हैं । तब उनका शरीर बड़ा मोटा होता है परन्तु जब ये जागते हैं तब अति कृश होजाता है । जब कोई इसे पकड़ता है तब यह अपने को मुर्दे की नाईं निश्चेष्ट दिखलाता है और पकड़नेवाला मर गया समझ के जब इस पर ध्यान नहीं रखता तब यह धीरे २ से भाग जाता है ।

आमेरिका में अनेक प्रकार के पक्षी, सांप, कीड़े और पतङ्ग मिलते हैं । पक्षियों में कबूतर, बत्तक और मुरग बहुत हैं । आमेरिका में एक प्रकार के 'हमिंग' अर्थात् गुनगुनकारी पक्षी रहते हैं जो और कहीं नहीं मिलते उन का आकार बहुत छोटा होता है । आमेरिका में अग्नि माछी नाम एक प्रकार की अद्भुत मक्खि है।

उत्तर यूरोप और हिमालय की नाईं आमेरिका में कानाडा और राकि पर्व्वत में देवदारु वृक्ष बहुत होते हैं, कानाडा के अपर वृक्षों में से ओक, बिलो प्रभृति वृक्ष बहुत हैं ।

यूनाइटेड प्रदेश और कनाड़ा के दक्षिण में गेंहू अधिक परिमाण से उत्पन्न होते हैं। यहां आज कल भुट्टा, रूई, ईख और चावल अधिक परिमाण से उत्पन्न होते हैं। ये सब शस्य पहिले यहां नहीं थे, प्राचीन पृथ्वी से लाए गए।

यहां के अयन मण्डलस्थित प्रदेशों में जंगली वृक्ष बहुत हैं। मेक्सिको में जलपवन का जैसा भेद है वैसा वृक्षों का भी है। मेक्सिको और राकिपर्वत में पत्र से शून्य एक जातीय वृक्ष होते हैं जो २० वा ३० फुट तक लम्बे होते हैं। मेक्सिको में अनेक जातीय आलू उत्पन्न होता है। मेक्सिको के उपकूल और मध्यदेशों में अयनमण्डलीय समुदय शस्य उत्पन्न होते हैं। इस लिये यहां बांसभी उत्पन्न होता है जो यूरोप और अपर शीतप्रधान देशों में नहीं होता।

आमेरिका में कोला, चांदी, सोना और तांबा प्रभृति की खान असंख्य हैं। कालिफर्निया, मेक्सिको पेरू प्रभृतिस्थानों में सोना अधिक परिमाण से उत्पन्न होता है। वेंकूवर और कलम्बिया द्वीप में भी सोना की खान आविष्कृत हुई हैं। सुपीरियर झील के समीप तांबा बहुत उत्पन्न होता है।

उत्तर आमेरिका नीचे लिखे हुए प्रदेशों में विभक्त हुआ है।

प्रदेश	परिमाण वर्गमील में	मनुष्यसंख्या
ग्रीनलैण्ड	८००,०००	७०००
कनाडाराज्य	३,५२३,७९२	३,७४८,८५७
यूनाइटेडप्रदेश	३,६०३,८४४	३८,५५८,३७१
मेक्सिको	१,०३०,४४२	९,१७६,०८२
मध्यप्रजातन्त्रराज्य	१९६,५९४	२,४०४,५२०
ब्रिटिशहैंडोरास	१३,५००	२४,७१०
वेस्टइण्डियनद्वीपसमूह	९२,०००	४,०००,०००

न्यूफौण्डलैण्ड अबकनाडाराज्य से मिलगयाहै इसलिये उस का नाम स्वतन्त्ररूप से नहीं गिना जाता। रूसियन आमेरिका जो अलस्का नाम से प्रसिद्ध है यूनाइटेडप्रदेशों के रहने वालों ने उसको रूसों से खरीदा है इसलिये अब यह स्थान यूनाइटेड प्रदेशों के अन्तर्गत है। मध्यप्रजातन्त्रराज्य में यद्यपि पांच भिन्न २ राज्यहैं तथापि उन कीपरस्पर बहुत सादृश्य देख कर उन को एक नाम से प्रसिद्ध किया।

ग्रीनलैण्ड.

ग्रीनलैण्ड-यह एक बड़ा द्वीप उत्तर आमेरिकाकी उत्तर-पूर्व दिशा में है। यद्यपि यह द्वीप बहुत बड़ाहै परन्तु सर्वदा ही बर्फ से आच्छन्नहै। आजतक कोई मनुष्य इसके भीतर नहीं गया। यह पर्वतमय है। इस में किसी प्रकार का तृण वा वृक्ष नहीं होता। ग्रीष्मऋतु में इसके दक्षिण उपकूल स्थित

बरफ गलजाता है और तब समुद्र के मध्य से उस अंश की भूमि सबज देखी जाती है । उस स्थान पर कई एक गांव हैं जिन्के रहने वाले मत्स्य जीवी हैं । इस्में करीब १००० के डेन अर्थात् डेनमार्क के रहने वाले रहते हैं इसलिये इस्को डेनिश आमेरिका भी कहते हैं । इस्के बाकी अधिवासी एस्कीमक्स जातीय हैं जिन्की संख्या ७००० है । यह एस्कीमक्स जाति वह है जो यूरोप में आर्य्यजातियों के आगमन से पहिले वास करती थे ।

कनाडा राज्य

यह राज्य सुपीरियर आदि पांच झीलों के समीप से सेण्टलारेन्स नदी के तीर तक वि[illegible] स्थान है । कनाडे के तीन प्रदेश केवल मनुष्यों[illegible]स से पूर्ण हैं प्रथम सेण्टलारेन्स नदी और बड़े २ झीलों के तीर स्थित देश । द्वितीय बैंकूवर द्वीप कालम्बिया नदी के तीर जो राकि पर्वत के पश्चिम में स्थित है । तृतीय रेड नदी के तीर पर स्थित उपनिवेशस्थान जो चिपियेग-पर्वत के दक्षिण में स्थित है । इस्के अवशिष्ट प्रदेशों में आदिम असभ्य लोग रहते हैं जो पशुओं को मार कर उन के चमड़े से जीविका निबाहते हैं । इन की संख्या बहुत थोड़ी है । कनाडे का दक्षिण अंश केवल गेंहू उत्पन्न करने का उपयोगी गरम है परन्तु यह स्थान भी शीत के चार वा पांच महीने बरफ से आच्छन्न रहता है ।

कनाडे के जिस अंश में मनुष्यों की वसति है वह अंश यद्यपि लंडन से निरक्षरेखा के समीप स्थित है तोभी यहां लण्डन से शीत प्रबल है ।

कुछ दिन पहिले ब्रिटिश आमेरिका भिन्न २ स्वाधीन उपनिवेश में विभक्त था परन्तु अब वे सब कनाडाराज्य में मिलगए । न्यूफौग्राउंलैण्ड अब तक इसमें शामिल नहीं, आशा है कि थोड़े दिनों में यह भी मिल जायगा । कनाडा के वासियों में अंग्रेज, स्काच आइरिश लोग अधिक हैं । यहां अति प्राचीन काल से बसे हुए फरांसीसों के वंशीय भी हैं ।

कनाडा राज्य इंग्लैण्ड से १२ दिन के रास्ते पर है। यह देश थोड़े दिनों में उन्नत और सभ्य हुआ है । इस देश में एक बहुत अच्छी रेलकी सड़क सेण्ट लारेन्स नदी के समानान्तराल बनी है । कनाडा से बड़े२ लक्कड़ दूसरे देशों में भेजे जाते हैं । इस में माण्टिल, क्विबेक और अहवाये तीन प्रधान नगर हैं । अहवा राजधानी है ।

१८५८ ई० में ब्रिटिश कोलम्बिया और वेंकूवर द्वीप में सोने का आविष्कार होने से उपनिवेश स्थापित कियागया, अबउसमें ६०००० मनुष्य रहते हैं और सिवाय सोने के अब यहां कोले की खान भी निकली है । वहां की जलपवन नातिशीतोष्ण है ।

रेड नदी के किनारे पर की वसति बहुत छोटी है परन्तु यहां खेती की बहुत उन्नति हुई है ।

यह विचार किया गया कि मध्य कनाडे की रेल रेड नदी के किनारे तक बढ़ाई जावे और वहां से ब्रिटिश कलम्बिया तक भी रेल की सड़क बनाई जावे, ऐसा होने से अट्लाण्टिक सागर से स्थिरमहासागर तक रेल की सड़क होगी। यह सड़क २५०० मील लम्बी होगी। ऐसी रेल से उभयदेश की ही उन्नति होगी।

यूनाइटेड प्रदेश

इन प्रदेशों के उत्तर में ब्रिटिश आमेरिका, पूर्व में न्यूब्रन्स्विक और अट्लाण्टिकसागर, दक्षिण में मेक्सिको की खाड़ी और मेक्सिको पश्चिम में स्थिर महासागर। इसके अन्तर्गत सैन्तीस प्रदेश हैं वे सब प्रदेश साधारण तन्त्र हैं। प्रत्येक देश की मनुष्यसंख्या के अनुसार प्रतिनिधि भेजेजाते हैं जो किसी मध्यस्थान में एकत्रित होकर राज्य के प्रबंध करते हैं। जो देश ऐसे छोटे हैं कि प्रतिनिधि नहीं भेज सकें उसे हाकुटारी वा अधीन प्रदेश कहते हैं। यद्यपि समुदय यूनाइटेडप्रदेशों की जलपवन मनुष्यों के रहने के उपयोगी है तो भी यहां के केवल चार स्थानों में मनुष्य निविड़ बसे हुए हैं और स्थानोंकी वसति इतनी संघन नहीं।

उनमें से प्रथम इंगलेण्ड प्रदेश जो उत्तर-पश्चिम दिशा में अट्लाण्टिक सागर के तीर पर है, प्रायः दो सौ पचास बरस होगए यहां मुख्य करके इंगलेण्ड से अंग्रेजों ने आकर उपनिवेश बसाया। क्योंकि उस

समय इंगेलण्ड में धर्म की स्वाधीनता को रखना बहुत कठिन था नवीन इंगेलण्ड में जो पहिले आकर बैठे उन को फादर्स पिल्ग्रिम कहते हैं। दूसरा दक्षिण प्रदेश—वे देश आलिघनिस और अट्लाण्टिक-सागर के बीच में है। यहां न्यू इंगेलण्ड से पीछे उपनिवेश स्थापित हुआ। इन्हीं में से लुइसाना नाम प्रदेश में पहिले फ्रेन्च लोग आकर बसे थे। तीसरा पश्चिम प्रदेश जो आलिघनिस से पश्चिम दिशा में स्थित है और मिसिसिपि नदी के बेसिन अर्थात् जलाधार के मध्य में है। कुछ चालीस वर्ष हुए कि, यहां यूरोप के नाना स्थानों से विशेष करके आयर्लेण्ड और जर्मनी से मनुष्य आकर बसने लगे। चतुर्थ—कालिफर्निया प्रदेश—यहां १८५० ई॰ में सोने की खानों का आविष्कार हुआ और उसी दिन से यहां उपनिवेश स्थापित होने लगा। कालिफर्निया की नाईं अच्छी जलपवन पृथ्वी में थोड़ी मिलती है। यहां राकिपर्वत के बीच से एक रेलकी सड़क भी बनी है।

यूनाइटेड प्रदेश के मनुष्यों में से ३३,५००००० श्वेतकाय और ५०००,००० नीग्रो हैं। श्वेतकायों में से यूरोप के उत्तर के रहने वाले और अंग्रेज मिले हुए हैं। १८६० ई॰ में यूनाइटेड प्रदेशों में अमेरिक न इण्डियन ४४००० थे, परन्तु १८७० ई॰ में उनकी संख्या २५००० होगई थी आजकल इससे भी न्यून होगी।

यूनाइटेड प्रदेशों में ६०,००० मील रेल बनी है।

समुदय ब्रिटन और आयर्लैण्ड में केवल १८००० इतनी ही रेल बनी है ऐसी २ तुलना से पृथिवी के और २ देशों से यूनाइटेड प्रदेशों में अत्यन्त उन्नति होती है यही जान पड़ता है । सामुद्रिक वाणिज्य में भी यूनाइटेड प्रदेश केवल इंग्लैण्ड के पीछे ही है । यहां यद्यपि उद्दशिक्षा थोड़ी है परन्तु साधारण शिक्षा में ये इंग्लैण्ड से बड़े और स्विटज़रलैण्ड और जर्मनी के बराबर हैं ।

यह पहिले कह चुके हैं कि यूनाइटेड प्रदेश साधारणतन्त्र हैं यहां सेनाप्रभृति समुदय देश सम्बन्धि कार्य्य एक बड़ी सभा वा पार्लिमेण्ट से सम्पादित होते हैं । इस सभा के पति को प्रेसिडेण्ट आफ़ – दी – यूनियन कहते हैं । इस सभा के सिवाय प्रत्येक प्रदेश में एक २ गवर्नर और एक २ सभा होती है । उस २ प्रदेश के उपयोगि विशेष २ नियम ऐसी सभा से बनते हैं ।

यूनाइटेड प्रदेशों में नीचे लिखे हुए प्रदेश और अधीन प्रदेश हैं ।

नाम	श्रेणी	क्षेत्रफल वर्गमील में	लोकसंख्या
मेन	प्रदेश	३५,७०६	६२६,९१५
न्यूहैम्पशायर	,, ——	९,२८०	३१८,३००
वारमण्ट	,, ——	१०,२१२	३३०,५५१
मासाचुसेट्स	,, ——	७,८००	१,४५७,३५१
रोड आइलैण्ड	,, ——	१,३०६	२१७,३५३
कोनेक्टिकट	,, ——	४,६७४	५३७,४५४
न्यूयार्क	,, ——	४७,०००	४,३८२,७५९
पेन्सिलवेनिया	,, ——	४६,०००	३,५२१,९५१
न्यूजर्सी	,, ——	८,३२०	९०६,०९६

डिलवर	प्रदेश	२,१२०	११२,०१५
मेरिलेण्ड	" ------	११,१२४	६८७,०४९
कलम्बिया	अधीनप्रदेश	६० ------	७५,०००
विरजीनिया	" ------	६१,३५२	१,५९६,३१८
नार्थकारोलीना	" ------	५०,७०४ ---	९९२,६२२
सौथकारोलीना	" ------	२९,३८५	७०३,७०८
जर्जिया	अधीनप्रदेश	५८,०००	१,०५७,२८६
फ्लोरिडा	"	५९,२६८	१४०,४२४
अलबमा	"	५०,७२२	९६४,२०१
मिसिसिपि	"	४७,१५६	७९१,३०५
लूइसियाना	"	४१,२५५	७०८,००२
आर्कानसस	प्रदेश	५२,१९८	४३५,४५०
टेनेसि	"	४५,६०००	११०९,८०१
केनटुकि	"	३७,६०००	१,१५५,६८४
वेस्टवर्जीनिया	"	२३,०००	४४२,०१४
ओहियो	"	३९,९६४	२,३३९,५११
इंडियाना	"	३३,८०९	१,३५०,४२८
मिशिगन	"	५६,४५१	७४९,११३
विसकानसिन	"	५३,९२४	७७५,८८१
इलिनइस	"	५५,४१०	१,७११,९५१
आयवा	"	५५,०४५	६७४,९१३
मिसोरी	"	६५,३५०	१,१८२,०१२
टेक्सास	प्रदेश	२३७,५०४	६०४,२१५
कनसेस	" ---	८१,३१८	१०७,२०६
डाकोटा	अधीनप्रदेश	१५०,९३२	४,८३७
इडाहो	" ---	९० ९३२	१४,९९९
नेब्रास्का	प्रदेश ---	७५,९९५	२८,८४१
मिनेसटा	"	८३,५३१,	१७२,०२३
नेभाडा	"	११२,०९० --	६,८५७
मन्टाना	"	१४३,७७६	२०,५९५
कोलोराडो	" ------	१०४,५००	३४,२७७
वाशिंगटन	अधीनप्रदेश	६९,९९४	११,५९४

ओरेगन	प्रदेश	९५, २७४	९०, ९२३
कालिफर्निया	॥	१८८, ९८१	५६०, २४७
यूटा	अधीनप्रदेश	८४, ४७६	८६, ७८६
कलोरडो	॥	१०४, ५००	३९, ८६४
न्यूमेक्सिको	॥	१२१, २०१	९१, ८७४
अरिजोना	॥	११३, ९१६	९, ६५८

१८७० सन् की आदमशुमारी से यह सिद्ध हुआ कि यूनाइटेड प्रदेशों में १४ शहर हैं जिनका नाम नीचे लिखा जाता है ।

शहर	प्रदेश	लोकसंख्या
न्यूयार्क	न्यूयार्क	९४२, २९२
फिलिडल्फिया	पेन्सिलवेनिया	६७४, ०२२
ब्रुकलीन	न्यूयार्क----	३९६, ०९९
सेण्टलूइस	मिसौरि-----	३१०, ८६४
सिकागो	इलिनईस----	२९८, ९७७
बाल्टिमोर	मेरिलैंड----	२६७, ३५४
बस्टन	मासाचुसेट्स---	२५०, ५२६
सिनसिनाटि	ओहियो------	२१६ २३९
न्यूअरलिन्स	लुइसाना	१९१, ४१८
सेनफ्रान्सिसको	कालिफर्निया---	१४९, ४७३
बुफालो	न्यूयार्क	११७ ७१४
वाशिङ्गटन	कलम्बिया----	१०९, १९९
नूवार्क	न्यूजर्सि----	१०५, ०५९
लुइसवील्ली	केनटकि----	१००, ७५३

न्यूयार्क—सिवाय लगडन के इसके बराबर सर्वप्रकार से समृद्ध नगर पृथ्वी में और कोई नहीं । यद्यपि पेरिस और पेकिन में इससे अधिक मनुष्य रहते हैं तो भी उनसे इसका धन और वाणिज्य अधिक है । यह ही लगडन के नीचे है और पृथिवी के द्वितीय शहर रूप से गिना जाता है । लगडन की नाईं यहां का समुद्र भी जहाज से पूर्ण रहता है ।

बोष्टन नगर—एक बन्दर है । यहां एक प्राचीन उपनिवेश स्थान है और छः उदीच्य प्रदेशों की राजधानी—स्वरूप है । इसको नवीन पृथ्वी का एथेन्स कहते हैं अर्थात् यहां की बहुत चर्चा है । यहां से कलकत्ता और लगडन प्रभृति नगरों में बरफ भेजा जाता है ।

वाशिंगटन नगर यूनाइटेड प्रदेशों की राजधानी है । यहां ही प्रेज़ीडेगट का कार्य्यालय है और प्रधान पार्लिमेगट सभा यहां ही बैठती है ।

अरलिन्स नगर मिसिसिपि नदी के मुख पर स्थित है । यह एक बन्दर है । यहां से और देशों में रूई भेजी जाती है । यह नगर फरासीसों ने स्थापित किया और फ्रान्सस्थित आरलिन्स नगर के नाम से इसको भी पुकारा गया । मेक्सिको की खाड़ी के आसपास जो प्रदेश हैं वहां की जलपवन न्यू इंग्लेगड से गरम है । उसके दक्षिण में कारोलीना नगर है जहां चावल अधिक परिमाण से उत्पन्न होते हैं और यहां के ही चा-

वलोंका इंग्लेंड में बहुत व्यवहार होता है । उस खा डी के चारो ओर स्थित प्रदेश और उनके समीपस्थित प्रदेशों में रूई बहुत उत्पन्न होती है । उनमें जैसी अच्छी रूई उत्पन्न होती है ऐसी पृथिवी के और किसी स्थान पर नहीं और यहां से ही इंग्लेंड में अधिक परिमाण से रूई भेजी जाती है । १८६१ ई॰ तक नीग्रो दासों से रूई का काम कियाजाताथा उसी साल में आमेरिका में प्रबल गृही य्यविवाद उत्पन्न हुआ और जिसका परिणाम यह हुआ कि समुदय दास छुड़ाए गए और थोडे दिन के लिये आमेरिका से इंग्लेंड में रूई आनी एक दम से बन्द होगयी । उन दिनों में भारतवर्ष में रूई का व्यापार बढ़ गया परन्तु अब फिर आमेरिका में पहिले की नाईं उत्पन्न होती और इंग्लेंड में भेजी जाती है ।

मिसिसिपि नदी के किनारे पर स्थित प्रदेश विशेषकर्के आइवा, इलिनईस, और इण्डियाना समतल और उर्वर है । यहां गेहूं अधिक परिमाण से उत्पन्न होता है ऐसा पृथ्वी पर और कहीं नहीं उत्पन्न होता । यहां से ही गेहूं इंग्लेंड में अधिक आता है । यहां से रेल के द्वारा चिकागो प्रभृति नगरों में गेहूं भेजा जाता है और फिर वहां से इंग्लेंड में । यूनाईटेड प्रदेशों में शस्य भेजे जाते हैं । उन नगरों का नाम नीचे लिखा जाता है आहियोप्रदेश में सिनसिनाटि, मिसौरी और मिसिसिपि नदी के संगम स्थान पर सेंट

लूइस नगर, केण्टकि में लुइसभाइल ।

इन प्रदेशों के पश्चिम में एक बड़ा विस्तृत मैदान है जिस पर अब तक किसी ने अधिकार नहीं किया। उस क्षेत्र में कोई बड़ा वृक्ष भी नहीं यह सर्वदा घासों से हरा और छोटे २ फूलों के वृक्ष से भरा रहता है ।

स्थिरमहासागर के तीर पर कालिफोर्निया प्रदेश है । यह बहुत सुन्दर और स्वास्थ्यकर स्थान है। यहां की जल पवन बहुत ठण्डी वा गरम नहीं इसलिये यहां वर्षा भी थोड़ी होती है और वर्षा ऋतु तीन महीने से अधिक नहीं रहती । यहां अंगूर, नारंगी, पिच और सेव प्रभृति अच्छे २ फल उत्पन्न होते हैं । यहां खानें भी बहुत हैं । यहां सेन फ्रान्सिसको वा फ्रिस्को नाम बड़ा बन्दर है । और वही यहां का प्रधान नगर है । यहां से धूआंकश जापान, चीन और भारतवर्ष में आते हैं । जो लोग कलकत्ते से स्थिरमहासागर होकर इंग्लेण्ड में जाते हैं वे भी यहां से होकर जाते हैं जैसा कलकत्ते से पहिले जापान के योकोहमा नाम स्थान में मुकाम करते हैं वहां सेनफ्रांसिसको में, फिर वहां से रेल के द्वारा न्यूयार्क आते हैं और न्यूयार्क से धूआंकश पर चढ़के लिवरपुल में आते हैं ।

ऊटाप्रदेश मारमनों की बस्तिनाम से प्रसिद्ध है। जोसेफस्मिथनामी किसी मनुष्य ने अपने को ईश्वर प्रेरित कहाकर बहुत मूर्ख लोगों को अपने वश किया और स्वनिर्विघ्नता से अपने मतप्रचार के लिये उन सब को

साथ लेकर यहां आके वसा जोसेफ के शिष्यों को मारमन कहते हैं। उन मारमनों के साथ बज़त गरीब अंग्रेज़ भी आए। अब यह प्रदेश यूनाइटेड प्रदेशों की गवर्न्मेण्ट के अधीन ज़आ। इस्के प्रधान नगर का नाम सेल्ट लेक है।

मेक्सिको

आमेरिका के अवशिष्टभागों के विषयमें अति अल्प ही कथनीय है। यद्यपि उन्की प्रकृति यूनाइटेड प्रदेशों से किसी तरह हीन्‌ नहींतौभी राजनैतिकादि विषयों में वे उन्से बज़त ही न्यून हैं।

मेक्सिको के उत्तर मे टेक्सस, और उत्तर कालिफर्निया ये दोनों ही यूनाइटेड प्रदेश के अन्तर्गत हैं। पूर्व में मेक्सिको की खाड़ी और यूकोतन प्रायद्वीप; दक्षिण पूर्व में गोयाटिमाला, पश्चिम में स्थिर महासागर।

मेक्सिको में आमेरिकन इण्डियन और स्पेनीय इन दोनों जातियों से उत्पन्न संकर जातीय लोग बज़त करके वसते हैं। यहां राजप्रशासन का कुछ बंदोवस्तनहीं प्रजारक्षक कोई नहीं। सर्वदा ही हरहत्या होती है। यहां वाणिज्य का प्रचार बज़त ही थोड़ा है। यहां के संकरजातीय मनुष्य रोमन के थोलिक धर्मावलम्बी हैं और स्पेनीभाषा बोलते हैं।

मेक्सिको के मध्यस्थल मालतेज ( ) है। जिस्की ऊंचाई समुद्रजल से ६,००० से ८,००० फुटतक है। उन स्थलों में सब प्रकार के यूरोपीय शस्य और

फल उत्पन्न होते हैं मेक्सिको की भूमि अतिशय उर्वर है। यहां भिन्न देशीय वृक्ष और लता भी बढ़ाई जा सकी हैं भुट्टा, नारिकेल फल, रूई नील और आलू बहुत उत्पन्न होते हैं।

मेक्सिको की कानोंमें केवल सोना और चांदी ही अधिक परिमाण से नहीं मिलते किन्तु पारा, ताम्बा, और टीन भी बहुत मिलते हैं। अफसोस यह है कि राज के अच्छा बन्दोबस्त न होने से इन सब स्थानों से भी कुछ लाभ नहीं होता क्योंकि यहां के प्रधान नगर में जहाज नहीं जाता और न यहां वर्त्तमान समय में रेल बनी है। कुछ दिन पहिले हरसाल यहां की कानों से ५,०००,००० पौण्ड के सोना और चांदी बिकते थे सन् १८२२ में यहां बसे हुए स्पेनी लोगों ने अपने देशीयों के विपक्ष में बलवा उठाया जिस्से कानों का काम यहां बंद होगया।

मेक्सिको में ज्वालामुखी पर्वत हैं। इसलिये समय २ वहां भूचाल होता है और उन्से आग निकलती है उन ज्वालामुखी पर्वतों में से "पपोकेटियेटल" पर्वत १७००० फुट ऊंचा है

मध्यसाधारणतन्त्र प्रदेश

वर्त्तमान समय में इन देशों के पांच विभाग हैं।

साधारणतन्त्र प्रदेश	क्षेत्रफल वर्गमीलोंमें	मनुष्यसंख्या
कस्टारिका	२६,०४०	१९०,०००
ग्वाटीमाला	४१ ८ ३०	१,१९०,०००
होंडूरास	३९ ६००	१५०,०००
निकाराम्बा	४९,५००	३५०,०००
सान्सल्वेडर	९,५९४	६३४,५२०

इन देशों का नाम कण्ठ करने की कुछ आवश्य कता नहीं क्योंकि सर्वदा ही इन्की सीमा नाम आदि बदलता रहता है ।

मेक्सिको का मालदेत्र यहांपर आकर अरुद्ध्य हुआ है । यद्यपि यहां बीच २ में एक २ उच्च पर्व त है तथाऽपि साधारणतः यह देश ग्वाटिमाला के दक्षिण पूर्व से निम्न है वहां की भूमि दलदल और जङ्गलमय है । जलपवन उष्ण और सजल है इसलिये पीड़ाकर है ।

पनामा का डमरूमध्य ५० मील से चौड़ा नहीं और इस्के मध्यस्थितभूमि ३०० फुट से ऊंचीनहीं । बहुत दिन से इस्के बीच से जहाज जाने के उपयो गी एक नहर करने का विचार होरहा है । ऐसी नह र जब तयार होजायगी स्वेज की नहर से भी अधि क वाणिज्य का उपकार होगा क्योंकि इस्के द्वारा अं ग्रेजी जहाजसमुदय बराबर आमेरिका के पश्चिम उप कूल में आसकेंगे और अब जैसा इंग्लैण्ड से जापान वा चीन में आने का समय उत्तम आशा अन्तरीप घूम ना पड़ता है इस नहरके होने से ऐसा नहीं करना पड़े गा । ऐसे २ और भी बहुत स्थानों का रस्ता सीधा होजा यगा । सुनता हूं कि इस नहर के लिये एक कम्पनी भी बनी है ।

ब्रिटिश हण्डुरास

यह स्थान मेक्सिको की खाड़ी पर है इस्का प्रधान

नगर वा बन्दर बेलिज नाम से प्रसिद्ध है। यहां से इं- गेलण्ड में महगनी आदि लकड़ी भेजी जाती है।

वेस्ट इण्डियन द्वीपसमूह

इन द्वीपों में से कुवा द्वीप सब से बड़ा है। यह द्वी प स्पेन के अधिकार में है और यहां अधिक करके स्पेनी और नीग्रो लोग रहते हैं। कुवा भी और २ वेस्ट इण्डियन द्वीपों की नाईं बहुत उर्वर है और इस्की स्थि ति उष्णमण्डल के बीच होने से यहां तमाकू, रूई, इ- त्र, तथा और २ उष्णदेश के वृक्षलतादि अधिक परि- माण से उत्पन्न होते हैं। इस्की राजधानी और प्रधान बन्दर हैवाना है। यह नगर देखने में बहुत सुन्दर है और यहां २००,००० मनुष्य रहते हैं। बहुत दिन से कुवा में झगड़ा होरहा है कि जिस्से यहां की उन्नति बन्द होगई। यहां रहने वालों में से अधिक लोग इसे स्पेन की अधीनता से छुड़ाने चाहते हैं।

हैटी द्वीप पहिले फरांसीस और स्पेनी औपनिवे शियों से अधिकृत हुआ। वे लोग नीग्रो दासों के द्वारा अपनी २ खेती कराते थे परन्तु दासों ने अपने स्वामियों को मार के भगा दिया और आप मालक बन बैठे यहां की अवस्था बहुत शोचनीय है।

जैमका द्वीप अंग्रेजों के अधिकार में है। इस्की ज- लपवन और २ वेस्ट इण्डियन द्वीपों की नाईं है। यहां से चीनी, नारिकेल, नील और तमाकू अन्य देशों में भेजे जाते हैं। १८३३ ई॰ में यहां के दास लोग स्वाधी

न किए गए। और उसी दिन से लेकर वे लोग कठिन परिश्रम नहीं करते क्योंकि थोड़े परिश्रम से ही यहां लोगों को अन्न मिलता है। इसलिये अंग्रेजी खेती करने वाले लोग कलकत्ते से कुलिओंको यहां पर मंगाते हैं।

दक्षिण आमेरिका

दक्षिण आमेरिका का आकार उत्तर आमेरिका से बहुत मिलता है अथवा केवल आकार ही नहीं, इसके नदी पर्वत आदि भी उसके सदृश हैं। आण्डिस पर्वत श्रेणी पनामा के डमरुमध्य से दक्षिण आमेरिका की दक्षिण सीमा अर्थात् अन्तरीप तक विस्तृत है और इसके साथ उत्तर आमेरिका स्थित राकि पर्वत का सादृश्य होसक्ता है ब्रेजिल के पूर्व में समानान्तर पर्वतश्रेणी उत्तर से दक्षिण तक विस्तृत है जिसके साथ उत्तर आमेरिका के आलिगानिस पर्वतश्रेणी का अधिक सादृश्य है। दक्षिण आमेरिका के उत्तरभागों में जो आमेजन नदी बहती है उससे सेण्ट लारेन्स नदी की तुलना होसक्ती है। प्लेट नदी जिसे स्पेनी लोग (राइयो डिला प्लाटा कहते हैं दक्षिण आमेरिका के मध्य से बहकर दक्षिण समुद्र में गिरती है इस नदी से मिसिसिपि नदी की तुलना होसक्ती है।

परन्तु दोनों के अक्षांश में भिन्नता होने से और किसीविषयमेसादृश्य नहीं दीख पड़ता है। कलम्बिया और ब्रेजिल के उत्तर भाग जो निरक्ष रेखा के नीचे है

बहुत उष्ण हैं और उष्णदेशीय जंगल से भरे हुए हैं। यहां ताल और बांस वृक्ष बहुत उत्पन्न होते हैं। यहां बन्दर अधिक देख पड़ते हैं। उधर कनाडा में शीतदेशीय वृक्ष अधिक हैं। और यह देश बरस के चार महीने बरफ से आच्छन्न रहता है। आन्देशपर्वतश्रेणी समुदय ज्वालामुखी है। आमेरिका के आविष्कार से आजतक ऐसे बहुत बेर ज्वाला निकली और भूचाल हुआ जिस्से बडे २ नगर नष्ट होगए। यहां के ज्वालामुखी शिखर समुदय १०००० फुट से भी ऊंचे हैं इसलिये निरक्षरेखा पर भी यह शिखर बरफ से ढके रहते हैं और जिस समय उन्से ज्वाला निकलती है उसी समय वहां के बरफ समुदय गलकर निचली भूमि जलप्लावित भी करते हैं। आन्देश पर्वत की ऊंचाई १५००० से २०,००० फुट तक है। इसलिये ऊंचाई में यह पर्वत केवल हिमालय से नीचे है। इस में आकागुआ नाम सर्वोच्च ज्वालामुखी शिखर है। यह चिली नाम स्थान पर है और इसकी उच्चता २२,९०० फुट है।

आन्देश पर्वत पश्चिम की ओर अपनी अपवाहिका (वाटर शेड) से झट प्रवण हुआ है परन्तु पूर्व की ओर भली नताई क्रम से हुई है। आन्देश पर्वत के पूर्व की ओर पेरू और बलिविया में ८००० से १२,००० फुट तक उच्चमालक्षेत्र देख पड़ते हैं और यहां से क्रमशः आमेजन और मेडीरिया के जलप्रवाह तक प्र-

शाला हुई है । ब्रेज़िल के पूर्व में उत्तर से दक्षिण तक समानान्तराल पर्वत श्रेणी । आन्देशकी तुलना से इसकी ऊंचाई बहुत थोड़ी है । समुद्र के समीप यह यद्यपि उच्च देख पड़ती है परन्तु इसकी ऊंचाई ६००० फ़ुट से अधिक कहीं नहीं । ब्रेज़िलस्थित पर्वत के शिखर समुदय जंगल से भरे हुए हैं । पेरु और बलिविया के माल भूमि पर एक भी वृक्ष नहीं ।

ग्वाईयाना दक्षिण से कुछ पश्चिम तक जो पर्वतश्रेणी स्थित है उसकी उच्चता समुद्रतल से ८००० फ़ुट से अधिक नहीं । यह पर्वत श्रेणी आमेज़न के जलाशय (बेसिन) का आरिनको के जलाशय से पृथक् करती है ।

आमेज़न नदी पृथ्वी की समुदय नदियों से बड़ी है इसके मुख से ४५० मील तक इसकी चौड़ाई ४ मील है । यह ऐसे वेग से समुद्र में आकर गिरती है कि इसके मुख से ५०० मील तक समुद्र का जल आविल रहता है । १५०० मीलतक आन्देस पर्वत से जितनी छोटी २ नदियां निकली हैं वे सब आमेज़न में आकर गिरती हैं । इसकी दो प्रधान शाखा-नदी हैं— दक्षिण में मैडीरिया और उत्तर में रायोनीग्रो । टकान्टिस नदी यद्यपि आमेज़न नदी के मुख में गिरती है तोभी उसे इसकी सहायक वा शाखानदी नहीं कहा जा सक्ता । इन नदियों के मध्यस्थान मनुष्य के वासोपयोगी नहीं वे सब जंगल से भरे हुए हैं ।

ओरिनको नदी भी बड़ी नदियों में गिनी जाती है इस्की पुलिनभूमि में बहुत जंगल नहीं। इस्के तीर पर बड़े २ विस्तृत मैदान हैं जिनमें वृक्ष थोड़े होते हैं और जो वर्षाऋतु में जल से ढके हुए रहते हैं।

लैट का राश्यो डिलाप्लाटा यह भी एक पृथ्वी की बड़ी नदियों में है

दक्षिण आमेरिका में कोई बड़ी झील नही। बलिविया में टिटिकाका नाम झील है जो समुद्रतलसे १२,८००० फ़ुट उच्च है। माराकैबो झील जो कलम्बिया में है; यह एक समुद्र की खाड़ी है और इस्का जल लवणमय है

दक्षिण आमेरिका का वह भाग जो इस्की उत्तर सीमा से दक्षिणायन रेखा के बीच है, वह उष्णमंडल के बीच है और उस्की जलवायु उष्ण है। हां, यहां के पर्वतों पर जलवायु शीतल है और ६००० फ़ुट उच्च मालभूमि की जलवायु नाति शीतोष्ण है। दक्षिणायन रेखा के दक्षिण में दक्षिण आमेरिका की जलवायु यहां तक कि पटागोनिया की जलवायु बहुत सी ठंढी है। वहां सर्वदा शीतलवायु बहती है परन्तु यूरोप उसी अक्षांश रेखा पर जो देश है उस्की प्रकृति यहां से उष्ण है। यह एक जो प्राकृतिक नियम है कि दक्षिण समभण्डल की जलवायु निरक्षरेखा से उतनी दूरी पर किसी अक्षांशरेखा में स्थित समभण्डल की जलवायु से शीतल है इसनियम का उदाहरण यहांही है।

दक्षिण आमेरिका के पश्चिम भाग जो चिलि के अर से कलम्बिया तक और समुद्र के उपकूल से आन्देश पर्वत तक विस्तृत है उस पर वर्षा बहुत थोड़ी होती है। केवल समय २ मेघ आकर आमेजन नदी की पुलिनभूमि पर दो एक बूंद पानी बरसा कर शुष्क हो जाते हैं। आन्देश पर्वत के पश्चिम में सदैव शुष्क हवा चलती है।

आन्देश पर्वत के मध्य में अर्थात् पेरु से चिली तक जितनी खाने हैं उनसे ही बहुत करके पृथ्वी के देश देशों में चांदी भेजी जाती है। यहां ताम्बे की खान से बहुत लाभ होता है इसलिये पेरुभिया के लोग कहते हैं कि जो सोने की खानों से मुनाफा करना चाहता है उसके सर्वस्व का नाश निश्चित है और जो चांदी की खान से लाभ करना चाहता है उसकी जीविका कथंचित् होजाती है और जो ताम्बे की खानों से जीविका करना चाहता है उसकी सम्पत् निश्चित है।

आन्देश पर्वत के मध्य में शीशा, लोहा, पारा पेरिमनि और संखिया प्रभृति धातुओं की खान हैं परन्तु चांदी की खानों की अधिकता से उन की प्रसिद्धि नहीं हुई है।

पृथिवी के अपर स्थानों से दक्षिण आमेरिका की बसति बहुत ही विरल है। यहां के रहने वाले आमेरिकन इण्डियन और संकर जातीय हैं। ब्रेजिल में *

पोर्त्तुगीज़ और नीग्रोजातीय लोग भी बहुत हैं। ब्रेजिल में पोर्त्तुगीज़ भाषा का बहुत प्रचार है। यहां स्पेनियों से उत्पन्न संकर जातीय लोक स्पेनी भाषा भी बोलते हैं। जो लोग स्पेनी और पोर्त्तुगीज़ भाषा बोलते हैं उन का धर्म रोमन कैथोलिक है। आमेरिकन इण्डियनों में नाना प्रकार की भाषा प्रचलित है। यहां की भाषा पुरानी पृथ्वी की किसी भाषा से नहीं मिलती। दक्षिण आमेरिका के सब प्रदेशों में प्रायः रोमन कैथोलिक पादरी ईसाई धर्म के प्रचार के लिये बसे हुए हैं। बहुत स्थानों में इन्का यत्न सफल हुआ है। उन पादरियों की सुशिक्षा से बहुत आमेरिकन इण्डियन एक स्थान में स्थिर होकर खेती करने लगे हैं।

दक्षिण आमेरिका में हाथी वा गैंडा नहीं देख पड़ता। पम्पस नाम से प्रसिद्ध क्षेत्रों में बन्यघोटक बहुत हैं। यहां असल शूकर नहीं; पेकरी नामक शूकर जीव दो प्रकार के देख पड़ते हैं। बिल्लियों में पूमा जातीय बिल्लियें जो उत्तर आमेरिका के उष्ण देशों में रहती हैं यहां भी बहुत जगह देख पड़ती हैं। जागुयार नामक एक प्रकार की बड़ी बिल्ली दक्षिण आमेरिका के उष्ण प्रदेशों में रहती है। यह बिल्ली बाघ से छोटी और हीनबल है परन्तु चीते से बहुत जोरावर और बड़ी है। यह जीव दृक्ष पर चढ़ जाता और बांदरों को पकड़ २ कर खाता है।

कहते हैं कि यह बांदर मांस का प्रिय है। दक्षिण आमेरिका में गृहपालित बिल्ली से बड़ी २ बिल्ली नानाप्रकार की देखी जाती हैं।

दक्षिण आमेरिका के पूर्व उपकूल के समीप हूलमत्स्य नानाप्रकार के हैं। बड़ी नदियां जहां गिरती हैं वहां नौ फ़ुट लम्बी समुद्र गौ देख पड़ती है। दक्षिण आमेरिका की नदियों में एक प्रकार का मत्स्य है जो १४ फ़ुट तक लम्बा होता है।

लामा वा आलपाका जीव जो प्राणितत्त्वविद्या के अनुसार ऊंट जातियों में गिना जाता है परन्तु इसका आकार ऊंट से बहुत छोटा होता है। यह जीव साधारणतः बड़े २ छागों की नाईं दीख पड़ता है। इसका लोम लम्बा और सुन्दर होता है। इसी के लोम से ही अलपाका नाम से प्रसिद्ध वस्त्र और साफा आदि प्रस्तुत होते हैं। इसके ऊपर लादकर पहाड़ में द्रव्य भेजा जाता है यह सौ पौण्ड तक भार उठा सक्ता है और रोज़ १८ मील तक जासक्ता है।

यहां राकून नाम एक प्रकार का बन्य जीव जो देखने में भालू की नाईं है परन्तु इसका आकार लोमड़ी से भी छोटा होता है।

यहां बांदर नानाजातीय हैं। मारमोसेट नाम से प्रसिद्ध एक प्रकार छोटा बांदर है जिसका लिंगोल है और पूंछ लम्बी होती है दक्षिण आमेरिका

में और एक प्रकारके बांदर रहते हैं जिन्का आकार बहुत ही छोटा परन्तु इन्के गले पर एक थैली है जिस्से आवाज एक मील के उपरान्त दूर पर से भी सुनी जाती है ।

यहां तीन प्रकार के अपोसममनाम थैली वाले जीव हैं । दन्त शून्य स्तन्यपायी पशु केवल दक्षिण आमेरिका में ही रहते हैं । यहां बहुत बड़े स्तन्यपायी पशु नहीं मिलते ।

दक्षिण आमेरिका में एक प्रकार का पिपीलिका (कीड़ी) भुक पशु है । इस्का मुण्ड और जीभ लम्बी होती है । इन्में से कोई साढ़े चार फुट लम्बा होता है । यहां आरमाडिलोनाम एक प्रकारका वन्य जीव रहता है इस्का आकार छोटा शूकरका सा है । इन्का शरीर स्वाभाविक अस्थिमय चर्म्म से आच्छादित है । यहां स्लाथ नाम एक प्रकार का जीव है जो दो फुट लम्बा होता है और सर्वदा वृक्ष पर ही रहता है ।

आमेरिका की दक्षिण सीमा पर पेंगुइन नाम से प्रसिद्ध एक प्रकारके जलचर पक्षी असंख्य दीख पड़ते हैं । इन्का पर बहुत छोटा और खुला हुआ होता है । इस लिये यह उड़ नहीं सक्ता यह पक्षी सर्वदा जलमें ही रहता है । और मछली की नाई अपने छोटे परों को फैला कर इधर उधर घूमता है । यह अण्डे देने के समयके-

थल जमीन पर आता है । इसकी विष्ठा से गुपानो नामसे प्रसिद्ध और उससे भूमि की उर्वर शक्ति बढ़ती है । इसलिये बड़े २ जहाज भर के उनका विष्ठा इंग्लेण्ड देशमें भेजा जाता है । जलचर पक्षियों में बक नाना जातीय देखे जाते हैं । आमेरिका का उष्ट्रपक्षी आफ्रीका के उष्ट्रपक्षी की नाईं बड़ा नहीं होता । और इस्का पर भी उतने मोल से नहीं बिकता। यहां के उष्णप्रदेशों में नानाजातीय तोता देख पड़ता है । यहां टेंगर नाम से प्रसिद्ध एक प्रकार का पक्षी रहता है जो और देशों में नहीं है । इस्का वर्ण नाना प्रकारका होता है । दक्षिण आमेरिका में इस पक्षी के १०० भेद देखे जाते हैं । फ्रूट क्रो (फल-काक) नामी एक जातीय पक्षी केवल दक्षिण आमेरिका में होते हैं । इन्के भी अनेक भेद होते हैं।उनमें से एक प्रकार ऐसा है कि उन्का रंग सारा स्वेत ही होता है और घण्टा नाद की नाईं बोलता है । ये १२ इञ्च तक लम्बे होते हैं । दक्षिण आमेरिका में हमिंग पक्षी, बाज ईगल और गृध्र बहुत हैं ।

यहां अनेक प्रकार के विषयुक्त सर्प, कुम्भीर आदि जीव बहुत हैं । यहां कीड़े और पतंग भी नानाप्रकार के होते हैं परन्तु इन्में से ऐसे बहुत हैं जो पुरानी पृथ्वी के कीड़े वा पतंगो से नहीं मिलते ।

दक्षिण आमेरिका में अच्छे और उपकारी उद्भिज्ज भी अनेक प्रकार के होते हैं ।

शस्यों में भुट्टा और गेहूं प्रधान हैं । वृक्षों में नानाविध बांस, ताल, खजूर आदि, केला, देवदारु, प्रभृति बहुत हैं । पेंपियो वृक्ष जो भारतवर्ष के बंगाला प्रभृति उष्णप्रधान देशों में आजकल बहुत देखे जाते हैं । इसकी उत्पत्तिस्थान दक्षिण आमेरिका ही है । वहां इसके अनेकप्रकार के भेद हैं। दक्षिण आमेरिका के उपकारी वृक्षों में से कक्रूया नाम एक प्रकार का वृक्ष है जिसके द्वारा उत्तर और दक्षिण आमेरिका के लोगों को भोजननिर्वाह होता है । यह वृक्ष त्वक्जातीय है ।

दक्षिण आमेरिका में बहुत अच्छी मेहगनि लकड़ी उत्पन्न होती है । गोल आलू जो अब पृथ्वी के सर्वत्र ही उत्पन्न होता है यह पहिले पहिल दक्षिण आमेरिका के आन्देश पर्वत के ऊपर ही उत्पन्न होताथा । ऐसा तमाकू और सिनकोना जिससे ज्वर का महौषध कुनीन उत्पन्न होता है वे भी दक्षिण आमेरिका देशीय हैं ।

दक्षिण आमेरिका में नीचे लिखे हुए राज्य हैं ।

देशविभाग	प्रधाननगर	क्षेत्रफलवर्गमीलोंमें	मनुष्यसंख्या
त्रीनीदाद (द्वीप)	पोर्ट-आफ-स्पेन	१७५४	१०९,६३८
इक्वेडर	क्विटो	२१८,९९४	१,३००,०००
कलम्बिया	बगोटा	४३२,४००	३,०००,६३३
वेन्जुला	कारक्कस	३६८,२३५	२,२००,०००
ब्रिटिशगाइना	जार्जटौन	७६,०००	१९३,४९१
डचगाइना	प रामारिबो	६०,०००	५०,२१०
फ्रेञ्चगाइन	केयिनि	४०,०००	२४,४३२
ब्रेज़िल	राइयोजेनेरियो	३,२७५,३२६	१०,१९६,२३८
पेरु	लिमा	५०२,७६०	३,११९,०००
बलिविया	लापज	४७३,३००	१,९४२,३५२
पारागुए	असन कएन	५७,३०३	२,२००,०००
उरुगुए	मांटि विडियो	७३,५३८	२३१,२४३
लाप्लाटा	बुइनस एरेस	५१५,७००	१७३६९२२
चिलि	सैंटि पागो	२५०९७७	२००८,८६१
पाटागोनिया		३००,०००	५०,००
फाकलैण्डद्वीप		१३,०००	६,२१

त्रनिदाद द्वीप अंग्रेज़ों के अधिकार में है । यह वेस्टइण्डियन द्वीपों में है तो भी दक्षिण आमेरिका के अधिक समीप होने से इसी के अन्तर्गत समझा जाता है । इसकी भूमि अतिशय उर्वर है । इसमें अंग्रेजी पाठशाला हैं जिनमें बड़े २ विद्वान् अंग्रेज शिक्षा देते हैं । यहां के छात्र केम्ब्रिज विद्यालय की परीक्षा में उत्तमरूप से उत्तीर्ण हुए हैं ।

इक्वेडर— यहां के अधिवासियों में १०,१००००० स्पेनी संकर जातीय और २००,००० आदिम असभ्य जातीय मनुष्य । यहां राज्य शासन का अच्छा बंदोबस्त नहीं । यहां से ककूया और सिनकोना इंग्लैण्ड

में भेजे जाते हैं । इसका प्रधान नगर क्विटो समुद्र-तल से ९५०० फ़ुट ऊंचा है । इसके तुल्य ऊंचा नगर पृथ्वी पर बहुत थोड़ा है । यहां सदैव भूचाल होते हैं । बहुत बेर यह शहर उजाड़ होगया क्योंकि यह नगर ज्वालामुखी के समीप है । १७९७ ई. में इक्काडोर का दूसरा नगर राइयोबम्बा भूचाल से अधिवासियों समेत आकाश में उडकर निकट नदी में गिरा था ।

कलेम्बिया—इसके वासिन्दों में २९००,००० स्पेनी संकर जातीय, १००,००० आदिम असभ्य जातीय और थोड़े नीग्रो जातीय हैं । यहां के राज की भी कुछ ठिकाना नहीं और सर्कारी ऋण अधिक है । यहां से सिनकोना इंग्लैण्ड में भेजा जाता है । यहां के लोगों का प्रधान खाना ककुया-फल है यहां सोना चांदी और ताम्बे की खान बहुत है परन्तु यहां की गवर्नमेंट इससे कुछ लाभ नहीं उठासकी । पहिले स्पेनियों का बसाया हुआ कलम्बिया नगरप्रधान था अब इसकी कुछ रौनक नहीं ।

वैनेजुइला—इसके अधिवासियों में ६००,००० स्पेनी वर्णसंकर और ६००,००० आदिम असभ्य लोग हैं । यहां कुछ दिन हुए कि दुरोगी विवाद होता रहा जिससे देश का ऋण बहुत बढ़ गया । यहां से इंग्लैण्ड में काफी और रूई अधिक करके भेजे जाते हैं । यहां चांदी टीन और शीशा की खानें हैं परन्तु

उन्हें बहुत थोड़ा फ़ाइदा होता है । इसकी राजधानी और प्रधान नगर काराकास है जिसमें ५०,००० मनुष्य रहते हैं । पहिले कलम्बिया इक्वाडोर और वैनेज़्विला के अन्तर्निविष्ट था । अब अरोगी विवाद के कारण यह उन्हें पृथक् किया गया ।

ब्रिटिश गाइना।— इन्के अधिवासियों में ४०,००० आदिम असभ्य हैं । इसके उपकूल की ओर थोड़े २ अंग्रेज़, उच नीग्रो और संकर जातीय मनुष्य रहते हैं । यहां चीनदेशीय और हिन्दू कुली भी बहुत हैं ।

डच गाइना— ब्रिटिश गाइना और डच गाइना ये दोनें ही प्रदेश पहिले डचों से बसाए हुए और उन्हें अधिकृत थे । डच गाइना को सुरिनम भी कहते हैं क्योंकि यहां सुरिनम नाम एक बड़ी नदी है ।

फ्रेञ्च गाइना— इस स्थान पर फ्रेञ्चलोग अपराधियों को निर्वासित करते हैं । यह देश बसने के उपयोगी नहीं क्योंकि यहां का जलपवन अच्छा नहीं ।

ब्रेज़िल—यह देश पोर्तुगीज़ों का उपनिवेश था परन्तु सन् १८२१ से स्वाधीन हुआ । यहां स्पेनियों के उपनिवेशों से उन्नति देखी जाती है । यहां की भूमि उर्वर है । यहां १०,००,००० मनुष्य रहते हैं जिनमें से २०००,०० नीग्रो हैं । अब शेषों में संकर जातीय, पोर्तुगीज़ और आमेरिकन इण्डियन हैं । इसमें तीन प्रधान नगर हैं—राइयोजेनिरो, बाहिया, और

पारनम्बुको । इसमें से राइयो जैनिरो राजधानी है । ब्रेज़िल से इंग्लैण्ड में रूई और चीनी भेजी जाती है । यहां पर ७५० मील रेल बनी है । यहां अबतक अधिक भूमि उजाड़ पड़ीरही है । यह स्थिर हुआ कि यदि ब्रेज़िल में नियमित रूपसे खेती की जावे तो इसमें यूरोप के द्विगुण मनुष्यों का पोषण होसक्ता है । आमेज़न नदी में अब धुंआकश भी चलते हैं ।

पेरु—इसके अधिवासियों में से आधे आमेरिकन इण्डियन हैं चौथा हिस्सा आदिम संकर जातीय हैं और बाकी स्पेनी, चीनदेशीय, नीग्रो और अपर जातीय हैं । यहां के वाणिज्य द्रव्यों में से ग्वानो नाम उर्वरकारी मैला प्रधान है । पेरु का मध्यभाग मालक्षेत्र है जिसकी ऊंचाई १०,००० से १२,००० फुट तक है । यहां चांदी की खानें बहुत हैं । इसकी राजधानी लामा है जिसमें १२००१० मनुष्य रहते हैं । यहां अनेक बार भूचाल हुआ था । यहां ६०० मील रेल बनी है । यहां सर्कारी ऋण ऐसा बढ़ गया है कि थोड़े दिन में जब यह मैला न रहेगा तो यह देश दरिद्र होजायगा ।

बोलिविया—यह एक स्पेनदेशीय उपनिवेश स्थान है यहां भी बहुत दिन से झगेगी विवाद चल रहा है । यहां के अधिवासियों में २००,००० आदिम असभ्य हैं और १,७००,००० स्पेन देशीय वर्णसंकर हैं । यहां से ग्वानो नाम मैला, चांदी सिनकोना,

और ककुया अपर देशों में भेजे जाते हैं । इस देश की आमदन विशेष करके विदेश में भेजे हुए खाने और खिनकोना पर लगे हुए महसूल से होती है परन्तु यहां सर्कारी ऋण अधिक है । बलिविया का मध्यभाग भी मालक्षेत्र है और उसकी ऊंचाई १०,००० से १५,००० फ़ुटतक है। इसका प्रधान नगर लापाज़ है ।

पराग्वे—इसके अधिवासियों में से आमेरिकन इण्डियन की संख्या अधिक है । युद्ध के स्वभाव से यह देश एक बेर नष्ट होगया । यह देश ऐसा निर्धन होगया है कि पुनः उन्नति की आशा नहीं । यहां के वाणिज्यद्रव्यों में से तमाकू और चा प्रधान हैं ।

उराग्वे—इसमें स्पेनी वर्णसंकर और आदिम असभ्य लोग रहते हैं । इसमें आजकल यूरोप से नानाजातीय लोग आकर बसने लगे हैं । यह देश बैल और मेष के पोषण के लिये बहुत अच्छा है । इसका प्रधान नगर मांटि विडियो एक बन्दर है । उसमें वाणिज्य का अधिक प्रचार है । यह देश भी ऋण युक्त है ।

लाप्लाटा—इसे आर्जेण्टिन साधारणतन्त्र भी कहते हैं । यह भी एक पाम्पादेश है । इस में तृण से आच्छन्न बड़े २ विस्तृत समतल क्षेत्र हैं जिनमें गो मेष आदि पशु अच्छी रीति से प्रतिपालित होते

हैं । इसमें आमेरिकन इण्डियन और स्पेन देशीय संकर जातीय मनुष्य अधिक करके रहते हैं उन के सिवाय अंग्रेज, इतालीय, जर्मन और अपर यूरोपीय मनुष्य भी नए बैठे हुए हैं । यहां से पशुलोम और चमड़ा विदेश में भेजे जाते हैं । इसका प्रधान नगर वियुयेन आयर है जिसमें २००,००० मनुष्य रहते हैं । यहां ६०० मील रेल चलती है ।

चिली– आन्देश पर्वत के पश्चिम तट पर है । यह भी एक स्पेन देशीय साधारणतन्त्र है । यहां ६०० मील रेल बनी है । यहां से ताम्बा गेहूं, चांदी और पशुलोम अपर देशों में भेजे जाते हैं । चिली के उत्तर प्रदेश में वर्षा बहुत थोड़ी होती है । इसका प्रधान नगर सेणिटयागो । वल पराइसियो नगर इसका प्रधान बंदर है । दक्षिण आमेरिका स्थित स्पेन अधिकृत देशों में से चिली की अवस्था अच्छी है ।

पटागोनिया– यह एक ऊषर प्रदेश है इसमें पैटागोनियन नाम बड़ी असभ्य जाति रहती है । उसका व्यापार केवल मछली पकड़ना और पशु मारना है ।

फकद्वीप समूह– अंग्रेजों के अधिकार में हैं ये भी ऊषर हैं ॥

इतिश्री·